ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २३५ म अंक ०१ अक्टूबर २०१७ (वर्ष १० मास ११८ अंक २३५)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ६ टा नाट्य संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) **सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) **सुश्री अपर्णा कुमारी** सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तानपुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघडडीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नडेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषांक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c)2004-17. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन।
विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकें देल जा रहलअछि।
एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकें छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैं ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तें रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। ऐ ई पत्रिकाकें श्रीमति लक्ष्मीठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकें ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।
(c) 2004-17 सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ता लगमे छन्हि।
५ जुलाई २००४ कोंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा ''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु

पंचवटी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पंचवटी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-40-7

दाम : ₹ 251/-
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
दोसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

PANCHBATI
Ekanki sanchayan : A collection of one-Act Plays
by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

सतमाए

पात्र-परिचय

पुरुख पात्र-

बुद्धिधारी- स्कूलक प्रधानाध्यापक। उमेर- 40 बर्ख।
बिपैत बाबू- सहायक शिक्षक। उमेर- 40 बर्ख।
पुलकित- स्कूलक चतुर्थवर्गीय करमचारी। उमेर- 40 बर्ख।
चिन्तामणि- बिपैत बाबूक भावी ससुर। उमेर 60 बर्ख।
शिवकुमार- बिपैत बाबूक बेटा। उमेर 18 बर्ख।

नारी पात्र-

सुलक्षणी- बिपैत बाबूक माए। उमेर 60 बर्ख।
सावित्री- चिन्तामणिक पत्नी। उमेर- 58 बर्ख।
खजुरिया- ग्रामीण स्त्री। उमेर- 25 बर्ख।
तेतरी- खजुरियाक बहिनपा। उमेर- 25 बर्ख।

पहिल दृश्य-

विद्यालय। समय माघक ३ बजे। स्कूलक आँगनमे बुद्धिधारी बाबू (प्रधानाचार्य) बिपैत बाबू (सहयोगी शिक्षक) कुरसीपर आ पुलकित (चतुर्थवर्गीय कर्मचारी) स्टूलपर बगलमे बैस गप-सप्प करैत।

बुद्धिधारी- आब विद्यालयमे नै मोन लगैए। होइए जे कखन रिटायर भऽ जाइ। कखनो कऽ तँ एहनो भऽ जाइए जे भोलेन्ट्री रिटायरमेंट लऽ ली।

पुलकित- से किए मास्सैब?

बुद्धिधारी- तोहूँ तँ पनरह-बीस बर्खसँ संगे रहिते छह देखते छहक जे की मान-प्रतिष्ठा स्कूलो आ शिक्षकोक छल आ अखैन की अछि।

पुलकित- ऐ जुगमे मान-प्रतिष्ठा लऽ कऽ धो-धो चाटब। भने दिन-राति दरमाहा बढ़बे करैए, सुखसँ जीबू।

बुद्धिधारी- *(कनडेरीए आँखिए पुलकित दिस देख)* तूँ जे सवाल उठेलह पुलकित, ओ बड़-भारी अछि। मुदा प्रश्न तोहर छिअ तँए जवाब देब उचित भऽ गेल। *(जिज्ञासासँ बिपैत बाबू बुद्धिधारी बाबूक नजैरपर आँखि गाड़ि मोनकेँ असथिर कऽ सुनैक बाट तकै छैथ...)*

पुलकित- मास्सैब, जहिना खेतक आड़ि-धूड़ बाढ़िक बेगमे बिगैड़ जाइत तहिना भऽ गेल अछि।
(पुलकितक दोहरौल प्रश्नसँ बुद्धिधारी बाबूक मोन आरो अमता गेलैन। मुदा धैर्यसँ शक्ति जगबैत)

बुद्धिधारी- पुलकित, जेते सुख आ चैनसँ जीबए चाहै छी ओते दुख आ बेचैनी बढ़ल जाइए। तोंही कहऽ जे बिना काजक बोइन जे भेटतह ओ अन्न देहमे लगतह।

पुलकित- *(औगता कऽ)* से केना लगत। काजमे जेते देह दुहाइत अछि ओते भूख जगै छै जेते भूख जगै छै ओते अधिक अन्न पचै छै। देह थकबे ने करत तँ भूख केना जागत। जँ भूख नै जागत तँ खाइक क्षुधा केना हएत? जेहेन खाइ अन्न तेहेन बने मोन, जेहेन बने मोन, जेते जगे अर्पण।

बुद्धिधारी- अपने विद्यालयक खिस्सा कहै छिअ। जइ दिनमे एलौं ओइ दिनमे एगारह गोरे शिक्षक रही आ चारू किलास मिला कऽ साढ़े चारि साए विद्यार्थी रहए। साइंस, कौमर्स आ आर्ट तीनू फेक्लटी रहए।

पुलकित- चपरासी केतेक रहए?

बुद्धिधारी- *(मुस्की दैत)* एक्केटा। काजो कम रहए। अच्छा सुनह। सभ किलासमे सेक्शन चलैत रहए। अखैन देखहक जे रजिष्टरमे छह साए विद्यार्थी आ सतरह गोरे शिक्षक छी।

पुलकित- हँ, से तँ छी।

बुद्धिधारी- मुदा की देखै छहक जे आइ मात्र चर्तुदशी छी, ने शिक्षक एला आ ने छात्र।

पुलकित- छुट्टीक दरखास आएल कि नै?

बुद्धिधारी- एक्कोटा नै।

पुलकित- मास्सैब, ऐ बुढ़ाड़ीमे केते माथा-पच्ची करब। भरमे-सरम अपन जिनगी आ परिवारकेँ देखियौ।

बुद्धिधारी- से उचित हएत?

पुलकित- रूइया जकाँ जे माथ धुनि-धुनि उड़ेबे करब तइसँ सीरक केना बनत?

(बिपैत बाबूपर नजैर दैत)

बुद्धिधारी- एते दिन तँ नै कहलौं बिपैत बाबू किएक तँ साल नै लगल छल मुदा आब तँ सालसँ ऊपर भऽ गेल। एकटा बात पुछू?

बिपैत बाबू- एकटा किए हजारटा पूछि सकै छी। जखैन सभ दिन एकठाम रहै छी, एक पेशा अछि, तखैन पुछैले आदेशक की प्रयोजन?

बुद्धिधारी- अहाँ बिआह कऽ लिअ?

बिपैत बाबू- यएह जे दूटा बेटो-बेटी अछि।

बुद्धिधारी- मानै छी। मुदा ई कहू जे बेटा-बेटीक उमेर केते अछि?

बिपैत बाबू- अपने विद्यालयमे बेटा एगारहममे पढ़ैए आ बेटी नाइन्थमे।

बुद्धिधारी- *(आंगुरपर हिसाब जोड़ि)* चौदह-पनरह बर्खक बेटा आ बारह-तेहर बर्खक बेटी हएत?

बिपैत बाबू- करीब-करीब।

बुद्धिधारी- पान-सात बर्खमे बेटी सासुर चलि जाएत। जे हवा बनि रहल अछि ओइमे जँ बेटाकेँ इंजीनियर वा एम.बी.ए. नै कराएब सेहो नै बनत।

बिपैत बाबू- जँ से नै कराएब तँ हँसारते हएत। तैपरसँ ईहो दोख लागत जे माए मरिते बेटा-बेटीकेँ बिपैत कुभेला करै छै।

बुद्धिधारी- *(किछु सोचैत)* कहलौं तँ ठीके। मुदा जँ अपना काजमे कमी नै आनब तँ लोक बाजत किए। कहुना तँ पच्चीस-तीस हजार महिना उठैबते छी। असानीसँ सभ काज चला सकै छी।

बिपैत बाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* एक तरहक विचार अछि।

बुद्धिधारी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* ई भार हमरा ऊपर रहल। जहिना एक-एक समस्या डोरीक सूत जकाँ बाँटल अछि तहिना ओकरा खोलि कऽ उघारि-उघारि सोझराबए पड़त।

पुलकित- *(फरैक कऽ)* मास्सैब, कँटहो बाँस तँ लोके काटि कऽ घरमे लगबैए आ ई कोन ओझरी छिऐ।

बुद्धिधारी- एक आदमीक समस्या (ओझरी) केतेकोकेँ ओझरबैए। तँए औगुता कऽ किछु बाजि देब वा करैले डेग उठा देब, अनुचित हएत। *(घड़ी देख कऽ)* सवा तीन बजिये गेल। काजो नहियेँ जकाँ अछि। चाभी लऽ कऽ क्लासोक कोठरी आ ऑफिसो बन्न कऽ दहक।
(पुलकित चाभी लेल बढ़ए लगल। दुनू गोरे कुरसीपर सँ उठि गेला। दुनू कुरसियो आ स्टूलो ऑफिसमे रखि कोठरी बन्न कऽ पुलकित अबैए।)

बुद्धिधारी- बिपैत बाबू, अहाँक जिनगी *देख* मोनमे उदिग्नता उठि रहल अछि।

बिपैत बाबू- किए?

बुद्धिधारी- अपना सभ समाजक उच्च श्रेणीक रहितो जिनगी आ मनुखक रहस्य नै बूझि रहल छी। जे सहजे निम्न श्रेणीक (बौद्धिक) छैथ ओ केना बुझत। जँ से नै बुझत तँ अमती काँट जकाँ ओझरी (जिनगीक) केना छोड़ा पौत?

बिपैत बाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* बड़ गंभीर बात कहलौं।

बुद्धिधारी- सदैत इच्छा रहैए जे सबहक परिवार नीक जकाँ फड़ै-फुलाइ मुदा से कहाँ भऽ पबैए। जहिना आगू बढ़ल चिन्ताग्रस्त (दुखी) तहिना पछुआएल। आखिर एना होइ किए छै?

पुलकित- मास्सैब, अनेरे मोन भरियौने छी। हँसि-खेल जिनगी गुदस कऽ ली सभसँ नीक।
(पुलकितक बात बुद्धिधारीक करेजकेँ आरो बेध देलकैन। मुदा कोढ़मे चोट लगने असीम दरदो होइत तँ मुहसँ हँसियो फुटैत।)

बुद्धिधारी- *(मुस्की दैत)* पुलकित, औझका दरमाहा तँ फोकटेमे भेल किने?

पुलकित- फोकटमे केना भेल। भरि दिन बरदाएल जे रहलौं।

बुद्धिधारी- अच्छा चलह संगे, तोरे ऐठाम चाह पीब।

पुलकित- दुआर पर तँ नहियेँ पीआएब दोकानमे जरूर पीआ देब।

बुद्धिधारी- से किए?

पुलकित- घरवाली व्रत केने छैथ। ओ तँ अनेरे पेटकान लधने हेती। तैपर चाह बनबए कहबैन। बाढ़ैन सूप छोड़ि आरो किछु भेटत।

बुद्धिधारी- तखैन तँ तोहर घरवाली बड़ धर्मात्मा छथुन?

पुलकित- सोलहन्नी। बिना धरमत्मे भरि दिन खटै छी आ दरमाहा हुनका हाथ पड़ै छैन।

बुद्धिधारी- धर्मो केते रंगक होइए?

पुलकित- मास्सैब, अहीं मुहेँ ने सुनने छी, जेते रंगक लोक तेते रंगक धरम। कियो कोदारि पाड़ि पसिना चुबा धरम-करम (धर्म-कर्म) बुझैए, तँ कियो बम-गोली लऽ धर्म-कर्म बुझैए। कर्म तँ दुनू करैए।❍❍

शब्द संख्या : 879

दोसर दृश्य-

(बिपैत बाबूक दरबज्जा। सुलक्षणी माए आ शिव कुमार (बिपैत बाबूक बेटा) दरबज्जापर बैसल। (बुद्धिधारी, बिपैत बाबू आ पुलकितक प्रवेश। सुलक्षणीकेँ गोड़ लगैत बुद्धिधारी। उठि कऽ ठाढ़ होइत सुलक्षणी कुरसीकेँ आँचरसँ झाड़ैत।)

सुलक्षणी- ऐपर बैसू। (बुद्धिधारीकेँ बैसते) बाल-बच्चा सभ आनन्दसँ छैथ किने?

बुद्धिधारी- भगवानक कृपासँ सभ आनन्दित अछि।

सुलक्षणी- भगवान नीक करैथ। अहिना सभ दिन परिवार फुलाइत-फड़ैत रहए।

बुद्धिधारी- एकटा विचार लेल एलौं?

सुलक्षणी- हम कोन जोकरक छी जे अहाँकेँ विचार देब। तखैन तँ जे बुझै छी सएह ने कहब।

बुद्धिधारी- बिपैत बाबूकेँ बड़ कष्ट होइ छैन। तँए विचार भेल जे ओ दोसर बिआह कऽ लथि।

सुलक्षणी- *(कनीकाल चुप रहि)* जहिना बेटा बिपैत अछि तहिना अहूँकेँ बुझै छी बौआ। तँए बजैमे धड़ी-धोखा नै होइए। हमर आशा केते दिन? वृद्ध भेलौं, कखन छी कखन नै, तेकर कोनो ठेकान नै अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचार करबाक अछि।

सुलक्षणी- दुनियाँमे ने सभ मनुख एक रंग अछि आ ने एक रंग चालि-ढालि छै। निको छै अधलो छै।
(कहि चुप भऽ जाइत)

बुद्धिधारी- अहाँक विचार की अछि?

सुलक्षणी- के अपन परिवारकेँ उजड़ैत-उपटैत देखए चाहत।

बुद्धिधारी- अपन जे अखैन परिवार अछि, ओ केना लहलहाइत रहत अइले ने विचारैक जरूरत अछि?

सुलक्षणी- बिपैत हमर बेटा छी आ शिवकुमार पोता छी। दुनू केना नीक-नहाँति जिनगी बितौत सएह ने मोनमे अछि। पोती तँ पाँच बर्खक पछाइत सासुर जाएत।

बुद्धिधारी- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, कहलौं तँ नीके, मुदा...?

सुलक्षणी- मुदा की?

बुद्धिधारी- मुदा यएह जे जहिना पोखैरमे करहर-सौरखीक जनमौटी गाछक पात पकैड़ ओरिया कऽ गाछ पकैड़ जड़िमे (निच्चाँमे) पहुँच उखाड़ल जाइत अछि तहिना केलासँ परिवारक कल्याण हएत।

सुलक्षणी- बौआ, अहाँक बात नै बुझलौं?

बुद्धिधारी- परिवारमे जेते गोरे छी सबहक जिनगीक डोरि पकैड़-पकैड़ ठौर धरबए पड़त। तखने जा कऽ सुढ़ियाएत।

सुलक्षणी- *(मुड़ी डोलबैत)* कहलौं तँ ठीके मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे नीक-अधला बात बाजि मोनकेँ घोर कऽ दैत अछि। जइसँ लोकक विचारमे धक्का लगै छै।
(कहि चुप भऽ जाइत)
(बिच्चेमे पुलकित)

पुलकित- मास्सैब आ चाची, दुनू गोरेकेँ कहै छी। बिपैत भाय एकबतरीए हेता। हमर जे घरवाली मरल रहैत तँ केकरोसँ पुछबो ने कैरतिऐ आ दोहरा कऽ बिआह कऽ नेने रहितौं। *(पुलकितक बात सुनि)*

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* पुलकित, परिवारक संग समाजोक विचार करए पड़ै छै।

पुलकित- समाजकेँ अपने ठेकान नै छै। निकोकेँ अधला कहैए आ अधलोकेँ नीक।

बुद्धिधारी- हँ, से तँ अछि।

पुलकित- (अपना विचारपर जोर दैत) मास्सैब, जे समाज केकरो घर नै बना सकैए ओकरा कोन अधिकार छै जे केकरो घर उजाड़ै।

बुद्धिधारी- कहलह तँ ठीके मुदा औगताइमे किछु करबो तँ सभ नीके नै होइत अछि। अधलो भऽ सकैए।

पुलकित- हँ, से तँ होइतो अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचारक जरूरत अछि। तूँ तँ बिपैत बाबूक परेशानी देख धाँइ दऽ बजलह। तोहर विचार कटैबला नै छह।

पुलकित- एकबेर आरो चाह पीबू तखैन मोन आरो खनहन हएत। जइसँ झब दऽ रस्ता भेटत। *(पुलकितक बात सुनि)*

बिपैत बाबू- बौआ (शिवकुमार) चाह बनौने आबह। पुलकितक कपमे कनी बेसी कऽ चीनी देने अबिहऽ।

पुलकित- हम की आन दुआरे चाह पीबै छी मीठे दुआरे पीबै छी की। जावतो जीबै छी तावतो जँ हँसी-खुशीसँ नै जीयब तँ अनेरे जीबिए कऽ की करब। *(चाह अबैए सभसँ पहिने पुलकितेक कप बढ़बैए।)*

बुद्धिधारी- हमरो कपक चाह कनी पुलकितमे ढारि दहक।

पुलकित- एँह, मास्सैब केहेन गप बजै छी। अनकर हिस्सा खाएब से पचत।

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* हमरा आन बुझै छह?

पुलकित- नै मास्सैब, मुहसँ निकलि गेल। अच्छा कनी ढारि दियौ। *(चाह पीब पान खा)*

बुद्धिधारी- चाची, बिपैत बाबू जँ दोसर बिआह करैथ तँ अहाँकेँ कोनो विरोध नै ने?

सुलक्षणी- नै। आब हमरा की चाही। वस एतबे ने जे पाँच कर भोजन आ पाँच हाथ वस्त्र भेटैत रहए।

बुद्धिधारी- बाउ, शिवकुमार, अहाँ मोनमे की बनैक (पढ़ैक) विचार अछि?

शिवकुमार- अखैन तँ हाइए स्कूलमे छी। मुदा मोनमे अछि जे चाहे इंजीनियरिंग वा एम.बी.ए. पढ़ी।

बुद्धिधारी- बहुत बढ़ियाँ। मुदा जखैन इंजीनियर वा एम.बी.ए. करबह तखैन तँ नोकरी करए कारखाना वा शहर-बजार जेबह। परिवारो (पत्नी) जेथुन। *(शिवकुमार गुम भऽ जाइत अछि)*

बुद्धिधारी- चुप किए भेलह। बाजह।

शिवकुमार- हँ।

बुद्धिधारी- बात तोंही कहऽ जे दादी मरि जेथुन, तों परिवारक संग शहर चलि जेबह, बहिन सासुर चलि जेतह, ऐठाम बिपैत बाबूक दशा की हेतैन?

शिवकुमार- मास्सैब, अहाँ बाबूक संगीए टा नै छिऐन, गुरुओ छी। अपने जे कहब शिरोधार्य अछि।

बुद्धिधारी- बिपैत बाबू, दुनियाँमे मनुख खराब नै होइत अछि। ओकरा बनबैमे नीक-अधला होइ छै। जइसँ नीक-अधला बनैए।

पुलकित- हँ, से तँ होइ छै।

बुद्धिधारी- माए लेल बेटा-बेटी, बेटा-बेटी लेल पिता आ पत्नी (बिआहक पछाइत) लेल पति बनि आगूक जिनगी बना जीब। यएह अन्तिम बात अछि। पुलकित एकटा कनियाँ ताकह।❍❍

शब्द संख्या : 711

तेसर दृश्य-

(तेतरी आ खजुरिया विपरीत दिशासँ अबैत बाटपर भेँट।)

खजुरिया- फुल केतए दौगल जाइ छी। पएरपर पएर नै पड़ैए?

तेतरी- की कहब फुल, देखियौ जे सुरूज सिरपर आबि गेल, अखैन तक भानस नै चढ़ैलौं। अपने (पति) नहाइले गेल हेता भानस चढ़ेबे ने केलौं।

खजुरिया- किए ने अखैन तक भानस चढ़ेलौहेँ?

तेतरी- की पुछै छी फुल, *(मुस्की दैत)* रजकुमराकेँ देखियौ जे पहिलुका *(विआही)* बहु छोड़ि कऽ अबलट लगाकेँ चलि गेल छेलै जे ऐहेन पुरुखसँ खनदान नै बढ़त। जखैन ओ (रजकुमरा) चुमौन कऽ लेलक तखैन फेर घूमि कऽ अपने फुरने चलि आएल।

खजुरिया- चलि एलै तँ रखि लिअ। जहिना अबलट लगा पड़ाएल जे ऐ पुरुखसँ खनदान नै बढ़तै तहिना कमाएत-खाएत अपन रहत। जखैन रहैक मोन हेतै रहत जाइक मोन हेतै जाएत। तइले एते मत्था–पच्ची करबाक कोन जरूरत छै?

तेतरी- जेहने खेलाड़ि मौगी छै तेहने रजकुमरा अपने अछि। हँसि-हँसि बजैत रहैए तँए बुझै छिऐ। नमरी अछि, नमरी।

खजुरिया- ओइ पाछू अहाँक भानसक अबेर किए भऽ गेल। झगड़ा केकरो आ काज छुटि गेल अहाँकेँ?

तेतरी- नून आनए दोकान विदा भेलौं आकि हल्ला सुनलिऐ, भेल जे केकरो किछु भऽ गेलै। ससरि कऽ गेलौं तँ यएह रमा-कठोला देखलिऐ। ओही लटारममे लागि गेलौं।

खजुरिया- फेर भेलै की?

तेतरी- की हेतै। मोन दुनूक लसिआएल बूझि पड़ल। मुदा हारल तँ दुनू अछि। लाजे लोक लगमे की बाजत तँए दुनू अनकर मोन पतिअबै छै। अखैन जाए दिअ फुल। निचेनमे सभ गप कहब।

खजुरिया- भानस हेबे करतै मुदा अदहा गप कहि कऽ छोड़ि देलिऐ। अखैनसँ पेटमे उनटैत-पुनटैत रहत। अनका पुरुख जकाँ की हिनकर पुरुख छैन जे मुँह अलगौतैन?

तेतरी- मुँह जे अलगौत से कोन सपेतकऽ। कमा कऽ हाथमे आनि दइ छैथ मुदा नूनसँ हरैद धरि तँ हमरे जोरह पड़ैए। भरि दिन दौगैत-दौगैत तबाह रहै छी।

खजुरिया- एकटा गप सुनलिऐ हेन?

तेतरी- की? नै!

खजुरिया- गाममे नै छेलखिन?

तेतरी- गाममे की कोनो एक्केटा गप चलैए जे सभ एक्के गप सुनत? रंग-बिरंगक गप पुरवा-पछवा जकाँ सदिखन चैलते रहैए की?

खजुरिया- अखैन ईहो अगुताएल छैथ आ हमरो काज सभ अछि। कखनो निचेनमे दुनू फुल गप कऽ लेब।

तेतरी- तोहुँ हद करै छह। आ जे बिसैर जा?

खजुरिया- एहनो गप विसरल जाइए।

तेतरी- हँ, तँ विसरल जाइए कि? आ जे अहूसँ निम्मन गप आबि जाए तँ हल्लुक गप लोक बिसरिये जाइए किने?

खजुरिया- हँ, बेस कहलैथ। मुदा खरिआइर कऽ नै कहबैन। ऊपरे-झापरे कहि दइ छिऐन।

तेतरी- हँ, सएह कहऽ।

खजुरिया- पढ़ि-लिखि कऽ तँ आरो लोक गाम घिनबैए।

तेतरी- से की?

खजुरिया- एँह, की कहबैन?

तेतरी- नै-नै, कनी फरिया कऽ कहू।

खजुरिया- बिपैत मास्टर दोसर बिआह करता?

तेतरी- तँ ई कोन बड़-भारी बात भेल। वेचाराक स्त्री मरि गेलैन भानस-भातमे दिक्कत होइत हेतैन।

खजुरिया- ऍंह, अहिना बुझै छथिन।

तेतरी- से की?

खजुरिया- आइ जँ बेटा-बेटी नै रहितैन तखैन जँ करितैथ तँ एकटा सोहनगर होइतै। जखैन बेटा-बेटी ढेरबा-जवान भेल तखैन किए करै छैथ।

तेतरी- *(मुँह बन्न केने)* हूँ।

खजुरिया- हमरा काकाकेँ देखलखिन। वेचारेकेँ तँ एक्केटा बेटी भेलैन आ काकी मरि गेलैन। केतबो लोक हिला-डोला कऽ रहि गेल तैयो मानलखिन।

तेतरी- हँ, से तँ बेस कहलौं।
(कनी काल चुप रहि) हूँ...।

खजुरिया- भानसो भातक दिक्कत की होइ छैन। अखैन हाथी सन माइयो छेबे करैन, बेटियो भानस करै जोकर भाइये गेलैन तखैन किए करै छैथ। पुरुखक किरदानी बुझबै।

तेतरी- अपने फुरने करै छैथ आकि घरोक लोकक विचार छैन?

खजुरिया- ऍंह, हद करै छी। अहाँ नै देखै छिऐ जे आबक बेटा-बेटी माए-बापसँ केहेन पुछै छै।

तेतरी- से तँ ठीके कहै छी। मुदा सभ की एक्के-रंग होइए। हमरे घरबला छैथ, मरैयौ बेर तक माइएक कहलमे रहला। बेटो ने मनाही केलकैन।

खजुरिया- बेटा की मनाही करतैन। चुमौन कऽ कऽ कनी घर आबए दियौ तखैन ने हुरयाहा देखबै। जहिना बुढ़ीकेँ अतर-गुलाबसँ मालिश करतैन तहिना ने बेटो-बेटीकेँ टेमपर खाइले देतैन।

तेतरी- सभ सतमाए की एक्के रंग होइए। ने सभ बिऔहती नीके होइए आ ने सभ समदाही अधले होइए। पुरुखे की सभ एक्के रंग होइए?

खजुरिया- हँ, से तँ बेस कहलौं। मुदा ओहिना नै ने लोक बजैए।

तेतरी- से बाजह। गामेमे सोनमाकेँ देखै छिऐ। जहियासँ समदाही एलै तहियासँ घरमे लछमी आबि गेलै। से तँ मनुख-मनुखपर छै।

खजुरिया- मुदा नीके औतैन तेकर कोन बिसवास?

तेतरी- से तँ ठीके।

खजुरिया- मुदा..?

तेतरी- मुदा की? यएह ने जे जेहेन परिवारक लोक रहत तेहने ने नवका मनुख बनत।

खजुरिया- ई की बिपैत मास्टरकेँ बुझै छथिन?

तेतरी- हम तँ नीके बुझै छिऐन।

खजुरिया- घुइयाँ पुरुखक चालि यएह बुझथिन। मुड़ी गोंति कऽ चललासँ हेतैन। महकारी जकाँ पुरुख होइए। तरे-तर तेना ने बिठुआ काटि लेतैन जे बुझबे ने करथिन।

तेतरी- जाए दियौ नीक की अधला अपना परिवारमे हेतैन तइसँ हमरा-हिनका की?

खजुरिया- हमरा की? एना किए बजै छी। गाम की हमर नै छी जे जेकरा जे मोन फुड़तै से करत आ टुकुर-टुकुर देखैत रहब।

तेतरी- अनकर झगड़ा मोल लेब।

खजुरिया- किए ने लेब? झगड़ाक डर करब तँ एक्को दिन गाममे बास हएत।

तेतरी- *(आँखि उठा कऽ ऊपर दिस देख)* बड़ अबेर भऽ गेल। आइ बात-कथा सुनबे करब।

खजुरिया- एकटा बात तँ कहबे ने केलिऐन?

तेतरी- की?

खजुरिया- ढोरबा फेर चुमौन केलक हेन।

तेतरी- ओकरा तँ मारे धियो-पुतो आ घरोवाली छइहे?

खजुरिया- *(बिहुँसैत)* छठम छऐ।

तेतरी- निरलज्जा-निरलज्जी सभ सभ उठा कऽ पीब नेने अछि। जहिना पुरुखक धनमण्डल अछि तहिना मौगीक। एकरा सभले रौदी-दाही ऐबते अछि।❍❍

शब्द संख्या : 823

चारिम दृश्य-

(चिन्तामणिक दरबज्जा)

चिन्तामणि- *(स्वयं)* हे भगवान अधमरू जिनगीमे किए फँसौने छी। अइसँ नीक जे मौगैत दिअ। आशाकेँ जेते हृदेसँ लगबए चाहै छी ओते ओ पिछैर-पिछैर हटैत जाइए आ जिनगीकेँ अन्हार बनौने जाइए। अपनो भ्रम भेल जे आशा-निराशा (अन्हार-इजोत) केँ शब्दकोषक शब्द मात्र बुझलिऐ। मुदा आइ बूझि रहल छी जे खाली शब्दकोषेक शब्द नै जिनगी छी। एते दिन माइयो-बापक उत्तरी गरदेनमे लटकने घर-घराड़ी उपटै छल मुदा आब तेसरो उत्तरी लटकए लगल। खैर, जे जिनगी देलह ओ तँ भोगबे करब। मुदा मरैओ बेर तक माछी जकाँ नाकपर नै बैसऽ देब। जाबे आँखि तकै छी तकै छी, बन्न हएत, हएत।
(पुलकितक प्रवेश)
अहाँ के छी, किनकासँ काज अछि?

पुलकित- आदर्श स्कूलक चपरासी छी, बुद्धिधारी बाबू पठौलैन अछि।

चिन्तामणि- *(आँखि ऊपर उठबैत)* के...। बुद्धिधारी बाबू। आदर्श स्कूलक शिक्षक। ओ तँ हमरा नै जनै छैथ, फेर...।

पुलकित- पता चललैन जे चिन्तामणिबाबूकेँ कन्या छैन। जँ ओ कन्याक बिआह बिपैत बाबूक संग करए चाहैथ तँ...?

चिन्तामणि- बिपैत बाबू...।

पुलकित- हँ-हँ। ओहो सहयोगीएक रूपमे काज करै छैथ।

चिन्तामणि- ओ अविवाहिते छैथ।

पुलकित- नै। पत्नी मरि गेलखिन। दोहरा कऽ करता।

चिन्तामणि- *(व्यग्र होइत)* दोहरा कऽ करता। सौतीनक तर तँ नै भेल। मुदा दोती बरसँ कुमारि कन्याक बिआह...। की अपन बेटीक भरि-भरि दिनक उपासक पूजाक फल भगवान यएह देलखिन। मुदा उपाइए की? मृत्युकाल साधारण खढ़ोक आशा पाबि चुट्टी धारक

धारामे उगैत-डूमैत जान बचाइए लैत अछि। आशा भेट रहल अछि। बाउ, उमेर केते छैन?

पुलकित- हम दुनू गोरे एक बत्तरिये छी। घरो एक्केठीन अछि।
(पुलकितकेँ निच्चाँसँ ऊपर माथ धरि निहारि-निहारि चिन्तामणि देखै छैथ)

चिन्तामणि- बालो-बच्चा छैन?

पुलकित- हँ। एकटा बेटा एकटा बेटी छैन।

चिन्तामणि- तखैन दोहरा कऽ किए बिआह करता?

पुलकित- माए बूढ़े छैन, बिआहक पछाइत बेटी सासुरे बसए लगतैन। नँउऐ-कौंउऐ कऽ बँचलैन बेटा। बेटो सभ तेहेन ढाठी धऽ लेलक जे ओइसँ नीक बेटीए। जे कमसँ कम पावैन-तिहारमे नै सनेस तँ वेनो पठेबे करैए। तँए जुगक अनुकूल अपन-अपन आशा बना जिनगी चलबैत रही।

चिन्तामणि- नीक-नहाँति अहाँक बात नै बुझलौं?

पुलकित- अपने पढ़ल-लिखल नै छी मुदा संगत पाबि किछु बुझल अछि। आगू बढ़ैक होरमे समाज बिखण्डित

भऽ रहल अछि जइसँ गामक दशा दिनानुदिन गिरले जा रहल अछि।

चिन्तामणि- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भाइए रहल अछि।

पुलकित- अहीं कहू जे किसान परिवारमे जनम लेनिहार किसान बनै छला। पूर्वजक लगौल फुलवाड़ीकेँ कोर-कमठौनक संग पानि ढारै छला जइसँ समाजक हरीअरी बढ़ैत रहल। मुदा कल-कारखाना दिस घुसैक समाजक (गामक) घर खसा रहल अछि। एहेन स्थितिमे की कएल जाए।

चिन्तामणि- बाउ, अहाँ चपरासी छी?

पुलकित- हँ। मुदा बिपैत बाबूक लंगोटिया संगी सेहो छी। हमर माए-बाप गरीब छला, नै पढ़ौलैन। ओ (बिपैत बाबू) बी.ए. पास कऽ कऽ हाइ स्कूलमे शिक्षक बनला। मुदा बच्चेसँ जहिना रहलौं तहिना अखनो छी।

चिन्तामणि- बेटा नै बेटी छी तँए जिनगीक प्रश्न अछि। ओना बिआह लेल डेग उठबैमे ने कोनो बाधा अछि आ ने संकोच। मुदा जेते अधिकार हमरा अछि तइसँ मिसिओ कम माएकेँ नै छैन। तँए डेग उठबैसँ पहिने

हुनको पूछि लेब जरूरी अछि। (जोरसँ) केतए छी कनी सुनि लिअ?
(सावित्रीक प्रवेश)

सावित्री- की कहलौं?

चिन्तामणि- *(मुस्कीआइत)* तीन सालक चिन्ता हेट भऽ रहल अछि।

सावित्री- *(बिहुँसैत)* से की? से की?

चिन्तामणि- गीताक बिआहक सूहकार आएल अछि। कनी बुझने-सुझने अबै छी। जँ किछु धएल-धरल विचार हुअए तँ अखने कहि दिअ।

सावित्री- राखल जोगाएल विचार की रहत। पेटीमे राखल पुरान साड़ी जकाँ तरेतर सभ गुमसरि गेल। पहिरै जोकर नै रहल। मुदा तैयो तँ कहबे करब जे नोर बहबैत बेटी सरापे नै।

चिन्तामणि- अहाँ अर्द्धांगिनी छी जेकर आड़िपर बेटा-बेटीक गाछ होइ छै। कोनो बात (विचार) जोर दऽ कऽ हँ नै कहाएब। अखैन समय अछि तँए मोनसँ विचार देब तखने डेग उठाएब।

सावित्री- बरक विषएमे किछु कहि दिअ?

पुलकित- शरीरसँ पूर्ण स्वस्थ, हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। धतपत तीस-पैंतीसक अवस्था हेतैन। पहिल कनियाँ पैछला साल मरि गेलैन। तँए परिवार लेल दोहरा कऽ बिआह करब जरूरी छैन।

सावित्री- नौकरी करै छैथ, तहूमे शिक्षक छैथ। ई तँ दीब बात भेल। जाधैर नोकरी करै छैथ ताधैर तलब भेटतैन आ छुटलाक (रिटायर) उत्तर पेन्शन। *(मुस्की दैत)* पाँच कर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक दुख गीताकेँ नै हएत। गामक नाओं कहू?

पुलकित- धरमपुर।

सावित्री- गामो तँ दुसैबला नहियेँ अछि। लगो अछि। जाबे जीब ताबे आवा-जाही रहबे करत। *(पतिसँ)* एक-दूटा बात विचारणीय अछि।

चिन्तामणि- *(व्यग्र)* से की, से की?

सावित्री- जहाँ धरि उमेरक बात अछि ओहो परमपराक अनुकूले अछि। राजा दशरथ तीनटा बिआह केने रहैथ। किए केने छला? अही दुआरे ने जे पहिल

कन्याँसँ सन्तान नै भेलैन। प्रश्न अछि जे सन्तानक प्रतीक्षामे दस बरख समय लगले हेतैन?

चिन्तामणि- कनी सोझरा कऽ कहियौ?

सावित्री- सन्तान नै हेबाक घोषणा (निर्णए) दस बर्खक पछाइते ने होइ छै। तै बीच तँ ओकर प्रतिकार होइ छै। जोग-टोनसँ लऽ कऽ दबाइ-विड़ोमे दस बरख लगिए जाइत अछि।

चिन्तामणि- हँ, से तँ होइते अछि।

सावित्री- पहिलसँ तेसर पत्नीक बीच पनरह-बीस बरख लगिये जाइत अछि। ऐ हिसावसँ लड़का (बर) उपयुक्त छैथ। दोसर प्रश्न अछि दोसर पत्नीक।

चिन्तामणि- हँ, से तँ ऐछे।

सावित्री- दोसर पत्नी तँ ओतए अधला होइत अछि जेतए सौतीन बनि जिनगी चलैत। से तँ नहियेँ अछि। रहल बच्चाक सतमाए होएब? सासु लेल तँ पुतोहुए हएत।

चिन्तामणि- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ ऐछे?

सावित्री- ई तँ नीके भेल।

चिन्तामणि- केना?

सावित्री- *(हँसैत)* जहिना गुरुसँ श्रेष्ठ सतगुरु होइ छैथ तहिना।

चिन्तामणि- नै बुझलौं?

सावित्री- माएसँ श्रेष्ठ सतमाए ऐ लेल श्रेष्ठ होइत जे माए अपन (कोखिक) सन्तानक सेवा करैत (पालैत-पोसैत) जहन कि सतमाए दोसराकेँ। जँ आन बच्चाक सेवा अपन बच्चा सदृश कियो करैत तँ वएह ने सतमाए भेली।

चिन्तामणि- मुदा...?

सावित्री- हँ। अपना समाजमे सतमाएकेँ सौतिनिया डाहक प्रतीक बुझल जाइत अछि। ठाम-ठीम ऐछो। मुदा (सत-माए) सतमाए तँ ओ भेली जे अपने बच्चा जकाँ दोसरोक बच्चाकेँ बूझि सेवा करए।

चिन्तामणि- *(ठहाका मारि)* आगू बढ़ै छी।ꝏ

शब्द संख्या : 895

अन्तिम दृश्य-

(चिन्तामणिकेँ पुलकित स्कूलक अँगनामे ठाढ़ कऽ बिपैत बाबू आ बुद्धिधारी बाबूकेँ बजा अनैत) चारू गोरे बैसल।

बुद्धिधारी- अपनेक नाओं?

चिन्तामणि- लोक चिन्तामणि कहैए।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ कन्या छैथ?

चिन्तामणि- हँ।

बुद्धिधारी- *(बिपैत बाबूकेँ देखबैत)* यएह बर (लड़का) छैथ। सहयोगी छैथ। हिनक पत्नी पैछला साल मरि गेलखिन। बृद्ध माए आ दूटा बच्चा छैन। आब अपन विचार देल जाउ?

चिन्तामणि- विद्यालयक आँगनमे बैसल छी तँए कहै छी। ओना हम बड़ गरीब छी। उनैस-बीस बर्खक बेटी अछि।

तीन सालसँ बिआहक बात मोनमे नाचि रहल अछि मुदा केतौ नाकपर माछी नै बैस रहल अछि।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ एक्को-पाइ खर्च नै हएत। बिपैत बाबू कमाइ छैथ। सभ खर्च करता।

चिन्तामणि- केहेन बात बजै छी। ई कहू जे लाम-झामसँ बरियाती नै जाएत। मुदा अपना दरबज्जापर सँ बेटी जमाएकेँ पाँच हाथ नव वस्त्र पहिरा अरिआति कऽ विदा नै करब से केहेन हएत?

बुद्धिधारी- जहन सम्बन्ध स्थापित कए रहल छी तहन भेद किए?

चिन्तामणि- जहिना आमक गाछकेँ दोसर गाछक डारिमे बान्हि कलम बनौल जाइत अछि तहिना ने दू परिवार मिलि बनैए। मुदा दुनूक अपन-अपन गुण तँ रहिते अछि।

बुद्धिधारी- नै बुझलौं?

चिन्तामणि- हमर कन्या मिथिलाक ललना छी। एकबेर जइ पुरुखसँ हाथ पकड़बैए जिनगी भरि स्वामी, पति आ गुरुभक्त बनि सेवा करैए। कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नै करैए। भलेँ राम सन बेटाकेँ पिता

वनबास दऽ देलखिन मुदा कौशल्या बात कहाँ कटलकैन।

बुद्धिधारी- से की?

चिन्तामणि- यएह जे रामपर जेते अधिकार पिता दशरथक छेलैन तइसँ कम तँ माए कौशल्याक नै छेलैन। मुदा कहाँ अपन अधिकारक प्रयोग केलैन। आँखि मुनि सुहकारि लेलकैन।

बुद्धिधारी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* बिपैतबाबूक परिवार अलग छैन। जेहने अपने छैथ तेहने माए छथिन। दुनू बच्चा तँ गाइयोक बच्चासँ कोमल आ सुशील अछि।

चिन्तामणि- भाग्य हमरा बेटीक जे लगौल फुलवाड़ीक माली बनि सेवा करत।

अन्तिम दृश्य, मिथिलाक बिआहक।

शब्द संख्या : 273

समाप्त।

कल्याणी

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र-

जेलर-	50 बर्ख।
चन्द्रनाथ-	कल्याणीक भाय, 35 बर्ख।
अनन्त कुमार-	कल्याणीक पिता, 60 बर्ख।
सूर्यदेव-	पढ़ल-लिखल ग्रामीण- 40 बर्ख।
निष्कान्त-	पढ़ल-लिखल ग्रामीण- 35 बर्ख।
क्षितिजदेव-	पढ़ल-खखल ग्रामीण- 35 बर्ख।

नारी पात्र-

कल्याणी-	पढ़ल-लिखल नवयुवती, 23 बर्ख।
प्रतिज्ञा-	पढ़ल-लिखल नवयुवती, 23 बर्ख।
शान्ति-	कल्याणीक माए। उमेर 55 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(जहलक दृश्य। जेलक भीतरसँ जेलर, कल्याणी, प्रतिज्ञा आ दूटा सिपाही निकलैत। फाटकक बाहर आबि कल्याणियों आ प्रतिज्ञो पाछू घुरि जहलकेँ निहारि-निहारि देखैए।)

जेलर- अखैन धरि हम जेलर आ अहाँ दुनू गोरे कैदी छेलौं। मुदा आब जहिना अहाँ दुनू गोरे छी तहिना हमहूँ एकटा अदना मनुख छी। जेलक जिम्मेदार होइक नाते कहै छी जे जँ किछु अभाव भेल हुअए ओ बिसैर जाएब। संगे ईहो कहै छी जे पुन: कैदी बनि जहल नै देखी।

कल्याणी- *(मुस्कियाइत)* कहलौं तँ बड़ सुन्नर बात मुदा जैठाम एक्को इंच जमीन नारी लेल सुरक्षित नै अछि तैठाम...?

जेलर- की सुरक्षित?

कल्याणी- सुरक्षित यएह जे नारी लेल स्वतंत्र जिनगी, कल्पनाक सिवा आरो की अछि। जाधैर नारी अपन शक्तिकेँ

जगा संघर्ष नै करत ताधैर मनुखक जिनगीसँ उतैर पशुक जिनगी जीबैले बाध्य रहबे करत। तँए जरूरैत अछि अपन शक्ति नारी जगत लेल उपयोग करए। जखने आजादी लेल डेग उठौत तखने अहाँक जेल आगू ऐबे करत।

प्रतिज्ञा- केते दिन जहलक डरे नारी अपन स्वतंत्र जिनगीकेँ बान्हि कऽ रखि सकैए। जेम्हर देखू तेम्हर नारीपर अत्याचारे-अत्याचार जहिना घरक भीतर तहिना घरक बाहर। सगतैर एक्के रामा-कठोला भऽ रहल छै। घरसँ निकैलते केतौ अपहरण तँ केतौ छेड़खानी सदैतकाल होइते रहैए। एहेन स्थितिमे इज्जत-आबरूक संग जीब कहाँ धरि संभव अछि।

जेलर- *(मुड़ी डोलबैत)* किछु अंशमे अहाँ कहब मानल जा सकैए।

कल्याणी- *(झपैट कऽ)* किछु अंशमे किए कहै छिऐ हँ, ई बात जरूर जे जहिना सभ मनुखक जिनगी समान नै अछि तहिना अत्याचारोक अछि। मुदा जेहेन माहौल बनल अछि ओइसँ की आभास भेट रहल अछि।

जेलर- *(नमहर साँस छोड़ैत)* खैर, हमर ओकातिये केते

अछि जे अहाँक सभ प्रश्नक उत्तर दऽ सकै छी। मुदा एते जरूर आग्रह करब जे पुन: जहलक आँखि नै देखी।

कल्याणी- जँ जहलक डर करब तँ जिनगी केना भेटत। हँ, ई बात जरूर जे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ सैकड़ो घेराक बीच जहलो एकटा घेरा छी। मुदा ओकरा टपैक तँ दुइए टा उपाय अछि। या तँ कूदि कऽ टपि जाए वा तोड़ि दिअए।

जेलर- *(मुड़ी डोलबैत)* धिया-पुताक खेल नै छी।

कल्याणी- मानै छी जे धिया-पुताक खेल नै छी मुदा अहूँ सुनि लिअ जे जइ पैरुख पाबि नर पुरुख कहबैक अधिकारी बनल अछि ओ सिरिफ पुरुषेक नै नारीओक धरोहर सम्पदा छी। अखैन धरि नारी जगतक नजैर ओइ दिशा दिस नै बढ़ल अछि तँए आँखि मूनि सभ अत्याचार झेल रहल अछि। जखने ओइ दिशा दिस देख आगू डेग उठौत तखने...।

जेलर- *(मुस्कियाइत)* हमर शुभकामना अहाँ सभक संग अछि।

(कल्याणी आ प्रतिज्ञा आगू बढ़ैत। दुनू सिपाही फाटकक भीतर प्रवेश करैत। बीचमे जेलर ठाढ़ भऽ

कल्याणी दिस देखैत। दू डेग आगू बढ़ि कल्याणी पाछू घूमि कऽ तकैत। दुनूक-जेलर आ कल्याणी-आँखिपर आँखि पड़िते कल्याणी मुस्किया दैत। जेलर आँखि निच्चाँ कऽ लैत। पुन: कल्याणी आगू डेग उठबैत। जेलरो भीतर दिस प्रवेश करैत। एकटा पएर भीतर आ एकटा पएर बाहर रहिते पुन: कल्याणी दिस देखैत। तै काल कल्याणियोँ दुनू गोरे पाछू घुरि तकैत तँ जेलरपर नजैर पड़ैत।)

जेलर- *(दुनू हाथ जोड़ि)* अन्तिम विदाइ।

कल्याणी- *(मुस्की दैत)* अन्तिम विदाइ नै पहिल विदाइ। जाधैर अहाँक जहल रहत ताधैर एक नै हजरो बेर आएब।

(फाटक बन्न कऽ जेलर भीतर जाइत अछि। कल्याणी आ प्रतिज्ञा दू डेग आगू बढ़ि)

कल्याणी- अखैन धरि जहिना अहाँ कौलेजक एकटा छात्रा छी तहिना हमहूँ छी। मुदा आब तँ पढ़ाइक अन्तिममे समय छी। परीक्षो भइए गेल। रिजल्ट निकलत जिनगीक लीला शुरू हएत।

प्रतिज्ञा- जिनगियेक लीला किए कहै छी नवालिगक सीमा सेहो टपि गेलौं। जहिया जेल एलौं तहिया ने

नवालिग छेलौं। जइसँ देश आ समाजक प्रति ने कोनो अधिकार छेलए आ ने कोनो कर्तव्य। मुदा से तँ आब नै रहल। ओना बालबोधे जे किछु केलौं ओहो कोनो अधला थोड़े केलौं।

कल्याणी- अखैन धरि जे किछु भेल ओ बाल-बोधक खेल भेल। मुदा जहलक भीतर नवालिगक सीमा टपि वालिक भेलौं। 18 बर्ख पूरा भेल। जिनगी लेल आइ संकल्प ली जे जाधैर नारीपर अन्याए होइत रहत ताधैर चैनक साँस नै लेब।

प्रतिज्ञा- अखैन धरि ने अहाँकेँ ऐ रूपे हम चिन्है छेलौं आ ने अहाँ हमरा चिन्है छेलौं। तँए दुनू गोरे संकल्पक संग सप्पत ली जे जाधैर साँस रहत ताधैर संग-संग रहब।

कल्याणी- निश्चित। जे कियो ऐ धरतीपर जनम नेने अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीवैक अधिकार छे *(किछु काल चुप भऽ)* सृष्टिक शुरूहेसँ देखैत छी जे जहिना ऋषि भेला तहिना ऋषिका सेहो भेली। *(पुन: रुकि)* संग-संग जिनगी बितैबतौं पुरुख नारीक संग भीतरघात करैत-करैत सकपंज कऽ देलैन। जेकर परिणाम भेल जे ओकर पहाड़ सदृश रूप बनि गेल अछि।

प्रतिज्ञा- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ बनि गेल अछि। मुदा जहिना रसे-रसे बंधन सक्कत होइत गेल तहिना रसे-रसे तोड़ौ पड़त। एक्के बेर जँ सभ बंधनकेँ तोड़ए चाहब से संभव नै छै।

कल्याणी- *(मुड़ी डोलबैत)* ई तँ अछि। मुदा दुनियाँमे एहेन कोनो काज नै अछि जेकरा मनुख नै कऽ सकैए। तहन ई बात जरूर अछि जे जे जेहेन काज रहत ओइ लेल ओइ तरहक शक्तिक जरूरैत पड़ैत। तँए जरूरी अछि जे जहिना अखैन हम दुनू गोरे मिलि संकल्प लेलौं तहिना आरोकेँ जोड़ि शक्तिक अनुकूल डेग उठाएब।

प्रतिज्ञा- हँ, से तँ कहलो गेल अछि जे “जमात करए करामात।” जेना-जेना दुर्ग टपैत जाएब तेना-तेना शक्तियो बढ़ैत जाएत। जहिना बुन-बुन पानि मिलि धरतीपर ससैर धारा बनि धारक आकार बना समुद्रक रूप ग्रहन करैत तहिना ने मनुखोक होएत।❍❍

शब्द संख्या : 827

दोसर दृश्य-

(जहलक बाहरी छहरदेवाली टपि कल्याणी आ प्रतिज्ञा। दोसर दिससँ कल्याणीक भाए चन्द्रनाथ आ माए शान्तिकेँ देखैत तँ दोसर दिससँ शान्ति कल्याणीपर नजैर अटकौने। जेना शान्तिकेँ बघजर लगि गेल दुनू आँखिसँ नोर टघरैत। मुदा कल्याणी आ प्रतिज्ञाक मुहसँ खिलैत माने फुलाइत फूल जकाँ हँसी निकलैत।)

कल्याणी- *(आगू बढ़ि)* माए, अहाँ कनै किए छी? बेटी कोनो अधला काज कऽ जहल नै आइलि छलि। *(कहैत दुनू हाथे दुनू पएर पकैड़)* अहाँ असिरवाद दिअ। जहिना समाजक आन माएसँ हटि अहाँ पढ़ैक छूट देलौं तहिना हमरो दायित्व होइत अछि जे समाजक कल्याणक दिशामे आगू बढ़ी। जाधैर परिवारक डेग आगू दिस नै बढ़त ताधैर समाज केना बनत?

(दुनू बाँहि पकैड़ शान्ति कल्याणीकेँ उठबैत। कल्याणी उठि कऽ माइक दुनू आँखिक नोर दुनू हाथसँ पोछि आँखिपर आँखि गरा आगूमे ठाढ़ि। शान्तिक आँखिसँ धरती, पहाड़, समुद्रक रूप

छिटकैत तँ कल्याणीक आँखिसँ सिंहक रूप छिटकैत)

चन्द्रनाथ- अहाँ सभ ताबे एतै अँटकू। एकटा सवारी नेने अबै छी। *(कहि भीतर जाइत)*

प्रतिज्ञा- चाची, आइ धरि नारी जगत, कमला-कोसीक धारक संग कारी मेघक बरखा सदृश अदौसँ नोर बहबैत आएल अछि मुदा जाधैर ओइ नोरकेँ बहैक कारणकेँ नै रोकल जाएत ताधैर बहब केना बन्न हएत? जहिना बेटी कल्याणी छी तहिना प्रतिज्ञो छी। असिरवाद दिअ।

शान्ति- *(माइक नजैरसँ नजैर मिला)* तूँ सभ जहल किए एलह?

कल्याणी- परीछाक आखिरी दिन एक्केटा विषयक परीछा रहै। जे दोसर खेपमे माने दोसर सत्रमे रहै। चारि बजे समाप्त भेल। ओना प्रश्न हल्लुके बुझि पड़ल। जहाँ सवाल पढ़लौं आकि मोन हल्लुक भऽ गेल। नीक जकाँ लिखलौं। डेरा अबैत रही आकि रस्तामे देखलिऐ...।

शान्ति- की देखलहक?

कल्याणी- आगू-पाछू विद्यार्थी (संगी) सभ डेरा अबैत रहै। हम दुनू गोरे (कल्याणी आ प्रतिज्ञा) पाछू रही। हमरासँ करीब चारि लग्गी आगू रूपा असगरे अबैत रहै। मोटर साइकिलपर एकटा युवक पाछूसँ जाइत रहै। रूपा लग आबि पहुँचते मोटर साइकिलेपर सँ देह परहक ओढ़नी खींचि लेलक।

(ओढ़नी खिंचैक सुनि शान्ति चौंकि गेलि। जेना बाँसक दू टुकड़ी रगड़सँ आगिक लुत्ती छिटकैत तहिना शान्तिक आँखिसँ लुत्ती छिटकल)

शान्ति- अँए, एते अन्याए?

प्रतिज्ञा- चाची, अहाँ गाम-घरमे रहै छी तँए नै देखै छिऐ। एहेन-एहेन अन्याए हजारक हजार रोज होइए।

शान्ति- राही-बटोही किछु ने कहै छै?

प्रतिज्ञा- की कहतै। निर्लज पुरुख नारीक लाज (इज्जत) थोड़े बुझैए। उ सभ तँ नारीकेँ खेलौना बनौने अछि। एक्के पुरुख अपन बहु-बेटीकेँ इज्जतक नजैरिये देखैए मुदा

दोसराकेँ रण्डी-बेश्या बुझैए।
(क्रोधसँ शान्ति थर-थर कँपए लगल। दुनू आँखि लाल भऽ गेलै)

शान्ति- तब की भेलै?

प्रतिज्ञा- वेचारी रूपा, आगू-पाछू ताकि, मुड़ी गोति आगू बढ़ैत गेल। मुदा हमरा दुनू गोरेकेँ नै देखल गेल। सड़कक कातेमे पीचक पजेबा उखड़ल रहै। दुनू गोरे पजेबा हाथमे लऽ दौग कऽ ओकरापर फेकलौं। एकटा तँ हूसि गेलै। मुदा दोसर कपारमे लगलै।

शान्ति- वाह-वाह, भगवान हमरो औरुदा तोरे सभकेँ देथुन। भाँड़मे कियो दादा हुअए। नारी-जातिक सान बचेलौं। तेकर उत्तर की भेल?

प्रतिज्ञा- ओ मोटर साइकिलपर सँ खसि पड़ल। कपारसँ खून गड़-गड़ चुबए लगलै। हल्ला भेलै। तखने ट्रैफिक पुलिस आबि कऽ दुनू गोरेकेँ पकैड़ पहिने थाना लऽ गेल। थानासँ जहल पठा देलक।

शान्ति- मुदा हम तँ दोसरे-तेसरे बात सुनलौं।

प्रतिज्ञा- की?

शान्ति- केते बाजब कोइ किच्छो तँ कोइ किच्छो बजैए। एक गोरे कहलक जे दुनू गोरे परीछामे चोइर करैत पकड़ल गेल।

प्रतिज्ञा- चाची, झूठकेँ सत्य बनाएब आ सत्यकेँ झूठ बनाएब छुद्दर पुरुख सभक गुण छी। जहिना बहिन कल्याणीक माए छिऐ तहिना हमरो छी अहाँ लग झूठ बाजब।

शान्ति- *(किछु मोन पाड़ैत)* बेटी प्रतिज्ञा, तूँ जे कहलह ओ अपनो मोनमे अबैए। मुदा बिना पुरुखक मदैतिये नारी जीब केना सकैए?

कल्याणी- *(उत्साहित भऽ)* अखैन धरि नारीकेँ पुरुख अन्हारमे रखलक। जइसँ ओकरा अपन सभ गुण हरा गेलइ। घरक भीतर रखि ओकरा दुनियाँक बात बुझै नै देलक। जइसँ ओ परती खेत नहाँति सभ किछु रहितो पानि◌-बिहाड़ि, जाड़, रौद, भुमकमक चोटसँ निष्क्रिय भऽ गेल।

शान्ति- ऐ बातकेँ नारी किए ने अखैन धरि बुझि रहल अछि?

कल्याणी- एकरो कारण छै। सृष्टिक निर्माण पुरुख नारीक संयोगसँ होइत अछि। जहिना गाड़ी, दू पहियासँ चलैए, तहिना। मुदा नारीक पेटमे नअ मास रहि बच्चाक जनम होइत अछि। ऐ दौरमे नारीकेँ कठिन कष्टक सामना करए पड़ैए। जेकर लाभ पुरुख उठौलक।

शान्ति- *(मुड़ी डोलबैत)* हूँ...।

कल्याणी- बच्चाक पालन खाली पेटे धरि नै जनम लेला पछाइतो होइत अछि। जइमे घेरा जाइत अछि। घेराइत-घेराइत एते घेरा जाइत जे जिनगी बदैल गुलाम बनि जाइत अछि।

शान्ति- *(मुड़ी डोलबैत)* एहेन स्थितिमे नारी पुरुखक बरबैर केना कऽ सकैए?

प्रतिज्ञा- *(उत्तेजित भऽ)* कए सकैए, चाची।
(सवारी लऽ कऽ चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- चलै चलू। सवारी आबि गेल।❍❍

शब्द संख्या : 697

तेसर दृश्य-

(अनन्त कुमारक घर। दरबज्जापर एकटा चौकी राखल आ बगलमे कुरसीपर अनन्त कुमार बैसि, आँखि बन्न केने)

अनन्त कुमार- (स्वयं) दिनो-दिन जिनगी जपाल भेल जा रहल अछि। जे दिन जे क्षण बीत रहल अछि ओ नरकक वास भऽ रहल अछि। मुदा मऽरबो तँ हाथमे नहियेँ अछि अपने हाथे आत्महत्यो केना कए लेब?
(चाह नेने शान्तिक प्रवेश। पतिक हाथमे कप पकड़बैत शान्ति चौकी बगलमे ठाढ़। एक घोट चाह पीबि अनन्त कुमार शान्ति दिस देख)

अनन्त कुमार- जिनगी भार भऽ गेल। अकाजक अन्न सन देबकेँ हत्या करैत छी। नीरस जिनगी कोकनल गाछ सदृश होइत अछि। जे पील, गराड़क घर बनि जाइत अछि तहिना जिनगी बुझि पड़ैए।

शान्ति- सोग केलासँ सोग थोड़े मेटाएत। सोग तँ समस्याकेँ जनम दइए। जे बिना केने थोड़े मेटाएत?

अनन्त कुमार- जखने घरसँ निकलै छी तखने रंग-बिरंगक अड़कच-बथुआ काचर-कुचर सुनए लगै छी। केकरा की कहियौ। केते लोकसँ माथ चटाउ। केकरो मुँहमे जाबी लगौनाइ असान छी।

शान्ति- केते दिन मुड़ी गोंति समाजमे जीब?

अनन्त कुमार- नीक हएत जे झब दए कल्याणीक बिआह करा दिऐ। आन गाम गेलापर तँ लोकक बात नै सुनब। जहिना पोखैरक पानिक हिलकोर जे दू-चारि दिनमे शान्त भऽ जाइ छै तहिना असथिर भऽ जाएत।
(चन्द्रनाथक प्रवेश)

शान्ति- भने बउऔ आबिऐ गेल। दुनू बापूत छीहे विचारि कऽ रस्ता नकालि लिअ।

चन्द्रनाथ- *(अकचकाइत)* कथीक रस्ता माए? कोन एहेन दुर्ग टूटि कऽ खसि पड़ल जे बाबूकेँ हम विचार देबैन।

अनन्त कुमार- बौआ, नीक की बेजाए, अपना परिवारमे नै बाजब तँ केतए बाजब। जखने गाम दिस टहलै छी,

सोझहा-सोझही तँ नै मुदा अढ़ दाबि-दाबि मौगियो आ मरदो की बजैए तेकर कोनो ठेकान नै।

चन्द्रनाथ- की बजैए?

अनन्त कुमार- कियो बजैए जे कल्याणी जहल जा कुल-खनदानक नाक-कान कटौलक। तँ कियो बजैए जे केहेन माए-बाप छै जे बेटीक वएस बितल जाइ छै मुदा बिआह करैले नीने ने टुटै छै।

चन्द्रनाथ- बाबू, जहिना दिनक उनटा राति होइ-छै तहिना नीक अधलाक बीच सेहो होइ-छै ज्ञान-अज्ञानक बीच सेहो होइ छै। धरतीपर ओते अधलो अछि। हमरा बुझने तँ अधले बेसी अछि। किऐक तँ नीक एक्के तरहक होइ छै जखैन कि अधला अनेको रंगक-रावण-कौरबक सखा जकाँ।

अनन्त कुमार- तेतबे नै ने, ईहो बजैए जे पढ़ा-लिखा कऽ बेटी तेहेन बना लेलक जे चौक-चौराह पुरुखे जकाँ मुँह-कान उधारि निधोख भाषणो करैए।

चन्द्रनाथ- बाबूजी, हमर बहिन कुम्हरक बतिया नै ने छी जे ओंगरी बतौने सड़ि जाएत। जँ कियो आँखि उठौत वा ओंगरी बतौत तँ ओकर आँखियो फोड़ि देबै आ ओंगरियो काटि लेबै। अपन माए-बहिन दिस देखह जे माटिक मुरुत बनौने अछि।

शान्ति- बौआ, हम दुनू परानी तँ पाकल आम भेलौं जाबे जीबै छी, ताबे जीबै छी। कखनी खसि पड़ब तेकर कोन ठीक। मुदा तूँ दुनू भाए-बहिन तँ से नै छह। भगवान करथुन जे हँसैत-खेलैत शतायु हुअह।
(कल्याणीक प्रवेश)

अनन्त कुमार- बेटी कल्याणी, तोरा सभले ओइ गीरहकेँ तोड़ि देलौं जइ बंधनक बीच कन्या अज्ञानक काल-कोठरीमे जीबैए।

कल्याणी- बाबूजी, जहिना अहाँ समाजमे पहिल डेग उठा नव फुलक गाछ रोपलौं तहिना अहाँक आत्मा एक नै अनेक फुलक फुलवाड़ी लगौत।

शान्ति- बेटी, भगवान हमरो दुनू बेकतीक औरुदा तोंरे दुनू भाए-बहिनकेँ देथुन। जाबे बच्चा छेलह ताबे जेतए धरि भऽ सकल सेवा केलिय। आब तँ तोंरे सबहक दिन-दुनियाँ भेलह, हम सभ तँ चलचलाउ भेलौं।

कल्याणी- माए, नारीक संग अत्याचार करैत-करैत पुरुख एहेन अभ्यस्त भए गेल अछि जे उचित-अनुचितक सीमे

समाप्त भऽ गेल छै। जइसँ नारी खसैत-खसैत एते निच्चाँ खसि पड़ल अछि जे स्वरूपे समाप्त भऽ गेल अछि।

अनन्त कुमार- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भऽ गेल अछि।

कल्याणी- बाबू, ई दुनियाँ कर्मभूमि छी "वीर भोग्या बसुंधरा" जे जेहेन कर्म करत ओ ओहन फल पौत। जहिना डोरीक एक भत्ता अहाँ तोड़ि हमरा अन्हारसँ इजोतक रस्ता खोललौं। तहिना एक-एक भत्ता तोड़ि नारी जगतक बन्धन तोड़ि देबै।

अनन्त कुमार- बंधन तँ सक्कत अछि मुदा ओकरा तोड़नौं बिना तँ कल्याण नहियेँ अछि। मुदा ऐ लेल ज्ञान, साहस आ धैर्यक जरूरैत अछि।

कल्याणी- *(मुस्की दैत)* पैरुख सिरिफ पुरुखे लेल नै नारियो लेल विधाता देने छथिन। जरूरैत अछि ओकरा पकड़ैक। हमहूँ आब नवालिग नै बालिक भेलौं तेतबे नै, किरिणक डोरसँ सुनि सेहो देख लेलौं। जहिना सृष्टिक विकासमे पुरुख-नारी समान अछि तहिना जाधैर दुनूक बीच समानता नै आओत ताधैर चैनक साँस नै लेब

अनन्त कुमार- बहुत कष्ट हएत?

कल्याणी- *(हँसैत)* "जीवन नया मिलेगा, अन्तिम चिता में जल के"। जहिना भिनसुरका सुरूज देखने दिनक अनुमान होइए तहिना तँ नवालिगक आड़ि हमहूँ जहलेमे टपलौं किने।OO

शब्द संख्या : 683

चारिम दृश्य-

(दरबज्जाक चौकीपर चद्दैर ओढ़ि, मुँह उधारने अनन्त कुमार पड़ल। पँजरामे शान्ति बैसल)

शान्ति- *(देह छूबि)* बोखारसँ देह जरैए आ अहाँ जिद्द बन्हने छी जे दरबज्जापर सँ अँगना नै जाएब।

अनन्त कुमार- आइ धरि परिवार अँगने भरि रहल मुदा कल्याणी सन बेटी कुलमे जनम लेलक। जे आँगनसँ निकैल समाज रूपी परिवारमे रहए चाहैए, बाप होइक नाते हम दरबज्जो धरि नै अरिआति देबै।

शान्ति- कहलौं तँ ठीके मुदा माए-बाप, बेटा-बेटीकेँ जनमे ने दइ छै करम तँ अपने काज करै छै।

अनन्त कुमार- हमरा ऐ परिवारक कोनो भार नै अछि जहिना बाबू दरबज्जा बना कए गेला तहिना अन्तिम साँस धरि दरबज्जाक रक्षा माने मान-सम्मान करैत रहब।
(चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- *(अवितहि)* बाबू किए, चद्दैर ओढ़ने छिऐ?

शान्ति- बोखारसँ आगि फेकै छैन। केतबो कहै छिऐन जे पुरबा लहकै छै, चलू आँगन, से कहै छैथ जे अन्तिम समैमे दरबज्जापर प्राण छोड़ब। पुरबा-पछबाक काज छिऐ। बहनाइ, बहऽ।

चन्द्रनाथ- बाबू, जे बात अहाँ आइ बजलौं से पहिने कहाँ कहियो बाजल छेलौं।

अनन्त कुमार- तोहर प्रश्नसँ हृदए जुड़ा गेल बौआ। माए छथुन तँ फुटल ढोल। भरि दिन पनचैती केने घुरती जे सभ शान्तिसँ मिलि-जुलि कऽ रहू। मुदा जहिना शक्ति बढ़ल जाइए तहिना हिनकर पनचैतियो बढ़ल जाइ छैन।

चन्द्रनाथ- *(ठहाका मारि)* हूँ-हूँ...।

शान्ति- बुढ़ा तँ नीक-अधला सभ दिन कहलैन। जखैन-जुआन रही तखैन बरदास भेल आ आब तामस उठत। दुनियाँमे जँ कियो संग पुरलैन तँ सभसँ बेसी यएह ने पुरलैन। मुदा आब भगवान अन्याए केलैन जे पहिने हमरा नै ओछाइन छड़ौलैन।

अनन्त कुमार- नीक हेतह जे कल्याणियोँ केँ सोर पाड़ि लहक।
(चन्द्रनाथ भीतर प्रवेश। कल्याणीक संग मंचपर प्रवेश।)

कल्याणी- बाबू, किछु होइए?

अनन्त कुमार- नै।

शान्ति- की कहथुन। बोखारसँ देह जड़कै छैन।

कल्याणी- कोनो दबाइ नै देलहुन?

अनन्त कुमार- दबाइ खाइबला रोग नै छी बेटी। मोनमे एते खुशी आबि गेल अछि जे सौंसे देह हँसैए।

कल्याणी- *(मने-मन सोचैत। मुँहक पोज सुख-दुखक यएह अवस्था छी)* माए किछु कहै छैथ अहाँ किछु कहै छी? *(आवेशमे अबैत)* किए बजेलौं?

अनन्त कुमार- केतए गेल छेलह?

कल्याणी- महिलाक एकटा बैसारक आयोजन करए चाहै छी जइमे विधवा समस्याक सम्बन्धमे विचार करब।

अनन्त कुमार- ई तँ छोट समस्या छह। अखैन नव उत्साह छह पैघ समस्याकेँ नजैरमे रखि डेग उठाबह।

कल्याणी- *(विस्मित होइत)* केना ऐ समस्याकेँ छोट समस्या कहै छिऐ।

अनन्त कुमार- भने तँ समाज दिस डेग उठेबे केलह, बुझवे करबहक। मुदा पहिने समाजकेँ पढ़ए पड़तह। *(उठि कऽ बैसैत)* चद्दैर उतारि सिरमापर रखि दुनू पएर मोड़ि कए बैसैत सभ कियो एकठाम बैसह।
(चारू गोरे चौकीपर बैस जाइए।)

अनन्त कुमार- सभकेँ अपन परिवारमे, एक सीमा धरि लाज-विचार करक चाही माइए छथुन पहिने हिनका विषएमे सुनि लाए।
(पतिक बात सुनि शान्ति देह-हाथ समेट सांकांक्ष होइत बैसैत। चन्द्रनाथ मुड़ी गोति लेलक। कल्याणी पिताक आँखिपर आँखि गड़ा लेलक।)

अनन्त कुमार- जहियासँ माए एलखुन तहियासँ जिनगीक अन्तिम पड़ाव धरि संगे छी। गुण-अवगुण मनुखमे होइते अछि। मुदा सदैतकाल दुनूपर नजैर रखि गुणकेँ

बढ़ेबाक आ अवगुणकेँ कम करबाक कोशीस करक चाही। जइसँ नीक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ब।

कल्याणी- ई तँ बड़ कठिन काज छी, बाबू।

अनन्त कुमार- *(मुस्की दैत)* हँ, ई विवेकक काज छी। अही दुआरे मनुख सभ जीवसँ ऊपर भेल। ओना ऊपर होइक दोसरो कारण ई अछि जे धरतीपर जेते जीव-जन्तु अछि तैमे मनुख अन्तिम रूप छी।

कल्याणी- माइक चरचा करए लगलिऐ?

अनन्त कुमार- हँ। देखहक, ऐ धरतीपर अनेको लोक अछि। जेकर सीमा निर्धारित कर्म आ ज्ञान केने अछि। ऐ अर्थमे माए बहुत दूर छथुन। मुदा अहू अवस्थामे आत्मा, माने विवेक सएह कहैए जे अखनो धरि दोसराक पैतपाल करबाक शक्ति छैन।

चन्द्रनाथ- *(मुड़ी उठा)* एते दिन किए...?

अनन्त कुमार- हँ, ठीके तूँ पूछए चाहै छह। जहिना माली, बिना फूलक बीआ देखनौं पात देख, बुझि जाइए जे ई

अमुक फूलक गाछ छी। तहिना कल्याणीकेँ देख विवेक जगि गेल।

चन्द्रनाथ- एते दिन विवेक सूतल छेलै?

अनन्त कुमार- नै बौआ, जहिना आमक गाछक जड़िमे जनमल तुलसी गाछक बाढ़ि ठमैक जाइए तहिना ठमैक गेल छेलइ। मुदा कल्याणीक आँखिक ज्योति जहिना सुनयनाक बेटी सीताक छेलैन तहिना बुझि पड़ैए। तँए अनासुरती विवेक पोनगि गेल।

कल्याणी- माए, बाबूक संग अहूँ असिरवाद दिअ।

शान्ति- अखैन धरि जे डीह, पुरखाक कएल काजक इतिहास छी ओकरा जीबित दुनू भाए- बहिन मिलि रखब।

कल्याणी- झाँपल-तोपल बात अहाँक नै बुझि सकलौं।

शान्ति- हम तँ बेसी बिसैरिये गेलौं। बाबूए कहथुन।

अनन्त कुमार- बेटी कल्याणी, पहिने परिवार बुझि लहक। तूँ दुनू भाए-बहिन छह। जहिना तूँ घरसँ निकैल दोसर घर

जेबह तहिना दोसरा घरसँ अपनो घर औती। ऐसँ मनुखक स्थानान्तर (ट्रान्जेक्शन) शुरू भेल। ओना अपनो परिवारमे लड़का-लड़की होइत (जनम) अछि, किए दोसर परिवारसँ सम्बन्ध जोड़ल जाइए?
(चन्द्रनाथ बहिन दिस हाथ बढ़ौलक, कल्याणी भाइक हाथमे हाथ रखलक। माटिक मूर्ति जकाँ अनन्त कुमार देखैत। अपने मने शान्ति बरबराए लगली)

शान्ति- सासु-ससुरक बनौल परिवारकेँ अखैन धरि निमाहि रहल छी। जहिना बूढ़ा दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ बिना हँसौने नै जाइ दइ छेलखिन तहिना अखैन धरि निमाहल।

कल्याणी- ई तँ काजक भार भेल, माए। मुदा असिरवादो ने चाही?

शान्ति- बेटी, सामाक माए-बाप जकाँ, तोहर माए-बाप नै छथुन। जहिना सामा लेल चकेबा सभ किछु तियागि संग पुरलक तहिना तोरो भाए करथुन।
(चन्द्रनाथकेँ भारसँ दबैत देख अनन्त कुमार)

अनन्त कुमार- हँ, कहै छेलिअ। जहिना शंकर बीज उन्नतिशील होइत तहिना मनुखोक प्रक्रिया अछि। (बात

बदलैत) सदैतकाल माए माथ खोड़ैत रहै छथुन जे किए बेटीक (कल्याणीक) बिआह अनठौने छी। मुदा हम अनठौने कहाँ छी।

कल्याणी- *(आँखि लाल केने)* बाबू...।

अनन्त कुमार- *(मुस्कियाइत)* बेटी हुनको विचार अधला नहियेँ छैन। बेटीक प्रति माइक ममता बेसी होइ छै। मुदा परिवारमे बिआह साधारण काज नै छी। तहूमे अखैन, सभ तरहक संक्रमणक प्रक्रिया चलि रहल अछि।

चन्द्रनाथ- की संक्रमण?

अनन्त कुमार- पहिने अपन इतिहास बुझि लाए। अदौमे स्वयंवर प्रथाक चलैन छल। जहिक माध्यमसँ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ भार दऽ देलकैन। मुदा आइ की देखै छहक जे तेते ओझरी लगि गेल जे जेते सोझरबैक रस्ता अपनौल जाइए ओते ओझरी बेसियाइए जाइ छै।

कल्याणी- बाबू, हमहूँ अबोध बच्चा नै छी बालिग भेलौं। तँए...।

अनन्त कुमार- बिल्कुल ठीक सोचै छह। जखैन महिलामे पैंतालीस-पचास बर्ख धरि सन्तान उत्पन्न करबाक शक्ति रहैए तखैन कम उमरमे बिआह तँ बड़ जरूरी नहियेँ भेल?

कल्याणी- असिरवाद दिअ। समाजक बीच किछु करबाक जिज्ञासा भऽ गेल अछि।

अनन्त कुमार- बेटी, हृदेसँ असिरवाद दइ छिअ। जहिना अदौमे कोनो अछूत जाति जखैन कोनो गाममे प्रवेश करै छल तखैन कोनो एहेन बाजा बजबै छल जे लोक बुझि जाइ छेलइ।

कल्याणी- *(चकोना होइत)* की कहि देलिऐ?

अनन्त कुमार- पुरना गप कहलिअ। आब तँ गीताक जुग एलै। तँए जहिना कृष्ण कुरुक्षेत्रमे शंखक अवाजसँ अपन जानकारी दइ छेलखिन। तहिना...।

कल्याणी- *(आँखि-कान चकोना करैत चारू भाग देख)* कनी बुझा कऽ कहियौ?

अनन्त कुमार- समाजमे किछु करए चाहै छह तँ काल्हिये बेरू पहर दुर्गास्थानमे बैसार करह।

कल्याणी- काल्हिसँ नीक जे रवि दिन बैसार करब नीक रहत। ओइमे नोकरियो-चाकरियो सभ रहता।

अनन्त कुमार- नोकरी-चाकरी कए कऽ जे गामक नास केलक ओकरा बुते गाम बनौल हएत। जहिना भिनसुरके सुरूज देखलासँ दिन भरिक अनुमान लोक कऽ लइए तहिना मनुखक किरदानीए देख कऽ मनुखकेँ चिन्हए पड़तह।

कल्याणी- हुनका बुते केना गामक विचार कएल हेतैन।

अनन्त कुमार- *(खिसिआ कऽ)* दिल्ली सरकारमे सभसँ बेसी बिहारक रेलमंत्री भेला। मुदा की देखै छहक? जेकरा तूँ अबोध कहै छहक ओकर जिनगियो छोट छै। जिनगीक समस्यो कम होइत अछि।

कल्याणी- अखने जा कऽ ढोलियाकेँ ढोलहो दइले कहि अबै छिऐन। साँझू पहर ढोलहो दऽ देब। ❍❍

शब्द संख्या : 1140

पाँचम दृश्य-

(दुर्गास्थानक आगूमे एक भाग पुरुख एक भाग महिला बैसल। एकटा डायरी, पेन नेने महिला दिससँ आगूमे कल्याणी-प्रतिज्ञा। पुरुख दिससँ सूर्यदेव, क्षितिजदेव, निष्कान्त बैसल।)

सूर्यदेव- आजुक बैसार लेल कल्याणी आ प्रतिज्ञाकेँ हृदेसँ शुभकामना दइ छिऐन जे एकटा नव परम्पराक शुभारंभ केलैन। आशा संग आगू बढ़ति सएह शुभकामना।

कल्याणी- भाय साहैब, अहाँ सभ तरहेँ अगुआएल छी तँए आगूक बाटक जेते ज्ञान अहाँकेँ अछि ओते हम थोड़े बुझै छी।
(बिच्चेमे निष्कान्त)

निष्कान्त- सुरजू भाय, हमरो बात सुनि लिअ। काल्हिये दुनू परानीक झगड़ाक पनिचैतीमे गेल छेलौं। वेचारा विसनाथकेँ देखते छिऐ जे डेढ़ सौ रूपैआक कमाइ घर जोड़ैयामे करैए। सभ दिन कमा कऽ अबैए आ

घरवालीक हाथमे दऽ दइ छै। घरवाली केहेन जे टी.भी. कीनैले पाइ जमा करैत जाइए। रौद-बसातमे काज करैबलाकेँ एकटा गंजीसँ थोड़े पार लगतै। तइले घरवाली पाइए ने दइए।

कल्याणी- *(मुड़ी डोलबैत)* की पनचैती केलिऐ?

निष्कान्त- सँए-बहुक झगड़ा पंच लबरा। हम नै बुझै छिऐ जे पावरक लड़ाइ छी। दुनू गोरेकेँ थोड़-थाम लगा देलिऐ। दू विचारक लड़ाइ हमरे बाप बुते फड़ियाएल हएत।

सूर्यदेव- अच्छा एकटा कहऽ जे दुनू गोरेमे घरक गारजन के छी?

निष्कान्त - उँ-हूँ सौंसे गामेमे सबहक घरमे मौगियेक जुति अछि। एहेन जे लोकक दशा भेल छै से किए? कमाइ छै कोइ, हुकुम केकरो। कोनो घर आकि कोनो गाम, जाबे मरदक जुतिमे नै चलत ताबे ओहिना गाम आगू मुहेँ ससैर जाएत?

कल्याणी- कबिलाहाक खेल देखबै। दिन पनरहम गुरुकाका कानि◌-कानि कहैत रहैथ जे सभ दिन परदा-पौसकेँ

मानलौं। पुतोहुजनीकेँ बेटा नोकरी लगा देलकैन। दस कोसपर स्कूल छैन। दुनू परानी जे जेतए छैथ, खाइ-पीबै राति धरि घूमि कऽ अबै छैथ। बेटा तँ बेटा भेल मुदा पुतोहुक सेवा सासु करैन, ई हमरा पसिन नै अछि?

सूर्यदेव- ई नै पुछलहुन जे समय एना किए भेल?

निष्कान्त- आठ घण्टा खटनीक पछाइत जे समय बँचैए तेतबे ने समाजमे समय लगाएब ओते जे पुच्छा-पुच्छी करैए लगब, से ओते निचेन रहै छी।

कल्याणी- भैया, नारीकेँ बरबैर अधिकारक हवा चलि रहल अछि से की?

सूर्यदेव- मदारी सबहक खेल छी। नारी, पुरुखसँ हीन केना बनैत गेल? जाधैर ऐ इतिहासकेँ नै देखब ताधैर कारण केना पाएब। केकरोसँ अधिकार मंगबै? ऐ लेल विकासक प्रक्रियाकेँ नीक जकाँ बुझए पड़त

कल्याणी- काज केना शुरू कएल जाए, भाय।

सूर्यदेव- बहुत बातक जरूरैत अखैन नै अछि। मुदा किछु बात कहि दैत छी। पहिल, नारीकेँ चिन्हैले नजैर ओतए दिअए पड़त जैठाम हवाइ जहाजमे उड़ैत, इलाइची फोड़ि-फोड़ि मुँहमे दैत जिनगी अछि तँ दोसर दिस भरि-भरि छाती पानि टपि (खच्चा, धार) भीजल कपड़ा पहीरि गोबर बिछैक जिनगी अछि।

कल्याणी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* अद्भुत बात भाय अहाँ कहलौं।

सूर्यदेव- कल्याणी, अहाँ अखैन फुलाइत फुलक कली छी। तँए जरूरैत अछि शुद्ध माटि-पानिक। प्रत्येक साल समाजमे माने गाममे साएसँ ऊपर आन गामक बेटी अबै छैथ। गामक बेटी जेबो करै छैथ। प्रश्न उठैत सिरिफ देहेटा अबैत-जाइत आकि लूरि-बुधि सेहो अबैत जाइत अछि।

कल्याणी- अखैन तँ आरो विकट भऽ गेल अछि जे देशक एक कोनसँ दोसर कोनमे रहनिहारक (पालल-पोसल) बीच सम्बन्ध स्थापित रहल। जइसँ खान-पान, बात-विचार लूरि-ढंग सभ टकरा रहल अछि।

सूर्यदेव- अहिना खाइ-पीबैमे देखियौ। एक आदमीक (परिवारक) एक दिनक खर्च जेते होइत अछि दोसर

दिस ओहन परिवारक भरमार अछि जइ परिवारमे दसो-बर्खक आमदनी ओते नै छै। केकरो असली नोर चुबै तब ने से तँ पियौजक झाँसक नोर चुबबैए।

कल्याणी- खेती-बाड़ीक की स्थिति अछि?

सूर्यदेव- सरकारी मेला लगल। गाममे चारिटा ट्रेक्टर चलि आएल। एक तँ बाढ़िमे बारह आना बरद गाममे मरि गेल, दोसर जे चारि आना बँचल ओहो सभ गोबर उठबै दुआरे बेचि लेलैन। अखैन गाममे एक्कोटा बरद नै अछि। ले बलैया ट्रेक्टर कदबामे सकबे ने करै छै। खेती कोनो हएत?

कल्याणी- अजीव-अजीव बात सभ कहै छी, भैया?

सूर्यदेव- केते कहब बहिन। जेते खर्चमे पहिने लोक प्रोफेसर बनै छला तेते अखैन बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअ लगल अछि। केकर बेटा पढ़त। शिक्षा केहेन भऽ गेल अछि धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने छैथ जे हम नीक तँ हम नीक। के फड़ियौत? जखैन कि प्रश्न नान्हिटा अछि जे जइसँ जिनगी नीक-नहाँति आगू मुहेँ समैक संग ससरै।

समाप्त।

शब्द संख्या : 622

समझौता

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र-

श्याम- (इंजीनियर)
सुकान्त- (इंजीनियर)
फुलेसर- (मध्यम किसान)
कुसेसर- (बँटेदार)
मुनेसर- (बँटेदार)
रौदी- (बँटेदार)
अनुप- (बँटेदार)
झोली- (बँटेदार)

स्त्री पात्र-

रूपनी- (कुसेसरक पत्नी)
रेखा- (श्यामक पत्नी)

पहिल दृश्य-

(कुसेसरक आँगन)

रूपनी- कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छेलै ओहो सभ पजेबाक घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर- कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अछि जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखैन जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जाएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएब। तखैन तँ आरो कर्जा लदा जाएत।

रूपनी- लूरि की कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकेँ कोन लूरि छेलै। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छेलै। मति बदललै, ममियौत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर- सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँटे ने भेल।

रूपनी- अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अँगनामे कुरसीपर चाह पिबैत रहए। जखने देखलक आकि कुरसीएपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकैड़ दोसर कुरसीपर बैसैले कहलक।

कुसेसर- *(मुस्की दैत)* तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी- से की कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने (हमरे) लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूदपुरवालीकेँ चाह-बिस्कुट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर- की सभ गप भेल?

रूपनी- कोनो कि एक्केटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर- अखैन केते कमाइए?

रूपनी- तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तेते बिसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रूपैआ अपना सबहक सत्तरि रूपैआ

होइ छै। मिहनतो करैए तँ सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरुमटुम।

कुसेसर- की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी- केकरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धनक ढेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ किछु ओकरे होइतै।

कुसेसर- तब की करब?

रूपनी- इंजीनियर (श्याम) साहैबकेँ समाद दऽ दियौन जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छैन आकि रौदीमे जरि जाइ छैन। जजात जरैए आ दहाइए बँटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर- कहलौं तँ ठीके मुदा...।

रूपनी- मुदा-तुदा किछो ने। नै समाद पठेबैन तँ नै पठबियौन। मुदा खेतक आड़िपर जाएब छोड़ि

दियौ। जोत-कोड़ छोड़ि दियौ। जखैन गाम औता आ पुछता तँ कहि देबैन।

कुसेसर- आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी- की अछि? ओते महगक खाद कीनै छी, बीआ कीनै छी, खटै छी। तैपर अदहा बाँटि दइ छिऐन। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर- एकठाम दस सेर भऽ जाइए। बोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी- अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जइ दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर- से केना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जइ दिन काज करए जाएब तै दिन अपन काज केना चलत।

रूपनी- तँ की गोला-बड़दक सेबनेसँ, जीब?

(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर- कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर- हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर- सोहराइवाली किए रँगल छथुन्ह?
(कुसेसर छुप्पे रहैत)

रूपनी- भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर- हँ भैया, अपनो मोन कखनो-कखनो मानि लइए।

मुनेसर- से की?

कुसेसर- सोहराइए वालीक सुइत (हँसुली) बन्हकी लगा कऽ खेती केने छेलौं। देखते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूजियो लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।

रूपनी- *(तरंगि कऽ)* हिनका जे कहबैन भैया से की हिनका नै होइ छैन। जेहने बँटेदार हम तेहने तँ ईहो छैथ।

मुनेसर- कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपए?

रूपनी- छै उपए भैया?

मुनेसर- की?

रूपनी- इंजीनियर साहैबक खेत छिऐन। दहाउ आकि रौदीयाउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतैन। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।

मुनेसर- कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।

रूपनी- एहेन आशाकेँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबैन। कहाँदन बड़का हाकिम छथिन। बुझता तँ बड़ बढ़ियाँ नै तँ हम सभ बिना पूजीए काहि काटब ओ अछैते पूजीए काहि कटता।

मुनेसर- कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिये कऽ कहबैन।❍❍

शब्द संख्या : 682

दोसर दृश्य-

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम- *(चाह पिबैत)* कल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ किछु सम्हारि लिअ।

रेखा- *(तमसाइत)* की सम्हारब आ की नै सम्हारब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेचि लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम- कोनो कि खगैए जे बेचि कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छिऐन, जाधैर रहतैन ताधैर ने लोक नाम लेतैन जे फल्लांक छिऐन। तेतबे नै, अपन लगिते की अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा- भरि दिन तँ हिसाबे जोड़ै छी कनी जोड़ि कऽ देखलिऐ जे केते पूजीसँ केते आमदनी होइए।

श्याम- सभठाम हिसाबे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ जाइ छै। अरबो-खरबोक पूजीसँ एक्को-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छैथ आ हम...।

रेखा- जिनका दोसर रस्ता नै छैन ओ कि करता। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम- मिथिलाकेँ दुनियाँ देवलोक बुझैए। तैठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा- हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम- कहिया नै सुनलौं?

रेखा- कहिया सुनलौं?

श्याम- जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।
(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त- भजार छी यौ?

श्याम- हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीब?

सुकान्त- विचारे कऽ रहल छेलौं जे अहाँसँ भेँट करी। काल्हि गाम जाएब।

श्याम- किए?

सुकान्त- बँटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा- कहै छिऐन जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेचि कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूजी ने पूजी बनबैए। जेते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएब तँ ओहिसँ केते बर आमदनी हएत।
(रेखाक बात सुनि सुकान्त मुड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै *।)*

श्याम- भजार, गुम्म किए छी?

सुकान्त- ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा...?

श्याम- मुदा की?

सुकान्त- जे बात कहि रहल छैथ ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम- रूकि किए गेलौं?

सुकान्त ठीके कहब छै जे जेते लोक तेते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम- समाजक पढ़ल-लिखल (वुधिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ की करत? तँए ने अहाँसँ पुछैक प्रयोजन।

सुकान्त- की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम- हँ, सएह कहू।

सुकान्त- पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेचि एतै आनि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोबार जे करए जाएब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरियोक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम- की केलौं?

सुकान्त- पत्नी कहलैन जे खेत-पथार अहाँक कीनल तँ नै छी तखैन बेचब किए। स्त्रीगणक सोभाव हम बुझै छी। अखैन भलेँ बेचि कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ की बजती?

रेखा- की बाजत? केकरो बजने की हेतै?

श्याम- की बजती?

सुकान्त- अपने नै बुझै छेलौं मदु पत्नी कहलैन जे किछुए दिनक पछाइत घराड़ी घराड़ीए रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे कीनत ओ भट्टा उपजौत की परती बनाएत तेकर कोनो ठीक छै।

श्याम- हँ, से तँ नहियेँ छै।

सुकान्त- केकरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घराड़ी छिऐ तँए नढ़ियो भुकै छै वा भट्टा उपजौल जाइ छै।

श्याम- *(नमहर साँस छोड़ैत)* फेर की केलिऐ?

सुकान्त- मोन औना गेल। पुछलयैन तँ कहलैन जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीच दऽ दियौन। ओ सभ

अदैल-बदैल एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता। अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधैर जीब ताधैर भार तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम- अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा- कौआसँ खैर लुटाएब कोन कबिलती भेल?

सुकान्त- एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे केते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा- जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त- देखैमे भलेँ एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ चीज एक्के रंग लगितै।❍❍

शब्द संख्या : 610

अन्तिम दृश्य-

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलेदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बँटेदार)

फुलेसर- श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीब कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम- नोकरीमे की कोनो लज्जति रहल। समय छल जखैन लोक हकिमानी करै छल आ अपना जकाँ खाइ छल। आब तँ निच्चाँ-ऊपर मालिके-मालिक।

फुलेसर- *(हँसैत)* एहेन उटपटाँग बात किए कहलौं?

श्याम- सिरिफ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तेते अछि जे नै किछु बूझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलेसर- केते लोन अछि?

श्याम- पैछला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकैल जाइए।

फुलेसर- तब तँ दरमाहा बँचबे करत।

श्याम- हँ।

फुलेसर- भगवान करैथ केतौ रही चैनसँ रही।

श्याम- बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलेसर- खर्च करै छी आकि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर- फुलेसर भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। केते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलेसर- झाँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर- फुलेसर बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर साहैब पाँचटा बँटेदार छी। अखैन धरि अदहा-अदही उपजा बँटैत एलिऐन। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नै,

बिगड़ै छैन। उपजा नै होइ छैन। खेत तँ बँचले रहै छैन। मुदा हमरा सबहक तँ सभ किछु चलि जाइए।

श्याम- अहाँ सभ अदहा बाँटि कऽ की हमरेटा दइ छी। आकि सभकेँ-सभ दइ छै। जे अदौसँ अछि।

फुलेसर- जे समय बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुन: घुरत नै। मुदा आँखियो मुनि कऽ जीब उचित नै।

मुनेसर- ओते चिक्कारीमे गप करबाक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल, भेल। बिना कहने छोड़ि दैतयनि से नीक नै होइत तँए सोझहामे कहै छिऐन जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलेसर- एना औगुता कऽ किए बजै छी। केना रोग दबाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किए ने विचारि कऽ रस्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजौत।

श्याम- फुलेसर, पत्नीक विचार छैन जे बेचि लिअ। मुदा एकटा दोस्त छैथ ओ कहलैन जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलिऐन। बातो सत्य जे जे गाममे

रहता गाम हुनकर छिऐन। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उचित रस्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलेसर- केते गोटे स्कूल बनबै छैथ, केते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरत अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) केँ समुचित उपए कए उपजा बढ़ौल जाए।

श्याम- उपजा केना बढ़त?

फुलेसर- बारह मासक सालमे सिरिफ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैए। खूब बरखा भेल दहार भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्ण करैत रहऽ।

मुनेसर- फुलेसर बौआ, अहाँ देखते छी जे दूटा हाथ-पएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए की हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर साहैब, सभ तरहेँ सम्पन्न छैथ मुदा छिआ तँ अही गामक। तँए...।

श्याम- तँए की?

फुलेसर- श्यामबाबू, अहाँ सिरिफ माटि बँटेदारकेँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा केना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम- जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलेसर- बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोंरिग आ एकटा दमकल कीनि बँटेदारकेँ दए दियौ। जखैन पानि हाथमे आबि जाएत तखैन बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक बिसवासू खेती आ चारि मास अदहा भऽ जाएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बँचौल जा सकैए।

श्याम- बड़बढ़ियाँ।

बँटेदार- एतबेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बँटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर साहैबक पूजी रहतैन। तँए आरो किछु पूजी लगबैक जरूरत छैन।

श्याम- से की?

फुलेसर- खेत जोतैले बड़द, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम- बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा आपसी की हएत?

फुलेसर- खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूजी भेल। बैंकक जे सूदि छै ओकरा धियानमे रखि आपसी हएत।

मुनेसर- की इंजीनियर साहैब, मंजूर अछि?

श्याम- अहाँ सभ कहू।

कुसेसर- ए-मस्त।

फुलेसर- जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा...।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीकार केलैन।)

समाप्त

शब्द संख्या : 637

तामक तमघैल

पात्र-परिचय

पुरुख पात्र-

1. रविन्द्र- उम्र : 45 बर्ख।
2. चन्द्रदेव- उम्र : 45 बर्ख।
3. सुनरलाल- उम्र : 35 बर्ख।

स्त्री पात्र-

1. रागिणी- उम्र : 65 बर्ख।
2. बलाटवाली- उम्र : 60 बर्ख।
3. पीपरावाली- उम्र : 25 बर्ख।
4. अनुराधा- उम्र : 45 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(जेठ मास। एगारह बजैत। जेठुआ दृश्य।)

पीपरावाली- *(माथपर छिट्टामे पुरना पार्ट-पुर्जा साइकिलक नेने)* लोहा-लक्कर बेचै जाइ- जाएब ई.. य..अ..अ..ऐ...? *(रागिणी आ बलाटवाली घरक ओसारपर बैसल गप-सप्प करैत। कवाड़िनक अवाज सुनि..)*

रागिणी- कनी लोहा-लक्करवालीकेँ एम्हरे अबैले कहियौ। *(ओछाइनपर सँ उठि बलाटवाली आगू बढ़ि..)*

बलाटवाली- हइ पीपरावाली, कनी एम्हरे आबह। *(माथपर छिट्टा नेने पच्चीस बर्खक पीपरावाली छपुआ साड़ी पहीरने, पएरक चप्पल फटफटबैत अबैत.. ।)*

पीपरावाली- काकी, कनी छिट्टा टेक देथु। *(दुनू गोरे छिट्टा उतारि निच्चाँमे रखैत। माथ परहक बीड़बा निच्चाँ रखि आँचरसँ चानिपर चुबैत पसीना पोछैत। तैबीच रागिणी भीतरसँ -घरसँ- एकटा तामक तमघैल आनि आगूमे रखैत..)*

रागिणी- कनियाँ, हमरा तँ बुझले ने छेलए जे तोहूँ लोहा-लक्करक कारोबार करै छह। नै ते...?

पीपरावाली- दादी, अपने करै छी आकि दीन करबैए?

रागिणी- सासु-ससुर आ घरबला नै छह?

पीपरावाली- सासु-ससुर तँ घिना कऽ मुइल जे घरोबला तेहने अछि।

रागिणी- से की?

पीपरावाली- की कहबैन। पतिक खिघांस केने तँ पाप लागत। मुदा छिपौनौं तँ जिनगीए जाएत। *(गुन-धुनमे पीपरावाली पड़ि जाइत..)*

बलाटवाली- दीदी, अही वेचारीक की सुनथिन। अपने सबहक नै देखै छथिन। हिनके बेटा-पुतोहु छैन, दस-बारह बर्खसँ कम गाम एना भेल हेतनि।

रागिणी- बाहरम बरख छी।

बलाटवाली- हिनके की कहबैन, हमरे नै देखै छथिन जे जहियासँ घरबला मुइल तहियासँ दुनू-बेटा-पुतोहु कोनो गरना मे रहए देने अछि। तखैन तँ अपना लुरिये-बुधिये जीबै छी। *(रागिणी आ बलाटवालीक बात सुनि पीपरावाली..)*

पीपरावाली- दादी, ई बड़का छैथ। हम कहुना भेलौं तँ हिनकर धिए-पूते भेलिऐन। धिया-पुता जे माए-बाप लग झूठ बाजे सेहो नीक नै।

बलाटवाली- माइए-बाप किए कहै छहक, लोककेँ झूठ बजबे नै करक चाही।

पीपरावाली- काकी, कहलैथ तँ बेस बात, मुदा हम सभ तँ धंधा करै छी। झुठेक खेती छी। निच्चाँ-ऊपर सगतैर एक्के रंग।

रागिणी- बलाटवाली, जहिना अहाँ भरि दिन खुरपीसँ घास छिलै छी तहिना जे गपोकेँ छिलबै तँ उ घास जकाँ उखड़त की आरो असुआएल लोक जकाँ छिड़िया कऽ पसैर जाएत।

बलाटवाली- हँ, तँ आगू की कहए लगलहक हइ पीपरावाली?

पीपरावाली- घरबला दऽ कहए लगलयैन। की कहबैन काकी, बजैत लाज होइए। जहिना बुढ़बा -ससुर- तरिपीबा रहए तहिना बेटो छै? *(कहि चुप भऽ पुन: आँचरसँ चानि पोछए लगैत..)*

रागिणी- कमाइ-खटाइ नै छह?

पीपरावाली- से जे कमैते तँ अहिना रौदमे वौऐतौं। बापकेँ तँ खेत-पथार रहै बेचि-बिकिन कऽ पीलक। आब तँ ने खेत पथार अछि आ ने कमाइबला।

रागिणी- बच्चा कएटा छह?

पीपरावाली- दू भाए-बहिन अछि। जेठका छह बर्खक आ छोटकी चारि बर्खक।

रागिणी- अपने जे भौरी करए चलि जाइ छह तँ बेटा-बेटीकेँ बाप देखै छै किने?

पीपरावाली- की देखितै जनिपिट्टा। भरि दिन पीब कऽ अड़-दड़ बजैत रहैए। जहाँ किछ बाजब की सोहाइ लाठी लगा दइए।

बलाटवाली- तोहूँ किए ने उनटा दइ छहक?

पीपरावाली- धुर काकी, ईहो सएह कहै छैथ। कुल-खनदान की पुरखेटा बँचबैए आकि जनीजातियो। हमरा जे केतबो देह धुनत तँ ओकरा दोख नै लगतै मुदा हम जे उनटा देबै तँ कुल-खनदानक नाक कटतै आकि नै?

रागिणी- भरि दिनमे केते कमा लइ छहक?

पीपरावाली- दादी, कमाइएपर ने ठाढ़ छी। दुनू बच्चोकेँ पोसै-पालै छी आ घरोबलाकेँ पाँच-दस रूपैआ पीएे लऽ देबे करै छिऐ ने?

बलाटवाली- एहेन छुतहर घरबला छह तँ किए ने छोड़ि दइ छहक?

पीपरावाली- काकी, मरलो-जड़ल अछि तँ घरेबला छी। यएह कहथु जे जे सुख घरबलासँ होइ छै से दोसरसँ हएत।

रागिणी- आब तँ हुसि गेलह। नै जे पहिने बुझल रहितए जे गाममे तोहूँ लोहा-लक्करक कारवार करै छह तँ तोरे दैतिअ।

पीपरावाली- केकरा हाथे बेचलखिन?

रागिणी- झंझारपुरक एकटा वेपारी अबैए, ओकरे हाथे।

पीपरावाली- झंझारपुरबला वेपारी तँ गरदैन कट सभ छी।

रागिणी- से की?

पीपरावाली- अनकर की कहबैन, अपने कहै छिऐन। आठ बरख पहिने हमर बाप खुआ चानीक हँसुली दुरागमनमे देलक। ऐठाम दिन घटल। पाँच बर्खक पछाइत जखैन वएह हँसुली ओही वनीमा ऐठाम बेचए गेलौं तँ रूपा कहि अधिये दाम देलक।

रागिणी- छोड़ह दुनियाँ-जहानक गप। अपन बाल-बच्चा, घर-परिवारक गप करह, जे केना ठाढ़ रहत? केकरा कहब भल आ केकरा कहब कुभल। कोइ अपना ले करैए।

बलाटवाली- कनियाँ, नैहरोमे यहए काज करै छेलह?

पीपरावाली- *(दुनू आँखि मीड़ैत..)* काकी, हिनकर पएर छूबि कहै छिऐन, कहुना भेली तँ माइए-पितिआइन भेली। गाम मोन पड़ैए ते...?

बलाटवाली- चुप किए भेलह? ऐठाम की कियो पुरुख-पातर अछि जे धरबाइ छह। नैहरामे के ने खेलाइ-धुपाइए।

पीपरावाली- धुर बुढ़िया नहितन। एक्को-पाइ बजैमे संकोच नै होइ छैन।

रागिणी- ओहिना बलाटवाली चौल करै छह। बाजह...?

पीपरावाली- दादी, नैहर मोन पड़ैए तँ सुमारक होइए। माए-बापक बड़ दुलारू छेलिऐ। चारि भाँइक बीच असगरे बहिन छिऐ।

रागिणी- बिआह करै काल बाप देखा-सुनी नै केने छेलखुन?

पीपरावाली- अनकर दोख की देबै दादी। दोख अपन कपारक। जे कपारमे सटि गेल सहए ने हएत।

रागिणी- हँ, से तँ सएह होइ छै। मुदा तैयो तँ लोक लड़का-लड़कीक मिलान देख ने बिआह करैए।

पीपरावाली- सोझमतिया बाप ठकहरबा सबहक भाँजमे पड़ि गेल।

रागिणी- ऐठामसँ आरो आगू जेबहक की घूमि जेबहक?

पीपरावाली- भऽ गेल भरि दिनक कमाइ। बालो-बच्चा देखना बड़ी खान भऽ गेल आ रौदो चंडाल अछि।
(तमघैल उनटा-पुनटा कऽ देख बलाटवाली..)

बलाटवाली- आब ऐ सबहक कोनो मोल रहल दीदी। घरमे अन्न रहत तँ लोक माटियोक बरतनमे रान्हि-पका खा सकैए।

रागिणी- बड़ी खान तोरो भऽ गेलह कनियाँ। एक्केठाम बैसने काज नै चलतह। बाजह, केते दाम देबहक?

पीपरावाली- दादी, हिनका लग झूठ नै बाजब। एक तँ केते दिनसँ कारेवार करै छी। तहूमे एहेन तमघैल आइ पहिले दिन अभरल हेन। आइ रखि लथु। भाओ बूझि कऽ दोसर दिन लऽ जाएब।

रागिणी- एकरा नेने जाह। जेतेमे बिकेतह तइमे तूँ अपन बोइन निकालि दऽ दिहऽ ।

बलाटवाली- बड़ निम्मन चीज छैन।

रागिणी- जहिना सासु-ससुरक बीचक जिनगी, बेटा-पुतोहुक बीच बदैल जाइ छै तहिना अह्रू तमघैलकेँ भेल।

पीपरावाली- से की दादी, से की?

रागिणी- *(विस्मित होइत..)* की कहबह! नैहरमे जहिया देलक आ ऐठाम आएल तहिया घरक गिरथानि भऽ रूपैआ-पैसा रखैक तिजोरी बनल रहए। मुदा जखैन चोर-चहारक उपद्रव बढ़ल तखैन बुढ़हा -ससुर- झँपना दऽ ओछाइनिक तरमे गाड़ि कऽ रखै छला। आब तँ सहजे घरे ढनमना गेल तँ एकरा के पूछत।

बलाटवाली- कनियाँ, दीदियोकेँ खगता छैन। ताबे नून-तेल करैले अधो-छिधो दऽ दहुन आ लऽ जाह।

पीपरावाली- *(पचास रूपैआक नोट दैत..)* दादी, ताबे एते रहए देथुन। एक खेप गामपर सँ रखने अबै छी। एक घोंट पानियोँ पीब लेब।

बलाटवाली- अखैन खाइ-पिबै बेर भऽ गेल। जँ अखैन नहियोँ आबि हेतह तँ ओही बेरमे, बेरू पहर लऽ जइहऽ ।

पीपरावाली- हँ सेहो हएत। जँ आइ नै आबि हएत तँ काल्हियो लऽ जाएब।

रागिणी- आब तोहर चीज भेलह। देखते छहक चोर-चहारक उपद्रव। तँए नीक हेतह जे साँझो पड़ैत आइए लऽ जइहऽ।

पीपरावाली- बड़ बढ़ियाँ!❍❍
शब्द संख्या : 1000

दोसर दृश्य-

(खैर-चुन मिला, रागिणी अल्मुनियम डेकचीक पेनमे लगबैत..)

रागिणी- कपार फुटने लोकक सभ किछु फुटए लगै छै आ जुटने सभ किछु जुटए लगै छै। जखैन नूनो-तेल जोड़ैमे भीड़ पड़ैए तखैन डेकची कीनब असान अछि। केते दिन चुन-खैर साटि काज चलत। जखैन फुटि गेल तखैन आरो बेसीए होइत जाएत की दढ़ हएत।
(बाड़ीए देने झटकल बलाटवाली अबैत...)

रागिणी- किए सिताएल नढ़िया जकाँ बाड़ीए-बाड़ी पड़ाएल

एलह हेन?

बलाटवाली- *(हँफैत)* की कहबैन दीदी, ई की कोनो नै जनै छथिन जे जेहने बेटा अछि तेहने पुतोहु। बीचमे हम दुश्मन।

रागिणी- की करबहक, जखैन बेटे माएकेँ नै चिन्हलक, जेकरा नअ मास पेटमे रखलक तखैन पुतोहु तँ सहजे दोसराक बेटी छी।

बलाटवाली- कहै तँ दीदी ठीके छथिन, मुदा इएह कहथु जे ओइ घर-दुआरमे हमर किछो ने अछि। हम केतौसँ दहा-भसा कऽ आएल छी।

रागिणी- से के कहै छह! लोकक मतिये मरा गेल अछि। जे माए-बाप दादा-दादी एतेटा जिनगी बिता एते देखलक ओ किछु ने आ छौड़ा-छौड़ी किछु ने देखलक ओ बुद्धियार भऽ गेल अछि। से नै देखै छहक।

बलाटवाली- हँ, से तँ देखै छिऐ। सभ कहैए जे जुग-जमाना बदैल गेल आ बदलल किच्छो देखबे ने करै छिऐ तँ केना बिसवास हएत।

रागिणी- जहिना दिशांस लगने लोक पूबकेँ पछिम आ उत्तरकेँ दछिन बुझए लगैए तहिना भऽ गेल अछि।

बलाटवाली- नै बुझलयैन?

रागिणी- जुग-जमाना बदलल नै आगू डेग बढ़ौलक हेन। बदलैक माने होइ छै एकटाकेँ हटा दोसर आनब। से नै भेल हेन। जँ से होइते तँ देखतहक सभ किछु आगिमे जड़ि गेल आकि बाढ़िमे दहा गेल आ फेरसँ सभ किछु नवका भऽ गेल।

बलाटवाली- छोड़थु ऐ मगजमारी गपकेँ। अपन बात बिसैर जाएब। अनकर गप सुनने मगज भरिएबे करै छै। जाबे अपन बात नै बुझब ताबे माथ हल्लुक केना हएत?

रागिणी- की भेलह हेन जे एते...?

बलाटवाली- की कहबैन खेलरा-खेलरीक गप, दुनू एक्के रंग अछि। एते दिन मौगीक गप नीक लगै छेलै, आब जे हुकुम चलबए लगलै तँ बकछुहुल लगै छै।

रागिणी- तूँ तँ केहेन बढ़ियाँ जीबै छह। दुनू पहर दू पथिया घास अनै छह आ दुनू साँझ खाइ छह। बेटा-पुतोहु जे घर दफानियेँ लेलकह तँ आरो जान हल्लुके केलकह किने?

बलाटवाली- हँ, से तँ भेल। मुदा से देखल जाइए। जेते काल बाधमे रहै छी तेतबे काल ने, जखैन अँगनामे रहै छी तखैन केना देखल जाएत।

(तही बीच सुनरलाल ललकैत अबैए..)

सुनरलाल- दादी, ऐ बुढ़ियाकेँ पुछियौ जे किए छिटकल घुरैए।

बलाटवाली- दीदी, ऐ छौड़बाकेँ पुछथुन जे हमरा माए बुझैए। तखैन तँ अपन बनौल घर छी, लछमीक (गाए) सेवा करै छी वएह पार लगौती।

सुनरलाल- हम तोरा माए नै बुझलियौ आकि अपने पुतोहुकेँ कपारपर चढ़ा लेलेँ। जे तोरा कपारपर चढलौ ओ कुदि कऽ हमरा कपारपर नै चढ़ि जाएत।

बलाटवाली- हँ रौ, चारू कातसँ हारलेँ हेँ तखैन तूँ हमरा बुझबै छेँ। आइ तक एक्को दिन भेलौ जे माएकेँ कोनो तीरथ करा दिऐ। ई तँ धैन दीदी जे लाटमे जनकोपुर, सिंहेसरो आ कुशेसरो देखलौं।

रागिणी- *(बलाटवालीकेँ चोहटैत)* तोहूँ बड़े बजै छह, अखैन तक अपन उमेरोक ठेकान नै छह। किए बुढ़ियापर बिगड़ल छहक बौआ?

सुनरलाल- माएपर किए बिगड़ब। देखियौ जे हाथपर ओते पाइ नइए जे पनरहम दिन बेटाक नाओं कोचिंगमे लिखाएब तैपरसँ कन्यादानी नोत सासुरसँ चलि आएल हेन?

बलाटवाली- दीदी, बात छिपा कऽ बजै छैन। ई दुनूटा चाहैए जे गाए बेचि भोज खा आबी।

रागिणी- कनी फरिछा कऽ कहऽ?

बलाटवाली- ऐ धड़कटहाकेँ पुछथुन जे मात्रिक उसैर गेल आकि अछि। इज्जत बँचबै दुआरे भातिज सभकेँ कहि देलिऐ जे बौआ, आब ओते चलि-फिर नै होइए जे आएब-जाएब करब। ओहो सभ परदेशीया, गाम अबैए तँ दस-बीस रूपैइयौ आ लत्तो-कपड़ा दऽ जाइए। एकरा पुछथुन जे एक बीत नुओ कीनि कऽ दइए।

रागिणी- तोहूँ बड़ रगड़ी छह बलाटवाली। कनी फरिछा कऽ कहऽ बौआ?

सुनरलाल- दादी, ननौरवालीक बहिन बेटीक बेटीकेँ बिआह छी। सभटा परदेशीया भऽ गेल। नवका-नवका विधि बेवहार सभ करैए। पुरना गामक लोक लए छोड़ि देने अछि। रमेशक सभ संगी झंझारपुर कोचिंगमे नाओं लिखौत, ओकरा हम नै लिखेबै से केहेन हएत?

रागिणी- ऐ काजमे के मुहछी मारतह। भगवान करथुन चारियो अक्षर जे पढ़ि लेतह ओते नीके हेतह किने। अहुना लोक बजैए जे पढ़ल-लिखल हरो जोतत तँ सिरौर सोझ हेतै। कनियाँक की विचार छैन?

सुनरलाल- ओ कहैए जे सबहक ठाठ-बाठ बजरूआ रहतै तैठीन जे हम जाएब से केना जाएब। हमरा देख ओ सभ हँसत नै।

रागिणी- बौआ, जाबे असथिर मोनसँ घरक नीक-अधला नै बुझबहक ताबे अहिना हेतह। तोरा जे कहबह से अपने नै देखै छह। बेटा-पुतोहु शहरमे खेत कीनलक हेन। घर बनौत। आ हम ऐठाम नून-तेल ले मरै छी।

सुनरलाल- अखनो जे एकरती चुहचुही अछि से अही बुढ़ियापर। खेत-पथारक कोनो लज्जैत अछि। गोरे बेर बाढ़िये चलि अबैए तँ गोरे बेर रौदीए भऽ जाइए। गोटे साल हबे तेहेन बहैए जे दने भौर भऽ जाइ छै। किड़ी-फतीगिंक चरचे कोन।

रागिणी- बौआ, घरक पुरुख तँ तोंही ने छहक? तोंही ने गारजन भेलहक?

सुनरलाल- हँ, से तँ छिऐ मुदा कियो मोजर देत तखैन ने। ई बुढ़िया अखनो बेदरे बुझैए तँ घरवाली की बुझत?

बलाटवाली- थुक देथुन एहेन छौंड़बाकेँ?

रागिणी- दुनियाँमे माइयक सेवा बेटा लेल ओहन होइत जेकर जोड़ा नै छै। तखैन रंग-बिरंगक माए-बाप, बेटा-बेटी भऽ गेल अछि। तँए दुनियाँ दिस नै देख अपन ऐनामे माएकेँ देख हृदैमे समुचित जगह देबाक चाही।

बलाटवाली- दीदी, पैघ फड़क पैघ लत्ती होइ छै, मुदा छोटक तँ छोटे होइ छै।

रागिणी- हँ से तँ होइ छै। अच्छा बौआ, एते दूरक लत्ती केना पकैड़ लेलकह। नैहर-सासुर धरिक लत्ती तँ ठीक छै मुदा नोनी साग जकाँ केना एते चतैर गेलह।

सुनरलाल- दादी, की कहब। ई सार मोबाइल जे ने करए। मोबाइलेपर नोत-पिहान, ए.टी.एम.सँ लेन-देन तेहेन रस्ता धड़ा देलक हेन जे फुदियोसँ बेसी लोक उड़ए लगल हेन।

रागिणी- बौआ, अनकर की कहबह, अपना पोताकेँ दस बरख भऽ गेल अछि, अखैन तक एक नैन देखलौं तक नै। तखैन तँ छातीमे मुक्का मारनहि छी जे जखैन बेटे नै तखैन पुतोहुए आ पोते-पोती केतए।

सुनरलाल- तखैन की करी दादी?

रागिणी- बौआ, किछु जे धाँइ दऽ कहि देबह से नीक नै हएत। किए तँ घरमे *(परिवारमे केते)* केते रंगक लोक रहैए। अपना रंगे सभ देखै छै। तँए एक्के बात एककेँ नीक लगै छै दोसरकेँ अधला। जेकरा अधला लगतै ओ तँ अधले कहत।

सुनरलाल- दादी, अहाँक बात माएओ मानैए। अहाँ जे कहब सएह करब।

रागिणी- बौआ, देखहक जखने कमाएत कोइ आ खर्च करत कोइ तखने किछु-ने-किछु गड़बड़ हेबे करत।

सुनरलाल- तखैन?

रागिणी- यएह जे परिवारकेँ सभ संस्था बूझि इमनदारीसँ जीबए।

सुनरलाल- ननौरवाली केना सुढ़ियाएत?

रागिणी- बौआ, बेटा तोंरे नै ननौरोवालीक छिऐ। स्कूलमे की खर्च होइ छै से तँ तूँ बुझै छहक। मुदा माए नै बुझै छै। तँए कहक जे रमेशक नाओं स्कूल जा लिखा दियौ।

बलाटवाली- बेस कहलिऐ दीदी। बैसल-बैसल देह पोसैए आ बात गढ़ैए। भने कहलिऐ?

सुनरलाल- कहने थोड़े चलि जाएत। कहत जे बुझले ने अछि वौआ जाएब।

रागिणी- *(मुस्कियाइत)* बौआ, यएह बात सभकेँ बुझए पड़तै। सोझहे कौआ जकाँ अकासमे कुचड़ने नै ने हेतै।

बलाटवाली- दीदी कहथुन ने, जे हाटपर दू सेर सीम, भट्टा कीनत तँ संगे दुनू गोरे जाएत। आ स्कूलमे जा कऽ नाओं लिखा देतै, से नै हेतै। तैकाल पाग उतैर जेतै।

रागिणी- बेस तँ कहलहक।OO

शब्द संख्या : 1105

तेसर दृश्य-

(डेराक बरामदा। चारि कुरसी एक टेबुल। टेबुलक एक भाग रविन्द्र आ दोसर भाग अनुराधा बैसल..)

रविन्द्र- की समय आ की सपना छल। आइ की देख रहल छी।

अनुराधा- जेना बूझि पड़ैए जे कौलेजक ओ दिन मोन पड़ि रहल जइ दिन अहिना कौमन रूममे बैस गप-सप्प करैत रहै छेलौं।

रविन्द्र- हँ, सपना तँ साकार भेल जे जहिना अहाँ देख संगी बनेबाक इच्छा भेल। मुदा एकटा कहू जे ओइ समय अहाँ की सोचैत रही। जे कौलेजसँ निकलला बाद की करब?

अनुराधा- *(विस्मित होइत)* सभ कर्मक खेल छी। जा धरि संगीक बंधनमे नै बान्हल गेल छेलौं ताधैर एकटा झिझरीदार परदा बीचमे छल, जे आब नइए।

रविन्द्र- की मतलब?

अनुराधा- मतलब यएह जे सृष्टिक एक कर्ता रूपमे अपनाकेँ पाबि रहल छी। मुदा...?

रविन्द्र- मुदा की?

अनुराधा- अपन प्रवल इच्छा रहए जे प्रोफेसर बनि बाल-बोधकेँ बाट देखाएब मुदा आइ बूझि पड़ैए जे अपनो बाट अन्हराएले जा रहल अछि।

रविन्द्र- से की?

अनुराधा- यएह जे एम.ए.क डिग्री बेकार लेलौं। की जिनगी अछि? यएह ने जे भानस करै छी अपनो खाइ छी आ अहूँ सभकेँ खुआबै छी।

रविन्द्र- *(मुस्की दैत)* एकरा कम बुझै छिऐ?

अनुराधा- कम तँ नै छिऐ मुदा जेकरा मौनसूनक बोध नै रहत ओ जँ हथिया नक्षत्रक बर्खा देखत, से केते काल?

रविन्द्र- गप-सप्पक ओझरी की तिआरि जालसँ कम होइए। एकबेर ओझराएत तँ ओकरा फेकै पड़त। अच्छा, ओइ सभ गपकेँ छोड़ू अखुनका गप करू।

अनुराधा- जखैन अपन जमीन भऽ गेल तखैन अनेरे आठ हजार भाड़ाबलाकेँ किए दइ छिऐ?

रविन्द्र- भरिसक जमीन बेचए पड़त। घर नै बना पाएब।

अनुराधा- एना निराश किए भेल जाइ छी?

रविन्द्र- निराश केना नै हएब! ने कोनो बैंकक नोकरी करै छी जे दरमहो बेसी आ कमीशनो भेटत आ ने प्रशासनिक सेवामे छी जैठाम 'राम-नाम'क लूट भऽ रहल अछि।

अनुराधा- (मुड़ी डोलबैत) हँ से तँ बान्हल दरमाहा अछि। एकटा करू, किछु ट्यूशने करू आकि कोनो कोचिंगे पकैड़ लिअ।

रविन्द्र- ई ने तँ बुझै छिऐ जे बर-पीपरक गाछ जकाँ मनुक्खो अछि, चालिस टपि गेलौं। अखैन तँ चश्मे टाक जरूरत भेल हेन, आगू तँ बाँकीए अछि।

अनुराधा- तखैन?

रविन्द्र- तखैन की अहू तँ संगे पढ़ने छी। संगीए छी तखैन आइ किए पुछै छी।

अनुराधा- पुछब बड़ अधला भेलै। ऐ घरक चिन्ता अपने नै करब तँ कियो आन आबि कऽ देत।

रविन्द्र- से तँ नै करत मुदा एकटा बात कहूँ जे जइ दिन दरमाहा उन-सँ-दून भेल आ तइसँ दुनू गोरेक मोन खुशी भेल। जइ खुशीमे बजारसँ सजा कऽ अनने रही। तइ दिन आमदनी तँ देखलिऐ मुदा खरचा देखलिऐ। छह महिनासँ घरक भाड़ा विवादमे पड़ल

अछि। ओ आठ हजारसँ दस हजार कऽ देलक। बेसी बात नै करब, एक्केटा बात कहू जे मोबाइलेमे केते महिना उठैए।

अनुराधा- *(गुम्म भऽ उपरो-निच्चाँ देखैत आ मुड़ियो डोलबैत..)* मुड़ियो डोलबैत।

रविन्द्र- गुम्म किए छी। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ अपने सभ छिऐ।

अनुराधा- हँ, से तँ देखै छी रंग-बिरंगक खरचा बढ़ि गेल हेन। एते दिन किताबो-पत्रिका पढ़ि-पढ़ि समय बितबै छेलौं आब जे टी.बी. अछि तँ बिजलीक लाइने ने रहै छै।

रविन्द्र- अपनो मोन जेना किताब दिससँ उचटले जाइए। एते दिन इच्छा रहै छेलए जे किछु नव चीज पढ़ि विद्यार्थीकेँ पढ़ाबी मुदा आब तँ रटले साँक मंत्र जकाँ, बकि दइ छिऐ।

अनुराधा- *(रिंग सुनि मोबाइल उठा)* हेलो?

चन्द्रदेव- हँ, हँ मुम्बईसँ चन्द्रदेव बाजि रहल छी।

अनुराधा- *(सुखल हँसी हँसि..)* आहा हा, चन्द्रदेवबाबू?

चन्द्रदेव- हँ, हँ अनुराधा जी?

अनुराधा- हँ, हँ, हँ।

चन्द्रदेव- अहींक शहर आबि गेल छी। एक घंटाक समय खाली अछि तँए सोचलौं जे मिलि-जुलि ली। पान-सात मिनटमे डेरा पहुँच रहल छी।

अनुराधा- अबस्स-अबस्स अबिऐ। दोसो डेरेपर छैथ।

चन्द्रदेव- गाड़ीमे मोबाइल गड़बड़ाइए। आगूक गप डेरेपर हेतै।

रविन्द्र- चन्द्रदेव सेठ भऽ गेल। पँच-पँचटा नोकर। अपन तीन-तीनटा गाड़ी।

अनुराधा- जेकर भाग चमकै छै तेकरा अहिना होइ छै।

रविन्द्र- कहलिऐ तँ बेस बात मुदा ई बुझे छिऐ जे एक्के कौलेजसँ निकलल एक गोरे लाखक कमाइ करैए आ एक गोरे पाँच हजारपर शिक्षा मित्र अछि।

अनुराधा- हँ, से तँ अछि।

(नव मोडलक पोशाकमे चन्द्रदेवक प्रवेश..)

रविन्द्र- *(दुनू हाथे बाँहि पकैड़ छाती मिलबैत..)* भाय, भाय, अहाँ तँ बड़का लोक भऽ गेलौं।

चन्द्रदेव- नै-नै भाय, मनुख केतौ रहए मुदा हृदए तँ वएह रहै

छै। की अनुराधा जी।

अनुराधा- *(सरमाइत)* चन्द्रदेवबाबू केतए आ अनुराधा केतए। आब ओ सभ पैछला गप स्मृति बनि किछु मनो अछि आ बेसी बिसरिये गेलौं।

चन्द्रदेव- मुनेसरक दोकानक छोला आ कपरकट्टा दोकानक गुप-चुप।

अनुराधा- जइ दिनक जे भोग-पारस छल भेल। आइ जे अछि से भऽ रहल अछि।

चन्द्रदेव- भाय, अपन घर छिअ आकि भाड़ाबला?

रविन्द्र- *(मलिन होइत..)* भाय, एते दिन अशो छल मुदा...?

चन्द्रदेव- मुदा की?

रविन्द्र- अर्थक जालमे ओझरा गेल छी। गुण अछि जे बेसी धिया-पुता नै अछि।

चन्द्रदेव- परिवार नियोजन करा लेलह?

रविन्द्र- हँ, मुदा दुइओटा कें पार लागब कठिन बूझि पड़ि रहल अछि।

चन्द्रदेव- भाय, जेते भारी जिनगीकेँ बुझै छहक ओते भारी कहाँ अछि। अपनासँ बेसी वाइफ कमाइए।

अनुराधा- ओहो नोकरी करै छैथ?

चन्द्रदेव- नै। लाइसेंस करा कऽ अपन एकटा ब्रांच खोलने छी। पचाससँ ऊपरे एजेंट काज कऽ रहल अछि।

अनुराधा- पैघ लोकक पैघ बात।

रविन्द्र- हमरो कोनो विचार दाए तँ...?

चन्द्रदेव- गाममे की कम सम्पैत छह। बेचि कऽ लऽ आनह। कहबे केलह जे दू कट्टा जमीन कीनने छी। निच्चाँ-ऊपर मकान बना लैह। तेते भाड़ा हेतह जे घरक काज अनेरे हराएल रहतह।

रविन्द्र- भाय, तेना ने तोरा देख हेरा गेलौं जे चाहो-पान पछुआ गेल।

(अनुराधा भीतर जाइत..)

चन्द्रदेव- जखैनसँ गाड़ीसँ उतरलौं तखैनसँ बूझि पड़ैए जे गरमे देह झड़कैए।

रविन्द्र- की कहबह ऐठामक पानि-बिजलीबला सबहक किरदानी।

चन्द्रदेव- से की?

रविन्द्र- देखते छहक जे एते गरमी अछि बिजलीक केतौ पता

नै।

(पानि-चाह आनि अनुराधा टेबुलपर रखैत। तीनू गोरे तीनू दिस बैस, पानि पीब चाह पिबैत..)

अनुराधा- चन्द्रदेवबाबू, केते दिनसँ अपनो मोनमे नचै छेलए जे गामक खेत-पथार बेच, एतै बेवस्था कऽ ली मुदा अपने दुविधामे पड़ल छैथ।

चन्द्रदेव- से की?

रविन्द्र- माए गाममे अछि। जँ हम बेचए चाहब आ ओ नै बेचए दिअए तखैन की करब। माए बेटामे झगड़ा करब?

अनुराधा- हक-हिस्सा ले तँ लोक बापोसँ झगड़ा करैए आ अहाँ माइयेक गप करै छी।

रविन्द्र- बापसँ झगड़ा करब नीक मुदा माएसँ...?❍❍

शब्द संख्या : 949

अन्तिम दृश्य-

(रागिणीक पुरान घर। बरसातक झमारल..)

रविन्द्र- माए, छुट्टी नइए। बरह-बजिया गाड़ीसँ चलि जाएब।

रागिणी- एते औगताएल किए छह। एते दिनपर एलह, तखैन एते किए औगताएल छह। कम-सँ-कम, जहिना कोटमे जेते मासक एस्काउन्ट रहल तेते दिन कस्टडीमे रखि जमानत भऽ जाइ छै तहिना कम-सँ-कम, दसो दिन तँ रहऽ।

रविन्द्र- अखैन बहुत कड़ाइ कौलेजमे चलि रहल अछि। एते दिन तँ नहियोँ गेने काज चलि जाइ छेलए। आब तँ विद्यार्थी आबह कि नै आबह मुदा प्रोफेसरकेँ जाएब अनिवार्य भऽ गेल अछि।

रागिणी- माल-जालकेँ लोक बान्हि कऽ रखैए, मनुखकेँ कियो थोड़े बान्हि कऽ रखि सकैए।

अनुराधा- माए, हमसब किम्हर एलिऐन से तँ पुछबे ने केलैथ?

रागिणी- अपनो घरमे लोककेँ एहन बात पुछल जाइ छै जे तोरा सभकेँ पुछबह।

अनुराधा- काजे आएल छी।

रागिणी- केहेन काज, बाजह?

अनुराधा- से तँ बेटा सोझहेमे छैन, पूछि लेथुन।

रागिणी- से की बौआ नै सुनैए जे पुछबै। बाजत तँ वएह ने। बिना बजने थोड़े बुझब।

रविन्द्र- माए, पाँच बरख जमीन कीनना भऽ गेल। सोचने रही जे ऐ साल जमीन कीनि लइ छी आ अगिला साल घर बना लेब। से गरेपर ने चढ़ैए।

रागिणी- से तँ अपने बुझबहक? जे की सोचलौं आ की होइए। हम स्त्रीगण जाति की बुझबै जे घर केना बनौल जाइए। ईहो (अपन घर देखबैत..) तँ अपने (पति) बनौल छिऐन जे कष्टो काटि कऽ आसरा अछि।

रविन्द्र- माए, जहिना अरामसँ कमाइ छी तहिना अरामे सँ खरचो भऽ जाइए।

रागिणी- से की?

रविन्द्र- कोनो की एक रंगक खर्च अछि। जहिना उन-सँ-दून दरमाहा बढ़ल तहिना ने खरचो उन-सँ-दुन भऽ गेल अछि। केतबो बचा कऽ रखए चाही छी, कहाँ बँचि पबैए।

रागिणी- खैर, छोड़ह ऐ सभ गपकेँ। की कहलह जे काजे...?

रविन्द्र- दुनू प्राणी विचारलौं हेन जे गामक चीज-वौस बेचि कऽ घर बना लेब। अनेरे जे एते भाड़ा भरै छी से तँ नै भरए पड़त।

रागिणी- ऐठामक जे चीज-वौस बेचि लेबह तँ हम केतए रहब?

अनुराधा- किए, हिनका रहैले घर नै छैन। बेटा कियो बीरान छिऐन।

रागिणी- से के बीरान कहत। मुदा...?

अनुराधा- मुदा की?

रागिणी- मनुख दू जिनगी जीबैए। एक बेटा-बेटीक दोसर माए-बापक। जाबे सासु-ससुर जीबै छला, ताबे बेटी जकाँ रहलौं। मुदा ई तँ दुनियाँक खेले छी जे सभ सभ दिन नै रहत। जहाँ धरि बनि पड़ल तहाँ धरि एक्को दिन सासुक मुहेँ अवाच् कथा नै सुनलौं।

अनुराधा- की कहै छथिन से नै बूझि रहलयैन हेन?

रागिणी- अमरूख लोकक बात जे पढ़ल-लिखल बुझैत तँ अहिना दुनियाँ रहैत। छातीपर हाथ रखि बाजह जे दस-बारह बरिससँ एक्को-पाइ नूनो-तेल ले देलह?

अनुराधा- ई दोख हिनकेटा मे नै, हिनका सन-सन सभ सासुमे आबि गेल हेन।

रागिणी- ऐमे तोहर दोख नै छह, दोख छै जुग-जमानाक विचारकेँ। जेहेन जुग हएत तेहने ने विचारो हएत आकि जेहने विचार हएत तेहने ने जुगो हएत। परोछा-परोछी नै बजै छी, सोझमे कहलिअ हेन। धरमागती बाजह।

(तत्-मत् करैत अनुराधाकेँ देख..)

रविन्द्र- माए, तोहर बात कटैबला नै अछि। तखैन मोनमे यएह रहल जे सभ किछु तँ ऐछे तखैन जरूरते की पड़तै।

रागिणी- तूँ पुरुख जाति किआँने गेलहक माइयक छातीकेँ, जे बच्चाकेँ छातीक दूध पिआ ठाढ़ करै छै ओकरा आगूसँ जँ बच्चा हटा लेल जाए तँ ओइ माइक दशा की हएत?

रविन्द्र- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ हएत।

रागिणी- हम तोरा कहाँ कहै छिअ जे कमा कऽ सभटा हमरे दऽ दए, ओते खगतो ने अछि। तूँ नोकरी करै छह, सरकारक काज करै छहक, मुदा पुतोहु बाल-बच्चा। जँ एहेन पुतोहु भगवान दैथ जिनकर हाथक भोजन पइठ नै हुअए तइसँ नीक जे नहियेँ दैथ।

रविन्द्र- से की, से की माए?

रागिणी- किछु ने।

रविन्द्र- मोनमे एते दुख नै कर।

रागिणी- दुखो वएह नीक होइ छै जइसँ किछु भेटै छै। जइसँ किछु भेटल नै तइसँ नीक जे मोनमे दुख अबै ने दी। जहिए अपने (पति) संग छोड़लैन तइ दिन मोनकेँ बुझा देलिऐ जे संग पुरैक हाथ जे पकड़ने छला तिनकासँ हाथ छुटि गेल।

अनुराधा- माए, अनेरे ई सोग अरैज-अरैज बोझ बना माथपर रखने छैथ।

रागिणी- हमहीं किए रखब, सभ बाप-माए, दादा-दादी अपन अगिला परिवारक बोझ माथपर रखैए। दस बर्खक पोता अछि, जेकरा आइ देखलौं हेन। यएह मनोरथ भगवान देलैन।

अनुराधा- अपने नै जाइ छैथ आकि हम सभ मनाही करै छिऐन?

रागिणी- मनाही दू रंगक होइ छै, एकटा होइ छै जे मुँह फोड़ि कहब आ देसर होइ छै उनटा बात-विचार। पहुँनाइओ लाथे जे जाएब से ने काहे-कूहे बाजए अबैए आ ने एक्कोटा चिन्हार लोक भेटत।

अनुराधा- हम सभ जे छिऐन?

रागिणी- कहलौं तँ बेस बात मुदा बेटा-पुतोहु आकि परिवारक आने, सभकेँ एक सीमा छै। सीमा भीतर गपे केते रहै छै। मुदा चौबीस घंटाक दिन-राति छोट तँ नै होइए।

अनुराधा- फेर लोकक आएब-जाएब रहै छै आकि नै?

रागिणी- की उत्तर देबह।

रविन्द्र- किए, किए माए चुप भेलँह?

रागिणी- चुप की हएब। तूँ सभ चुप केने छह। जइ घरमे जनम लेलह, खेललह-धुपलह, पढ़ि-लिख नोकरी पौलह, ओही घरकेँ बिसैर गेलह।

रविन्द्र- की करबै तेते काज बढ़ि गेल अछि जे नीनो हराम भऽ जाइए।

रागिणी- हम से कहाँ किछु कहै छिअ। मुदा कान खोलि दुनू बेकती सुनि लाए जे जहिना अपने (पति) अपन

लगौल गाछीमे बास करै छैथ तहिना हमहूँ बास करब। जहिना तूँ अपन मोनक मालिक छह तहिना हमहूँ छी।

रविन्द्र- आशा लगा आएल छेलौं।

रागिणी- तोहर आशा भग्न कहाँ होइ छह। अखने आँखि मुनब, सभटा तँ तोरे हेतह। हमरो तँ जिनगी अछि। जिनगी लेल तँ सभ कथुक बेगरता सभकेँ रहै छै।

रविन्द्र- आब केते दिन...?

रागिणी- जिनगीक कोनो ठेकान अछि, अखनो टन कहि देब आ पच्चिसो पचास बरख जीब सकै छी। तइले...?
(पीपरावाली माथपर छिट्टा लेने प्रवेश...)

पीपरावाली- दादी, भगवान हिनका भल करनु बड़बढ़ियाँ कमाइ भेल। दुनू भाए-बहिनकेँ आंगी-पेंट कीनि देलिऐ।

रागिणी- भगवान भल करथुन। मुदा उसरलमे एहल। आब कहाँ कोनो बरतन-बासन रहल। जेतबेक बेगरता होइए तेतबे अछि।

रविन्द्र- घरक सभ बरतन बेचि लेलैं माए?

रागिणी- मोनसँ नै हटै छेलए, मुदा दोसर उपाइए की?

रविन्द्र- आब केना चलतौ?

रागिणी- अखैन तक तँ बरतने-वासन सठल। अखैन गहना-जेबर तँ ऐछे। जेकरा बेसी छै ओकरा लेल गहना श्रृंगारक वौस छिऐ आ जेकरा नै छै तेकरा लेल पेटेक आगि मिझबैक सम्पैत।

रविन्द्र- कोन वस्तु छेलै कनियाँ, जे बढ़ियाँ कमाइ भेल?

पीपरावाली- काका, हिनकासँ लाथ कोन। जहिना दादी तहिना ने ईहो छैथ। तामक तमघैल छेलै।

अनुराधा- आब तँ तामक दाम बहुत बढ़ि गेल अछि।

रविन्द्र- कोन चीज सस्त रहल।

रागिणी- बौआ, से बात नै छै, महग वौस सस्ता भऽ गेल आ सस्ता वस्तु महग।

अनुराधा- से की?

रागिणी- की कहबह। जखैन मनुखे अपन मोल नै बुझैए तखैन चरचे की?

((समाप्त))

शब्द संख्या : 1105

बीरांगना

पात्र परिचय-

स्त्री पात्र-

1. सोनमाकाका- उम्र : 65 बर्ख
2. चेथरू- उम्र : 45 बर्ख
3. जुगेसर- उम्र : 50 बर्ख
4. अयोधी- उम्र : 30 बर्ख
5. जीवन- उम्र : 35 बर्ख

स्त्री पात्र-

1. रूपनी- उम्र : 60 बर्ख
2. कुशेसरी- उम्र : 50 बर्ख
3. कोशिला- उम्र : 22 बर्ख

पहिल दृश्य-

(अपन-अपन आँगनसँ निकैल रस्ताक भकमोड़ीपर ठाढ़ भऽ...)

सोनमाकाका- सुनै छी जे रमफलबा आएल हेन?

रूपनीदादी- सएह तँ सुनलौं मुदा तेहेन लोकक मुहेँ सुनलौं जे सुनियों कऽ अनबिसवासे अछि। तँए दोसर गोरेसँ भाँज लगबए विदा भेलौं।

चेथरू- नै-नै बात ठीके छिऐ।

सोनमाकाका- से तूँ केना बुझै छहक?

चेथरू- ओहन लोकक मुहेँ सुनलौं जेकरा मुहसँ असत् बात निकैलते ने छइ।

सोनमाकाका- जेकरा मुहेँ ओ सुनने हएत वएह जँ असत् कहने होइ, तखैन?

रूपनीदादी- से तँ भऽ सकै छइ। मुदा तहूमे भाँज छइ।

सोनमाकाका- से की भाँज छै?

चेथरू- से अहाँ नै बुझै छिऐ काका, जे देखलाहा बजैए ओ सत् होइ छै आ जे सुनलाहा रहै छै ओइमे दुनू होइ छइ।

सोनमाकाका- हँ से भऽ सकैए। केहेन लोकक मुहेँ सुनने छेलह?

चेथरू- दूधवाली मुहेँ सुनने छेलौं। वएह जे दूध बेच कऽ ओइ टोलसँ आएल छेलै, बाजलि रहए।

सोनमाकाका- उ तँ दूध बेचैमे लगल हएत आकि बात बुझै पाछू।

चेथरू- ओकरा अहाँ नीक जकाँ नै चिन्है छिऐ। कोनो की माछ-कौछ बेचैवाली छी जे पैरक औंठासँ पलड़ा दाबि उठा देबै आ घट्टी जोखि देबइ।

सोनमाकाका- दूधो बेचैवाली तँ पोखैरक पानियेँ मिला दइ छै, से।

चेथरू- हँ, से तँ होइ छइ। मुदा ओकर कारोबार रहै छै कएक दिन। बाढ़िक पानि जकाँ आएल आ पड़ाएल।

रूपनीदादी- हँ, से तँ देखै छिऐ जे जहियासँ काज धेलक तहियासँ ने ओकर दूधनप्पा फुच्ची फुटलै आ ने नाप-जोखक बदनामी कहियो लगलै।

चेथरू- *(अपन पक्ष मजबूत होइत देख, मुस्किया..)* दादी, बुढ़िया देखैमे ने एक चेराक बुझि पड़ैए मुदा गामेक नै, घर-घरक रत्ती-बत्ती बात बुझैए।

सोनमाकाका- की सभ कहलकह?

चेथरू- बाजलि जे दिल्लीसँ मालिक अपना गाड़ीपर लादि कऽ पहुँचा गेल हेन।

सोनमाकाका- एतबे कहलकह आकि आगूओ किछु बजलह?

चेथरू- एतबे बजैमे तँ ओ अपन डाबासँ दूध नापि लोटामे दऽ देलक आ उठि कऽ विदा भेल।

सोनमाकाका- एहेन-एहेन बात तँ सेरिया कऽ ने लेबाक चाही।

चेथरू- जाइत काल एते बात भनभनाइत सुनलिऐ जे एकटा टाँग काटि कऽ पठा देलकै आ पान सए रूपैआसँ नोइस हेतै?

सोनमाकाका- एते पैघ बात आ कनियों अँटका कऽ नै पूछि लेलहक?

चेथरू- काका, ओइ बुढ़ियाकेँ की बुझै छिऐ, कोनो की हमरे ऐठामटा अबैए जे निचेनसँ गप-सप्प करब।

सोनमाकाका- तखैन?

चेथरू- ओ बुढ़िया फुच्चीए-फुच्ची दूधेटा लोककेँ दइ छै आकि मिसरियो घोड़ै छइ।

सोनमाकाका- से की?

चेथरू- हम की ओते बुझै छी जे तेना भऽ कऽ बुढ़ियाक सभ बात बुझि लेबै, तखैन तँ जेते काज रहैए ओते तँ भइए जाइए। दादी लगमे सभ दिन बैसैत देखै छिऐ।

रूपनीदादी- हँ, से तँ बैसबो करैए आ गामक तीत-मीठ गपो कहैए। मुदा घुरैकाल बैसैए, तँए अखैन भेँट नै केलक हेन।

सोनमाकाका- ऐ ततमतीसँ नीक जे ओकरा घरेपर पहुँच मुहाँ-मुहीं गप कऽ ली।

चेथरू- काका, तइले तीनू गोरे किए जाएब। असगरे जाइ छी, सभ बात बुझि कऽ सुनाइओ देब?

रूपनीदादी- सभ दिन तोँ चेथरू-के-चेथरूए रहि गेलैं। पोता-पोती भेलौ से होश नै छौ।

चेथरू- दादी, एक ढाकीक के कहए जे सतरह ढाकी पोता-पोती भऽ जाएत तैयो अहाँ लगमे चेथरूए रहब। कोनो बात-विचारक जे जरूरत हएत तँ अहाँसँ नै पुछब, सोनमाकाकासँ नै पुछबैन तँ की बगूरक गाछ आकि पसीद गाछसँ पुछबै?

रूपनीदादी- देखहक चेथरू, हम अपना नजैरिये देखबो करब आ पुछबो करबै, तहिना तोहूँ सोनाइ भेलह किने?

चेथरू- तइ नजैरिये कहाँ कहलौं। तीनू गोरे जे एक्केटा काजमे बड़दैतौं, तइ दुआरे कहलौं।

रूपनीदादी- से बड़ बेस। मुदा काजक आँट-पेट नै बुझै छहक। कहैले सभ काजे छी, मुदा ओहूमे छोट-पैघ, नीक-अधला होइ छइ।

चेथरू- कनी परिछा कऽ कहियौ?

सोनमाकाका- ठीके चेथरू, तूँ कहियो पुरुख नै हेबह?

चेथरू- काका, अहाँ सने जे कोनो पुरुखपना काज करबै तइसँ पुरुख नै हेबै।

सोनमाकाका- पुरुखक संगी हेबहक। पुरुख तखैन हेबह जखैन अपने ठाढ़ भऽ आगूक डेग बढ़ेबह। अखैन दोसर-तेसर बात छोड़ह आ रमरूपाक भाँज नीक-नहाँति लगाबह।

चेथरू- जखैन अहाँ सबहक विचार अछि तखैन तीनू गोरे चलू।
(तहीकाल आगूसँ जुगेसर अबैत..)

सोनमाकाका- जुगे, केम्हर-केम्हरसँ एलह?

जुगेसर- काका, की कहब *(गुम्म होइत...)*

चेथरू- मुँहक बात दबलह किए? किछु भेलौं तँ हम सभ समाज भेलौं। न्यायालय भेलौं। अगर हमरा समाजक अंगक संग कोनो अन्याय दोसर समाज

करत तँ ओ बरदाससँ बाहर अछि। की सोनमाकाका..?

सोनमाकाका- चेथरू, जे बात तूँ बजलह वएह गामक प्रतिष्ठा छी। मुदा, पाकल आम भेलिअ, सभ दारो-मदार तँ तोरे सभपर छह।

चेथरू- जुगे भाय, अहाँ तँ आँखिक देखल बाजब। रामरूपक की...?

जुगेसर- देखैबला दृश्य नइए। अपने रामरूप ओछाइनपर ओंघराएल अछि आ घरवाली ओछाइनिक निच्चाँमे ओंघरनिया दऽ रहल अछि। तीन सालक बच्चा झाँपल कपड़ा हटा-हटा पएर तकैए।

रूपनीदादी- बाप रे बाप! समाजक एकटा घर उजड़ि गेल।

जुगेसर- दादी, अहाँ नै जाउ। सोनमाकाका अहूँ नै जाउ।

सोनमाकाका- किए?

जुगेसर- ओहन दृश्य देखैक करेज आब नै रहल। हो-न-हो पहिलुके नजैरमे ने अपने...?

चेथरू- दादी, कहने तँ पहिने छेलौं, मुदा हमरा गपक मोजरे ने देलौं। आब कहू जे कोनो अनरगल कहने रही?

सोनमाकाका- हँ, से तँ बात मिलिये गेलह। मुदा एते बात बुझि कऽ तँ नै बाजल छलह? अच्छा, एतै बैस कऽ सभ बात कहऽ।

जुगेसर- ओतए तँ लोकक करमान लगल छइ। तहूमे धिया-पुता आ झोटहा भरि देने अछि। चुट्टी ससरैक जगह नै छइ।

सोनमाकाका- गप किछु कहऽ ने?

जुगेसर- कोनो बात की सोझ डारिये चलए दइए। एक तँ कार कौआक जेर जकाँ धिया-पुता काँइ-काँइ करैए तैपरसँ जनीजाति भिन्ने छाती पीटैए।

चेथरू- तैयो तँ भाँजपर किछु गप चढ़ले हेतह?

जुगेसर- हँ, एते उड़नतीए सुनलौं जे डरेवर जाइ काल बाजल जे कारखाना मालिक इलाजमे तीन लाख रूपैआ खर्च केलखिन। पाँच सए खाइ-पीऐले, आ लत्ता-कपड़ा सेहो देलखिन।

रूपनीदादी- पान सए रूपैआ केते दिन चलतै। तहूमे सभटा लोथे भेल। जहिना रामरूप तहिना बच्चाक संग बच्चाक माइयो। केना वेचारी दुनूकेँ छोड़ि बोइन करए जाएत।

चेथरू- से तँ ठीके। मुदा दादी झोंटहा सबहक बिसवास कोन। बेटाकेँ जहर-माहूर खुआ देत आ घरबलाकेँ छोड़ि पड़ा दोसर घर चलि जाएत।

रूपनीदादी- सेहो होइए चेथरू। तोरो बात कटैबला नहियेँ छह मुदा एक्के दाबिये केना खिचड़ीयो रान्हवह आ खीरो। एकटामे नून पड़त एकटामे चिन्नी।

चेथरू- से तँ ठीके कहै छिऐ दादी। अहिना ने भालेसरोकेँ भेल। ओहो जे जमक गाछपर सँ खसि जाँघ तोड़लक आ डाक्टरो बुट्टी भिड़ा कऽ काटि देलकै। फेर ओ वेचारी (भालेसरक पत्नी) केना छह मसुआ बेटीक संग रहि ता जिनगी घरबलाक सेवा केलक।

सोनमाकाका- सोझहे सभ गप खिस्सा जकाँ सुनने नै हेतह चेथरू। ओना जुगेसर ठीके कहलकह। अखैन छोड़ि दहक। बेरू पहरमे चलब।

रूपनीदादी- हँ, हँ, एहेन-एहेन जगहपर नै गेने समाजक रसे की रहत। समाज तँ तखने ने समाज जखैन सबहक सुख-दुख संगे पोखैरमे नहाइ।

चेथरू- कनियेँ-कनियेँ जे सोचै छी दादी तँ बुझि पड़ैए जे समाजपर एकटा भार पड़ि गेल।❍❍

शब्द संख्या : 1021

दोसर दृश्य-

(अयोधीक दरबज्जा। दरबज्जाक ओछाइनिक एक कोनपर अयोधी बैसल दोसर कोनपर अयोधीक माए कुशेसरी बैसल..)

अयोधी- माए, आब की करब?

कुशेसरी- बौआ, आब छाती बदैल गेल। (आँखि मीड़ैत) धरमागती बात तोरा कहै छिअह।

अयोधी- अखैन जे तत्-खनात बेगरता आबि गेल पहिने से विचार दे। तखैन दोसर-तेसर सोखर सुनबिहेँ।

कुशेसरी- बौआ, सएह कहै छिअह। लोकेक बेगरता लोककेँ होइ छइ। मुदा...?

अयोधी- चुप किए भेलेँ?

कुशेसरी- लोकक बोन अफ्रिकनो बोनसँ घनगर अछि। तूँ ई नै बुझिहअ जे माए हमरा भाएकेँ खून दइसँ रोकत। मुदा तइसँ पहिने जँ बुझैक जरूरत छह से कहए चाहै छिअह।

अयोधी- माए, जाबे पेटक बात निकालि नै फेकब, ताबे गैस्टिकक रोगी जकाँ छुटैए। जइसँ कोनो बात सुनैक मने ने होइए।

कुशेसरी- बाजह, पहिने तूँ अपने कोठी खलिया कऽ झाड़ि लैह तखैन जे आनो अन्न ओइमे देबहक तँ तैयो एकछहे रहत।

अयोधी- खनदान दिस तकै छी तँ सुमारक लगैए। जहिना परबाबा आन गामसँ आबि बसला तहिना एकघराक घर अखनो छीहे।

कुशेसरी- जहियासँ ऐ गाममे पएर रखलौं तहियासँ तँ गामो आ परिवारोकेँ देखते-सुनिते एलौं। मुदा तइसँ पहिलुका बात तँ बुझल नइए। बाजह?

अयोधी- परबाबा मात्रिकमे आबि कऽ बसल रहैथ। मात्रिकक डीह नीक डीह बुझलैन। गामक भागीन, तँए गामक बाट चिक्कन। केतौ खाधि पीछड़ नै।

कुशेसरी- आगूक पिढ़ी केना बढ़ल?

अयोधी- हुनका (परबाबाकेँ) दूटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। परिवार गेना फूलक गाछ जकाँ झमटगर हुअ लगल। दुनू बेटी सासुर गेलैन। परिवारो नीक तँए समरस परिवार भेने समरस जीवन समरस सुख पाबि मुइला।

कुशेसरी- दुनू भाँइक परिवार?

अयोधी- दुनू भाँइयो आ माइयोक एहेन सोभाब रहैन जे कहियो कोनो बाते झगड़ा नै भेलैन। जेठका भायक बिआह धुमधामसँ भेलैन। मुदा छोटका तेहेन भाइयो, भौजाइयो आ माइयोक सहलोल भऽ गेलखिन जे बिआहे ने केलखिन।

कुशेसरी- परिवारक बात दुनू गोरे नै बुझौलखिन?

अयोधी- कहाँदन रहबो करथिन मैतछिन्नु जकाँ। कहियो झोंक चढ़ि जानि तँ भरि-भरि दिन, बिनु खेनौं-पिनौं कोदारीए भाँजैत रहि जाइ छेलखिन।

कुशेसरी- *(ठहाका मारि..)* मनुखदेवा ने तँ रहथिन?

अयोधी- एँह, ओतबे, कहियो झोंक चढ़नि तँ खैयो बेरमे पिढ़ियापर बैस रूसि रहैथ।

कुशेसरी- से किए?

अयोधी- *(हँसैत..)* ताबे तक रूसल रहैथ जाबे तक माए आगूमे नै आबि जानि। भाय-भौजाइक बातक कोनो मोजर नै।

कुशेसरी- माइयक बात मानि लेथिन?

अयोधी- माए आबि जखैन पुछथिन तँ कहैन जे बेटा बिनु माइयक सेवा केने खाइए ओ पापी छी। तँए पहिने एक हाथ सेवा तोरा कऽ देबौ तखैन मुँहमे अन्न-पानि लेब। एकभग्गु लोक जकाँ?

कुशेसरी- एकभग्गु लोक जकाँ नै, एकबट्टू लोक जकाँ।

अयोधी- हँ, हँ, तहिना।

कुशेसरी- पैछला पिढ़ीसँ तँ छीहे। बौआ छातीपर हाथ रखि कहै छिअह। ऐ घरमे भिनौज हमरे करौल छी। जे ओइ दिनमे नै बुझै छेलिऐ।

अयोधी- से आब केना बुझै छिही?

कुशेसरी- हम दुनू परानी टटके जुआएल रही आ भैया दुनू परानी ठमैक गेल रहैथ। मलिकाइन बनबाक इच्छा केकरा नै रहै छइ। हमरो लगल आ भिनौज करेलौं।

अयोधी मोन हल्लुक भेल। आब विचार दैह जे रामरूपकेँ देहमे खून कम छै, ओ तँ हमरे खूनटा मिलै छइ।

कुशेसरी- जेतेक खगता छै तइसँ दोबर दहक। आ ईहो बुझि लैह जे एकटंगा भाइक भार अपने कपारपर अछि।
(तहीकाल सोनमाकाका, रूपनीदादी आ चेथरूक प्रवेश.. । अयोधी सोनमाकाका आ चेथरूकेँ गोड़ लगलक। कुशेसरी रूपनीदादीकेँ गोड़ लागि विछानपर बैसा दुनू हाथे घुट्ठी दाबए लगलैन। जहिना धौना खसल सोनमाकाकाक तहिना रूपनियोँ दादीक आ चेथरूओक। सभ गुम-सुम भेल बैसल..)

चेथरू- अयोधी, भगवान तोरा ऊपर ठनका खसेलखुन। मुदा...?
(सोनमाकाका आँखि उठा करवनो अयोधीपर तँ करवनो कुशेसरीपर तँ करवनो निच्चाँ कऽ तरे-तर रामरूपक कटल टाँगपर आ करवनो रामरूपक स्त्रीपर दौगबैत...)

रूपनीदादी- छोड़ह ऐ जाँतब-पीचबकेँ। पहिने रामरूपकेँ देखा दए।
(रूपनीदादीकेँ बाँहि पकैड़ कुशेसरी आँगन लऽ गेलि..)

सोनमाकाका- रामरूप तँ पितिऔत भाए छिअह किने?

अयोधी- हँ।

सोनमाकाका- ओकरा परिवारमे के सभ छै?

अयोधी- अपने दुनू प्राणी अछि आ एकटा तीन सालक बेटा छइ।

सोनमाकाका- खेती-पथारी?

अयोधी- किछु ने। जँ से रहितै तँ अहिना परदेशसँ टाँग कटा घर अबैत।

चेथरू- एना भेलै केना?

अयोधी- सबटा अपन कपारक दोख होइ छइ। कोनो की इहएटा ओइ करखन्नामे काज करै छेलै आकि औरो गोरे।

चेथरू- काज कोन करै छेलै?

अयोधी- कहाँ दन, लोहा करखन्नामे काजे करैत काल एकटा गोलका गुरैक आबि कऽ जाँघेपर खसलै।
(तहीबीच रूपनीदादी कुशेसरीक संग अबैत..)

कुशेसरी- *(ऐबते..)* अहूँ दुनू गोरे अँगने चलि कऽ कनी देख ने लियौ?

चेथरू- दादी तँ देख कऽ एबे केली हेन, पहिने हिनकेसँ बुझि ली।

रूपनीदादी- *(छाती पीटैत..)* एहेन अतहतह नै देखने छेलौं। बाप रे बाप! मनुखक नक्शे बदैल गेल अछि। हे भगवान, जखैन विपैतिये देलहक तँ आरो किए ने बेसी कऽ देलहक जे दू-चारि मासमे लोक बिसैर जाइत।

सोनमाकाका- ओना अपना चसमसँ देखब नीके होइ छइ। मुदा किछु एहनो होइ छै जेकरा नहियेँ देखब नीक।

रूपनीदादी- पुरुखक जाइ जोकर आँगन नहियेँ अछि। वेचारी रामरूपक पत्नीकेँ ने नुआ-वस्त्रक ठेकान छै आ ने...।

चेथरू- तहूमे अपना सभ की कोनो ओझा-गुनी, डाक्टर छी जे लगसँ देखबे जरूरी अछि। अपनो सभ वएह देखब जे दादी कहती।

सोनमाकाका- घओपर नून छीटि विसतार करबसँ नीक नहियेँ देखब।

चेथरू- काका...?

सोनमाकाका- अखैन किछु बाजैक समय नै अछि। फेर आएब तखैन किछु आगूक बात विचारब।

चेथरू- काका एक तँ वेचाराकेँ अपना किछु ने छै तैपर अपने कोनो काजक नै रहल। जिवित शरीर तँ अन्न-पानि मंगबै करत। बिनु किछु केने धेने केतेक दिन चलत।

सोनमाकाका- यएह सभ ने बुझै-विचारैक अछि। तूँ दुनू गोरे अयोधी एक्के गाछक बखलोइया छह। जही गाछक बखलोइया रहै छै ओही गाछमे ने सटबो करै छइ।

चेथरू- अयोधी, तेहेन दोरस हवा बहि गेल अछि जे चिनो-पहचिन भोतिया गेल अछि। जेना गाछमे देखैत

हेबहक जे जे पात सुनटा गरे गाछक शोभा बढ़बैए वएह हवामे उनैट अपन असल रूप उनटा लइए।

अयोधी- भाय साहैब, अपना तँ ओते ऊहि नै अछि जे नीक अधला बात नीक जकाँ बुझबै मुदा एते अहाँ सबहक बीच बजै छी, जे देहक खुने नै ऐ देहसँ जेते भऽ सकतै तइमे पाछू नै हटब।

सोनमाकाका- बौआ, अखैन घरसँ बाहर धरिक सभ सोगाएल छी तँए, नीक जकाँ जिनगीकेँ नै बुझि सकब। ताबे अखैन जे जे जरूरी काज सभ अबैत जाइ छह तेकरा सम्हारैत चलह। पाँच-दस दिनक पछाइत निचेनसँ विचारि लेब।

रूपनीदादी- बौआ, समाजमे एक-सँ-एक अमीर आ एक-सँ-एक गरीब रहैए। मुदा समाजरूपी नाहपर केना जिनगीक समुद्र पार करैए।

चेथरू- दादी, जहिना समाजमे एक-दोसरक देखा-देखी आन्हरो-बहिर हँसैत-खेलैत जिनगी गुजारि लइए तहिना भगवान रामरूपोक परिवारकेँ पार लगौथिन।❍❍

शब्द संख्या : 975

तेसर दृश्य-

(ओसारपर कोशिला (रामरूपक पत्नी) बैसल, आँखिसँ नोरक टघार चलैत। आगूमे तीन बर्खक बेटा ठाढ़ भऽ हाथसँ नोर पोछैत..)

कुशेसरी- कनियाँ, कनैत-कनैत मरियो जेबह तैयो दुख मेटेतह। जखैन काँच बरतन ठाढ़ छी, हवा-विहाड़ि, पानि-पत्थर, सदासँ लगैत आएल आ आगूओ लैगते रहत। मुदा नान्हिटा बगरा-मेना कहाँ मेटा गेल। हम सभ तँ मनुख छी।
(आँखि उठा कोशिला कुशेसरीक निच्चाँसँ ऊपर निहारैत किछु बजैक विचार मोनमे उठैत, मुदा स्पष्ट बोली नै फुटैत..)

कोशिला- क-अ... क...इ...इ...।

कुशेसरी- तूँ ने अँगनामे बैस कऽ भरि दिन कनैत रहै छह मुदा हम तँ मौगी सबहक गप्पो सुनै छी किने।

कोशिला- के की बजैए?

कुशेसरी- जेकरा जे मोन फुड़ै छै से बाजैए। मुदा सुनबो करिहअ तँ उत्तर नै दिहक। सुनि कऽ कानेमे समेट-समेट रखैत जहिहऽ।

कोशिला- ई की सुनलखिन?

कुशेसरी- घरक लोक छिअ तँए तोरा कहबे करबह। परिवारक कोनो गप परिवारक लोकसँ छिपाबी नै। छिपाबी ओतबे जे जेकरा बुझैक जरूरत नै होइ।

कोशिला- *(आँचरसँ आँखि-मुँह पोछैत.. आ कनी सक्कत होइत...)* की..इ...इ सुनलखिन? कनी नीक जकाँ कहथु?

कुशेसरी- अगुता कऽ ने किछु सोचह आ ने किछु करह। भगवान समुद्र सन छाती देने छैथ। गीधक सरापे जँ गाए मरैत तँ वएह उपैट गेल रहितै।

कोशिला- किछो तँ बाजथु?

कुशेसरी- कनियाँ, मौगी सभ कुट्टी-चौल करैए जे एहेन जुआन मौगी टंगकट्टा घर...।

कोशिला- काकी, गरीब छी एकर माने ई नै ने जे मनुखे नै छी।

कुशेसरी- रूपनीदादीकेँ बजबै ले अयोधीकेँ पठौने छिऐ। ऐबते हेती। तखैन औरो गप करब।
(रूपनीदादीक संग अयोधीक प्रवेश..)
(रूपनीदादीकेँ देखते कोशिला दुनू हाथे दुनू पएर छानि..)

कोशिला- दादी, की ई सभ अपना नगरसँ बैलाइए देथिन?

रूपनीदादी- कनियाँ, पएर छोड़ू। *(कोशिला पएर छोड़ि दैत...)* कनियाँ कान खोलि सुनि लिअ। ने केकरो भगौने कियो नगरसँ भागि सकैए आ ने दिन-राति कनलासँ दुख मेटा सकैए।

कुशेसरी- एक लाखक गप कहलखिन दादी।

रूपनीदादी- गपक मोल लाख नै होइए। होइए ओइ काजक जइमे ओ गप सटल रहैए। छुछे कनलासँ जँ होइतै तँ घरसँ बाहर धरि कानि◌-कानि लोक देवी-देवता तककेँ कहिते छैन। मुदा फल की होइ छै?
(दादीक आँखिपर कोशिला आँखि गड़ा..)

कोशिला- दादी, जे विधाता लिखलैन, ओ भोगब।

रूपनीदादी- कनियाँ, अहाँकेँ तँ एकटा बेटो अछि, जे दस बर्खकबाद स्वामी तुल्य भऽ जाएत। तखैन तँ गनल कुटिया नापल झोर भेल। दस बर्खक दुख थोड़े बड़ भारी होइ छइ। अही माटि◌-पानिक सीता रावणक लंकामे अहूसँ बेसी दिन रहल रहैथ।

कोशिला- *(मुस्कियाइत..)* दादी, हिनका सभक नजैर चाही।

रूपनीदादी- कनियाँ, हम सभ ओहन धरतीपर जनम लेने छी जे सदिकाल शक्ति उगलैत रहैए। तोरा तँ बेटो छह जे ओ पूबरिया पोखैर देखै छहक?

कोशिला- कोन दऽ कहै छैथन दादी। पीपरक गाछ लगहक, आकि परती लगहक?

रूपनीदादी- पीपरक गाछ लगहक। ओ पोखैर प्रेमा दीदीक खुनौल छिऐन। वेचारी बाल-विद्धव भऽ गेल छेली। गामक लोक केतबो हिलौलकैन-डोलौलकैन दोसर बिआह नै केलखिन।

कुशेसरी- सासुर नै बसलखिन?

रूपनीदादी- एक्को दिन सासुर नै गेल रहथिन। मुदा धैनवाद समाजकेँ दी जे वेचारीक जिनगीक ठौर धड़ा देलकैन आ तोहूसँ बेसी ओइ वेचारीकेँ धैनवाद दिऐन जे अपन माए-बापक पार उतारैत, जिनगीक अन्तिम समैमे पोखैर खुना समाजक सेवामे लगा कऽ मरली।

कुशेसरी- दादी, पहिलुका जुग-जमानाक परतर आब हेतै?

रूपनीदादी- किए ने हेतै।
(कहि चुप भऽ किछु सोचए लगैत...)

कोशिला- चुप किए भेलखिन दादी। आगूओक किछु कहथुन?

रूपनीदादी- *(गंभीर होइत..)* कनियाँ ने जुग-जमाना बदलल आ ने लोक बदलल।

कोशिला- तखैन?

रूपनी- बदलल लोकक विचार आ ओकर जिनगी।

कोशिला- केना?

रूपनी- सुनै छहक ने फल्लाँ गाम नीक आ फल्लाँ गाम अधला।

कोशिला- हँ, से तँ सुनबे नै करै छी बिसाएलो अछि।

रूपनीदादी- *(मुस्कियाइत..)* बिसाएलो छह! केना बिसाएल छह?

कोशिला- तीन बहिनमे छोट हम छी। जेठकी बहिनक बिआह छतनाराहीमे ठीक भेल। कहाँदन बड़ सुन्नर घर-बर रहै मुदा बिआह नै भेलैन?

रूपनीदादी- से किए?

कोशिला- घर-बर देख बाबू-काका दुनू भाँइ बिआहक सभ बात-विचार पक्का कऽ लेलैन। पक्का भेलापर मामासँ विचार करए मात्रिक गेला।

रूपनीदादी- बात-विचार करैसँ पहिने ने राय-विचार कऽ लइतैथ।

कोशिला- औगताइ भऽ गेलैन।

रूपनीदादी- की औगताइ?

कोशिला- दुनू भाँइ भोज खा कऽ घुमल रहैथ, बरी-तरकारी किछु बेसी खेने रहैथ। चालि पाबि पियास लगलैन। रस्ताकातमे इनार देख ठाढ़ भेला। मुदा डोल नै रहने पानि केना पीबतैथ।

रूपनीदादी- (मुस्की दैत..) तखैन की केलैन?

कोशिला- इनार लगसँ आगू बढ़ि एकटा दुआरपर जा जोरसँ हल्ला करैत डोल मंगलखिन। आँगनसँ एकटा अधवेसू डोल लेने बहराइत पुछलखिन।

रूपनीदादी- की पुछलखिन?

कोशिला- नाओं गाओं आ जाति।

रूपनीदादी- जाति मिलते ओ अधवेसू हँसैत बजला जखैन जाति-कुटुम छी तखैन ऐना अछोप जकाँ पानि पिआएब उचित हएत। पानि पीब बिआहक गप-सप्प पक्का भऽ गेल।

रूपनीदादी- हँ, तखैन तँ ठीके औगताइ भेल। मात्रिकक लोक की विचार देलकैन?

कोशिला- बेसी बात तँ नै बुझल अछि मुदा अधला गाम कहि मनाही केलकैन।

रूपनीदादी- कनियाँ एक्के गाम एक जातिक नीक होइए आ दोसराक अधला।

कोशिला- गाम तँ गामे होइए। फेर एना किए होइए।

रूपनीदादी- *(मुस्कियाइत, गंभीर होइत..)* कनियाँ, की कहबह आ केते कहबह। भगवान अखैन अपने फेरा लगा देलखुन। अपन दिन-दुनियाँक बात सोचह।

कुशेसरी- बेस कहलखिन दादी। ठनका ठनकै छै तँ लोक अपना मत्थापर हाथ दइए। मुदा तँए कि ठनका मानि जेतै आकि माथ परहक हाथसँ रोका जेतै। लेकिन एकटा तँ होइए जे लोक अपन रच्छा अपना हाथे करए चाहैए।

रूपनीदादी- बेस कहलिऐ। एकटा बात तँ तरे पड़ि गेल।

कोशिला- से की?

रूपनीदादी- जुग-जमाना बदलैक बात उठल छेलै। ने दिन-राति बदललहैं आ ने माटि-पानि, पहाड़। बदललहैं

लोकक आचार-विचार। एकटा बात तँ अपनो ठहकैए जे जेना पहिने समाजक धारणा छल तइमे बहुत बदलाव आएल हेन।

कुशेसरी- दादी, आब हमहूँ कम दिनक नै भेलौं। जहिया सासुर आएल रही तहिया जे लाज करैबला पुरुख छला, हुनकापर नजैर पड़िते जेना मुँह झपए लगै छेलौं तहिना हुनको सभक नजैर पड़िते या तँ निच्चाँ मुहेँ मुड़ी-गोंति लइ छला वा दोसर दिस तकए लगै छला।

रूपनीदादी- बेस कहलहक। हमहूँ बुढ़ भेलों, आँखिक इजोतो घटि गेल, तैयो देखै छी तँ लाज होइए। अनेरे भगवान कोन सनतापे देखैले जिया कऽ रखने छैथ।

कुशेसरी- से की दादी एक्केटाकेँ कहबै। मर्द-औरत दुनूक चालि एकेरंग भऽ गेल अछि।

रूपनीदादी- खैर, जे अछि जेतए अछि से तेतए रहऽ। (कोशिला दिस देख) कनियाँ, समाज बड़ पैघ दुनियाँ छी। जाबे मनुखकेँ प्राण रहत ताबे केतौ दुनियेँमे रहत। एहेन विपैत भगवान तोरेटा नै देलखुन हेन, तोरा सन-सन बहुतो अछि।

कुशेसरी- दादी, सएह तँ दुनू माए-बेटा कहै छिऐ जे दुनू गोरेक जड़ि एक्के अछि। देखै छिऐ जे सत्-सत् पिढ़ीक परिवार सभ अछि। हमरा तँ दुइए पिढ़ीक भेल हेन। तँए की दुनू दू भऽ गेल।❍❍

शब्द संख्या : 996

अन्तिम दृश्य-

(अयोधी, कुशेसरी आ कोशिला ओसारपर बैसल।)

अयोधी- माए, जानियेँ कऽ तँ हम सभ गरीब छी तँ दुख केकरा हेतै। तोहूमे जँ हिम्मत हारिये देब तँ एक्को क्षण जीब पाएब।

कुशेसरी- ई कोनो नव गप छी। कर्ता पुरुखक ई दुनियाँ छी। कर्ता पुरुख जेहेन रहत ओ अपना सन दुनियाँ बना, बास करत।

अयोधी- (कोशिलासँ) देखू कनियाँ, जहिना अपना मोनक मालिक कियो होइए। तहिना अहूँ छी। तँए अपन अगिला जिनगीक रस्ता अपने धड़ए पड़त।

कुशेसरी- बेस कहलहक बौआ। जेना लोक सभकेँ देखै छिऐ जे चरि-चरिटा धिया-पुता छोड़ि दोसर घर चलि जाइए। तहिना जँ तोहूँ भागए चाहबह तँ कियो पकैड़ कऽ केते दिन रखि सकतह। मुदा?

कोशिला- मुदा की?

कुशेसरी- यएह जे अपना सबहक बाप-दादाक कएल कीर्ति मेटा रहल अछि।

कोशिला- कनी बुझा कऽ कहथु?

कुशेसरी- सभकेँ नीक-अधला काज करबाक छुट अछि। जेकरा जे मोन फुड़ै छै से करैए। मुदा मनुख जानवर नै विवेकी जीव छी। तँए नीक-अधलाक विचार तँ करए पड़तै।

कोशिला- की नीक अधला?

कुशेसरी- जहिना अपन कर्तव्य पूरा केलापर मरद पुरुख बनैए तहिना स्त्रीगणो ने नारी। दुनूकेँ अपन-अपन काजक रस्ता छइ। रस्ताक संग किछु संकल्प छै, जे जिनगीकेँ जिनगी बनबै छइ।

कोशिला- नै बुझलिऐन हिनकर बात?

कुशेसरी- देखहक, तोरा कियो खुटामे बान्हि कऽ नै रखि सकै छह मुदा अपन जिनगीक बान्हसँ बन्हि जरूर रहि सकै छह। ई तँ तोरे ने बुझए पड़तह जे हमरे दुआरे घरबला अपन टाँग गमा अधमरू भेल अछि।

दुधमुहाँ बच्चा सेहो अछि, तैठीन कोन धरानी चलए पड़त।

(तही बीच जीवनक प्रवेश..)

अयोधी- (जीवनसँ) केतए रहै छी, किनकासँ काज अछि।

जीवन- ओना हमरो घर एही इलाका अछि मुदा रहै छी दिल्लीमे। हमरा कम्पनीमे रामरूप काज करै छला हुनके परिवारसँ किछु खास विचार करए आएल छी।

अयोधी- हुनकर भाए हमहीं छिऐन। ओ तँ अपने ओछाइनपर पड़ल छैथ, उठि-बैस नहियेँ होइ छैन। तखैन बाजू, केहेन विचार करबाक अछि।

जीवन- कारखानाक मालिक राय-विचार लेल पठौलैन अछि।

अयोधी- कम्पनीक पठौल आदमी छी?

जीवन- हँ।

अयोधी- जखैन देहमे शक्ति छेलैक, हाथ-पएर दुरूस छेलैक तखैन तँ ओभर टाइमक लोभ देखा-देखा दिन-राति काज करा बेकम्मा बना घर पठा देलक। आ...?

जीवन- कम्पनीक जे निअम छै ओहि हिसाबे ने काज हएत?

अयोधी- निअम बनबैकाल काजो केनिहार (श्रमिक) सँ राय-विचार केने छेलिऐ?

जीवन- देखू, जहिना रामरूप कम्पनीक स्टाफ छला तहिना हमहूँ छी, तँए ऐ प्रश्नक उत्तर नै दऽ पएब।

अयोधी- तखैन?

जीवन- जे सभ सुविधा भेटै छै से सभ सुविधा हिनको (रामरूप) भेटतैन।

अयोधी- की सभ भेटतैन?

जीवन- इलाज करा देलैन। तत्काल पान सए रूपैआक संग घर पहुँचा देलकैन।

अयोधी- बस?

जीवन- नै। एतबे नै। जँ पत्नी काज करए चाहती तँ नौकरियो देतैन आ रामरूपक नाओंसँ एक लाखक बीमा सेहो कऽ देतैन जे मुइला पछाइत परिवारकेँ भेटतैन।

अयोधी- जीबैतमे की सभ भेटतैन?

जीवन- परिवारकेँ ओही दरमाहाक नोकरी आ रहैक डेरा।

अयोधी- हम सभ गामक समाजमे रहै छी, तँए आगू किछु करैसँ पहिने समाजसँ विचार लेब जरूरी अछि।

जीवन- बहुत बढ़ियाँ।

अयोधी- (माएसँ...) जाबे हम समाजक पाँच गोरेकेँ बजा अनै छी ताबे हिनका चाह जलखै करा दिहनु।

कुशेसरी- बड़ बढ़ियाँ।
(अयोधी जाइए। अयोधीकेँ परोछ होइते कोशिला अधझँप्पु मुँह सोलहन्नी उघारि...)

कोशिला- जहिना सोलह-सोहल, अठारह-अठारह घण्टा पतिसँ काज लइ छेलौं तहिना ने हमरोसँ कराएब?

जीवन- (कनी गुम्म होइत..) की मतलब?

कोशिला- मतलब यएह जे जखैन सोलह-अठारह घण्टा करखन्नामे काज करब, तखैन अपने कखन भानस-भात करब आ खा-पी अराम करब।

जीवन- एकरो जवाब नै देब।

कोशिला- (झपटैत..) एतबे नै, जखैन अपनो जोकर समय अपने नै भेटत, तखैन तीन बर्खक दूध-मुहाँ बच्चा आ अपंग पतिक सेवा कखन करब।

जीवन- (प्रलोभन दैत..) अहाँकेँ थोड़े करखन्नामे काज करए पड़त?

कोशिला- तब?

जीवन- अहाँकेँ कोठीएक काज भेटत। जेहने काज हल्लुक तेहने समैयोक। कोठीएमे रहैयोक बेवस्था रहत आ अपूछ खेनाइओ-पिनाइ हएत।

कोशिला- (किछु सहमैत..) जँ हमरा इज्जतक संग खेलबाड़ हएत तखैन के बँचौत?

जीवन- मालिकक नजैर सभपर रहै छैन। की मजाल छी जे एकटा माछियो-मच्छर, बिना हुनका पुछने कोठीक भीतर जा-आबि सकैए।

कोशिला- (आँखि टेढ़ करैत..) ई तँ बेस कहलौं जे बाहरसँ माछियो-मच्छर नै जा सकैए मुदा जँ कोठीक भीतरेक लोक...?

जीवन- ओना अहाँक शंका, किछु अंशमे ठीके अछि मुदा घनेरो औरत, जुआनसँ अधबेसू धरि, कोठीक भीतर काज करैए।

कुशेसरी- बजलौं तँ बेस बात। मुदा जहिना, ने सभ पुरुखक चालि-ढालि बेवहार एक रंग होइ छै तहिना तँ स्त्रीगणोक अछि। एक्के काजकेँ कियो खेल बुझैए कियो इज्जत।
(सोनमाकाका, चेथरूक संग अयोधीक प्रवेश..)

कोशिला- भने कक्को आ भैयौ आबिये गेला।

अयोधी- काका, दिल्लीसँ जीवन आएल छैथ।

सोनमाकाका- कनियाँ, की सभ जीवन कहै छैथ?

कोशिला- कहै छैथ जे अहाँकेँ नोकरी भेटत।

सोनमाकाका- अपन की विचार होइए। अपन जे विचार हएत सहए ने करब।

कोशिला- काका, हिनका सभकेँ किए बजौलयैन। जँ अपना विचारे करबाक रहैत तँ कऽ नेने रहितौं किने।

चेथरू- कनियाँ, अपन की विचार अछि, से तँ अपने ने बाजब।

कोशिला- भैया, ई सभ जे विचार देता सएह ने करब।

चेथरू- (जीवनसँ) जँ कनियाँ (कोशिला) नोकरी नै करै चाहैथ तखैन की सभ देबैन?

जीवन- अपना रहने जे सभ सुविधा भेटतैन ओ नै रहने थोड़े भेट पौतैन।

चेथरू- से की?

जीवन- तेते पैघ कारोबार अछि जे के केकरा देखत। सभकेँ अपने काज तेते छै जे केकरो दिस केकरो तकबाक पलखैत छइ।

चेथरू- गाममे रहनिहारि मुँह दुब्बरि औरतकेँ करखन्नाबला सभ मनुखो बुझैए।

सोनमाकाका- चेथरू बातकेँ अनेरे केते चेथाड़ै छह। छोड़ह ऐ सभकेँ। बाजू कनियाँ अहाँक की विचार अछि?

कोशिला- काका, सुनलाहा नै घरेबलाकेँ देखै छिऐन जे परिभुत्ता छेलैन ताबे गाए-महींस जकाँ लाठी देखा-देखा दुहैत रहलैन आ जखैन पैरभुत्ता घटलैन तखैन असमसानक मुरदा जकाँ उठा कऽ ऐठाम दऽ गेलैन। तहिना जँ...?

सोनमाकाका- नीक जकाँ सोचि-विचारि लिअ। गामक समाज मनुखकेँ छाती चढ़ा बसबैए, जे शहर-बजारमे थोड़े अछि।

कोशिला- हँ, ई तँ बेस कहलैथ काका।

सोनमाकाका- एतबे नै कनियाँ, आँखि उठा कऽ देखियौ, निसभेर रातिमे जँ केतौ चोर-चहार अबै छै आकि राजा-दैव होइ छै तँ जे जेतए सुनैए ओ ओतैसँ हल्ला करैत दौगैए। मुदा...।

कोशिला- मुदा की?

सोनमाकाका- की कहबह आ केते कहबह। मुदा बिना कहनौं तँ नहियेँ बुझबहक। शहर-बजारमे देखबहक जे ऊपरमे ठनका खसल अछि आ दोसर मुँह घुमा कऽ जा रहल अछि।

चेथरू- (बिच्चेमे..) काका, एना किए कहै छिऐ, एना ने कहियौ जे बच्चामे एक्के गाछ एकटा विशाल वृक्ष बनि जाइए आ दोसर लत्ती बनि ओहन भऽ जाइए जे अपने एक्को-हाथ ठाढ़ होइक तागैत नै रहै छै, मुदा माटिक सिनेह ओहन होइ छै जे वएह वृक्ष बाँहि पसारि ओइ लत्तीकेँ अपना ऊपर फुनगी धरि बढ़ैक रस्ता दइए।

सोनमाकाका- बेस कहलहक चेथरू। एकबेर तोहूँ अयोधी बाजह। कनियाँ अखैन पीड़िताएल छैथ तँ...।

अयोधी- काका, जहिना सभ दिन गामक खुट्टा मानैत एलौं तहिना अखनो मानै छी। हम सभ तँ गरीब छी समाजेक आशपर जीबै छी। ई कखनो नै मोनमे अबैए जे बेर-विपैत पड़त तँ समाज छोड़ि देत। तँए जे विचार देब तइमे एक्को-डेग पाछू नै खिंचब।

कोशिला- (उफनैत..) भैया, काका, बाबा समाजक सभ

कियो। जाबे धरि कोशिलाक देहमे पैरभुत्ता रहतै ताबे धरि कहियो पएर पाछू नै करत। जइ दिन पैरभुत्ता टुटतै तइ दिन समाजेमे भीख मांगब। भलेँ कियो भिक्षु किए ने कहए।

((समाप्त))

शब्द संख्या : 1094

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-40-7

कम्प्रोमाइज

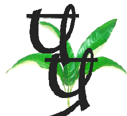
जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

कम्प्रोमाइज

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-38-4

दाम : ₹ 200
© श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण : 2013
तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

COMPROMISE
A Play in Maithili Language by Shri. Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉंपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

पात्र परिचय

पुरुष पात्र-

(1)	नसीवलाल-	किसानक अगुआ, 65 बर्ख
(2)	सुकदेव-	बटाइ किसान (बटेदार) 64 बर्ख
(3)	मनचन-	बटेदार, 40 बर्ख
(4)	सोमन-	बटेदार, 45 बर्ख
(5)	रघुवीर-	तीमन-तरकारी उपजौनिहार, 45 बर्ख
(6)	रामरूप-	बटेदार, 44 बर्ख
(7)	कर्मदेव-	बी.ए. पास युवक
(8)	प्रो. कृष्णदेव-	50-55 बर्ख
(9)	दिनेश-	मैट्रिकक छात्र
(10)	शिव शंकर-	एजेन्ट (बोरिंग-दमकल)
(11)	घनश्याम-	बैंक मैनेजर
(12)	बहादुर-	नोकर
(13)	मनमोहन-	इंजीनियर
(14)	सन्तोष-	एग्रीकल्चर ग्रेजुएट
(15)	डॉ. रघुनाथ-	सेवा निवृत डॉक्टर, 60 बर्ख

नारी पात्र-

(1)	अनुराधा-	डॉ. रघुनाथक पत्नी, 58 बर्ख
(2)	सुधा-	कृष्णदेवक बेटी। हाइ स्कूलक छात्रा
(3)	शान्ती-	पंचायत मुखिया, 25 बर्ख
(4)	आभा-	शिक्षिका, 22 बर्ख
(5)	सोनिया-	सुकदेवक पत्नी, 60 बर्ख

पहिल दृश्य

(आसिन मास। रौदियाह समए...।)

सोनिया- अपनो नार सधि गेल। काल्हि मनोहर मामागामसँ आनए गेल। दुइयो-चारि बल्हीक ओरियान अपनो नै करब तँ माल-जालकेँ कथी खाइले देबइ?

सुकदेव- मनमे तँ अपनो अछि, मुदा छुछ हाथ थोड़े मुँहमे जाइ छइ।

सोनिया- कोनो कि अन्न नै खाइ छी जे नइ बुझब। मगर दुआरपर जेकरा गरदैनमे डोरी बन्हने छिऐ तेकर निमरजना केकरा करए पड़तै?

सुकदेव- (मुड़ी डोलबैत...।) जेकरा पाइ छै ओ आनो गामसँ कीनि आनत। मुदा..?

सोनिया- ‘मुदा’ कहने समए मानत? कोनो ओरियान तँ करैये पड़त।

सुकदेव- (तरहत्थीसँ आँखि मलैत...।) ने एक्को मुट्ठी नार अछि, ने बाधमे घास अछि आ ने बाँसक पत्ता एक्कोटा हरियर अछि। आन साल अधियोपर तोड़ै छेलौं तैयो कहुना कऽ काज चला लइ छेलौं। ऐ बेर सेहो सभटा झड़किये गेल।

देखियौ की होइ छइ..!

सोनिया- ताबे ओहिना ठाढ़ रहत। दुआरपर लक्ष्मी कलपने परतवाए केकर हेतइ?

सुकदेव- गाममे केकरो देखबो कहाँ करै छिऐ जे दू मुट्ठी मांगियो लेब। जिनका सभकेँ बेसी होइतो छैन ओ तँ अपने पाछू तबाह छैथ आ जेकरा छैहे नहि ओ तँ अपनो पइत नहि बँचा सकैए, दोसरकेँ की बँचौत। तहूमे दुइए-चारि दिनक बात रहैत तखन ने। ऐ बेर नइ भेने ऐगलो साल तेहने हएत।

सोनिया- छुच्छे सोग केने चिन्ता मेटाइ छइ। जखन दिने उनटा भऽ गेल तखन सुनटा सोचने हएत?

सुकदेव- (बेबस होइत...।) की उपाय करब! जखन समैये संग छोड़ि देलक तखन जीबैक केते भरोस करब।

सोनिया- ई अहींटा बुझै छिऐ आकि आरो लोक?

सुकदेव- की उपाय करब?

सोनिया- उपाय की करब! जेहेन समए बनल तेहेन बनि जाउ। तखने किछु पारो-घाट लागत। नहि तँ..!

(सुकदेव सोनियाक मुँह दिस बघजर लगल जकाँ टकटकी लगा ताकए लगल, सुकदेवक आँखि सोनिया पढ़ि...।)

चलू दुनू गोरे, मरहन्नाक जे बुट्टी-बाटी भेटत सेहो काटि लेब आ केतौ-केतौ जे चिचोर सभ छै सेहो काटि कऽ लऽ आनब।

सुकदेव- बेस कहलौं! जाबे बरतन ताबे बरतन। हाँसू नेने आउ। खोलियापर चुनौटी अछि सेहो लऽ लेब।

(सोनिया चलि जाइत अछि। मनचनक प्रवेश...।)

मनचन- भैया, जान बँचाएब भारी भऽ गेल!

सुकदेव- से की?

मनचन- कलक पानि बन्न भऽ गेल। पानियेँ ने खसै छइ!

सुकदेव- से की भेलह?

मनचन- पान-सात दिनसँ मटियाह पानि अबै छेलइ। ओकरा फड़िछा कऽ कहुना काज चलबै छेलौं। काल्हिसँ ओहो बन्न भऽ गेल!

सुकदेव- दोसर कलसँ काज चलाबह?

मनचन- एँह, कोनो कि एक्केटा कल बन्न भेल। टोलक सभ कलक सएह हाल अछि!

सुकदेव- तखन पीबै की छह?

मनचन- पोखैरक पानि पीबै छी। ओहो लटपटाएले अछि।

सुकदेव- बौआ की करबहक। आखिर ऐ धरतीपर अपना सभ (मनुख) नै किछु करबहक तँ माल-जाल आकि चिड़ै-चुनमुनी बुते हेतइ। देखै नै छहक जे केते रंगक चिड़ै पड़ा गेल।

मनचन- भैया, तोरे सबहक मुँह देख जीबै छी। सबहक गति एक्के देखै छिऐ। तामसो केकरापर करब। ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। ने देहक ठेकान अछि आ ने देखनिहारक

ठेकान अछि। तखन तँ जाबे हाथ-पएर घिसियाइए, घिसियबै छी!

सुकदेव- अखन जाह। निचेनमे करवनो गप करब। दू मुट्ठी मालक ओरियान करए जाइ छी। देखहक जे आसिन मास जकाँ एक्कोरत्ती लगै छइ। अखुनका ओससँ खढ़-पात डगडगाइत छल, से केहेन उखड़ाह लगै छइ!

मनचन- ऐसँ नीक तँ जेठमे छेलइ। जेठोसँ खरहर समए लगै छइ! एकटा बात मन पड़ल।

सुकदेव- की?

मनचन- ऐसँ पैछला रौदी नमहर रहै कि छोट?

सुकदेव- तोरा केहेन बुझि पड़ै छह?

मनचन- नमहर बुझि पड़ैए!

सुकदेव- ओ चारि सालक भेल रहए। एकरा तँ सालो ने लगलै हेन।

मनचन- हमरा नमहर बुझि पड़ैए।

सुकदेव- दिन बितने लोक दुखो बिसैर जाइ छइ। तोरो सएह भेलह।

मनचन- नहि भैया, से नहि भेल। विधने मोटका कलमसँ लिखि देने छैथ तँए ने मन रहैए।

(मुस्की दैत...।)

मुदा एकटा बात कहै छिअ।

सुकदेव- की?

मनचन- हम सभ तँ जानियेँ कऽ गरीब छी, तँए बुड़िबक छी। मुदा जेकरो विधना मेहिक्का कलमसँ लिखलखिन ओहो तँ केंकियाइते अछि।

सुकदेव- अखन जाह, काजक बेर उनैह जाएत। एकटा बात मन रखिहह। पैछला शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेलइ। एक सालक रौदी लोककेँ चारि बरख पाछू ठेलै छइ।

(दूटा हाँसू नेने सोनियाक प्रवेश...।)

सुकदेव- (स्वयं...।) केतए गेल पचास बर्खक जिनगी। पानिक दुआरे कोसी-नहर आ शक्तिक लेल पनिबिजली जँ बनल रहैत तँ की औझुके जकाँ मिथिलांचलवासीकेँ पड़ाइन लगितै? चिड़ै जकाँ उड़ैत-उड़ैत लोक चिड़ै बनि गेल। चिड़ै बनने मनुख, मनुख कहबैक जोग रहत। जेकरा अपन बाप-दादाक बनौल सुन्दर गाम-घर छै ओ घर छोड़ि घुरमुरिया खेलाइए! खाएर..!

(सोनिया दिस तकैत...।)

तमाकुल अनलौं आकि ओहो सठि गेल?

सोनिया- (मुँह चमकबैत...।) सुआइत लोक कहै छै- 'जुन्ना जरि गेल मुदा ऐंठन नहि गेल!' पेटक ओरियान रहए कि नइ रहए, मुदा मुँहमे सुपारी चाहबे करी..!

सुकदेव- सुपारीक मर्यादा की छै से अहीं बुझबै। सुपारी खेनाइक अंग छी जे खेनाइ खेलोपरान्त अतिथि-अभ्यागतकेँ विदाइ स्वरूप देल जाइ छइ। सुपारियो-जोकर मान-मर्यादा जइ पुरुखमे नहि रहल ओ पुरुख पुरुख थोड़े

भेल, ओ तँ हिजरोसँ बत्तर भेल!

सोनिया- बुझलौं-बुझलौं! साँप फुसलबैक मनतर।

(विचार बदलैत)

एकटा बात पुछौं?

सुकदेव- एक्केटा किए बात पुछब, एक हजार पुछू।

सोनिया- पेटक आशामे पेट काटि भरै छी आ घर अनैकाल टुटरूमटुम भऽ जाइए। छोड़ि दियौ बटाइ खेती।

(सोनियाक विचार सुनि सुकदेव ऊपर-सँ-निच्चाँ धरि निंग्हारि नजैर चेहरापर अँटका, अपन पैछला जिनगीपर दौगबैत, ऐना जकाँ देखए लगल। तरपैत मने...।)

सुकदेव- जखन अपना धन-वित्त नहि अछि तखन..?

सोनिया- तखन की?

सुकदेव- बटाइयो खेती केने अपन जिनगी तँ ठाढ़ केने छी। मारि-धुसि खटै छी, भरि पेट आकि अदहा पेट खाइ तँ छी। जँ ईहो छोड़िये देब तँ की गोबर-गोइठा जकाँ केतौ पड़ल रहब?

सोनिया- बड़ीटा दुनियाँ छइ। जेतए पेट भरत तेतए देह धुनि जिनगी बिताएब।

सुकदेव- ई तँ बुझै छी जे हाथ-पएर लाड़ने केतौ पेट भरत। मुदा जे फुलबाड़ी (गाम) बाप-दादाक लगौल अछि, जेतए मनुख जकाँ मनुख बनि सभ दिन जीबैत एलौं, तेकरा छोड़ि..?

सोनिया- की आनठाम मनुख नइ रहै छइ?

सुकदेव- हँ, रहै छइ। मुदा मनुख-मनुखक आ समाज-समाजक बीच भुताहि गाछी, मरुभूमि, पहाड़ आ समुद्र सदृश भाषा आ काज बेवहारसँ जिनगी अदैल-बदैल गेल अछि, जइसँ एते खाधि मनुख-मनुखक बीच बनि गेल अछि। कियो केकरो देखौ ने चाहैए। एहेन स्थितिमे..?

सोनिया- कोनो कि खुट्टा गाड़ि सभदिन रहब जे अनेरे एते माथा धुनि देहक हड्डी झकझकबै छी। बुझिते तँ छिऐ जे घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे।

सुकदेव- बाप-दादाक फुलबाड़ी ओ नहि, जे सिरिफ समैया फूलक होइ। बाप-दादाक फुलबाड़ी ओ छिऐन जइमे फूलक गाछक जड़िमे कुण्डली राखल अछि।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 982

दोसर दृश्य

(सुकदेव सोमन ऐठाम जाइतकाल, बाटमे...।)

सुकदेव- (उत्तेजित होइत) पचास बर्खसँ किसान-बोनिहारक संग मिलि कोसी नहरक पानिसँ खेतियो आ बिजलियोक सपना पूरा हएत तइ आशामे रहलौं। मुदा आइ की देखै छी? घरमे अन्न नहि, खेतमे पानि नहि, मशीनक नामो-निशान नहि! यएह स्वराज साठि बर्खक छी? की हमसभ टकटकी लगौने मरि जाइ? मुदा ऐ उमेरमे कएले की हएत। भगवान बुढ़ाड़ी दैते किए छथिन। जँ दइ छथिन तँ जीबैक जोगार किए ने कए दइ छथिन। की टकटकी लगा आँखि पथरा परान तियागि दी। उसैर रहल अछि गामक चास-बास, उसैर रहल अछि पशुधन, उसैर रहल अछि गामक खेत-खरिहाँन, उसैर रहल अछि गामक कला-संस्कृति..!

(सोमनक घर। आँगनसँ निकैल सोमन देह खोलने कन्हापर धोती नेने नहाइले विदा भेल...।)

सोमन- सबेरे-सबेरे केमहर-केमहर भैया?

सुकदेव- एलौं तँ तोरेसँ किछु विचार करए मुदा तोरा देखै छिअ जे केतौ जाइक सुर-सार करै छह?

सोमन- हँ भैया, कनी हाटपर जाएब, तँए धड़फड़ाएल छी। मुदा जखन आबि गेलह तँ किछु इशारोमे कहि दाए। जखन भेँट भऽ गेलिय तखन चुपे-चाप चलियो केना जेबह।

सुकदेव- गप तँ गप छी, दोसरो घड़ी हएत। मुदा काजमे बाधा भेने तँ काज मारल जाएत। काज मरने जिनगी मरै छइ। एक तँ समैये तेहेन दुरकाल भऽ गेल जे ओहिना सभ पटपटाइए। तहूपर जँ जोगारो बाधित हएत तखन तँ आरो तबाही बढ़त।

सोमन- गप जे कहि देने रहबह तँ रस्तो-पेरामे सोचैत-विचारैत रहब। ओमहरसँ–माने हाटसँ–घुमब तँ भेँट केने एबह।

सुकदेव- गप तँ नमहर अछि। मुदा तोरो बेर परहक भदबा बनब नीक नहि। अच्छा साँझमे भेँट हेबह किने?

सोमन- हाट जाएब अनठाइयो दैतिऐ। मुदा आइ सोमक हाट छी। कहैले तँ दूटा हाट लगै छै मुदा सोमक हाटक मोकाबला वरस्पैतक हाट थोड़े करत।

सुकदेव- से की?

सोमन- सोमक हाटमे सीतामढ़ीक वेपारीसँ लऽ कऽ सुपौल, फारविसगंज धरिक वेपारी अबै छइ। छह दिन ओकरा सभकेँ अबै-जाइमे लगै छइ। तहूमे गाए-बरदक पएरे एनाइ-गेनाइ सेहो रहै छइ।

सुकदेव- हँ, से तँ लगिते हेतइ। तैयो, ओही वेपारी सभकेँ धन्यवाद दिऐ जे एते मेहनत करैए।

सोमन- अनठौने नै बनत भैया। बहरबैया वेपारी सभ मुइल-

टुटल सभटा उठा लइए।

सुकदेव- केहेन कारोबार ओकरा सबहक छै जे मुइल-टुटल सभटा कीनि लइए?

सोमन- छीहे धड़फड़ाएल, भैया। नहि तँ सभ बात बुझा देतियह। एको मुट्ठी नार-पात नइ अछि तँए देहमे कछमछी लागल अछि। खढ़-पानि-ले जे गाए-मालकेँ हुकरैत देखै छिऐ तँ मन घोर-मट्ठा भऽ जाइए! ओना..?

सुकदेव- की ओना?

सोमन- बेर परहक बात बजने बेसी नीक होइ छइ। खाएर, कनी देरीए ने हएत, ओतेक लफैर कऽ चलि पुरा लेब। अपना गाममे हाटे ने होइए, नहि तँ जीबैक एकटा बाट लोककेँ खुजि जइतै।

सुकदेव- हँ, से तँ होइतै। तोरो देरी हेतह।

सोमन- की करब भैया, चारू दिससँ घेराएल छी। तेहेन समए भऽ गेल अछि जे अपनो सबहक जान बँचब कठिन!

(दू डेग आगू बढ़ैत सुकदेव...।)

सुकदेव- कनी-मनी पूजियो तोड़ि कऽ पहिने मनुखक जान बँचाबह, बादमे बुझल जेतइ।

सोमन- जाबे साँस अछि ताबे तँ आशामे हाथ-पएर लाड़बे-चाड़बे करब। अजगरो तँ अपन जिनगीक ओरियान करिते अछि।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 463

तेसर दृश्य

(मवेशी हाट। माल-जालक संग अनो-पानि आ तीमनो तरकारी...।)

(सोमन आ रामरूप...।)

रामरूप- गोधियाँ, मालक मन्दी आबि गेल अछि। दोसर कोनो बाटे नइ सुझल, तँए कनी-मनी घटो लगा कऽ बेच लेलौं। तोहर केहेन रहलह?

सोमन- (मुस्कियाइत...।) हमरा सुतरल! सुपौलिया वेपारी पकड़ाएल। अपन मन तँ झुझुआइते छेलए। पौंरुके तीन हजारमे बरद किनने छेलौं। लार-पातक दुआरे अदहो देह नइ छेलइ। मनमे छेलए जे पाँच बरख मारि-धुसि जोतबो करब आ तेकर बादो बेचब तैयो दाम आबिए जाएत, मुदा की करितौं खुट्टा उसरन भऽ गेल!

रामरूप- अही दुआरे हमहूँ बेच लेलौं। तेहेन धन छेलए जे मनसँ नइ जाइ छेलए, मुदा रखबो करितौं तँ खाइले कथी दैतिऐ! महिना दिनसँ कपैच-कुपैच कऽ खाइले दइ छेलिऐ। मुदा परसू आबि कऽ ओहो सधि गेल। अन्तिममे गठुल्ला घर उछेहलौं जे दू दिन चलल।

सोमन- घरक उछेह खुआ लेलह तँ फेर घर?

रामरूप- खुट्टापर जेकरा बान्हि कऽ रखने छेलिऐ ओकरा जे अदहो पेट खाइले नै दैतिऐ से केहेन होइत। जखने थैरमे जाइ छेलौं कि हुकरए लगै छेलए। ओकर कलपैत मन देख अपनो मन कलैप जाइ छल, तँए सोचलौं जे बरसात तँ ऐगला साल औत, बुझल जेतइ।

सोमन- (मुड़ी डोलबैत...।) हँ से तँ ठीके। जैठाम एक दिन पार लगब कठिन अछि तैठाम साल भरि आगूक सोचब बुड़िबक्कीए ने हएत।

रामरूप- आब तँ गामे चलबह किने?

सोमन- हँ, चलब तँ गामे मुदा एकटा काज पछुआएल अछि। चलह एक फेड़ा लगाइयो लेब आ आध मन चाउरो कीनि लेब।

रामरूप- मन तँ हमरो होइए। मुदा मालक पएरे जे एलौं से थाकि गेल छी। मोटरी उठबैक साहसे ने होइए।

सोमन- एँह हद करै छह तहूँ। चलह ने कोनो दोकानपर बैस जलखैयो-चाह करब आ दस मिनट जिराइयो लेब। बुझै छहक जे कहुना पाँच रूपैआ किलो सस्ता भेटतह।

(चाहक दोकान। ब्रेंचपर चाउरक मोटरी रखि रघुवीर सेहो बैसल रहए...।)

रामरूप- कनी मोटरी घुसका लिअ भाय, की छी मोटरीमे?

रघुवीर- की रहत। चाउर छी। आब कि कोनो भात खाइ छी आकि दिन घीचै छी।

रामरूप-	से की?

रघुवीर-	अपना सबहक जे अगहनी चाउरमे सुआद आ मस्ती छै से थोड़े ऐ चाउरमे अछि। तखन तँ अपन हारल...।

रामरूप-	की भा देलक?

रघुवीर-	तँए, कनी मन मानलक। अगहनी चाउरसँ पाँच रूपैआ सस्ता अछि।

रामरूप-	गोधियाँ, तब तँ अपनो सभ अध-अध मन लैये लेब किने?

सोमन-	हमहूँ तँ यएह सोचि कऽ कहलियह। अखन जँ कनी भीरे हएत तँ तीन दिनक सिदहामे चारि दिन कटि जाएत।

रामरूप-	हम सभ पछुआएल छी, तैबीच चाउर सधि ने जेतै, भाय?

रघुवीर-	से की अद्दी-गुद्दी वेपारी छी। पाँच गो ट्रक भिड़ौने अछि। मुदा खरँतुआ जकाँ लेबालो ढेरियाएल छइ।

रामरूप-	(मोटरी दिस देख...।) तरजू देखै छी। अहूँ कोनो चीज बेचैले आएल छेलौं की?

रघुवीर-	हँ, तरकारी उपजेबौ करै छी आ हाटमे बेचबो करै छी। भगवान दसे कट्ठा खेत देने छैथ। ओकरे बीचमे कल गरा देने छिऐ आ बारहो मास तरकारीए उपजबै छी।

रामरूप-	सभ किछु बिक जाइए?

रघुवीर-	(कनी ठमैक...।) हँ, बिक तँ जाइए, मुदा..?

रामरूप-	'मुदा' की?

रघुवीर-	यएह जे तेहेन चिकनियाँ लेबाल सभ भऽ गेल अछि जे चीज चिन्हबे ने करैए।

रामरूप-	से की?

रघुवीर-	की कहब। लहटगर देख लोक चीज कीनैए। किड़ी-फतिंगीक बेसी दबाइ हम नइ दइ छिऐ। तइसँ देखैमे समान कनी दब रहैए।

रामरूप-	अहाँ किए ने दबाइ दइ छिऐ?

रघुवीर-	अपनो खाइ छी किने। देखैमे ने दबाइ देलहा नीक लगै छै जरूर, मुदा जहरक अंश ओइमे रहिये जाइ छै किने। खाएर, भगवान हमरो दिस देखै छैथ?

रामरूप-	से की?

रघुवीर-	अखनो एहेन कीननिहार छैथ जे हमरे चीजकेँ पसिन करै छैथ। दू-पाइ महगे बिकाइए। अहाँ सभ केतए आएल छेलौं?

रामरूप-	(मिरमिराइत...।) की कहब भाय, रौदीक मारल डिरियाइ छी! बरद-गाए बेचए आएल छेलौं। खुट्टा उसरन भऽ गेल!

रघुवीर-	(मुड़ी डोलबैत...।) दोसर उपाइये कथी अछि। तेहेन दुरकाल समए भऽ गेल अछि जे लोकोक परान बँचब कठिन अछि। खाएर, माले-जाल गेल किने, पहिने मनुखक जान बँचाउ। पाछू बुझल जेतइ।

रामरूप-	अहाँ तँ हाटक तरी-घटी बुझैत हेबइ। कहू जे एते-एते

दूरसँ जे वेपारी सभ अबैए से केना पार लगै छइ?

रघुवीर-	एकरा सबहक भाँज बड़ भारी छइ। बड़का-बड़का वेपारी सभ छी। चरि-चरि–पँच-पँच बैच बनौने अछि। गामसँ हाट आ हाटसँ गाम एकबट्ट केने रहैए। अड्डा बना-बना कारोबार पसारने अछि।

रामरूप-	एकरा सभले रौदी-दाही नहि छइ?

रघुवीर-	(अचम्भित होइत...।) रौदी-दाही! हद करै छी अहूँ। सदिखन घैलापर पाइ चढ़ौने रहैए। जेना अपना सभले रौदी-दाही जनमारा छी तेना ओकरा सबहक अगहन छी। एक बेर रौदी-दाही पेने सेठ बनि जाइए।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 697

चारिम दृश्य

(नसीवलालक घर। दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस नसीवलाल आँखि मुनने किछु सोचि रहल छैथ, तखने सोमनक संग सुकदेवक प्रवेश होइत अछि।)

सुकदेव-	नीन छी यौ भाय?

(सुकदेवक बात सुनि आँखि खोलि धड़फड़ाइत...।)

नवीसवलाल-	नहि! नहि! सुतल कहाँ छी। समैक फेरीसँ चिन्तित भऽ गेल छी। खेलहो अन्न देहमे नै लगैए। एक दिस जहिना भूख पियास मेटा गेल तहिना आँखिक नीन्न सेहो मेटाएल जा रहल अछि। धन्यवाद अहीं सभकेँ दी जे एहनो दुरकालमे हँसी-खुशीसँ जीब रहल छी।

सोमन-	हद करै छी भाय! राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लागल बरकुम्मैर कानए।

नसीवलाल-	तोहर बात कटैबला नहियेँ छह सोमन, मुदा..?

सोमन-	'मुदा' की?

नसीवलाल-	ओना, जे जेतेक पछुआएल अछि ओ ओतेक समस्यासँ गरसित सेहो अछि, मुदा प्राकृतिक बिपैत सभपर पड़ै छइ। तहूमे जे जेतेक अगुआएल रहैए ओकरापर ओतेक बेसी पड़ै छइ।

सोमन- हँ, से तँ पड़िते छइ।

नसीवलाल- बौआ, ओना तोहर उमेरे केते भेलह। एक गाममे रहितो कम सम्पर्कमे रहै छह। सुकदेव भाय बतरिया छैथ। तहूमे बच्चेसँ दुनू गोरे गामसँ जहल तक संगे रहलौं। मुदा..?

सोमन- 'मुदा' की?

नसीवलाल- यएह जे आब बुझि पड़ैए, जे जिनगीए ठका गेल!

सोमन- से की?

नसीवलाल- की कहबह आ केतेक कहबह। एकटा कोसीए नहरक बात सुनह। जहिया जुआने रही, तहिये-सँ कहै छिअ। बड़ लिलसा रहए जे कोसी-नहर बनत, डैम बनत। नहरक पानिसँ खेत पटत आ डैममे पनिबिजलीक यंत्र बैसत। जइसँ तेतेक बिजली हएत जे घर-दुआरक इजोतक संग करखन्नो चलत..! मुदा सभ आशापर पानि हेरा गेल! आइ जँ बिजली रहैत तँ गामो बजारे जकाँ भऽ गेल रहैत, मुदा...।

सोमन- 'मुदा' की?

नसीवलाल- यएह जे ई बात मनसँ मेटा गेल छेलए जे एहेन रौदीसँ भेँट हएत। मुदा.!

सोमन- 'मुदा' की?

नसीवलाल- अपना संग-संग गामोक कल्याण भऽ जाइत। खेती-पथारीक संग एते छोट-पैघ करखन्ना बनि गेल रहैत जे बेरोजगार केकरा कहै छै से तकनौं नहि भेटैत। मुदा

आइ देखै छी जे गाम-गामक लोक उजैह कऽ दिल्ली-कलकत्ताक संग जहाँ-तहाँ पड़ा रहल अछि!

सोमन- हँ, से तँ भऽ रहल अछि। मुदा माटि फाँकि कऽ तँ मनुख नहियेँ रहि सकैए। जेतए पेट भरतै तेतए ने जाएत।

नसीवलाल- कहलह तँ बेस बात। मुदा गाम ताबे तक नहि हरियाएत जाबे तक गामक सभ बच्चा-बच्चा अपन पएर-पर ठाढ़ भऽ अपन-अपन भविस दिस नहि ताकए लगत।

सोमन- एहेन समए भेने लोक केना ठाढ़ हएत?

नसीवलाल- सएह ने मनकेँ नचा रहल अछि। सभ माए-बाप अपन बेटा-बेटीपर आशा लगौने रहैए जे हमरासँ नीक बनि धिया-पुता गुजरो करत आ नीक जकाँ आगूओ बढ़त। मुदा आँखि उठा दुनियाँ दिस जखन तकै छी तँ चौन्ह आबि जाइए। बाल-बच्चाक कोन गप जे अपन बुढ़ाड़ियो भरिसक कनिते कटत!

सुकदेव- यएह बात मनमे औंढ़ मारलक भाय, तँए एलौं हेन।

नसीवलाल- भाय, कथी विचार करब। छुछ हाथ मुँहमे दइये कऽ की हएत। ने कियो गाम-घरक महत बुझैए आ ने अपन शक्तिक उपयोग करए चाहैए। सभ अपन अमूल्य श्रमकेँ दोसराक हाथे बेच बजारक चकचकीमे वौआए चाहैए।

सुकदेव- यएह सभ देख ने मन उचैट गेल हेन। मुदा केकरा कहबै आ के सुनत। अहाँ तँ गुल्ली-डन्टासँ अखन धरिक संगी छी। अखन तक जे तीत-मीठ भेल, सभमे दुनू गोरे संगे

छी।

नसीवलाल- (चानि परहक पसेना पोछैत...।) जहिना माटिक ईंटाकेँ वएह माटि, पानिक संग मिलि जोड़ि-साटि दैत अछि तहिना ने मनुखक सिनेह मनुखक संगे साटि दइ छइ। मुदा सिनेह औत केना? एक दिस धनक भरमार, दोसर दिस भूखल पेट आ तैबीच चोर-उचक्काक सघन बोन अछि! केना लोकक परान बँचतै..?

सुकदेव- सोझहे चिन्ते केनौं तँ नहियेँ हएत। आ ने भगला-पड़ेलासँ हएत। सोचि-विचारि रस्ता धड़ए पड़त। जँ से नहि करब, तँ एक लोटा पानियोँ के देत, आकि एकटा काठियो मुइलापर के देत?

नसीवलाल- भाय, जहिया घोड़दौड़ करैबला छेलौं तहिया तँ करबे ने केलौं, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की हएत? किछु करए लगै छी तँ हाथ-पएर थरथराए लगैए। जइसँ बुझलो काजमे धकचुका जाइ छी।

सुकदेव- भाय, अशे तँ जिनगीक संगी छी, जेकरा लोक जिनगीक रस चुसैत अछि। तेकरो केना छोड़ि देब?

नसीवलाल- (सुकदेवपर आँखि गड़ा मुड़ी डोलबैत...।) भाय कहै तँ छी लाख टकाक गप। जँ अपनो-जोकर नै सोच-विचार करब तँ अकाल मरबो तँ नीक नहियेँ छी।

सुकदेव- नीक अधला केतए छै भाय! भलेँ लोक अपना जिनगीकेँ स्वार्थी बुझए मुदा जाबे धरि अपने निरोग नै रहब ताबे धरि दोसराक विषयमे सोचिये आकि कैये की सकै छी।

नसीवलाल- हँ, से तँ ठीके। विचारोकेँ प्रभावित तँ जिनगीए करैत अछि। नीक-नीक भाषणे करब आ अपन चालि छुतहरक अछि, तँ ओइ भाषणक महौते की। जहिना विज्ञान थियोरीक संग प्रेक्टिकलो करि कऽ देखबैत अछि तहिना ने नीतिशास्त्र सेहो अछि।

सुकदेव- अखन धरि यएह बुझि ने जीबैत एलौं, मुदा..?

नसीवलाल- हँ, समैक चक्र तँ प्रवल ऐछे मुदा एहनो तँ नहि अछि जेकरासँ सामना नै कएल जा सकैए। जीता-जिनगी हारियो मानि लेब, ओहो तँ..?

सुकदेव- हँ, से तँ उचित नहियेँ अछि। मुदा सामनो तँ..?

नसीवलाल- हँ, कठिन अछि। मुदा लंका सन राक्षसक बीच हनुमान केना..?

सुकदेव- हँ, तहिना।

नसीवलाल- (अपसोच करैत...।) पाछू घुमि तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जरूर चूक भेल। जेना कोसी-नहर आ पनिबिजली-ले समाजिक स्तरपर ठाढ़ भेलौं तेना बेकतीगत जीवनक बाट छुटि गेल..!

सुकदेव- से की?

नसीवलाल- यएह जे जेना मध्यम किसान छी, अपना खेत अछि तेना ने खेतमे पानिक ओरियान केलौं आ ने परिवारो-जोकर मशीन। जँ से केने रहितौं तँ भलेँ महग काज होइत मुदा जीबैक बाट तँ जरूर धरौने रहैत!

सुकदेव- जखन चारि पैरबला हाथी चुकि जाइए, तखन तँ मनुख

दुइए पैरबला अछि। जइ समए जे चूक भेल, भेल। आइ ने ओ समए बँचल अछि आ ने जिनगीक ओ अंश।

नसीवलाल- अखन धरि तँ हाले-चालमे समए निकैल गेल। काजक गप तँ छुटिये गेल। केमहर आएल छेलौं?

सुकदेव- भाय, अहाँसँ नुकाएल नहियेँ छी। अखन तक जे जीबैक आस बटाइ खेत छल, ओहो टुटि गेल। खेतबलाकेँ तँ खेत रहबे करै छैन मुदा बटेदारकेँ घरोक आँटा गील भऽ जाइ छइ।

नसीवलाल- दुर्भाग्य अछि भाय!

सुकदेव- जेकरा सोन छै ओकरा पहिरनिहार नहि, आ जे पहिरनिहार अछि ओकरा सोन नहि!

नसीवलाल- से तँ अछिए! गामक बारहअना खेत नोकरिहाराक अछि, जे खेती नइ करैए। जखन कि बारहअना लोक खेतीपर जीबैत अछि! मुदा कोन दुख एहेन छै जेकर दबाइ नहि छइ।

सुकदेव- भारी बनरफाँसमे पड़ि गेल छी! अखन तक खेती छोड़ि दोसर लूरि नइ सीखलौं। खांहिसो नइ भेल। मुदा आब घरसँ बाहरो जाएब से कोन लूरि लऽ कऽ जाएब? भीख मांगि खाइसँ नीक अन-पानि बेतरे घरमे परान तियागि देब हएत। अगदिगमे पड़ि गेल छी..!

नसीवलाल- अहूँसँ बेसी बनरफाँस तँ अपना लागल अछि। अहाँ तँ, नइ ऐ गाम तँ ओइ गाम जा कऽ कमाइयो-खा सकै छी,

मुदा...।

सुकदेव- यएह बात मनमे अहुरिया काटि रहल अछि। जहिना संग-मिलि एते दिन काटलौं तहिना आगूओ केना कटत, तेकर..?

नसीवलाल- कैनतो जीब सेहो नीक नहियेँ..!

(कर्मदेवक प्रवेश...।)

नसीवलाल- भाय, मन तँ अखनो तेना हुरकैए जे शेष जिनगी जहलेमे बिताएब, मुदा बुढ़ाड़ी...। नवतुरियामे समाजक प्रति कोनो रूचिये ने अछि। रुचियो केना रहत। जहिना परचा-पोस्टरमे परिवारक परिभाषा दैत अछि तहिना समाजक कोन बात जे माइयो-बापकेँ परिवारसँ लोक अलगे बुझैए!

कर्मदेव- काका, हमहूँ सएह पुछए एलौं जे एहेन समैमे घरसँ बिना भागने केना जीब?

नसीवलाल- बौआ, तोरे सभपर समाजक दारो-मदार अछि। मुदा जखन तोंही सभ चिड़ै जकाँ उड़ि पड़ा रहल छह, तखन तँ गाम-समाजक भगवाने मालिक!

सोमन- केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर हे..!

कर्मदेव- काका, जँ जीबैक बाट भेट जाएत तँ किए भागब?

नसीवलाल- बौआ, तूँ तँ पढ़ल-लिखल नौजवान छह। तोरामे ओतेक शक्ति छह जे कुछ कऽ सकै छह। शक्ति जगाबह।

कर्मदेव- अखुनका समैसँ जे अपन तुलना करै छी तँ बुझि पड़ैए जे कारी मेघ लटकल भादोक अमावसियाक बारह बजे

रातिक बीच पड़ल छी।

नसीवलाल- पढ़ि-लिखि कऽ एते निराश किए छह?

कर्मदेव- बुझि पड़ैए जे तेहेन पढ़ाइये पढ़ि लेलौं, जे ने घरक रहलौं आ ने घाटक!

नसीवलाल- ओना जीबैक बाट, बेकती◌ि-विशेष सेहो बनबैए आ बना सकैए। मुदा समाजकेँ बनने बिना जेहेन हेबा चाही से नहि बनि सकैए, तँए बेगरता अछि जे दुनू संग-संग बनए। जइले तोरे सन-सन नवयुवकसँ अपेक्षा अछि। फाँड़ बान्हि मैदानमे कुदए पड़तह।

कर्मदेव- कियो तँ काजे देख ने फाँड़ बान्हत?

नसीवलाल- (अर्द्ध हँसी हँसि...।) अइले समाजकेँ जगाबह पड़तह। जखने समाज नीन तोड़ि सुनत, तखने ओछाइन समैट घरसँ बहरा रस्तापर आबि ठाढ़ भऽ जाएत। जखने ठाढ़ हएत तखने नव सुरूजक रोशनीमे अतीतक गौरव देखत।

कर्मदेव- की गौरव?

नसीवलाल- मिथिला दर्शनक गौरव देखैले ओकर बनैक प्रक्रिया देखए पड़तह। 'संयुक्त परिवार' खाली बजनहि नहि बनतह। बनैक आ चलैक ढंग घड़ए पड़तह। जहिना कोनो बाट कोनो स्थान धरि पहुँचबैत अछि तहिना मिथिला दर्शन छी!

कर्मदेव- की दर्शन?

नसीवलाल- एते औगताइमे नइ बुझि सकबहक। अखन हमहूँ

औगताएले छी। मालो-जालकेँ पानि नै पीएलौं हेन, हुकरैए।

कर्मदेव- तखन?

नसीवलाल- सौंसे समाजक बैसार बरहम स्थानमे करह। सबहक विचारसँ एकटा रस्ता ताकि, आगू डेग उठाबह।

कर्मदेव- आइये बैसार करब।

नसीवलाल- एते धड़फड़ेने काज नै चलतह। कौल्हुका समए बना काने-कान सभकेँ पहिने जना दहुन।

कर्मदेव- बेस।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1373

पाँचम दृश्य

(समए- बेरुपहर, बरहम स्थानक परतीपर बैसार।)

सुकदेव- (ठाढ़ भऽ कऽ...।) भाय-बहिन लोकैन! जेते दिन अपना सबहक अजादीकेँ भेल, ओते उमेर हमरो भेल। किएक तँ कोसी नहर-ले नसीवलाल भाइक संग सरकारी ऑफिसमे करीब पचास बर्खसँ धरना, प्रदर्शन आ सभाक संग जहलो जाइत-अबैत रहलौं। रौदी बिसरए लगल छेलौं, आशा एतेक जगि गेल छल जे रौदीसँ भेँट नइ हएत। मुदा ऐ बेरक रौदी तेना सिखा रहल अछि जे सभ केलहा पानिमे चलि गेल! जहिना सबहक जान अवग्रहमे पड़ल अछि तहिना तँ अपनो अछि।

सोमन- (बैसले-बैसल।) करबो तँ पानियेँ-ले ने केलौं। पानि-ले केलहा पानिमे गेल!

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ कऽ।) लंगोटिया संगी सुकदेव भाय छैथ। बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। दुनू गोरेक बीच अन्तर एतबे अछि जे हमरा अप्पन खेत अछि आ हुनका अपन नइ छैन। मुदा करै छी दुनू गोरे खेतीए। अपना खेत रहितो आशा-अशीमे रहि गेलौं, तैबीच जिनगीए ससैर गेल..!

सोमन- एक दिस नहर खुनाइ होइए आ दोसर दिस ढहि-ढहि भोथाइए आ बीचमे सरकार मदारी-नाच पसारने अछि!

नसीवलाल- खेती-ले पानि ओहने जरूरी अछि जेहने मनुख आ माल-जाल-ले। बिनु पानियेँ खेती भाइये ने सकैए। जइ हिसाबसँ नहर खुनाइ शुरू भेल, जँ खुना गेल रहैत तँ अपना सभ बहुत अगुआ गेल रहितौं। मुदा की देखै छी..!

कर्मदेव- कनी फरिछा कऽ कहियौ, काका?

नसीवलाल- (हँसैत...।) बौआ, गामक बात बड़ नमहर अछि तँए ओते नै कहि, अपन बात कहै छिअह। दस बीघा जोत जमीन अछि, आ बाँकी गाछ-बेख आ खरहोरि इत्यादिमे बरदाएल अछि। बारह मासक सालमे तीनटा मौसम–जाड़, गरमी, बरसात–होइए। मौनसुनी बरखासँ बरसातमे काज चलैए। बाँकी, सालक आठ मास ओहिना रहैए।

सोमन- गोटे-गोटे बेर झाँटो आ पथरो खसैए।

नसीवलाल- हँ, हँ, सेहो होइए। अपन देश मूलत: किसानक देश छी। खेती-पथारी अपना देशक मुख्य बेवसाय भेल, जे अदौ-सँ-अखन धरि चलि आबि रहल अछि। मुदा, जे समैपर बरखा भेल तखन तँ किसानक मन हरियाएल रहल, नहि तँ सालो भरि मरचुन्नी जकाँ...। प्रश्न अछि, पान खाएल मुँह मुस्कियाइत रहए। जैठाम लोक पानिक जोगार केने अछि ओइठाम हरियरी अछि, उन्नैतक रस्ता पकैड़ आगू मुहेँ ससैर रहल अछि, खेतक बले रंग-

बिरंगक करखन्नो ठाढ़ केने अछि। मुदा अपना सबहक जइड़े सुखाएल अछि तखन ऊपर केना पोनगत?

कर्मदेव- समस्या तँ भारी अछि?

नसीवलाल- जुगक अनुकूल भारी नै अछि। किएक तँ आइ हम सभ ओइ जुगमे पहुँच गेल छी जइ जुगमे एहेन-एहेन समस्या धिया-पुता खेल सदृश अछि। मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की?

नसीवलाल- 'मुदा' यएह जे जेकरा हाथमे काज करैक भार छै ओकर नेते भंगठल छै, कोन काज केना हएत तइ दिस नजरिये ने जाइ छइ!

कर्मदेव- तखन की करब?

नसीवलाल- अखन बहुत बात बजैक समए नहि अछि। जइ काज-ले सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन, पहिने तैपर विचार करू। गामक लोक आ गामक सम्पैतमे केना सम्बन्ध स्थापित हएत?

कर्मदेव- हम सभ तँ नवतुरिया छी, नीक-नहाँति नहियेँ बुझै छी तँए कनी अपने रस्ता बता दियौ?

नसीवलाल- अखन इतिहास-भूगोल देखैक काज नै अछि। अखन एतबे विचार करब अछि जे गाममे जेतेक जमीन अछि आ जेतेक लोक छी, पहिने ओकर हिसाब बुझि ली। बारहअना जमीन हुनकर छिऐन जे खेती छोड़ि अनतए जा नोकरी करै छैथ। चारिअना जमीन गाममे रहनिहारकेँ छैन। हुनके सबहक जमीन लोक बटाइ कऽ

कऽ कोनो धरानी जीब रहल छैथ। तँए जरूरी अछि ऐ खाधिकेँ भरब। जाबे से नहि हएत ताबे समस्या बनले रहल।

(नसीवलाल बैस जाइत।)

(कर्मदेव ठाढ़ भऽ कऽ।)

कर्मदेव- बेरा-बेरी अपन-अपन विचार रखै जाइ जाउ?

(ठाढ़ होइत)

सोमन- कहैले हमहूँ किसाने छी, मुदा ने अपना खेत अछि आ ने हर-बरद। जनेपर हरो कीनै छी आ अनके खेतमे खेतियो करै छी। जेना-तेना जिनगीकेँ घिसियबैत चलि रहल छी। आगू-पाछूक बात सेहो नहियेँ बुझै छी, तँए अपने लोकैन जे विचार करब, ओइसँ बाहर हमहूँ नै रहब।

(सोमन बैस जाइत। आभा उठि कऽ ठाढ़ होइत...।)

आभा- (जोरसँ...।) जँ देश अपन छी तँ देशक सम्पैत सेहो अपन छी। जरूरत अछि सबहक सुख-दुखमे सबहक भागीदारीक। जे गाममे रहि खेत जोतै छैथ, गामक खेत हुनका जिम्मा हेबा चाही। जँ से नहि हएत तँ जहिना मार-काटसँ इतिहास भरल अछि तहिना नव पन्ना आरो जोड़ाएत?

शान्ती- आभा बहिनक बात कटैबला नहियेँ छैन, किएक तँ साले-साल पनरह अगस्तकेँ हमहूँ सभ स्वराजक झण्डा फहराबै छी। मुदा की स्वराज अछि? समाजक सदस्यक संग सरकारक अंग सेहो छी, तँए शान्तीसँ सभ काज

करैत चलू। नसीवलाल काका आ सुकदेव काका जहिना उमेरगर छैथ तहिना अनुभवी सेहो छथिए, तँए जेना-जे विचार दैथ, हम सभ ओ करी।

सुकदेव- जेहने नवकवरिया आभा छैथ, तेहने शान्ती। मुदा दुनूक विचार सुनि हृदए शान्त भऽ गेल। खुशीसँ मन भरि गेल। सबहक विचारसँ एकटा रस्ता तँइ हुअए। जेकरा मानि सभ आगू बढ़ी।

नसीवलाल- ओना, दौग-बड़हा करैबला उमेर तँ नहियेँ अछि मुदा मेहौता बरद जकाँ संग-संग बहैले हम तैयारे छी। अखन गाममे पढ़ल-लिखल नौजवान कर्मदेव अछि। चाहब जे दौग-धूप करैक भार कर्मदेवेकेँ देल जाए।

कर्मदेव- जँ समाज भार देता तँ जहाँ धरि सकब इमानदारीसँ सम्हारब।

नसीवलाल- जेते नोकरिया छैथ हुनकासँ सम्पर्क कऽ सभ बात कहियौन। समाजक निर्माण सभ मिलि करब, सर्वोत्तम।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 778

छठम दृश्य

(कृष्णदेवक डेरा। सूर्यास्तक समए। पनरह बर्खक बेटा- दिनेश आ तेरह बर्खक बेटी- सुधा, दरबज्जापर बैस परीक्षाक गप-सप्प करैत...।)

सुधा- भायजी, अहाँ सबहक परीक्षा तँ लगिचा गेल?

दिनेश- हँ, ऐगला महिना आठ तारीखसँ हएत।

सुधा- सुनै छी, ऐ बेर चोरि-तोरि नइ चलत?

दिनेश- चोरि बन्न भेनाइ ओते असान अछि जे नइ चलत। भलेँ सेन्टरपर नइ चलौ मुदा आरो जगह बन्न हएब असान अछि?

सुधा- (जिज्ञासासँ...।) औरो ठाम होइ छइ!

दिनेश- होइ छै भेला जकाँ! खूब होइ छइ! जएह भोजैतनी सहए चटैतनी। जेकरे ऊपर चोरि रोकैक भार छै सएह सभ करैए। जेकरे फलाफल छी जे नीक विद्यार्थीक रिजल्ट अधला होइ छै आ अधला विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइ छइ।

सुधा- से एना किए होइ छइ?

(कृष्णदेवक प्रवेश...।)

दिनेश- हम तँ सभ बात बुझबो ने करै छी पापाकेँ सभ बुझल हेतैन।

सुधा- पापा, परीक्षामे चोरि केतए-केतए होइ छइ?

कृष्णदेव- बुच्ची! ओना, पुछलह तँ कहबे करबह। मुदा अधला गप सुनैमे समए नहियेँ लगाबी, सएह नीक।

सुधा- जँ अधला गप नै सुनब तँ फेर नीक-अधला बुझबै केना?

कृष्णदेव- (मुस्कियाइत) कहलह तँ ठीके। देखहक, ओना लोक परीक्षा केन्द्रपर जे किताब आकि चिट-पुरजी लऽ कऽ लिखैए तेतबे बुझै छइ। मुदा ऐ सभसँ नमहर-नमहर चोरि दोसर होइए। जखन कॉपी एकत्रिक भऽ परीक्षक ओइठाम पठौल जाइ छै तखन कॉपी अदैल-बदैल लेल जाइए।

सुधा- नइ बुझलिऐ, कनी नीक जकाँ फरिछा कऽ कहियौ।

कृष्णदेव- परीक्षा भवनसँ बाहर कॉपी लिखाइत अछि आ जमा करैकाल बदैल लेल जाइत अछि।

सुधा- (आश्चर्यसँ...।) तखन तँ ओकरा बहुत नम्बर अबैत हेतइ?

कृष्णदेव- अबिते छइ। कोनो कि एतबे होइए। एकर उपरान्तो जैठाम कॉपी जमा होइए आ मार्क-सीट तैयार होइए असली करामात तैठाम होइए। ओतए बनियाँक कारोबार जकाँ रूपैआक बरखा होइए।

सुधा- तखन तँ रूपैयेबला विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइत हेतइ?

कृष्णदवे- होइते अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश...।)

कर्मदेव- गोड़ लगै छी काका।

कृष्णदेव- नीके रहह! गाम-घरक की हाल-चाल छह?

(भीतरसँ कृष्णदेवक पत्नीक अवाज अबैत अछि।)

गौआँ-घरूआ दुआरे रहब कठिन भऽ गेल! केकरो असपतालक काज हौउ आकि कोट-कचहरीक, दौगल चलि आएत। जेना सबहक तोड़ा एतै गाड़ल होइ..!

(कान घुमा कर्मदेव सुनि ग्लानिसँ भरि गेल। मुदा समाजक प्रतिनिधि बुझि सभ सहैले तैयार...।)

कर्मदेव- काका, आइ धरि एहेन रौदी नै देखने छेलौं। ओना उमेरे केते अछि मुदा जहियासँ गियान-परान भेल तहियासँ एहेन समैसँ भेँट नै भेल छेलए।

कृष्णदेव- (सुधासँ...।) बुच्ची कर्मदेव भाय एलखुन। चाह नेने आबह।

(दुनू भाए-बहिन जाइत अछि...।)

कर्मदेव- अपना दिसक की हाल-चाल अछि?

कृष्णदेव- नीक नहियेँ कहक चाही। तखन तँ कबुलाक छागर बनल छी। करखनोकाल सोचए लगै छी तँ लाज हुअ लगैए जे एते दरमाहा पाबियो कऽ पैंच-उधार करए पड़ैए..!

कर्मदेव- किए?

कृष्णदेव- छह-छह मासक दरमाहा पछुआ जाइए। मुदा घरक

खरच तँ हेबे करैए। एते दिन मकानक पाछू तबाह छेलौं मुदा पैछला महिना निवृत्ति भेलौं।

कर्मदेव- बड़का चिन्ता पार केलौं।

कृष्णदेव- की पार केलौं। आगू दिस तकै छी तँ ओहूसँ नमहर-नमहर चिन्ता घेरने अछि।

कर्मदेव- से की?

कृष्णदेव- दू बर्खक बाद बेटाकेँ मेडिकलमे नाओं लिखाएब तैपर सँ बेटी सेहो बिआहे-जोकर भाइये जाएत।

कर्मदेव- हँ, से तँ हेबे करत।

कृष्णदेव- पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आब हल्लुक रहल। लाखक तँ कोनो मोजरे ने अछि। अपन कमाइ हजारमे अछि आ खरच लाखमे, तखन चिन्ता किए ने पछुऔत!

कर्मदेव- अहाँकेँ कोनो की कमाइयेटा अछि, गामोमे तेतेक अछि जे..?

कृष्णदेव- सएह कखनोकाल सोचै छी जे गामक खेत बेच बैंकेमे रखि ली। जइसँ मौका-कुमौका काजो करब आ सूदि सेहो हएत।

कर्मदेव- (आँखि गड़ा कृष्णदेवकेँ देखैत...।) काका, परिवार माया-जाल छिऐ। जे गरीब अछि ओकरा छोटका माया पकड़ै छै आ जे जेते नमहर छैथ हुनका ओते नमहर पकड़ै छैन।

कृष्णदेव- ठीके कहै छह। राजा दुखी परजा दुखी जोगीकेँ दुख दूना। अपने बात कहै छिअ, गाममे केते खेत अछि से

देखते छहक। जँ समए सुभ्यस्त रहल तँ सालो भरिक बुतातो तँ भाइए जाइए ऊपरसँ किछु बेचियो-बिकिन लइ छी, मुदा ऐ बेर सेहो नै हएत।

कर्मदेव- अहाँ सभ पढ़ल-लिखल छी, तखन..?

कृष्णदेव- (मुस्कियाइत...।) ब्रह्मफाँसमे पड़ि गेल छी। जहिना बाबाकेँ तहिना बाबूकेँ चौगामाक लोक 'मालिक' कहै छेलैन, मलिकाना निमाहितो छला। हमरो लोक तहिना बुझै छैथ। मुदा ब्रह्मफाँस केहेन लागल अछि जे ओ मान-प्रतिष्ठा सम्पैतमे सन्हिया गेल अछि! जँ एको धूर बेचब तँ सोझहे प्रतिष्ठा प्रभावित हएत..!

कर्मदेव- खाएर छोड़ू खिस्सा-पिहानी, अपनेसँ भेँट करैले समाज पठौलैन अछि।

कृष्णदेव- (अकचकाइत।) समाज पठौलखुन हेन! की बात? बाजह?

कर्मदेव- ऐ दुआरे पठौलैन हेन जे गाममे खेत-पथारबला तँ अहीं सभ छिऐ, तँए सभ कियो एकठाम बैस गामक कल्याणक विचार करी। बेर-बेर रौदी-दाही भऽ जाइए तेकर कोनो स्थायी समाधानक विचार करी।

कृष्णदेव- बहरबैया सभ रहता?

कर्मदेव- ओहीक जानकारी दइले पठौलैन हेन। अहीं-लगसँ काज शुरू केलौं हेन। एतए-सँ घनश्याम काका ऐठाम होइत रघुनाथ कक्काक घरपर जाएब। हुनका ओइठामसँ मनमोहन काकाकेँ भेँट करैत गाम जाएब।

कृष्णदेव- अखन घनश्यामक दिन-दुनियाँ दोसर भऽ गेलैन अछि। एक तँ जमीन-जत्थाबला लोक पहिनहिसँ रहला, तैपर सँ बैंकक नोकरी..!

कर्मदेव- हुनकर सोभावो किछु आने ढंगक छैन।

कृष्णदेव- सोलहन्नी बनियाँक चालि पकड़ने छैथ। खाएर, जुगो-जमाना तँ हुनके सबहक छिऐ।

कर्मदेव- आठम दिन, रबि दिन बैसार छी। से अपने समैपर पहुँच जाइऐ।

कृष्णदेव- बड़बढ़ियाँ। परसू तक तँ तोहूँ घुमि जेबह?

कर्मदेव- हँ-हँ, जेते जल्दी भऽ सकत ओते जल्दी घुमैक कोशीश करब।

कृष्णदेव- चारिम दिन हमहूँ फोनपर सभसँ सम्पर्क करब। एहेन नहि जे एक गोरे पहुँचैथ आ दोसर पहुँचबे ने करैथ।

कर्मदेव- नहि-नहि, सभ औता। सभ कियो विचारि लेब। आखिर समाजक तँ अहींसभ बुझनुक भेलिऐ।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 836

सातम दृश्य

(घनश्यामक घर। एजेन्ट शिव शंकरक संग...।)

शिव शंकर- मैनेजर साहैब, हमर कम्पनीक इतिहास साए बर्खक अछि। वस्तुक गुणवत्ता आ वेपारिक साख एहेन अछि जेकर बाँहि पकड़ैबला दुनियाँमे एकोटा कम्पनी नइ अछि। जेहेन बोरिंगक पाइप आ दमकल हम देब ओ दोसर कियो नहि दऽ सकैए।

घनश्याम- बैंक की कोनो अप्पन छी। अपने मात्र एक ब्रांचक मनेजर छी। ओहो जाबे काज करै छी तेतबे काल। सरकारक नजैर कनी गामक खेत दिस उठल तँए ई अवसर आएल। तइ अवसरसँ..?

शिव शंकर- हँ, हँ। हमहूँ कहाँ चाहै छी जे अवसरक लाभ ने हुअए।

घनश्याम- परसूए एक गोरे–दोसर कम्पनीक एजेन्ट–आएल रहैथ ओ पाँच प्रतिशत कमीशनक बात केने छला। ओना, अखन धरि हमरो स्पष्ट आदेश ऊपरसँ नहियेँ आएल अछि। मुदा पैछला मिटिंगमे बाजाप्ता चर्चा भेल रहए। यएह बात हुनको कहि पनरह दिनक बाद भेँट करैले कहलयैन हेन।

शिव शंकर- अहाँ, भलेँ ओइ कम्पनीक बात नीक जकाँ नै बुझैत होइऐ मुदा हम तँ रत्ती-बत्तीक बात बुझै छी। केहेन घटिया माल बना-बना सप्लाइ करैए, से दोसर-दोसर बैंकसँ पता लगा लेब। हमर पाइप जँ ओकरा पाइपपर पटैक देतै तँ थौआ-थाकर कऽ देतइ। अहूँ तँ जनिते छी जे नीक वस्तुक उत्पादनमे नीक खरचो बैसै छइ।

घनश्याम- खरचा बेसी बैसै छै तँ दामो बेसी होइ छै किने!

शिव शंकर- हँ, से तँ होइते छइ। मुदा घटिया माल केते दिन चलत सेहो ने देखबै।

घनश्याम- से तँ बेस कहलौं, मुदा जे आदेश हएत सएह ने करब।

शिव शंकर- ऐठामक सक्षम किसानक रिपोट देबै तँ किए घटिया मालक आदेश हएत? जैठाम पछुआएल किसान अछि, पहिले-पहिल बोरिंग देखत, ओ कियाँने गेल नीक-अधला।

घनश्याम- हँ, से तँ मानलौं। मुदा सोल्होअना नेत बिगाड़ियो लेब सेहो तँ नहि।

शिव शंकर- (बात लपैक...।) हँ, यएह विचार हमरो कम्पनीक अछि। जे औनर छैथ हुनकामे ई भावना कूट-कूट कऽ भरल छैन। मुदा बीचमे जे घटिया कारोबारी सभ अछि वएह सभ ने नीको मालक बजारकेँ घेर घटिया बजार बना दइए। दू-पाइ बेसियो लगने जँ उपभोक्ताकेँ नीक वस्तु भेटै छै तँ ओकर उपयोगो बेसी दिन करैए।

घनश्याम- मानलौं जे अहाँक समान तेज अछि मुदा सभकेँ ने

अपन-अपन कारोबार अछि। पद आ प्रतिष्ठाक लोभ केकरा नै छइ। जे ब्रांच जेते लाभ बैंककेँ देखौत, ओते ने ओइ स्टापकेँ आगू बढ़ैक अवसर भेटतै।

शिव शंकर- हँ, से तँ मानै छी। मुदा हमर ओहन कम्पनी अछि जे देशे नहि, विदेशोमे सप्लाइ करैए। दू-साल बितैत-बितैत घटिया कम्पनी सभकेँ बजारसँ भगा दैत अछि। भलेँ नव बजार ठाढ़ भेने शुरूमे किछु कमा लिअए मुदा केते दिन..?

घनश्याम- खाएर छोड़ू ओइ सभकेँ। मोट गाछक मोट मुसरो होइ छइ। मुदा जहिना अहाँ तहिना हम। अपना दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध केना बनत तैपर विचार करू।

शिव शंकर- (ठहाका मारि...।) आब रस्ताक बात भेल ने। अखन ने अहाँ सोचै छी जे एक्के भागक आमदनी अछि मुदा से नहि, दुनू भाग अछि।

घनश्याम- से केना?

शिव शंकर- हमहूँ गामेसँ आएल छी। पिताजी कर्मचारी छला। जखन लगमे बैसै छेलिऐन तखन जमीन-जत्थाक खेरहा कहै छला।

घनश्याम- (मुस्की दैत...।) की कहै छला?

शिव शंकर- (हँसैत...।) कहै छला जे जखन जमीन्दारीक चार्ज सरकार लेलक तखन हमरा सभकेँ अगहन आबि गेल। खेत-खरिहाँनसँ लऽ कऽ आँगन-सँ-कोठी धरि धाने-धान..!

घनश्याम- नइ बुझलौं?

शिव शंकर- गाममे केते किसान छैथ जिनका जमीनक सही-सलामत सबूत छैन। एक तँ पहिनहिसँ जाल-फरेबी, तैपरसँ बाढ़ि आबि-आबि घर-दुआरक संग कागजो पत्तर ने लऽ जाइ छेलइ।

घनश्याम- (मुस्कियाइत...।) हँ, से तँ ठीके।

शिव शंकर- सरकारक सुविधा तँ बैंकेक माध्यमसँ ने हएत। असल कार्यालय तँ बैंक हएत। जे किछु किसानकेँ भेटत, ओइले तँ बैंकेमे ने बौण्ड बनबए पड़तै। बौण्ड-ले तँ ताजा सबूत माने जमीनक करेन्ट रसीद चाही। ई तँ अहीं हाथक भेल।

घनश्याम- (हँसैत...।) एक प्रतिशत कम कऽ देब।

शिव शंकर- बड़बढ़ियाँ। कारोबारक गप भाइये गेल। चलै छी।

घनश्याम- ओहिना जेनाइ उचित हएत। हम सभ मिथिलांचलक ने छी। अतिथिकेँ देवता बुझै छी, तँए किछु रस-पानि केने बिना..?

शिव शंकर- आब की ओ जुग रहल जे सुरा-सुन्दरीसँ अतिथिक सेवा होइ छल। हम सभ तँ तेहेन जुगमे आबि गेलौं जे ने खाइक ठेकान आ ने आराम करैक ठेकान रहल।

घनश्याम- (नोकरकेँ सोर पाड़ि...।) बहादुर, बहादुर?

(पहाड़ी नोकरक प्रवेश...।)

(आँखिक इशारा घनश्याम देलखिन।)

(भीतर जा दूटा गिलास आ समतोला रंगक शीशी नेने

आबि टेबुलपर रखि चलि जाइत। शीशी खोलि दुनू गिलासमे लऽ दुनू गोरे पीलैन...।)

शिव शंकर- आब आदेश होइ।

(शिव शंकर उठि कऽ ठाढ़ होइत। घनश्यामो ठाढ़ होइत तखने कर्मदेवक प्रवेश। अबिते कर्मदेव पएर छुबैत...।)

घनश्याम- बौआ, हिनका विदा कऽ दइ छिऐन। निचेनसँ गप-सप्प करब।

कर्मदेव- हँ, हँ, काका। हमहूँ किछु विचारे करए एलौं हेन।

(हाथमे हाथ मिला घनश्याम सड़क तक जाइ छैथ। घुमि कऽ आबि...।)

घनश्याम- आब कहह बौआ, गाम घरक हाल-चाल। मुदा पहिने कपड़ा खोलि फ्रेश भऽ चाह पीब लएह, तखन निचेनसँ गप-सप्प हेतइ।

(चाह अबैत। कर्मदेवक हाथमे कप धड़बैत घनश्याम अपन चाह आपस करैत...।)

कर्मदेव- अहाँ किए चाह घुमा देलिऐ?

घनश्याम- देखबे केलहक। चाह पीबैत-पीबैत पेट भरिया गेल अछि।

(खाली शीशी आ गिलास देख...।)

कर्मदेव- (मुस्की दैत।) काका, की कुशल गामक रहत। एक तँ ओहिना सभ तरहेँ खाधिमे खसल छीहे, तैपर सँ तेहेन रौदी भऽ गेल जे परान बँचब लोकक कठिन भऽ गेल अछि।

घनश्याम- जे बात कहलह ओ नान्हिटा नै अछि। मुदा बिना केनौं तँ नहियेँ कल्याण हएत। भने छुट्टीक दिन रहने मनो हल्लुक अछि। मुदा तैयो एक दिनमे सभ बात कहलो नहि जा सकैए। ओना तूँ पढ़ल-लिखल नवयुवक छह तँए कम्मो कहने बेसी बुझबहक।

कर्मदेव- अहाँ सभकेँ बेवहारिक ज्ञान अछि, काका। हम तँ हालेमे कौलेज छोड़लौं हेन। गाम-ले तँ सोल्होअना अनाड़ीए छी।

घनश्याम- गाम तँ तेहेन भऽ गेल अछि जे दू-चारि गोरे एकठाम बैस अपन सुखो-दुखक निवारणक गप करब, सेहो ने अछि। सभ अपने ताले बेताल अछि। कियो अपनाकेँ कम बुझैले तैयारे ने अछि। सबहक मन घेराएल छै जे हमरासँ बुधियार दोसर कियो ने अछि।

कर्मदेव- एना किए अछि?

घनश्याम- अखन धरिक जे बेवस्था रहल ओ संस्कारे बिगाड़ि देने अछि। मुदा अखन ऐ बातकेँ छोड़ह। अखन जे दुरकाल उपस्थित भऽ गेल अछि ओइपर गप करह।

कर्मदेव- हँ, सएह बढ़ियाँ।

घनश्याम- अखन दुइए गोरे छी। तहूमे भने डेरेमे छी तँए अखन दुइए परिवारक गप करह। देखते छह जे गाममे सभसँ बेसी खेत अछि। बाबाकेँ अपन अमलदारीमे एकटा मुनहर आ तीनटा बखारीक संग हाथी सेहो छेलैन। तखन नोकरी करैक जरूरत हमरा किए भेल?

कर्मदेव- (किछु सोचैत...।) किए भेल?

घनश्याम- यएह सोचै आ बुझैक बात अछि। हमरा सम्पैत छेलए घरसँ बाहर जा पढ़लौं। मुदा जेकरा खैयोक उपाए नइ छै ओकर बाल-बच्चा स्कूल आँखि देखत? खिस्सा तँ सभ कहतह जे बहिन रहितो लक्ष्मी-सरस्वतीक बास एकठाम नहि होइ छैन।

कर्मदेव- (जिज्ञासा करैत...।) छातीपर हाथ रखि कहै छी जे ने अपने मनमे अखन धरि ई बात उठल आ ने कियो कहलैन।

घनश्याम- ई तँ सिरिफ पढ़ै-लिखैक बात कहलियह। पढ़नाइ-लिखनाइसँ जरूरी अछि खेनाइ, रहनाइ आ बर-बिमारीसँ बँचैक उपाय। आँखि उठा अपने देखह जे की अछि?

कर्मदेव- (आँखि उठा ऊपर-निच्चाँ देख...।) ठीके कहै छी काका। मुदा हएत केना! अहाँ सभ सन बुझनिहार गामे छोड़ि देने छी तखन अबूझ केना सबूझ बनत। जाधैर बुझबे ने करत ताधैर आगू डेग केना उठौत?

घनश्याम- यएह बात बुझैक जरूरत अछि।

कर्मदेव- जाधैर बुझत नहि ताधैर ओहिना पाछू मुहेँ गुड़कैत जाएत।

घनश्याम- (दुनू हाथसँ दुनू आँखि मलैत...।) बौआ, सच पुछह तँ अपना-सभ स्वतंत्र देशक गुलाम छी। किसानक देश पूजीपतिसँ हारि गेल छी। भलेँ एकरा पछुआएब कहि

अपन प्रतिष्ठा बँचा ली, मुदा छी शासनसँ बाहर!

कर्मदेव- सेरिया कऽ कहियौ काका, नीक नहाँति नै बुझलौं।

घनश्याम- सत बात बजैमे कनियोँ धरी-धोखा नै होइए। जइ परिवारक सम्पैतसँ चालिस-पचास परिवार चलै छल तइ परिवारकेँ नोकरी करए पड़इ, केते लाजिमी अछि? मुदा..!

कर्मदेव- काका, अहाँ लगसँ जाइक मन नै होइए। मुदा काजक भार बैसै ने दिअ चाहैए। किएक तँ एक निसचित सीमामे काजक सम्पादन नहि भेने काज गड़बड़ाइये जाएत। अखन समाजक काजमे बन्हाएल छी। निचेनमे दोसर दिन औरो बुझब।

घनश्याम- हँ, से तँ ठीके कहै छह। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे एकटा संगी भेटल जे पेटक बात पेटमे लिअ चाहैए। कोन चीजक कमी अछि।

कर्मदेव- से तँ नहियेँ अछि।

घनश्याम- ओना लोकक बुधि, बिपैतक मारिसँ घटैत-घटैत एते घटि गेल अछि जे समैक संग पकड़िये ने पबैत अछि। खाएर छोड़ह। काजक बात कहह?

कर्मदेव- गामक दशा बद-सँ-बदतर भऽ गेल अछि। माल-जाल उपैट रहल अछि। लोक भागि रहल अछि। चलन्त सम्पैत पाछू मुहेँ ससैर रहल अछि। यएह सभ देख समाज विचार केलैन जे ऐगला रविकेँ सभ मिलि बैसार करी जइमे गामक कल्याणक बाट ताकी।

घनश्याम- (अध हँसी हँसि...।) हृदए गामक संग अछि। तँए जेते सम्भव हएत ओते समाजक सहयोग करब।

कर्मदेव- जखने अहाँ सभ तैयार हेबै तखने समाजक कल्याण निसचित हएत। आब जाइ छी।

घनश्याम- तोरा जइ चीजक जरूरत हुअ, आन नै बुझिहह। बड़बढ़ियाँ जाह।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1375

आठम दृश्य

(इंजीनियर मनमोहनक डेरा। दोसर साँझ। मनमोहन आ सन्तोष गप-सप्प करैत...।)

मनमोहन- बाउ, पहिल ज्वानिंग छिअ तँए पहिने घोंसिया जाह। पछाइत बदलीक जोगार लगा देबह।

सन्तोष- बाबू, भलेँ अहाँ सभ दिन शहरमे रहलौं मुदा गाम गाम छी।

मनमोहन- से की?

सन्तोष- डेरासँ ऑफिस आ ऑफिससँ डेरा करैत रहलौं, ऑफिसमे बैस घर-सँ-सड़क धरिक नक्शा कागतपर बनबैत रहलौं जइसँ काजक दायरा सिकुरि गेल। मुदा हम तँ चारि बर्खमे माटिये-पानिक गुण-अवगुन बुझलौं। अपार धन माटि-पानिमे छिपल अछि।

मनमोहन- से केना?

सन्तोष- अपना ऐठामक जे माटि-पानि आ मौसम अछि ओ दुनियाँमे केतौ ने अछि। नान्हिटा देश जापान जे एशिये

महादेशमे अछि देखियौ ओकरा।

मनमोहन- की अछि, केहेन अछि?

सन्तोष- ओना ओकर आन बात तँ नै पढ़लौं हेन। मुदा ओकर भौगौलिक बनाबट आ उन्नति जरूर पढ़लौं हेन। अपना देशक (पहिलुका एक राज्य) दूटा राज्यक बरबैर ओकर लम्बाइयो-चौड़ाइ छै आ जनसंख्यो छै, मुदा दुनियाँक अगुआएल देशक पाँतिमे अछि।

मनमोहन- एतबे टा अछि?

सन्तोष- एतबेटा किए कहै छिऐ। ओहूमे दुनियाँक सभ देशसँ बेसी भुमकमो होइ छइ।

मनमोहन- भुमकम किए होइ छइ?

सन्तोष- ओइठाम ज्वालामुखी बेसी अछि। खाएर ऐ बातकेँ छोड़ू। छोट देश आ कम आबादी रहितो ओ ओते अगुआ किए गेल अछि।

मनमोहन- किए अगुआएल अछि?

सन्तोष- जहिना ओकर खेती अगुआएल छै, तहिना कल-कारखाना। दुनियाँक बाजारमे ओ माल पटने अछि। तहिना खेतियोक छइ। जेते उपज–रकबा हिसाबे–ओकरा होइ छै ओते केकरा होइ छइ।

मनमोहन- केना एते उन्नत खेती केलक?

सन्तोष- ओइसँ बेसी अपनो सभ कऽ सकै छी। मुदा ऐठाम सभसँ पैघ कारण अछि जे साठि बर्ख अजादीक उपरान्तो ऐठामक लोक गुलामीक जिनगी जीब रहल

अछि। स्वतंत्र नागरिकक संस्कार आ गुलामीक संस्कारमे अकास-पतालक अन्तर होइ छइ। ओना अपनो देश उद्योग-धन्धामे जेते अगुआएल अछि ओते खेती-पथारीमे नहि अगुआएल। जे भारी खाधि दुनूक बीच बनल अछि।

मनमोहन- एहेन बात छइ?

सन्तोष- अपने बात लिअ। अखनो गाममे खेतबला परिवार अपन अछि। मुदा खेती करै छी? नहि। सभटा बटाइ लगौने छी। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे ने ओकरा खेत जोतैक उचित साधन छै आ ने खेती करैक आन साधन। सोल्होअना मौनसूनपर निर्भर रहैत अछि। एक तँ साधन नहि, दोसर करैक ऊहि सेहो ओहन नइ छै, जइसँ दुनियाँक खेतीक बरबैरेमे औत।

मनमोहन- ओते मत्था-पच्ची करैक कोन जरूरी छह। खाइत-पीबैत रामलला। जहुना जिनगी चलै छह तहुना जे निमाहि लेबह ओहो कम भेल।

सन्तोष- नहि बाबू, जिनगीक सार्थकता होइत अछि अपनासँ आगू बढ़ि करैमे। सरकारोक आँखि गाम दिस उठल हेन तँए ओकर उपयोग हेबा चाही। जहिना बाबाक अमलदारीमे बखारीक शोभा छल तहिना फेर हएत।

मनमोहन- अखन जेते असानीसँ शहरक लोक जीबैत अछि ओते गाममे थोड़े हेतह?

सन्तोष- ओइसँ बेसी हएत। हँ, अखन नै अछि। मुदा केना हएत

ई तँ गामेक लोककेँ सोचए पड़तै किने। अपने बात लिअ, हजार-बजारक नोकरी खुसीसँ करै छी मुदा ई बुझै छिऐ जे जँ अपन खेतकेँ समुचित सुविधा बना कएल जाएत तँ करोड़ोक आमदनी हएत?

मनमोहन- हमरो नोकरी लगिचाएले अछि, संगे शरीरो एते भरिया गेल अछि जे किछु करै-जोकर नहि रहलौं। एहेन स्थितिमे केना जीब?

सन्तोष- केना की जीब? जहिना गाम छोड़ि नोकरी करए शहर एलौं तहिना शहर छोड़ि गाम चलब। हमहूँ ओतबे दिन नोकरी करब जाबे तक अपन समुचित खेतीक रूप नै पकैड़ लेत। अहाँ नै देखै छिऐ जे पँच-पँच-सत-सत साए रूपैए किलो अन्नक बीआ आन-आन देशबला बेचैए। कनी गौर कऽ कऽ देखियौ जे किलो भरि अन्नक दाम केते अछि।

मनमोहन- हँ, से तँ सुनै छी।

सन्तोष- की हम अपने ओहन बीआ तैयार नै कऽ सकै छी? जरूर कऽ सकै छी। तहिना नीक बना पशुपालन, नीक किस्म बना माछक पालन आ औरो केते कहब। खाली हाथसँ करैक हिम्मत आ माथसँ सोचैक शक्तिक जरूरत अछि। (कर्मदेवक प्रवेश...।)

मनमोहन- आ-हा-हा, बाउ कर्मदेव?

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि...।) प्रणाम, चाचाजी।

मनमोहन- बाउ सन्तोष, लोटामे पानि नेने आबह। बाटक झमाड़ल

छैथ। पछाइत चाह-पान चलतै।

(सन्तोष भीतर जाइत अछि आ लोटामे पानि आनि, कर्मदेवक आगूमे ठाढ़ भऽ...।)

सन्तोष- पहिने पएर धोउ?

कर्मदेव- अच्छा पछाइत धो लेब। कोनो कि पएरे चललौं हेन। सड़कपर सवारीसँ उतरलौं हेन।

मनमोहन- चाह नेने आबह। (सन्तोष भीतर जाइत अछि...।) आकि पहिने किछु खेबह?

कर्मदेव- नहि, अखन किछु ने खाएब। मन गदगरल अछि। चाह पीब लेब।

(दू कप चाह नेने सन्तोष अबैत अछि...।)

मनमोहन- (चाहक चुस्की लैत...।) आब कहह गामक हाल-चाल?

कर्मदेव- गामक हाल-चाल की कहब चच्चाजी। नरकंकाल जकाँ गामक हाड़ झक-झक करैए।

(कर्मदेवक बात सुनि मनमोहन निरुत्तर होइत मुँहपर हाथ लऽ मुड़ी झूका कऽ सोचए लगै छैथ। बीचमे ठाढ़ सन्तोष कखनो पिता दिस देखैए तँ कखनो कर्मदेव दिस। मुदा किछु बजैत नहि। दुनू गोरेकेँ चुप देख...।)

सन्तोष- बाबूजी, हम जेठ छी कि कर्मदेव?

मनमोहन- कर्मदेवक तँ नहि बुझल अछि मुदा तोहर एक्कैसम लगिचाएल छह।

कर्मदेव- हमरो एक्कैसम चलि रहल अछि।

मनमोहन- तखन तँ किछुए मासक कम-बेसी हेतह। एक बतरीए भेलह।

कर्मदेव- चाचाजी, जौँआँ बच्चाक अन्तर पाँचे-दस मिनट होइ छै मुदा ओहूमे जेठाइ-छोटाइ होइ छइ?

मनमोहन- हँ, से तँ होइते छै, मुदा ई तँ सर्टिफिकेटसँ फरियेतह।

कर्मदेव- ओहूसँ नीक जकाँ नहियेँ फरियाएत? किएक तँ अहाँ घरमे भलेँ जन्म-टिप्पणि हुअए मुदा हमरा घरमे नहियेँ अछि। टिप्पणि देख स्कूलमे नाओं लिखौने होइ, मुदा हमर तँ अनठेकानी लिखाएल अछि।

मनमोहन- भैयारी बनब पेंचगर छह। दुनू गोरे दोस्ती कऽ लएह। सन्तोषोक विचार गामेमे रहैक छै आ तहूँ गामेमे रहै छह।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...।) चाचाजी, अहाँ तँ अमृत फल खुआ देलौं। मित्र तँ नरकोसँ उद्धार करैत अछि।

(तीनू गोरे ठहाका दिअ लगै छैथ।)

हम केमहर एलौं से तँ पुछबे ने केलौं?

मनमोहन- गामसँ हटि भलेँ रहै छी तँए कि समाजक सभ किछु छोड़ि देलौं। दुआरपर आएल अतिथिकेँ पुछल जाइ छै जे केमहर एलौं! अतिथियेक सेवा तँ धर्मखातामे लिखाइत अछि।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...।) अपने कहै छी। अखन धड़फड़ाएल छी तँए बेसी गप-सप्पमे समए नहि दऽ सकब। जेतेक समए गमाएब तेतेक काज पछुआएत।

(मनमोहन आ सन्तोषो सुनैक इच्छासँ कर्मदेव दिस ताकए लगैत...।)

रवि दिन समाजक बैसार छी, सएह कहए एलौं।

मनमोहन- कनी फरिछा कऽ बाजह!

कर्मदेव- गामक मूलपूजी पूजी खेत छी। खेतेक उपजापर गामक लोक ठाढ़ भऽ जिनगी चलबैत अछि। मुदा समाज तँ बनि गेल मुदा समाजिक पूजी नै बनि सकल, जइसँ एते भारी खाधि दुनूक बीच बनि गेल जे अछैते पूजीए लोक पूजी विहिन भऽ गेल अछि! अही सबहक विचार लेल बैसार भऽ रहल अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...।) उदेस तँ जबरदस अछि, मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की। ऐ धरतीपर सभसँ अगुआएल मनुख अछि, तखन?

सन्तोष- कर्मदेव भाय, अहूँ हालेमे कौलेज छोड़लौं हेन आ हमहूँ हालेमे छोड़लौं अछि तँए बेवहारिक दौरमे दुनू गोरे अनाड़ीए छी। किएक तँ जइ गाममे रहै छी ओ जमीनक एक निसचित सीमाक अन्तर्गत निर्धारित अछि। जहिना जमीन तहिना बसल लोक। तँए...।

कर्मदेव- 'तँए' की?

सन्तोष- जमीनकेँ जाल कहल जाइ छइ। जाल फँसबैक वस्तु छी। जहिना मछबार जाल फेक माँछ फँसबैत अछि, शिकारी शिकार फँसबैत, तहिना शिकारी सभ जमीनक जाल फेक जमीनकेँ फँसा नेने अछि, तँए..?

(आँखि गुड़ैर मनमोहन सन्तोषपर देने। तहिना कर्मदेव सेहो सन्तोषक आँखि-पर-आँखि अँटकौने।)

कर्मदेव- 'तँए' की?

सन्तोष- छोटका जालमे छोट माँछ आ छोट शिकार फँसैत अछि मुदा जेना-जेना जाल नमहर होइत तेना-तेना नमहर माछो आ शिकारो फँसैए। जखन कि महजालमे छोट-पैघ सभ फँसैए, तहिना अखन सम्पैतक दौड़मे विश्व-जाल पसरल अछि। नीक जकाँ हमरो नहि बुझल अछि। मुदा इशारा रूपमे ओइ दिन सुनलौं जइ दिन कौलेजक दिक्षान्त समारोहमे सर्टिफिकेट दऽ शिक्षक लोकैन विदा केलैन।

कर्मदेव- दीक्षाक अर्थ?

सन्तोष- सेहो ओही दिन बुझलौं। कान फूकि दीक्षा देनिहार जेरक-जेर घुमैत अछि। मुदा दीक्षाक अर्थ होइत अछि- प्राप्ति। अहाँ कौलेजसँ निकलैक सर्टिफिकेट नइ लेलौं हेन?

कर्मदेव- हँ, ऑफिससँ तँ जरूर भेटल मुदा दीक्षान्त समारोह कऽ कऽ नहि।

सन्तोष- किए?

कर्मदेव- नीक जकाँ तँ नै बुझल अछि मुदा दस-पनरह बर्खसँ कहाँ दीक्षान्त समारोह भेल हेन।

सन्तोष- साले-साल हेबा चाहीए।

कर्मदेव- भाय, भने अहूँ गामेमे रहि मोटर साइकिलसँ ऑफिसो करब आ गामोक काज देखब।

सन्तोष- बेसी समए गामेक काजमे लगाएब।

कर्मदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1333

नवम दृश्य

(डॉ. रघुनाथक घर। ओसारक कुरसीपर बैसल रघुनाथ माथपर हाथ दऽ आँखि मूनि सोचैत। चाह नेने पत्नी अनुराधा अबैत...।)

अनुराधा- आँखि लगल अछि। चाह पीबू।

रघुनाथ- आँखि कथी लगत कपार। अनेरे आँखि बन्न भऽ रहल अछि।

अनुराधा- अपने डॉक्टर छी तखन..?

रघुनाथ- अपने डॉक्टर छी तेकर माने..?

अनुराधा- तखन किए रोग..?

रघुनाथ- रोगक सीमा-नाँगैर अछि। मनुखे जकाँ बिना सिंग-नाँगैरक जानवर जकाँ अछि। देहक रोगक डॉक्टर ने छी मनक रोगक थोड़े छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- कोनो कि देहेटा मे रोग होइए। मनोकेँ तँ देहे जकाँ ने सभ किछु छइ।

अनुराधा- तखन तँ औरो नीके किने। जहिना थर्मामीटरसँ बोखार परखल जाइ छै तहिना ने मनोक बोखार परखैक यंत्र

हेतै, ओइसँ नापि दबाइ खा लिअ।

रघुनाथ- विधाता ऐठाम जखन बुधिक बँटबारा हुअ लगल तखन सभकेँ चम्मछ लऽ लऽ देलखिन आ अहाँ-बेरमे बरतने उझैल देलैन।

अनुराधा- एना बताह जकाँ किए बजै छी! जखन मन गड़बर भऽ गेल तखन ओकर प्रतिकार करब किने। हमहूँ सहयोगी छी, सहयोग करब आकि सभकेँ भगा अपने पगलखन्नाक हरीमे ठोकाएब। मन थीर करू। चाह पीबू, सिगरेट नेने अबै छी।

(अनुराधा भीतर जाइत। रघुनाथ एक-एक चुस्की चाहो पीबैत आ कखनो अकास दिस तँ कखनो निच्चाँ दिस तकैत बड़बड़ेबो करैत...।)

रघुनाथ- भुमकम भेलापर उनटनो होइए। जहिना अकासक गाछ-जमीनपर खसैए तहिना ने जमीनो अकास दिस चढ़ैए। मुदा पावस तँ अकासकेँ अमृतसँ सीचैत रहैए।

(रघुनाथकेँ बड़बड़ाइत देख अनुराधा मुँहथैरपर ठाढ़ भऽ सुनए लगली...।)

आ-हा-हा की सुन्दरता पावसोक होइए। करोड़ो-अरबो जीब जन्तुकेँ सृजनो करैए, अमृतेसँ स्नानो करबैए, पीबोयो-ले दइए आ दुनूक बीच–माने अकास-जमीनक–बीच बाट सेहो बनबैए।

अनुराधा- (मने-मन उदास भऽ...।) भरिसक बुधिक बिमारी पकैड़ लेलकैन। (आगू बढ़ैत) लिअ सिगरेट-सलाइ नेने एलौं।

चाहो तँ नहियेँ पीलौं हेन!

रघुनाथ- हमरे नहि सुझैए आकि...। मन भरि गेल अहाँ कहै छी चाहो ने पीलौं।

(रघुनाथक मुँहक सुरखी उदास होइत जाइत...।)

अनुराधा- मुँहक सुरखी बदैल रहल अछि?

रघुनाथ- लाउ, सिगरेट पीब तखन चुहचुही औत। की भकुआएल जकाँ बुझि पड़ै छी?

(सलाइ खड़ैर सिगरेट धरा कस खींच ऊपर मुहेँ धुआँ फेकैत...।)

देखियौ धुँआ केना ऊपर मुहेँ जाइए।

अनुराधा- ओछाइन ओछा दइ छी, आराम करू।

रघुनाथ- कहलौं तँ विधाता बुधिक बरतने अहाँ-आगूमे उझैल देलैन। जागलमे जइ रोगकेँ भगौल नै हएत सुतलमे केना हएत?

अनुराधा- की सभ होइए?

रघुनाथ- बैसू, कहै छी। ब्रज कन्याँ तँ अहींटा छी तँए अपन दिलक-दुख अहाँकेँ नै कहब तँ दोसराकेँ कहने की हएत?

अनुराधा- (मुस्की दैत...।) से की, से की?

रघुनाथ- अहाँ जे भकुआएल बुझै छी से ठीके बुझै छी। मुदा नीनक भक्क नहि, जिनगीक रस्ताक भक्क लगल अछि। केमहर जाएब से चौराहापर बुझिये ने पबै छी।

अनुराधा- बीचमे ठाढ़ भऽ कऽ देखियौ जे कोन बाटक दुभि (खढ़-पात) पैरक रगड़सँ उड़ि गेल छै आ कोन दुभियाह अछि।

रघुनाथ- कहलौं तँ बेस बात, मुदा भकुआएल मने देखबो करिऐ तखन ने। आन्हरे जकाँ सभ अन्हार बुझि पड़ैए।

(दुनू आँखि दुनू हाथसँ मलैत...।)

की सपना छल आ की देख रहल छी...।

अनुराधा- से की? से की?

रघुनाथ- सभ किछु समाप्त भऽ रहल अछि, आकि जिनगीए समाप्त भऽ रहल अछि से बुझिये ने पाबि रहल छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- परसू रिटायर करब।

अनुराधा- सभ रिटायर करैत अछि आकि अहींटा करब!

रघुनाथ- खाली नोकरीए-टासँ नहि ने रिटायर करब। देहोक रोग किछु बढ़ि गेल अछि जइसँ रोगी सबहक शिकाइत आबि रहल अछि।

अनुराधा- से तँ आब उमेरो भेल किने?

रघुनाथ- उमेरक असर शरीरपर पड़ै छै आकि ब्रेनपर। आमक आठी जकाँ कोइलीसँ फकुआ बनत आकि फकुआसँ कोइली?

अनुराधा- तखन किए एना भेल?

रघुनाथ- ब्रेने छिड़िया गेल। एकरा केना समटब?

अनुराधा- आबो समटू।

रघुनाथ- छिड़ियाएल वौस बीछ-बीछि समटल जा सकैए। छिड़ियाएल मन केना समटल जाएत? पाछू उनैट तकै छी तँ केतौ गड़बड़ नइ देखै छी। मुदा आगू तकै छी तँ नोकरीक संग प्राइवेट कमाइयोकेँ जाइत देखै छी।

अनुराधा- से केना?

रघुनाथ- चढ़न्त छल तखन मकान बनेलौं, क्लीनिक बनेलौं। रेस्ट-हाउसक संग जाँच-पड़ताल करैक यंत्र कीनलौं। मुदा आइ की देखै छी?

अनुराधा- की नै देखै छी, कोन चीजक कमी अछि?

रघुनाथ- अपने मुइने जग मुअए। जैठाम रोगीक भीड़ लगल रहै छेलए तैठाम गोटि-पँगरा आबि रहल अछि। तहिना रेस्ट-हाउस ढन-ढन करैए। सप्ताहक-सप्ताह जाँच मशीन बैसले रहैए। अपनो दरमाहा अधियाइए जाएत। मुदा खर्च तँ..?

अनुराधा- एना किए भेल?

रघुनाथ- समए केते आगू बढ़ि गेल से नइ देखै छी। सभ चीज पुरान पड़ि गेल।

अनुराधा- ऐ सभ दिस नजैर पहिने नहि गेल छल?

रघुनाथ- नजैर केना जाइत। नजैर तँ शान्तचित्तमे टहलैत अछि। से कहियो कहाँ भेल। दिन-राति एकबट्ट कऽ काजमे लगल रहलौं। जिनगीक विषयमे सोचैक पलखतिये

कहिया भेल।

अनुराधा- चिन्तो केने तँ नहियेँ हएत।

रघुनाथ- से तँ नहियेँ हएत। मुदा अनहरिया राति जकाँ अन्हार तँ बढ़ले जाइए।

(कर्मदेवक प्रवेश...।)

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि) गोड़ लगै छी चाचाजी। (अनुराधाक पएर छुबि) गोड़ लगै छी चाचीजी।

रघुनाथ- गाम-घरक हाल-चाल कहह?

कर्मदेव- गाम-घरक कथी हाल-चाल रहत। रद्दी कागत जकाँ गामोक दशा भऽ गेल अछि। पैछला साल तँ कनी-मनी नीको छल जे ऐ बेरक रौदी तँ उजारि देलक।

रघुनाथ- बौआ, अपनो दशा ओहने भऽ गेल। मुदा कहबो केकरा करबै। अपन हारल बजितो लाज होइए। मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की?

रघुनाथ- यएह जे गामक समाजमे अखनो बेर-बिपैत पड़लापर एक-दोसरकेँ सहारा भेटै छै, मुदा बजारक समाज तँ ठीक उल्टा अछि। सभ अपने ताले-बेताल अछि। केकरा एते छुट्टी छै जे अनको हाल-चाल पुछत।

कर्मदेव- चाचाजी, अखन हमहूँ धड़फड़ाएले छी। कहियो निचेनसँ गप-सप्प करब। अखन जइ काजे एलौं से गप करू।

रघुनाथ- केहेन काजे धड़फड़ाएल छह?

कर्मदेव- गामक दशा देख गौआँक विचार भेलैन हेन जे जेहो सभ बाहर नोकरी-चाकरी करै छैथ हुनको सभकेँ बजा समाजक कल्याण केना हएत तइले एकठाम बैस रस्ता निकाली। सएह कहए एलौं हेन।

रघुनाथ- छाँहो-छुहो तँ किछु कहह।

कर्मदेव- चाचाजी, गाममे जे छैथ हुनका दूधक डाढ़ी जकाँ अपन खेत छैन। जखन कि जे बाहर रहै छैथ, बेसी जमीन हुनके सबहक छैन, तइले बैसार भऽ रहल अछि।

रघुनाथ- विचार तँ बड़ दिव्य छह, मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की?

रघुनाथ- 'थाकल पाव पलंग भेल भारी आब की लादब हौ वेपारी।' सोझहे आगूमे देखै छह। धानक खखरियोसँ बत्तर हालत भऽ गेल अछि। जेहो जिनगी बाकी बँचल अछि ओहो पहाड़ जकाँ बुझि पड़ैए।

कर्मदेव- से किए चाचाजी?

रघुनाथ- बौआ, डॉक्टरी छोड़ि आन चीज तँ पढ़लौं नहि, जइसँ दुनियाँ-दारीक बात बुझितौं। ऐ अवस्थामे आब बुझि पड़ैए जे जिनगीए ओझरा गेल।

कर्मदेव- जखने सभ मिलि एकठाम विचार करब तखने ने अहूँक ओझरी छुटि जाएत।

रघुनाथ- (कनी गुम रहि, किछु सोचि...।) बहरबैया सभ रहता?

कर्मदेव- आश्वासन तँ सभ देलैन अछि। तखन तँ..?

रघुनाथ- कहियाक समए बनौलैन?

कर्मदेव- समए तँ समाजे बनौने छैथ। अहाँकेँ जानकारी दिअ एलौं। रवि दिन दू बजेसँ बैसार छी।

रघुनाथ- बड़ बढ़ियाँ। जरूर भाग लेब। परसूए सेवा-निवृत्ति सेहो भऽ रहल छी।

कर्मदेव- परसूए सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी?

रघुनाथ- (मिरमिराइत...।) हँ, बौआ।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...।) चाचाजी, अहीं सन-सन लोकक जरूरत समाजकेँ छइ।

रघुनाथ- से की?

कर्मनाथ- ऐठामक काज ने हरा गेल। मुदा गाममे अहाँ सभले ओतेक काज अछि जे कएले ने पार लागत।

रघुनाथ- (किछु सोचैत, मुस्कियाइत...।) बेस कहै छह बौआ।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1100

दसम दृश्य

(घनश्यामक घर। कृष्णदेव, घनश्याम, मनमोहन आ रघुनाथ बैसल। चाह-पान, सिगरेट चलैत...।)

घनश्याम- कर्मदेव जे किछु कहलैन, तैपर तँ अपनो सभ विचारि लेब किने?

कृष्णदेव- अबस्स-अबस्स।

घनश्याम- एक तँ बैंकक नोकरी तइमे ब्रांचक जवाबदेही, भरि दिन लोकक चरबाहि करैत-करैत परेशान रहै छी। जइसँ गाम-समाजक कुशलो-छेम नै बुझि पबै छी। तँए अपने दिशा-निर्देश दियौ।

मनमोहन- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ घनश्याम भाय बजला।

कृष्णदेव- कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ मुदा जे चकचकी अहाँ सबहक अछि से अपन थोड़े अछि।

रघुनाथ- मनक बात अहाँ बुझि गेलौं।

कृष्णदेव- अहाँ सभ कागत-पत्रक बीच रहै छी, हम किताबक बीच रहै छी, अन्तर एतबे अछि। मुदा रहै तँ छी सभ कागजेक बीच।

रघुनाथ- कहलिऐ तँ बड़ बढ़ियाँ मुदा हम सभ सादा कागतक

बीच रहै छी आ अहाँ सजौल कागतक बीच रहै छी।

कृष्णदेव- सभकेँ अपन-अपन बुझैक दायरा होइ छै तँए अहूँ सबहक विचारकेँ नकारि नहियेँ सकब। मुदा किछु छिपा कऽ बाजब उचित नहि, तँए..?

रघुनाथ- 'तँए' की? जखने अपन-अपन विचार सभ व्यक्त करब तखने ने चारि परिवारक तीत-मीठ सोझहामे औत। जखने तीत-मीठ सोझहामे औत तखने ने किछु...।

कृष्णदेव- ई बात तँ सभ बुझै छिऐ जे गामक-समाजक- पढ़ल लिखल अपने सभ छिऐ। मुदा अपनो सबहक बीच तँ चारि रंगक जिनगियो अछि। जैठाम अहाँ सभकेँ दरमाहाक संग आनो आमदनी अछि तैठाम हमरा तँ सिरिफ दरमेहेटा अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...।) हँ! ई तँ अछि।

कृष्णदेव- मुदा परिवार तँ जहिना अहाँ सबहक अछि तहिना सबहक अछि। खेनाइ-पीनाइ, कपड़ा-लत्ता आ पढ़ाइ-लिखाइ तँ सभकेँ छइ। कनी सोचि कऽ देखियौ जे हम अहाँ सभसँ पछुआएल छी कि नहि।

रघुनाथ- मानै छी। मुदा गामक बैसारमे गामक चर्च हएत किने। तइ हिसाबसँ तँ सभ जमीनदारे छी। गामक बारहअना जमीनक मालिक तँ अपने सभ छिऐ किने।

कृष्णदेव- हँ, से तँ छीहे। मुदा ओझरियो तँ असान नहियेँ अछि। जइ तरहक जिनगी बनि गेल अछि ओ दरमाहासँ पूरा नै पबै छी। अपने गाममे नै रहै छी जे खेतियो करब, तैपर

सँ जँ एको धूर बेचब तँ प्रतिष्ठा माटिमे मिलत।

मनमोहन- तखन?

कृष्णदेव- जँ सबुर कऽ छोड़ियो देब सेहो नहियेँ हएत।

मनमोहन- ई तँ विचित्र ओझरीमे फँसि गेल छी!

कृष्णदेव- बाल-बच्चाकेँ नीक स्कूल-कौलेजमे नै पढ़ाएब सेहो नहियेँ हएत। किछुए दिनक उपरान्त रिटायर करब तखन औझुका जकाँ दरमहो नहियेँ रहत। तीन-तीनटा कन्यादानो अछि।

रघुनाथ- अच्छा, गामक बैसारक सम्बन्धमे विचार रखियौ।

कृष्णदेव- की विचार राखब, किछु फुरबे ने करैए।

घनश्याम- आब अपन विचार दियौ डॉक्टर साहैब?

रघुनाथ- कृष्णदेव बाबूसँ कनियोँ नीक नहि छी।

घनश्याम- से किए! हुनके जकाँ बेतनेटा पर तँ नै छी?

रघुनाथ- बेस कहलौं। दुरसक ढोल सोहनगर लगै छइ। मुदा लगमे...।

मनमोहन- जँ लग तबला हाथ बजौल जाए, तखन..?

रघुनाथ- बेस कहै छी। तबले जकाँ ढोलोक मुँह छोट आ पॉलिस कएल होइए। रिटायर भेने पेंशनपर आबि गेलौं। जेते जाँच-जूँच करैक यंत्र किनने छी ओ पैछला खाढ़ीक भऽ गेल। दिनो-दिन नवका ठाढ़ भऽ रहल अछि। अपन जे इलाजक प्रक्रिया छल ओ पछैर गेल।

मनमोहन- आगूक की सोचै छिऐ?

रघुनाथ- रोग, रोगी आ इलाज छोड़ि किछु सोचलौं कहिया जे आन बात सोचब।

मनमोहन- जीब केना?

रघुनाथ- जे भोग-पारसमे हएत से थोड़े कियो बाँटि लेत। जाबे सुखक दिन छल सुख केलौं, दुखक दिन औत दुख करब। यएह ने भगवानक लीला छिऐन।

घनश्याम- अपने सभ जे एना सोचबै तखन समाज केना आगू बढ़त? समुद्रक ज्वार जकाँ तँ समाजक गति नहि होइत।

रघुनाथ- (कनी गुम्म भऽ, मुड़ी डोलबैत...।) प्रश्न तँ विचारणीय अछि। मुदा आगूक स्पष्ट रस्ता कहाँ देख पबै छी। कनी समए दिअ, पछाइत कहब।

मनमोहन- भाय साहैब, अहाँसँ कनियोँ नीक नै छी।

घनश्याम- (मुस्कियाइत...।) से की! से की?

मनमोहन- ओना पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि। मुदा जे रूखि देख रहल छी ओइसँ बुझि पड़ैए जे आगूमे बनरफाँस लटकल अछि।

घनश्याम- से केना?

मनमोहन- अपने इंजीनियर बनि गामसँ शहर एलौं आ बेटा एग्रीकल्चर पढ़ि गामेक ब्लौकमे जुआइन करत।

घनश्याम- ई तँ बढ़ियाँ बात।

मनमोहन- अपने केतए रहब। सभ दिन शहरमे रहलौं आब गाममे नीक लागत?

घनश्याम- शहरेमे रहब।

मनमोहन- कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ। अपन बेटा-पुतोहु गाममे रहत। रिटायर भेलापर सरकारीए अमिला-फमिला रंगगर कपड़ा पहिरा विदा कऽ देत। तखन..?

घनश्याम- तखन की?

मनमोहन- बुढ़ाड़ीमे एक गिलास पानियोँ के देत।

घनश्याम- गामे चलि आएब।

मनमोहन- (मजबूरी हँसी...।) सभ दिन पढ़ल-लिखल लोकक बीच प्रतिष्ठा बना रहि रहल छी। मुदा गामक कोन लूरि अछि जे बुधिक उपयोग करब।

घनश्याम- नइ बुझलौं?

मनमोहन- जेकरा जइ काजक लूरि रहल ओ ओहीमे ने बुधियार अछि। मुदा हम?

रघुनाथ- तीनू गोरेक बात तँ सभ सुनबे केलौं। घनश्याम, आब विचार दियौ।

घनश्याम- भाय साहैब, अपने बिगैड़ गेलिऐ।

रघुनाथ- बिगड़ब किए। मुदा...।

घनश्याम- 'मुदा' की?

रघुनाथ- बिनु बुझल पैघ रोग रहितो जँ रोगीकेँ रोगक जनतब नहि दऽ रोगमुक्त होइले दबाइ खाइले कहबै तँ हँसी-खुशीसँ खाइए कि नहि?

घनश्याम- हँ से तँ खाइए। मुदा ईहो तँ होइ छै जे समुचित ढंगसँ रोगक जनतब दऽ इलाजोक प्रक्रियाक जनतब देल जाइ तँ औरो खुशीसँ दबाइ खाइए।

मनमोहन- हँ, ईहो तँ होइए।

घनश्याम- मनमोहन भाय, जहिना रोगक इलाज डॉक्टर आ इंजीनक इंजीनियर करै छैथ तहिना समाजक कल्याण समाजशास्त्री करै छैथ। मुदा..?

मनमोहन- 'मुदा' की?

कृष्णदेव- (बिच्चेमे...।) समाजशास्त्री तँ हमहूँ छी। जिनगी भरि समाजशास्त्रे पढ़लौं। मुदा...।

घनश्याम- भाय साहैब, अपने अधिकारी विद्वान छिऐ, तँए..?

कृष्णदेव- 'तँए' की?

घनश्याम- हम बैंकर नहि छी, मुदा बैंकक काज केने समाज आ धनक सम्बन्ध थोड़-थाड़ बुझए लगलौं। तँए कृष्णदेव भायसँ आग्रह करबैन जे जँ आदेश दैथ तँ किछु कहबैन।

कृष्णदेव- जखन सभ एक प्रश्नपर बैसल छी तखन आदेश की? अखन तँ सभ अपन-अपन सुझिक अनुसार सुझाव रखि रहल छी।

घनश्याम- अपने तँ किताबमे लिखल पढ़ै छी। मुदा किताबी बात ताधैर ठमकल रहत जाधैर समाजक गतिक अनुकूल चलैत नै रहत।

कृष्णदेव- (साँस छोड़ि...।) हूँ...।

घनश्याम- अखन जइ काजे बैसलौं अछि पहिने तैपर विचार करू। कोनो काज करैक जेतेक इच्छा शक्ति लोकमे रहै छै ओ ओते आगू बढ़ि कऽ सकैए। तँए, कोनो एहेन समस्या नै अछि जेकर समाधान नै भऽ सकैए। सभ कियो आदेश दी तँ..?

तीनू गोरे- (कृष्णदेव, रघुनाथ आ मनमोहन, तीनू गोरे एकसंग...।) आदेशे-आदेश। खुलि कऽ बाजू।

घनश्याम- रघुनाथ भाय छैथ, शहरमे पछैर रहला अछि मुदा गाम तँ ओइ जगहपर ठाढ़ अछि जइ जगहपर रोगक इलाज लेल अखनो झाड़-फूक आ टोना-टापर होइए।

रघुनाथ- (मुस्की दैत...।) बेस कहलौं।

घनश्याम- अहिना सभ समस्या अछि। जरूरत अछि एक-एक समस्यामे एक-एक आदमीकेँ सटाएब। जखने समस्यासँ आदमी सटत तखने...।

रघुनाथ- ठीके कहै छी घनश्याम। गामक सम्बन्धमे..?

घनश्याम- भाय, एक तँ ओहिना बाढ़ि◌ि-रौदीक चपेटमे पड़ि गाम अधमरू भऽ गेल अछि, तैपर लोकोक किरदानी तेहेन भऽ रहल अछि जे औरो गर्तमे जा रहल अछि।

कृष्णदेव- ऐठाम चारिये गोरे छी तँए सबहक–माने सौंसे गौँआँक–बीचमे बैस जेतेक विचार करब ओते अधिक नीक हएत।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1042

एगारहम दृश्य

(नसीवलालक दरबज्जा। कर्मदेव आ नसीवलाल गप-सप्प करैत...।)

नसीवलाल- काजक की समाचार अछि, बौआ कर्मदेव?

कर्मदेव- तीत-मीठ दुनू अछि।

नसीवलाल- (मुस्कियाइत...।) तीत-मीठ दुनू अछि! बेसी कोन अछि?

कर्मदेव- स्पष्ट कहाँ बुझि पौलौं। जँ स्पष्ट रहैत तँ दुनूकेँ मिला कहितौं किने।

नसीवलाल- ओ मिलबो मोसकिल अछि।

कर्मदेव- ओ केना मिलत?

नसीवलाल- प्रकृतिक अद्भुत खेल अछि। किछु वस्तु एहेन होइए जे अपन सुआदकेँ औरो गाढ़ बनबैए आ किछु वस्तु ओहनो अछि जे अपन सुआदे बदैल लैत अछि। तीतसँ मीठ आ मीठसँ तीत भऽ जाइत अछि आ किछु एहनो अछि जे ने तीते अछि आ ने मीठे। दुनूक बीचमे अछि।

कर्मदेव- एहेन पेंचगर स्थितिमे कोनो ओझरीकेँ सोझराएब कठिन अछि।

नसीवलाल- नहि। एहेन कोन दुख अछि जेकर दबाइ नइए। भलेँ ओ दबाइ बुझबसँ बाहर किए ने हुअए।

कर्मदेव- तखन?

नसीवलाल- सभ खेल जिनगीए-ले चलैए। ऐ प्रश्नक उत्तर दू गोरेक बीच नै भेटत। प्रश्नो ओझराएल अछि। ओझरियो ओहन लगल अछि जेकरा सोझराएब तेतैर आ अमतीक मिलल सुआदकेँ बेराएब सन अछि।

कर्मदेव- (विहुसैत...।) आगू की करब?

नसीवलाल- बैसारक जानकारी भेलापर के की कहलैन?

कर्मदेव- बैसारमे भाग लेबाक आश्वासन तँ सभ देलैन।

(आभा आ शान्तीक प्रवेश...।)

नसीवलाल- आभा आ शान्ती तँ आबिये गेली। चारि गोरे सेहो भेलौं। कनी पहिने आकि कनी पाछू ओहो सभ एबे करता।

कर्मदेव- हुनका सभकेँ बजौने आबी?

नसीवलाल- जरूरी नहि अछि। जिनगी दू रस्ते चलैत अछि। एक काजक सवारीसँ दोसक खाली-खाली।

कर्मदेव- की मतलब?

नसीवलाल- काजक सवारी केतबो उभर-खाभर होइत किए ने चलए मुदा सुरो-सुन्दरीसँ बेसी सोहनगर होइए। जइसँ समैक ठेकाने बिला जाइत अछि।

कर्मदेव- तखन?

नसीवलाल- एबे करता। काजक अपन महत होइए। जे महत सभ

समान दृष्टिए नै बुझै छैथ। तँए ओकर फल समए पाबि नीकसँ बेसी अधले भऽ जाइए।

आभा- हमहूँ घरपर सँ सोझहे कहाँ एलौं। जलखै खा कऽ जे निकललौं से निकलले छी।

कर्मदेव- केतौ बाहर गेल छेलौं?

आभा- गामसँ कहाँ बहराएल छेलौं। मुदा गामोमे तँ रंग-बिरंगक सरोवर, झील, जंगल, पहाड़ अछि। जेकरा पार करैमे सरपट रस्ताक अपेक्षा किछु बेसी समए लगिते अछि।

कर्मदेव- की मतलब?

आभा- मतलब यएह जे एक तँ ओहिना कुम्भकर्णी नीनमे अदहासँ बेसी सुतल अछि। तैपर सँ दुखक दरद सेहो सुता रहल छइ।

नसीवलाल- ई तँ होइते अछि जे जइ खेतकेँ जोत-कोर नै होइ छै ओ रौद-बरसात पाबि परती बनि जाइए। मुदा पृथ्वी पुत्र ओकरो उपजाउ बनाइए लइए।

कर्मदेव- (मुड़ी डोलबैत...।) हूँ-अ-अ।

नसीवलाल- जे जिबटगर अछि ओकरा परतीए तोड़ब बेसी नीक लगै छइ।

शान्ती- चाचाजी, सोचए लगै छी तँ छगुन्तामे पड़ि जाइ छी जे हम सभ केहेन स्वतंत्र देशक जिम्मेदार नागरिक छी! जिम्मेदारी की छी आ केतए अछि।

नसीवलाल- प्रश्न तँ गंभीर अछि। मुदा बेहद खुशी भऽ रहल अछि जे एहेन प्रश्नपर नजैर तँ जा रहल छह। धन्यवाद।

शान्ती- (उत्साहित होइत...।) चाचाजी जहिना गहबरकेँ आँचरसँ पोछि नोरसँ नीप भक्तिनी एकटंगा दऽ शक्तिसँ शक्ति पबैए तहिना मन हुअ लगैए।

नसीवलाल- विचार तँ बहुत पैघ अछि। मुदा ओइले धरतीमे जमि कऽ पएर रोपए पड़त।

शान्ती- की मतलब?

नसीवलाल- मतलबसँ पहिने ई कहू जे जेकर अगुआइ करै छिऐ ओ केतए ठाढ़ अछि?

शान्ती- ठाढ़ तँ कम्मेकेँ देखै छी। बेसीकेँ तँ जहिना मुइल नढ़ियाकेँ कुत्ता लिड़ी-बिड़ी कऽ खाइत अछि तहिना समस्या खा रहल अछि।

नसीवलाल- समस्याक रंग-रूप केहेन अछि?

शान्ती- केते कहब।

नसीवलाल- किछुओ जँ बाजब, नहि तँ आन केना बुझत?

शान्ती- चाचाजी, (माथक घाम पोछैत...।) कियो खोपड़ी-ले तरसैए तँ कियो ताजमहल-ले, कियो दूधक धारमे नहाइए तँ कियो एक घोंट-ले मरैए।

(सुकदेव, सोमन आ मनचनक प्रवेश...।)

आभा- जहिना मनचन भायकेँ पछुआ रोटी भौजी खुअबै छथिन तहिना गामोक काजमे।

मनचन- (विहुसैत) भरि दिन अहूँ बाल-बोधकेँ सिखबैत हेबै जे

खाइमे आगू आ काजमे पाछू रही।

आभा- से कहाँ सिखबै छिऐ। सिखबै छिऐ जे पहिने करू तखन खाउ। ककहारामे जहिना डारि-पात छुटैत जाइए तहिना।

मनचन- (अधहँसी हँसैत...।) भूखे भजन ने होई गोपाला।

आभा- कठिया लाड़ैनक कोन काज होइ छै, से तँ..?

मनचन- हँ, से तँ जिनगीमे केते पँचकठिया देखलौं आ आगूओ देखब।

सुकदेव- (दमसैत...।) रे बुड़िबान, सभ दिन एक्के रंग रहमें। उमेरक ठेकान नहि छौ?

मनचन- भैया, दुनू हाथ उठा भगवानोकेँ यएह कहै छिऐन जे जहिना जिनगी भरि गाए दूधे दैत रहि जाइए, आमक गाछ आमे फड़ैत रहैए तहिना हँसते-खेलते दिवस काटि ली। की लऽ एलौं आ की लऽ जाएब।

नसीवलाल- अखन जइ काजे सभ एकठाम छी से काज करै जाइ जाउ?

सुकदेव- की बाउ कर्मदेव, जिनका सभ ऐठाम गेल छेलौं ओ सभ औता की नहि?

कर्मदेव- कहलैन तँ सभ। मुदा..?

सुकदेव- 'मुदा' की?

कर्मदेव- पढ़ल-लिखल लोकक कोन ठेकान। एक-एकटा बातक सतरह-सतरहटा अर्थ अगर-मगर करैत बुझै छैथ। तँए..?

सुकदेव- 'तँए' की?

कर्मदेव- यएह जे हमरा गप्पक की माने लगौलैन, से थोड़े बुझै छी।

सुकदेव- गामक-समाजक प्रति किनकर केहेन आकर्षण छैन?

कर्मदेव- ओना सबहक ऊपरा-ऊपरी छैन। मुदा घनश्याम कक्काक किछु विशेष छैन।

सुकदेव- औरो गोरेक?

कर्मदेव- सभ अपने बेथे बेथाएल छैथ। मुदा घनश्याम कक्काक जेहने बेवहार छैन तेहने आगू देखैक विचार सेहो छैन। असकरो जँ ओ आबि जाथि तैयौ बहुत-किछु भऽ सकैए।

नसीवलाल- जँ चौथाइयो बल बाहरसँ भेट जाए तैयौ उठि कऽ ठाढ़ होइमे असान हएत।

मनचन- नसीवलाल भैया, जहिना पानिमे डुमैत चुट्टीकेँ सरलो खढ़ भेटने जान बँचै छै तहिना जँ कनियोँ आस भेटत तैयौ कदमक गाछमे मचकी लगा झूलि लेब। चारियोअनासँ कम भोँट पेने एमेले-एमपी बनि मुर्गी दकरैए आ हम सभ भातो-रोटी नै खा सकै छी।

आभा- अहाँ भोँट दइ छिऐ की नहि?

मनचन- किए ने देबइ।

आभा- केकरा दइ छिऐ।

मनचन- जेकरा जीतैत देखै छिऐ तेकरा।

आभा- से पहिने केना बुझै छिऐ?

मनचन- हद करै छी। जखन जीतक घोषणा होइ छै तखन जा कऽ माला पहिरा दइ छिऐ।

आभा- ओ मानि लइए?

मनचन- किए नै मानत। जे अपने सात घाटक पानि पीब गीरथानि जकाँ बजैए आ पतिवरता कहबैए ओ किए ने मानत।

आभा- तब तँ अहाँ ठकोसँ नमहर ठक छी।

मनचन- से केना?

आभा- ठक तँ ओ भेल जे निरीह, मुँहदुब्बर आ सोझमतियाकेँ ठकैत अछि आ अहाँ तँ ठकक ठक भेलौं।

मनचन- अहिना ने उनटल गंगामे लोक नहा गंगा-स्नानक फल गंगासँ मंगै छैन।

आभा- गंगा दइ छथिन?

मनचन- किए ने देथिन। भलेँ सुनटाक फल देथिन वा नहि मुदा उनटाक फल किए ने देथिन।

आभा- केना दइ छथिन?

मनचन- साँपक केचुआ देखलिऐ हेन?

आभा- किए ने देखबै?

मनचन- की ओइ केचुआमे साँपे जकाँ मुहसँ नाँगैर तक नइ रहै छइ?

आभा- हँ, से तँ रहै छइ।

मनचन- तखन।

आभा- मुदा?

मनचन- मुदा तुदा किछु नहि। अहाँकेँ बुझैमे फेड़ अछि। देखै छिऐ किने जे गामक सभ कहत जे एकोटा ऑफिसमे बिना घूस नेने काज नै चलैए।

आभा- हँ से तँ नहियेँ चलैए।

मनचन- मुदा पाइ लऽ लऽ भोँट दइ छिऐ सेहो कहियो ने।

आभा- यएह तँ बुझैक बात अछि, जखन भोँटरसँ भोँट लेनिहार धरि घुसेक वेपार करए लगत तखन जुग बदलतै।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1055

बारहम दृश्य

(गामक विद्यालयक आँगन। बच्चा सभ फील्डपर खेलैत। रस्ता धऽ कऽ राही सभ चलैत। गोल-मोल बैसार। एकठाम कृष्णदेव, मनमोहन आ रघुनाथ बैसल। बगलमे घनश्याम, नसीवलाल, सुकदेव आ गामक लोक बैसल...।)

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ...।) आजुक बैसार लेल सभकेँ धन्यवाद दइ छी जे अपन व्यस्त समैमे आबि गामक बैसारकेँ शोभा बढ़ौलैन। तैसंग होनहार कर्मदेवकेँ औरो बेसी बधाइ जे जी-तोड़ि मेहनत कऽ बैसार करौलैन।

मनचन- भैया, अहाँ कर्मदेवक प्रशंसा बेसी केलिऐन।

नसीवलाल- कम्मे केलिऐन। नवयुवक आ बाल-बच्चाक–बेटा-बेटीक–बेसी प्रशंसा केतौ-केतौ अधलो होइ छइ।

कृष्णदेव- (चौंकैत...।) से केना?

नसीवलाल- मनुखकेँ घरसँ बाहर धरि प्रशंसा-निन्दासँ परहेज करक चाही।

कृष्णदेव- तखन?

नसीवलाल- उचित सीमाक उल्लंघन होइते बनै-बिगड़ैक संभावना

बढ़ि जाइत अछि।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...।) सम्भव अछि।

नसीवलाल- सम्भव रहितो कठिन अछि, मुदा जाधैर सम्भव नहि हएत ताधैर समाजक गाड़ियोकेँ लीख दऽ कऽ ससरब कठिन अछि।

घनश्याम- नीक-अधलाक विचार तँ करबाके चाही किने।

नसीवलाल- निसचित करबाक चाही, मुदा हटि कऽ नै सटि कऽ।

घनश्याम- की मतलब?

नसीवलाल- मतलब यएह जे जहिना समुद्रक किनछैरक पानि कम गहींरमे रहितो अगम पानिसँ मिलल रहैए तहिना।

(कनडेरिये आँखिए रघुनाथ, मनमोहन नसीवलाल दिस देखैत तँ मनचन, सुकदेव कृष्णदेव दिस। अपन-अपन मनोनुकूल मुँहक रूप सेहो बनबैत...।)

घनश्याम- (ठहाका मारि...।) अखन धरि गामक बैसार कोन रूपे चलि रहल अछि नसीवलाल भाय?

नसीवलाल- घनश्याम बाबू, जहिना बन्दूकक अनेको गोली, गोली खेनिहारकेँ देहक कोनो अंग चिन्हार नै रहैत तहिना गामो-समाजकेँ भऽ गेल।

घनश्याम- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

नसीवलाल- ओना अखन जइ काजे सभ एकठाम बैसलौं पहिने से काज हेबा चाही। मुदा ऐ तरहक बैसार पहिल-पहिल अछि तँए किछु आनो बात चलबे करत।

मनचन- भैया, हनुमानजी जकाँ कियो छाती फाड़ि देखबैए आकि पेटक बात आ हाथक काजेसँ देखबैए?

(मनचनक बात सुनि कृष्णदेव हंसक हिलुसैत आँखि जकाँ देख...।)

कृष्णदेव- अखन धरि मनचनकेँ बटेदार बुझै छेलौं मुदा से नहि, ओ समाजक पटेदार छी, हिस्सेदार छी।

(कृष्णदेवक विचार सुनि...।)

नसीवलाल- जहिना हाथक पाँचो-आँगुर पाँच लम्बाइ-चौड़ाइक होइ छै मुदा हाथक शोभा तँ बरबैरे बढ़बै छै किने।

कृष्णदेव- हँ से तँ बढ़ैबते छइ।

नसीवलाल- तहिना ने सड़क बनबैमे पत्थर बैसौनिहारसँ लऽ कऽ नक्शा बनौनिहार धरिक होइ छइ।

कृष्णदेव- मुदा?

नसीवलाल- हँ, जहिना सिरकट्टी भगवतीक महत होइत तहिना ने मुस्कियाइत खर्गधारी भगवतियोक होइत।

(बिच्चेमे...।)

घनश्याम- हँ! हेबा चाही। मुदा पहिने दुनूक परिचए हएब जरूरी।

नसीवलाल- निसचित। जहिना भूतपर भविस ठाढ़ होइत तहिना ने मनुखोक पैछला जिनगी ऐगला जिनगीकेँ ठाढ़ करैमे मदैतगार होइत।

मनचन- जँ से नहि हुअए तखन?

नसीवलाल- ओहिना हएत जहिना सत्यवादी हरिश्चन्द्रक पार्ट

(स्टेजपर) कियो शराबी झूमि-झूमि कठही चौकीपर अलापैत।

(ठहाका...।)

घनश्याम- हँसी-मजाक छोड़ि बैसारक गरिमा बनाउ?

नसीवलाल- (अधहँसी हँसि...।) बहुत नीक विचार घनश्याम बाबू, देलैन। आइ धरि हृदए तरपैत रहल जे गामोक नक्शा इतिहासक पन्नामे जोड़ाए। से..?

मनचन- भैया, जइ समाजमे प्रोफेसर, इंजीनियर, डॉक्टर, बैंक मैनेजरसँ लऽ कऽ गोबर बिछनिहारि धरि छैथ तइ समाजक इतिहास नै बनइ ओ केतेक लाजिमी अछि।

नसीवलाल- कहलह तँ ठीके मुदा...।

मनचन- 'मुदा' की?

नसीवलाल- यएह जे, ओना आइ धरिक समाजक पन्ना-पन्ना पढ़ए पड़त। ओकरा तकैमे किछु मेहनत उठबए पड़त। मुदा जँ ओकरा विचारणीय प्रश्न बना रखि आजुक समाजक अध्ययन कऽ निर्माणक संकल्प लेल जाए, तहूसँ काज चलि सकैए।

मनचन- से केना हएत?

घनश्याम- जँ करैक इच्छाशक्ति जगा संकल्पबद्ध भऽ डेग उठाबी तँ भऽ सकैए।

कर्मदेव- घनश्याम काका, अहाँ तँ नारदजी जकाँ छोटका बैंकक मीटिंगसँ लऽ कऽ बड़का बैंकक मीटिंग धरिक अनुभव रखने छी तँए नीक हएत जे अपने समाजक एकटा रूप-

रेखा बना बजियौ?

घनश्याम- बाउ कर्मदेव, कहलह तँ ठीके बाहरी दुनियासँ भिन्न ग्रामीण दुनियाँ अछि तँए जे तरी-घटी गामक नसीवलाल भाय जनै-बुझै छैथ से नहि बुझै छी।

सुकदेव- ई कोनो बड़ पैघ समस्या नै छी। नीक हएत जे दुनू गोरे विचारि कऽ आगूक डेग उठाबी।

(सुकदेवक विचारकेँ मनमोहन आ रघुनाथ समर्थन केलैन। मुदा कृष्णदेव मुँहक बात रोकि लेलैन...।)

मनचन- (मुस्की दैत...।) घनश्याम भाइक तेहेन पटपेटा पेट छैन जे नसीवलाल भैयाकेँ पीचिये देथिन।

घनश्याम- (हँसैत...।) नहि मनचन, मोटेलहा पेट रहैत तखन ने, फुललाहा छी। कोढ़िलोसँ हल्लुक।

मनचन- गणेशजीबला? जे एक-रत्तीक मुसरी मुनहर सन पेटकेँ उठा दौगैत रहैए।

घनश्याम- हँ! हँ! सएह बुझहक।

कृष्णदेव- (रूष्ट भऽ...।) समैक उपयोग करू।

घनश्याम- भाय, विचार अछि जे सभ कियो दिलसँ अपन-अपन जिनगीक अनुभव व्यक्त करी। जइसँ एक नव समाज बनैक सुदृढ़ नीब पड़त।

कृष्णदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ। जाधैर गामक दशाक सम्यक चर्च नै हएत ताधैर दिशा निर्धारित करैमे किछु कमी रहबे करत।

नसीवलाल- बहुत बढ़ियाँ विचार कृष्णदेव बाबूक छैन। जाधैर पेटक नीक-सँ-अधला धरिक विचार समाजक बीच नै राखब

ताधैर समाजक अँतरी-मिलान केना हएत?

मनचन- भैया, 'अँतरी-मिलान' केकरा कहै छइ?

घनश्याम- (मुस्की दैत...।) छाती-मिलानकेँ।

मनचन- 'छाती मिलान!' छाती मिलान तँ दुइए ठाम...। समधिक संग आ दुनू परानी...। दू परानी..?

घनश्याम- कोन मंत्र पढ़ए लगलह मनचन?

मनचन- व्यासजी आ गणेशजीमे यएह ने शर्त्त रहैन जे बिनु बुझने कलम नै बढ़ाबी।

घनश्याम- अहाँ तँ शास्त्रो बुझै छी मनचन।

मनचन- पढ़ि कऽ नहि, भागवत सुनि कऽ। तैँसरा तक अपनो गामक बरहम स्थानमे साले-साल भागवत होइ छेलै किने।

नसीवलाल- अखन धरि बैसारक मूल विषयपर नै एलौं हेन। अढ़ाइ-तीन घन्टा बीति गेल। ओना, भलेँ हम सभ विषयान्तरे गप-सप्प किए ने केलौं मुदा बेबुनियाद बात तँ नै भेल।

घनश्याम- आन काजसँ भिन्न बौधिक काज होइए। हाथ-पैरक काज जकाँ लगातार केने काज छुटैक संभावना बढ़ि जाइत अछि। तँए..?

मनचन- घनश्याम भाइक विचारकेँ समर्थन करै छी।

नसीवलाल- बीचमे टिफीनक आवश्यकता तँ जरूर होइत अछि।

सुकदेव- पशुपति नाथक दर्शन आ किछु वणिज हएब जहिना दोबर लाभ दैत अछि तहिना बाल-भोग भेलासँ हएत।

मनचन- बेस कहलिऐ भैया। अखन धरि जे हम सभ समाजमे टौहकीक संग पहटोमे फँसल छी तेकरो..?

घनश्याम- मनचनक दृष्टिकूट नहि बुझलौं?

नसीवलाल- दोसराक व्याख्यासँ नीक मनचनेक व्याख्या हएत।

मनचन- से किए भैया?

नसीवलाल- हौ मनचन, जमीन-जाल, शब्द-जाल आ वाक्-जालमे सभ ओझराएल छी। तोहर आत्मा की बाजि रहल छह से तोंहीटा बुझै छहक। वाणी होइत जे निकलतह वएह बात तोहर भेलह।

मनचन- भैया, आत्मोक बोली तँ दुबटियापर माने बुधिक मोड़पर हरा जाइत अछि। एक्के विचारकेँ आमक गाछ जकाँ डारि छिटैक जाइ छइ।

सुकदेव- मनचन, गप्पक छीलैन छोड़ह?

मनचन- भैया, जाबे गप्पक छीलैन नहि करब ताबे शीशो जकाँ सुरेब केना हएत। खाएर, जहिना औझुका बैसार ऐतिहासिक भऽ रहल अछि तहिना जे पनपिआइ करब जइमे सभ मिलि बना-परैस सभ मिलि खाएब।

घनश्याम- मनचन, जे कहलक ओ आब नहि छइ। सभठाम चलै छइ।

मनचन- आँखिक सोझहामे जातिक आ दू सम्प्रदायक बीच खानो-पान आ प्रेमसँ बिआहो होइत देखै छी। मुदा सर्वसम्मतिसँ किए ने घोषणा कऽ दइ छइ। जखन कि धरतीसँ अकास धरि उड़ियाइत अछि।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1027

तेरहम दृश्य

(दोसर बैसार...।)

घनश्याम- मनचन, बरी बड़ सुन्दर बनल छेलह। नून देनिहारकेँ चाबस्सी दइ छिऐन।

मनचन- हमरा रिझबै छी। दू सालसँ सभ नोनगर भोज विन्यासमे हमहीं नोन दइ छी।

घनश्याम- किए?

मनचन- गाममे बारहअना लोक रोगीए-टट्टी अछि। कियो नून बाड़ने अछि तँ कियो अधे खाइए। भोज तँ सामुहिक छी। एकठाम बैस खाएब।

घनश्याम- दोसरो चाबस्सी दइ छी मनचन।

मनचन- से किए?

घनश्याम- अखन धरि हमहूँ नहि गौर केने छेलौं जे अहाँ केने छी।

मनचन- भाय, अहाँक सोझहामे बजैत संकोच होइए। मुदा अपना घरमे लोक नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बजैत अछि, तँए..?

घनश्याम- चुप किए भेलौं। आइ धरि जे आनन्द जिनगीमे नहि भेटल छल ओ भेट रहल अछि।

मनचन- केना?

घनश्याम- अपनासँ ऐगला लग जी हुजुरी करए पड़ैए आ पैछलाकेँ जी-हजुरी करबै छिऐ। जिनगीक कोनो आड़िये-धूर नै अछि।

सुकदेव- मनचन, मुँह बन्न करह। बैसारक महत होइ छइ। दोसरो गोरेकेँ अवसर दहुन?

आभा- एक तँ उमेरे केते भेल हेन। मुदा जेतबे अछि तइमे आइ जेते समाजक बीच आएल ओते...।

नसीवलाल- कोनो गलत आकि सही परम्परा ओतबे दिन चलैत अछि जेते दिन लोक चलबैत अछि। ऐ दिस विवेकीकेँ जरूर नजैर देबाक चाहिऐन।

आभा- की नजैर?

नसीवलाल- यएह जे पाछूसँ अबैत बेवहार आजुक समैमे अनुकूल अछि वा नहि। विवेकी मनुख होइक नाते सबहक दायित्व बनै छैन जे जे सनातनी बेवहार अछि ओ जीवित रहए।

आभा- सनातनी बेवहार की?

नसीवलाल- परिवर्तनशील बेवहार।

शान्ती- काका, गलत बेवहार समाजमे पैसल केना?

नसीवलाल- ने एक बेर पैसल आ ने एकदिन पैसल। घुसकुनियाँ-ओंघरनियाँ दैत पैस अंकुरित भऽ विशाल वृक्षक रूपमे बदैल गेल, जइसँ लोक, परलोकक संग विश्वक नक्शे बदैल गेल।

शान्ती- डॉक्टर काका, अपने किछु..?

रघुनाथ- देखियौ, जहिना रामायणमे तुलसी कहने छैथ- हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' तहिना अछि। ओना, दुनियाँक सभ मनुखकेँ किछु आवश्यकता आ गुण एक तरहक अछि, मुदा..?

शान्ती- 'मुदा' की?

रघुनाथ- यएह जे किछु एहनो अछि जे सभकेँ फुटो-फुट अलगो-अलग होइए। ओना हमहूँ एकभग्गुए भऽ गेल छी। समाज अध्ययन तँ विशाल अध्ययन छी किने, तँए...। कृष्णदेव बाबू आ मनमोहन बाबू बुझा सकै छैथ।

मनमोहन- भाय, जहिना अहाँ रोग आ रोगीक बीच रहलौं तहिना हमहूँ छी। मुदा मनक बात छिपाइयो कऽ रखब उचित नइ बुझै छी।

सुकदेव- हृदैक बात इंजीनियर साहैब बजला।

मनमोहन- जेना-जेना समए बीति रहल अछि तेना-तना लोकोक जिनगी बदैल रहल अछि। पहिलुका लोक सोल्होअना शरीरसँ श्रम कऽ शरीरक रक्षा करै छला।

सोमन- जेना आइ देखै छिऐ तेना नै छेलइ?

मनमोहन- नहि।

सोमन- (किछु शंका करैत...।) इंजीनियर साहैब, केते दिन भेल से तँ नीक जकाँ मन नै अछि मुदा अहिना एक बेर रौदी भेल से मन अछि। जहाँ-तहाँ लोक कमाइ-खटाइले भागल। हमहूँ भोलबा काका सेने कलकत्ता गेलौं।

आभा- कलकत्ता गेल छी?

सोमन- गेले नहि छी दू साल ठेलो चलौने छी। जइसँ सभ गली-कुच्ची देखल अछि।

आभा- केना ठेला चलबै छेलिऐ?

सोमन- छातीमे ठेलाकेँ अरा दुनू हाथसँ दुनू भागक डन्टा पकैड़ ठेलै छेलौं।

आभा- इंजीन गाड़ी सभ नै छेलइ?

सोमन- छेलइ। जीपे-कारक कोन बात जे बड़का-बड़का कोठा, करखन्ना आ दोकान सभ सेहो छेलइ। जेहेन ओइठामक दोग-सान्हिक सड़क अछि तेहेन तँ अपना सभ दिस अछियो नहि।

घनश्याम- बात दोसर दिस बढ़ल जाइए।

मनमोहन- बड़ बढ़ियाँ, घनश्याम भाय कहलैन। एक तँ दैवी प्रकोप माने बाढ़ि, रौदीसँ अपन इलाका पछुआएल दोसर मनुखोक दोख कम नइ छइ। जे इलाका जेते पहिने जागल ओ ओते अगुआएल।

आभा- कनी सोझरा दियौ काका।

मनमोहन- (मुस्की दैत...।) पहिने जंगली अवस्थामे अपना सबहक पूर्वज छला। हाथे-पैरसँ सभ किछु करै छला। जेना-जेना बुइध-अकील बढ़ैत गेल तेना-तेना आगू मुहेँ ससरैत गेला। हथकर्घासँ पाँच सीढ़ी आगू बढ़ि आइ

कम्प्यूटर-युगमे पहुँच गेल छी।

आभा- ऐसँ आगूओ बढ़त?

मनमोहन- निसचित बढ़त। निचेनमे कहियो औरो कहब। अखन जइ काजे एकत्रित भेल छी तेकरा आगू बढ़ाउ।

सोमन- भाय, हम सभ ने कहियोकाल मासुल दऽ कऽ बस, जीप आकि कोनो गाड़ीपर चढ़ै छी। अहाँकेँ तँ अपने अछि।

मनमोहन- से तँ अछिए।

घनश्याम- ओना बाढ़ि रौदी दुनू जनमारा छी। मुदा आइ रौदीक विचार करू।

शान्ती- मैनेजर काका, अहाँ सभ तरहेँ ऊपर छी। ओना समाजक किछु भारो ऊपरमे अछि, तँए चाहब जे झगड़ा-झंझटसँ नहि, विचारक रस्तासँ समाज आगू बढ़ए।

घनश्याम- विचार तँ अपनो सएह अछि। मुदा नहियोँ चाहलापर केते-गोरेकेँ बैंकक लोनमे जहल पठबए पड़ैए आ चौकैठ-केबाड़ उखाड़ए पड़ैए।

शान्ती- से किए?

घनश्याम- (विस्मित होइत...।) की कहब बोरिंग-दमकलसँ लऽ कऽ गाए पोसैक लोन उठा लोक सराध-बिआहक भोज कऽ पूजी नष्ट कऽ लैत अछि आ समैपर आपस नइ कऽ

पबैत अछि।

शान्ती- तखन?

घनश्याम- औझुका बैसार तँए ऐतिहासिक अछि जे समाज अपन कल्याणक दिशा अपने निसचित करैथ।

नसीवलाल- जुग-जुगान्तरसँ जे मनोवृत्ति बनि गेल अछि ओकरा एकाएक नै बदलल जा सकैए। मुदा बिना बदलने काजो नहियेँ चलत, तँए जरूरी अछि जे उत्पादन आ उपभोगकेँ नीक जकाँ सभ बुझी।

घनश्याम- जुगक अनुकूल विचार अछि।

सुकदेव- घनश्याम बाबू, गामक बारहअना जमीन हुनका सबहक छिऐन जे गाम छोड़ि अनतए जा नोकरी करै छैथ। जखन कि खेती केनिहारकेँ अपन खेत नै छिऐन।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...।) हँ से तँ अछिए।

सुकदेव- तैबीच केना सामंजस हएत?

घनश्याम- ओना अपना सभ बुझै छी जे अंग्रेजकेँ भगा हम सभ स्वतंत्र भेलौं मुदा से नहि छी। जखन देशक शासन आ सम्पैत सबहक सझिया भऽ जिनगीक समुचित विकास दिस बढ़त तखन हएत।

रघुनाथ- (हृदए खोलि...।) मन हल्लुक करै दुआरे अपन बात कहै छी। जहिना जुआनीक उमकीमे गाम छोड़ि शहर

गेलौं तहिना आइ बुझि पड़ैए जे..?

मनमोहन- रुकलौं किए?

रघुनाथ- संकोच होइए। जैठाम छी तैठाम निहत्था भऽ गेलौं। जिनगीक सभ किछु छीना रहल अछि। मुदा गाममे सभ किछु देख रहल छी।

मनमोहन- संकोच किए होइए।

रघुनाथ- पूजी नष्ट होइत देख रहल छी। जइले जिनगी गमेलौं सएह..?

मनमोहन- डॉक्टर साहैबसँ कनियों नीक नहि छी। ओना डॉक्टर साहैबकेँ सभ किछु भेट जेतैन मुदा..?

रघुनाथ- (मुस्की दैत...।) 'मुदा' की?

मनमोहन- एग्रीकल्चर शिक्षा पाबि बेटा गाममे रहत आ अपने शहरमे। बुढ़ाड़ीमे एकलोटा पानियों के देत।

सोमन- अहाँक गाम छी, खेत-पथार छी। अहाँक सुआगत अछि जे गाम आबि अपन जिनगीक अनुभव अनाड़ी-धुनाड़ीकेँ दिऐ।

कृष्णदेव- अखन हम तनावमे चलि रहल छी। मुदा तैयो कहै छी अहाँ सबहक विचारानुसार जीबैक कोशिश करब।

शान्ती- घनश्याम काका, आगूक भार अहाँ ऊपर?

घनश्याम- गामक भाग जगि गेल। पूजीक जेते जरूरत हएत ओ बैंकसँ दिआ देब। भने एग्रीकल्चर ग्रेजुएट गाममे रहता, हुनका माध्यमसँ गामक योजना बना उन्नैत खेती आ खेतीसँ जुड़ल कल-कारखाना लेल परियासरत् रहब।

शान्ती- (हँसैत...।) जिनगीक सार्थकता पाबि रहल छी।

घनश्याम- किछु करैक संकल्प सभ लिअ। जखने सामुहिक डेग उठत तखने रस्ता धड़ैमे देरी नहि लगत।

नसीवलाल- सबहक दुख-सुख- सहबहक छी।
सबहक इज्जत-सबहक छी।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1019

समाप्त।

नाटक/एकांकी लेखन क्रम

1. मिथिलाक बेटी

पहिल अंक- शब्द संख्या : 6171, दोसर अंक- शब्द संख्या : 3851, तेसर अंक- शब्द संख्या : 3392, चारिम अंक- शब्द संख्या : 2652, पाँचम अंक- शब्द संख्या : 1667.

2. कम्प्रोमाइज

एक- शब्द संख्या : 982, दू- शब्द संख्या : 463, तीन- शब्द संख्या : 697, चारि- शब्द संख्या : 1373, पाँच - शब्द संख्या : 778, छह- शब्द संख्या : 836, सात - शब्द संख्या : 1375, आठ- शब्द संख्या : 1233, नअ- शब्द संख्या : 1100, दस- शब्द संख्या : 1042, एगारह- शब्द संख्या : 1055, बारह- शब्द संख्या : 1027, तेरह- शब्द संख्या : 1019.

3. झमेलिया बिआह

पहिल- शब्द संख्या : 695, दोसर- शब्द संख्या : 793, तेसर- शब्द संख्या : 663, चारिम- शब्द संख्या : 1184, पाँचम- शब्द संख्या : 1222, छठम- शब्द संख्या : 1114, सातम- शब्द संख्या : 2082, आठम- शब्द संख्या : 1566, नअम- शब्द संख्या : 1266.

4. रत्नाकर डकैत

एक- शब्द संख्या : 807, दू- शब्द संख्या : 1361, तीन- शब्द संख्या : 1240, चारि- शब्द संख्या : 1084, पाँच- शब्द संख्या : 860, छह- शब्द संख्या : 267.

5. स्वयंवर

पहिल अंक- शब्द संख्या : 1671, दोसर अंक- शब्द संख्या : 2774, तेसर अंक- शब्द संख्या : 1506, चारिम अंक- शब्द संख्या : 1185.

6. सतमाए

पहिल दृश्य- शब्द संख्या : 879, दोसर दृश्य- शब्द संख्या : 711, तेसर दृश्य- शब्द संख्या : 823, चारिम दृश्य- शब्द संख्या : 895, पाँचम दृश्य- शब्द संख्या : 273.

7. कल्याणी

पहिल दृश्य- शब्द संख्या : 827, दोसर दृश्य- शब्द संख्या : 697, तेसर दृश्य- शब्द संख्या : 683, चारिम दृश्य- शब्द संख्या : 1140, पाँचम दृश्य- शब्द संख्या : 622.

8. समझौता

पहिल दृश्य- शब्द संख्या : 682, दोसर दृश्य- शब्द संख्या : 610, तेसर दृश्य- शब्द संख्या : 637.

9. तामक तमघैल

पहिल दृश्य- शब्द संख्या : 1000, दोसर दृश्य- शब्द संख्या : 1105, तेसर दृश्य- शब्द संख्या : 1949, चारिम दृश्य- शब्द संख्या : 1105.

10. बिरांगना

पहिल दृश्य- शब्द संख्या : 1021, दोसर दृश्य- शब्द संख्या : 975, तेसर दृश्य- शब्द संख्या : 996, चारिम दृश्य- शब्द संख्या : 1094.

❍



जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र)

जीविकोपार्जन : कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती)

सम्मान/पुरस्कार : 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

सम्पर्क- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, पिन- 847410, बिहार। **मो.** 9931654742

मौलिक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. सुभिमानी जिनगी- लघु कथा संग्रह।



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452
ISBN : 978-93-87675-38-4
₹ 200

झमेलिया बिआह

जगदीश प्रसाद मण्डल



झमेलिया बिआह

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-39-1

दाम : ₹ 200/-
© श्रुति प्रकाशन
तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

JHAMELIYA BIAAH
A Play in Maithili Language by Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

पात्र परिचय-

पुरुष पात्र-

भागेसर-	45 बर्ख
झमेलिया-	12 बर्ख
यशोधर-	48 बर्ख
राजदेव-	55 बर्ख
श्याम, (राजदेवक पोता)-	08 बर्ख
कृष्णानन्द, (बी.ए. पास)-	25 बर्ख
बालगोविन्द, (लड़कीक पिता)-	55 बर्ख
राधेश्याम, (लड़कीक भाय)-	35 बर्ख
घटक भाय-	60 बर्ख
रूपलाल, (समाज)-	40 बर्ख
गरीबलाल, (समाज)-	45 बर्ख
धीरजलाल, (समाज)-	45 बर्ख
पान-सात बच्चा-	7-15 बर्खक

स्त्री पात्र-

सुशीला, (भागेसरक पत्नी)-	40 बर्ख
दायरानी, (बालगोविन्दक पत्नी)-	52 बर्ख
घटक भाइक पत्नी-	55 बर्ख
सुनीता, (कौलेजमे पढ़ैत)-	20 बर्ख

भूमिका

बीसम सदीक मैथिल मेधा प्रेरणा आ प्रभावक दृष्टिए वैविध्यसँ पूर्ण अछि। हरिमोहन बाबूक संगे सुमनजी, किरणजी आ आरसी प्रसाद सिंह पारंपरिक काव्य हेतु आ काव्यप्रयोजनसँ अनुप्राणित छैथ, यद्यपि हिनकर लेखनमे राष्ट्रीयताक कार्यभाग सेहो विलक्षण। यात्रीजी पारंपरिक काव्यप्रयोजनकेँ समाजिक क्रांतिसँ जोड़ै छथिन आ हरिमोहन झा व्यंग्य विधाकेँ शक्तिशाली औजारक रूपमे प्रयोग करै छथिन। सदीक उत्तरार्धमे जगदीश प्रसाद मण्डलक उदय एकटा महतपूर्ण घटना! बेकतीगत प्रतिभा आ समाजिक बोधक जबरदस संतुलन बनबैत जगदीशजी अपन कथा, कविता, उपन्यास आ नाटकसँ समानांतर संसारक सृजन करै छथिन। ई संसार अपन परंपराकेँ जेतेक सिनेहसँ देखै छै, बहैत हवा, बदलैत माटि-पानिक रंगकेँ सेहो अत्यंत हार्दिकतासँ स्वागत करै छइ। स्वातंत्र्योत्तर भारतक बदलैत समाजिक, बौद्धिक परिवर्तनकेँ समेटलाक बादो ई विभिन्न प्रकारक फार्मूलेबाजीकेँ विनम्रतापूर्वक अस्वीकार करैए। संचार-परिवहनक बदलैत उपकरण आ मैथिली समाजक नवोदित बौद्धिक वर्गक अपेक्षाकृत उदारवादी रूखसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी मैथिली साहित्यक अनिवार्य तत्वक रूपमे स्थापित होइ छैथ। उत्तर आधुनिक परिवर्तन बौद्धिकताक अन्तरालकेँ नीक जकाँ भरै छै आ दूरसंचार क्रांतिक हिसाबे जहिना महकौआ केस आ पेरिस तहिना भदेस बेरमा गाम। जगदीशजी ऐ हिसाबे एकटा एहेन मानक बनबै छथिन जे असंभवे जकाँ अछि। ओ केंद्रीयताक विरोध दरभंगा, पटना वा दिल्लीसँ नै अपन गाममे रहि कऽ करै छथिन।

बीसम सदीक उत्तरार्धसँ अखन धरि बौद्धिकता आ प्रखरताक दृष्टिए विश्व साहित्य उत्तर-आधुनिकतामे डूमल अछि। उत्तर-आधुनिकताक कोनो सर्वमान्य परिभाषा उपलब्ध नै अछि आ विद्वान प्रत्येक नव-प्रवृत्तिकेँ उत्तर-आधुनिक कहि संतुष्ट भऽ जाइ छथिन। ओना ई आन्दोलन साहित्य आ सौंदर्यक कोनो सर्वमान्य आ केंद्रीय मानदंडक विरोध करैए आ वर्ग, क्षेत्र, देश आ रूचिक हिसाबे रचनाक लोकतांत्रिकताकेँ समर्थन करैए। दलित प्रश्न, अश्वेत प्रश्न, नारीक प्रश्न आ गामक प्रश्नक विभिन्न रूप उत्तर-आधुनिक आन्दोलनकेँ नव स्वरूप दइ छइ।

मैथिली साहित्य मे ऐ लोकतांत्रिकताक खास रूप जगदीश प्रसाद मण्डल जीमे भेटत। ओना ओ प्रवृत्तिक हिसाबे आधुनिक छैथ, पिछड़ल गाम आ पिछड़ल लोकक प्रति अद्भुत आकर्षणक संग। मुदा मिथिलाक एकटा साधन विहिन गाममे रहि कऽ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि जइ समर्पणसँ ओ कऽ रहल छैथ, ई साबित कऽ रहल अछि कि मैथिली साहित्य सेहो केंद्रीयक स्थानपर क्षेत्रीय भऽ रहल अछि। आ ई केंद्रीय बनाम क्षेत्रीय उत्तर-आधुनिकतावादक प्रमुख अभिलक्षण अछि। तँए जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यक परिधिमे स्थित गाम, लोक, जाति, नारी वर्ग आ आनो आन ओइ वर्ग सबहक चित्रण अछि जे अपन आवाज उठाबैमे अक्षम अछि।

उत्तर आधुनिकतावादक दिस कोनो सायास दृष्टि नै हेबाक बाबजूद उत्तरआधुनिक दृष्टिसँ ओ श्रेष्ठ लेखक छैथ। एहेन लेखक जे कोनो एकल आ एकीकृत संरचनाक स्थानपर विविधता आ बहुलवादक समर्थन करैत हो। सौंदर्य आ मानकक आतंककेँ अस्वीकार करैत जे परंपरागत रूचिमे जनतांत्रिक हस्तक्षेप करैत हो। उत्तर आधुनिकतावाद मानै छै कि कोनो मानदंड सर्वमान्य नहि।

सर्वव्यापी आ शाश्वत मूल्यांकन पद्धतिक विरोधमे उत्तरआधुनिकता विशेष सक्रिय छैक। आ उत्तरआधुनिकताक ऐ प्रवृत्तिपर बल जगदीशजीक संदर्भमे ऐ दुआरे कि हरेक नव संरचना मूल्यांकनक नव कसौटीक मांग करै छइ।

“झमेलिया बिआह” जगदीश प्रसाद मण्डलजीक तेसर नाटक थिक। ऐसँ पहिने ‘मिथिलाक बेटी’ आ ‘कम्प्रोमाइज’ संग-संग कल्याणी, बिरांगना, सतमाए आ समझौता ऐ पाँचो एकांकीक संग्रह ‘पंचवटी’ नाओंसँ आ ‘रत्नाकर डकैत’ तथा ‘स्वयंवर’ नाटक सेहो प्रकाशित भेलैन अछि।

‘झमेलिया बिआह’, ‘मिथिलाक बेटी’ आ ‘कम्प्रोमाइज’ ई तीनू नाटक अपन औपन्यासिक विस्तार आ काव्यात्मक दृष्टिसँ परिपूर्ण। लेखक समकालीन विश्व आ गद्यक पारस्परिकतासँ नीक जकाँ परिचित छैथ, तँए हिनकर संपूर्ण रचना-संसारमे समकालीनताक वैभव पसरल अछि, जेते वैचारिक, ओतबे रूपगत। समकालीनताक प्रति हिनकर झुकाव “झमेलिया बिआह”क एकटा विशेष स्वरूप दइ छइ। बारह सालक नेनाक बिआहक ओरियाओन करैत माए-बापक चित्र जेते हँसबै छैक, माएक बिमारी ओतबे सुन्न। लेखकक रचना संसारमे काल-देवता लेल विशेष जगह, तँए ई नाटक प्रहसनक प्रारंभिक रूपगुण देखाबितो किछु आर अछि। पहिले दृश्यमे सुशीला कहै छथिन “राजा दैवक कोन ठेकान...”, “अगर दुरभाखा पड़तै तँ सुभाखा किए ने पड़ै छै...।” आ राजा, दैवक कर्तव्यक प्रति ई उदासीनताक अनुभव समस्त आस्तिकता आ भाग्यवादिताकेँ खंडित करैए।

सभ नाटकमे भरत मुनिकेँ खोजनाइ जरूरी नै, ओना उत्साही विवेचक अर्थ-प्रकृति, कार्यावस्था आ संधिक खोज करबे करता, आ

कोनो तत्व नै मिलतैन तँ चिकड़ि उठता। यद्यपि लेखकक उद्देश्य स्पष्ट अछि। शास्त्रीय रूढ़ि जेना–नान्दीपाठ, मंगलाचरण, प्रस्तावना, भरतवाक्यक प्रति लेखक कोनो आकर्षण नै देखबै छथिन। एतबे नै पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतकेँ हूबहू -देकसी- खोजएबलाकेँ आलस सेहो लगतैन। तँए 'झमेलिया बिआह' नाटकमे स्टीरियोटाईप संघर्ष देखबाक ईच्छुक भाय लोकैन कनेक बचि बचा के चलब। विसंगति आ समस्या नाटकक फार्मूलाकेँ नाटकमे खोजएबलाकेँ सेहो झमेला बुझा सकै छैन, किएक तँ लेखक कोनो फार्मूलाकेँ स्वीकारि कऽ नै लिखै छथिन।

सीधा-सीधी अंक-विहिन "झमेलिया बिआह" नअ गोट दृश्यमे बँटल अछि : अनेक दृश्यक एकांकी। ने बहुत छोट आ ने नमहर। तीन चारि घन्टाक बिना झमेलाकेँ 'झमेलिया बिआह'। मात्र घर वा दरबज्जाक साज-सज्जा। तेरहटा पुरुष आ चारिटा स्त्री पात्रक नाटक। एकटा परदा या बॉक्स सेटपर मंचित होमए योग्यसँ लऽ कऽ पैघ-पैघ मंच धरिक नाटक। कोनो बान्ह-छेकि नहि। निर्देशककेँ पूर्ण स्वतंत्रता। छोट-छोट रसगर संवाद, संघर्ष आ उतार-चढ़ावक संभावनासँ युक्त। ने केतौ नमहर स्वागत ने नमहर संवाद। असंभव दृश्य, बाढ़ि, हाथी-घोड़ा, कार जीपक कोनो योजना नहि। संवादक द्वारा विभिन्न बरियाती या यात्राक कथासँ जिज्ञासा आ आद्यांत आकर्षण। कथामे चैता केर रमणीयता आ मर्यादा, तँए जोगीराक दिशाहीनता आ उद्दाम वेग नै भेटत। गंभीर साहित्य सर्वदा अपन समैक अन्न, खून पसेनाक गंधसँ युक्त होइत अछि। आ "झमेलिया बिआह" सेहो पावनि-तिहार, भनसा घरक फोड़न-छौंक, सोयरी, श्मशान आ पकमानक बहुवर्णी गंधसँ युक्त अछि, एकदम ओहिना जेना पाब्लो नेरूदा विभिन्न कोटिक गंधकेँ कवितामे खोजै छथिन।

'झमेलिया बिआह'क समाजिक आ सांस्कृतिक आधारपर कनेक विचार करू। ई ओइठामक नाटक अछि, जतए कर्मपर जनम, संयोग आ कालदेवताकेँ अंकुश छैक, जैठामक लोक मानै छथिन जे कखनो मुहसँ अवाच कथा नै निकाली। दुरभक्खो विषाइ छइ। समाजिक रूपेँ ओ वर्ग जेकर हँसी-खुशी माटिक तरमे तोपा गेल अछि। लैंगिक विचार हुनकर ई जे पुरुख आ स्त्रीगणक काज फुट-फुट अछि। आ विकासक उदाहरण ई कि जैठीम मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तैठीन साल भरि पथ-पानिक संग दबाइ खाएब पार लगत?

मुदा जगदीशजी केवल सातत्य आ निरंतरताक लेखक नै छथिन, परिवर्तनक छोट-छोट यतिपर अपन कैमरासँ फ्लैश दैत रहै छथिन। तँए यथास्थितिवाद लेल अभिशप्त होइतो यशोधर बुझै छथिन जे मनुक्खक मनुखता गुणमे छिपल छै नै कि रंगमे। आ सुशीला समाजिक स्थितिपर बिगड़ै छथिन कि विधाताकेँ चूक भेलैन जे मनुक्खोकेँ सींघ नाँगैर किए ने देलखिन। आ ई नाटक कालदेवताक ओइ खंडसँ जुड़ैए जतए पोता श्याम तेरह के थर्टिन आ तीन के थ्री कहै छथिन। ऐठाम अखबार आबै छै आ राजदेव देशभक्तिक परिभाषाकेँ विस्तृत बनेबा लेल कटिबद्ध छथिन। खेतमे पसीना चुबबैत खेतिहर, सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोनिहार, धारमे नाव खेबैत खेबनिहार सभ देश सेवा करैए, आ राजदेव सभकेँ देशभक्त मानै छथिन।

'झमेलिया बिआह'क झमेला जिनगीक स्वाभाविक रंग परिवर्तनसँ उद्भूत अछि, तँए जीवनक सामान्य गतिविधिक चित्रण चलि रहल अछि कथाकेँ बिना नीरस बनेने। नाटकक कथा विकास बिना कोनो बिहाड़िक आगू बढ़ैए, मुदा लेखकीय कौशल सामान्य

कथोपकथनकेँ विशिष्ट बनबैए। पहिल दृश्यमे पति-पत्नीक बातचितमे हास्यक संग समए देवताक क्रूरता सानल बुझाइत अछि। दोसर दृश्यमे झमेलिया अपन स्वाभाविक कैशोर्यसँ समैक द्वारा तोपल खुशीकेँ खुनबाक प्रयास करैए। पहिल दृश्यमे बेकती परिस्थितिकेँ समक्ष मूक बनल अछि, आ दोसर दृश्यमे बेकतीत्व आ समैक संघर्ष कथाकेँ आगू बढ़बैत कथा आ जिनगीकेँ दिशा निर्धारित करैए। तेसर दृश्य देशभक्ति आ विधवा विवाहक प्रश्नकेँ अर्थ विस्तार दैत अछि, आ ई नाटकक गतिसँ बेसी जिनगीकेँ गतिशील करबा लेल अनुप्राणित अछि ।

चारिम दृश्यमे राधेश्याम कहै छथिन जे कमसँ कम तीनक मिलानी अबस हेबाक चाही। आ, लेखक अत्यंत चुंबकीयतासँ नाटकीय कथामे ओइ जिज्ञासाकेँ समाविष्ट कऽ दइ छथिन कि पता नै मिलान भऽ पेतै आ कि नहि। ई जिज्ञासा बरियाती-सरियातीक मारि-पीट आ समाजक कुकुर-चालिसँ निरंतर बनल रहै छइ। आ पांचम दृश्यमे मिथिलाक ओ सनातन 'खोटिकरमा' पुराण। दहेज, बेटी, बिआह आ घटकक चक्रव्यूह! आ लेखकक कटुक्ति जे ने केवल मैथिल समाज बल्कि समकालीन बुद्धिजीवी आ आलोचना लेल सेहो अकाट्य अछि : केतए नै दलाली अछि। एक्के शब्दकेँ जगह-जगह बदैल-बदैल सभ अपन-अपन हाथ सुतारैए। आ घटकभायकेँ देखियनु। समैकेँ भागबा आ समैमे आगि लगबाक स्पष्ट दृश्य हुनके देखाइ छैन। अपन नीच चेष्टाकेँ छुपबैत बालगोविन्दकेँ एक छिट्टा असीरवाद दइ छथिन। बालगोविन्दकेँ जाइते हुनकर आस्तिकताक रूपांतरण ऐ बिन्दुपर होइत अछि-

> "भगवान बड़ीटा छथिन। जँ से नै रहितैथ तँ पहाड़क खोहमे रहैबला केना जिबैए। अजगरकेँ अहार केतए सँ अबै छइ।

> घास-पातमे फूल-फड़ केना लगै छै...।"

बातचितक क्रममे ओ बेर-बेर बुझबैक आ फरिछाबैक काज करै छैथ। मैथिल समाजक अगिलगओना। महत देबै तँ काजो कऽ देत नै तँ आगि लगा कऽ छोड़त!!!!!

छठम दृश्यमे बाबा आ पोतीक बातचित आ बरियाती जएबा आ नै जएबाक औचित्यपर मंथन। बाबा राजदेव निर्णय नै लऽ पाबै छथिन। बरियाती जएबाक अनिवार्यतापर ओ बिच-बिचहामे छथिन 'छैहो आ नहियोँ छइ। समाजमे दुनू चलै छइ। हमरे बिआहमे मामेटा बरियाती गेल रहैथ। 'मुदा खाए, पचबै आ दुइर होइक कोनो समुचित निदान नै भेटै छइ। बरियाती-सरियातीक बेवहार शास्त्र बनबैत राजदेव आ कृष्णानंद कथे-विहनिमे ओझरा कऽ रहि जाइ छैथ। दस बरिखक बच्चाकेँ श्राद्धमे रसगुल्ला मांगि-मांगि कऽ खाइबला हमर समाज बिआहमे किएक ने खाएत? तँए कामेसर भाय निसाँमे अढ़ाय-तीन सए रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ पचा गेलखिन आ रसगुल्लो सरबा एतए ओतए नै आँतेमे जा नुका रहल !!!

सातम दृश्य सभसँ नमहर अछि, मुदा बिआह पूर्व बरपक्ष आ कन्यागतक झीका-तीरी आ घटकभाय द्वारा बरियाती गमनक विभिन्न रसगर प्रसंगसँ नाटक बोझिल नै होइ छइ। आ घटक भायपर धियान देबै, पूरा नाटकमे सभसँ बेसी मुहावरा, लोकोक्ति, कहबैकाक प्रयोग वएह करै छथिन। मात्र सातमे दृश्यकेँ देखल जाए-

> "खरमास (बैसाख जेठ) मे आगि-छाइक डर रहै छइ।" (अनुभवक बहाने बात मनेनाइ)...।"
>
> "पुरुष नारीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होइए।" (सिद्धांतक तरे धियान मूलबिन्दुसँ हटेनाइ)...।

“आगूक विचार बढ़बैसँ पहिने एकबेर चाह-पान भऽ जाए।” (भोगी आ लालुप समाजक प्रतिनिधि)...।

“जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजकेँ कैये कऽ छोड़ै छी।” (गर्वोक्ति)...

“जिनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लगल।” (कथा कहबासँ पहिले धियान आकर्षित करबाक सफल प्रयास)...।

“खाइ पिबैक बेरो भऽ गेल आ देहो हाथ अकैड़ गेल...।”

“कुटुम नारायण तँ ठरलो खा कऽ पेट भरि लेताह मुदा हमरा तँ कोनो गंजन गृहणी नहियेँ रखती।”

(प्रकारांतरसँ अपन महत आ योगदान जनबैत ई ध्वनि जे हमरो कहू खाइले)

आठमो दृश्यमे बालगोविन्द, यशोधर, भागेसर, घटकभाय बिआह आ बरियातीकेँ बुझौएल के निदान करबा हेतु प्रयासरत् छैथ, आ लेखक घटकभायकेँ पूर्ण नांगट नै बनबै छथिन, मुदा ओकर मीठ-मीठ शब्दक निहितार्थकेँ नीक जकाँ खोलि दइ छथिन। ऐ दृश्यमे बाजल बात, मुहावरा, लोकोक्ति आ प्रसंग, उदाहरणक बले ओ अपन बात मनबाबए लेल कटिबद्ध छथिन। हुनकर कहबैकापर धियान दियौ-

“जमात करए करामात...।”

“जाबत बरतन ताबत बरतन...।”

“नै पान तँ पानक डन्टीए-सँ...।”

“सतरह घाटक सुआद...।”

“अनजान सुनजान महाकल्याण।”

मुदा घटकभायकेँ ऐ सुभाषितानिक की निहितार्थ? ई अर्थ पढ़बा लेल कोनो मेहनति करबाक जरूरी नहि। ओ राधेश्यामकेँ कहै छथिन ‘जखन बरियाती पहुंचैए तखन शर्बत ठंढा गरम, चाह-पान, सिगरेट-गुटका चलैए। तैपर सँ पतोरा बान्हल जलपान, तैपर सँ पलाउओ आ भातो, पुड़ियो आ कचौड़ियो, तैपर सँ रंग-बिरंगक तरकारियो आ अचारो, तैपर सँ मिठाइओ आ माछो-मासु, तैपर दहीओ, सकरौड़ियो आ पनीरो चलैए।

नाटकक नअम आ अंतिम दृश्य। बाबा राजदेव आ पोती सुनीताक वार्तालाप, आखिर ऐ वार्तालापक की औचित्य? जगदीशजी सन सिद्धहस्त लेखक जानै छथिन जे बीसम आ एकैसम सदीक मिथिला पुरुषहीन भऽ चुकल छैक। यात्रीजीक कवितापर विचार करैत कवयित्री अनामिका कहै छथिन ‘बिहारक बेसी कनियाँ विस्थापित पतिगणक कनियाँ छैथ। ‘सिंदूर तिलकित भाल’ ओइ ठाम सर्वदा चिंताक गहींर रेखाक पुंज रहल छैक।

...भूमण्डलीकरणक बादो ई स्थिति अछि जे मिथिला, तिरहुत, वैशाली, सारण आ चंपारण यानी गंगा पारक बिहारी गाम सभ तरहेँ पुरुष विहिन भऽ गेल छैक। ...सभ पिया परदेशी पिया छैथ। ओइठाम। गाममे बँचल छैथ। वृद्धा, परित्यक्ता आ किशोरी सभ। एहेन किशोरी, जेकर तुरत्ते-तुरत बिआह भेलै या फेर नै भेल होए, भेलै ऐ दुआरे नै जे दहेज लेल पैसा नै जुटल हेतैक। ‘बिआह आ दहेजक ऐ समस्याक बीच सुनीताकेँ देखल जाए। एक तरहेँ ओ लेखकक पूर्ण वैचारिक प्रतिनिधि अछि। यद्यपि कखनो-कखनो राजदेव, कृष्णानंद आ यशोधर सेहो लेखकक विचार बेक्त करै छथिन। सुनीता, सुशीला आ राजदेव मिथिलाक स्थायी आबादी, आ घटक भाइक बीच रहबा लेल अभिशप्त पीढ़ी। कृष्णान्द सन पढ़ल-लिखल युवकक स्थान

मिथिलाक गाममे कोनो खास नहि। आ लेखक बिना कोनो हो-हल्ला केने नाटकमे ऐ दुष्प्रवृत्तिकेँ राखि देने छैथ। जीवन आ नाटकक समानान्तरता ऐठाम समाप्त भऽ जाइ छै आ दूटा अर्द्धवृत्त अपन चालि स्वभावकें गमैत जुड़ि पूर्णवृत्त भऽ जाइत अछि।

रवि भूषण पाठक
करियन, समस्तीपुर।

पहिल दृश्य

(भागेसर, सुशीला)
(रोग सज्जापर सुशीला। दबाइ आ पानि नेने भागेसरक प्रवेश।)

भागेसर- केहेन मन लगैए?

सुशीला- की कहब। जखन ओछाइनेपर पड़ल छी तखन भगवानेक हाथ छैन। राजा-दैवक कोन ठेकान?

भागेसर- से की?

सुशीला- उठि कऽ ठाढ़ो भऽ सकै छी सुतलो रहि सकै छी।

भागेसर- एना किए बजै छी। कखनो मुहसँ अवाच् कथा नै निकाली। दुरभखो बिषाइ छइ।

सुशीला- (ठहाका दैत) बताह छी! अगर दुरभाखा पड़तै तँ सुभाखा किए ने पड़ै छइ? ई सभ मन पतियबैक बात

छी।

भागेसर- अच्छा पहिने गोटी खा लिअ।

सुशीला- एते दिनसँ दबाइ करै छी कहाँ एकोरत्ती मन नीक होइए?

भागेसर- बदैल कऽ डाक्टर साहैब गोटी देलैन। हुनका बुझबेमे फेड़ भऽ गेल छेलैन। फेर सभ बात बुझा कऽ कहलैन।
(गोटी खा पानि पीब पुन: सिरहौनीपर माथ रखैत।)

सुशीला- की सभ बुझा कऽ कहलैन?

भागेसर- कहलैन जे एक्के लक्षण-कर्मक केतेतो रंगक बिमारी होइए। बुझैमे दुविधा भऽ गेल तँए आइसँ दोसर बिमारीक दबाइ दइ छी।

सुशीला- (दर्दक आगमन होइत अछि। पँजरा पकैड़ने।) ओह! आब नहि बाँचब। पेट बड़ दुखाइए।

भागेसर- हाथ घुसकाउ ससाइर दइ छी।
(सुशीला हाथ घुसकबैत अछि आ भागेसर पेट ससारए लगैत अछि। कनीकालक पछाइत।)

सुशीला- हँ, हँ! कनी कऽ दर्द असान भेल। मन हल्लुक लगैए।

भागेसर- मनसँ सोग-पीड़ा हटाउ। रोगकेँ दबाइ छोड़ैत। भरिसक दबाइ आ रोगक भीड़ानी भेलै तँए दर्द उपकल।

सुशीला- भऽ सकैए। किएक तँ देखै छिऐ जे भूखल पेटमे छुच्छे पानि पीलासँ पेट ढकर-ढकर करए लगैए। भरिसक सएह होइए।

भागेसर- भगवानक दया हेतैन तँ सभ ठीक भऽ जाएत।

सुशीला- किए भगवानो लोके जकाँ विचारि कऽ काज करै छथिन?

भागेसर- अखन तक एतबो नै बुझै छिऐ।

सुशीला- हमरा मनमे सदिकाल चिन्ते किए बैसल रहैए। हमर खुशीकेँ केतए नुका कऽ रखि देने छथिन भगवान। आकि..?

भागेसर- 'आकि' कथी?

सुशीला- नइ, सएह कहलौं। कियो ठहाका मारि हँसैए आ हमरा सबहक हँसीए हराएल अछि।

भागेसर- हराएल केकरो ने अछि। माटिक तरमे तोपा गेल अछि।

सुशीला- ओ निकलत केना?

भागेसर- खुनि कऽ।

सुशीला- कथीसँ खुनबै?

भागेसर- से जँ बुझितौं तँ अहिना थाल-पानिमे जिनगी बितैत।

सुशीला- जखन अहाँ एतबो नै बुझै छिऐ तँ पुरुख कोन सपेतक भेलौं। अच्छा अइले मनमे दुख नहि करू। नीक-अधलाक बात-विचार दुनू परानी नै करब तँ आनक आशासँ काज चलत।

(मुड़ी डोलबैत जेना महसूस करैत, मुँह चिकुरियबैत।)

भागेसर- कहलौं तँ ओहन बात जे आइ धरि हराएले छेलए मुदा ई बुझब केना?

(भागेसरक मुहक ऐगला दाँत सोझहा आएल, जइसँ पत्नीक हँसी बुझि पड़लैन।)

सुशीला- अहाँक खुशी देख अपनो मन खुशिया गेल।

भागेसर- मन कहाँ खुशियाएल अछि।

सुशीला- तखन?

भागेसर- बतिसिया आब सठिया गेल अछि। वएह कलैप-कलैप आ कुहैर-कुहैर कुकुआ रहल अछि।

सुशीला- छोड़ू ऐ लट्टम-पट्टाकेँ। जेकरा पलखैत छै ओ करैत रहह। अपन दुख-सुखक गप करू।

भागेसर- केना दुख-सुखक गप अखन करब। मन पीड़ाएल अछि हो-ने-हो..?

सुशीला- की?

भागेसर- पीड़ाएले मन ताउसँ वौराइ छइ। पहिने देहक रोग भगाउ तखन निचेनसँ विचार करब।

सुशीला- बेस कहलौं। भिनसरेसँ झमेलियाकेँ नै देखलिऐ हेन?

भागेसर- बाल-बोध छै केतौ खेलाइत हएत। भूख लगतै अपने ने दौगल औत।

सुशीला- ऐ देहक कोनो ठेकान नहि, तहूमे बिमारी ओछाइन धरौने अछि। जीता जिनगी पुतोहु देखा दिअ?

भागेसर- मन तँ अपनो तीन सालसँ होइए जे बेटा-बेटीक करजासँ उरीन रहब तखन जे मरियो जाएब तँ उरीन मनकेँ मुक्ति भेटत।

सुशीला- सएह मनमे उपकल जे बेटीक बिआह कैये नेने छी। जँ परानो छुटि जाएत तँ बिनु बरो-बरियातीक लहछु करा अंगबला अंग लगा लेत। मुदा..?

भागेसर- मुदा की?

सुशीला- यएह जे झमेलियोक बिआह कैये लइतौं।

भागेसर- अखन तँ लगनो-पाती नहियेँ अछि। समए अबै छै, बुझल जेतइ।

(झमेलियाक प्रवेश।)

झमेलिया- माए, माए मन नीक भेलौं किने?

सुशीला- बौआ, लाखो रोग मनसँ मेटा जाइए, जखने तोरा देखै छिअ। भिनसरेसँ नै देखलिय, केतए गेल छेलह?

झमेलिया- स्कूलक फीलपर एकटा गुनी आएल छेलइ। बहुत रास किदैन-कहाँ सभ झोरामे रखने छेलइ। डमरूओ बजबै छेलै आ गाबि-गाबि कहबो करै छेलइ।

सुशीला- की गबै छेलइ?

झमेलिया- लाख दुखक एक दबाइ! पाँचे रूपैआ दामो छेलइ।

सुशीला- एकटा किए ने नेने एलह?

झमेलिया- हमरा पाइ छेलए?

सुशीला- केमहर गेलइ?

झमेलिया- मारन बाध दिसक रस्ता पकैड़ चलि गेल।

सुशीला- बौआक बिआह कऽ दियौ?

(बिआहक नाओं सुनि झमेलियाक मुहसँ खुशी निकलैत।)

भागेसर- बियाहैयो जोकर तँ भाइये गेल अछि। कहुना-कहुना तँ बारहम बर्ख पार कऽ गेल हएत।

सुशीला- बड़का भुमकमकेँ केते दिन भेल? ओही बेर ने जनमल।

भागेसर- सेहो कि नीक जकाँ साल थोड़े जोड़ल अछि। मुदा अपना झमेलियासँ छोट-छोट सभकेँ बिआह भेलै, तँ झमेलियो भाइए गेल किने?

ꣳ

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 695

दोसर दृश्य

(सुरूज डुमैक समए। बाढ़नि लऽ झमेलिया आँगन बाहरए लगैत। सुशीला आबि बाढ़नि छिनैत।)

सुशीला- जाबे जिबै छी ताबे तोरा केना आँगन-घर बहारए दियौ।

झमेलिया- किए, केकरो अनकर छिऐ? अपन घर-आँगन बहारब कोनो पाप छी।

सुशीला- धरम आ पाप नै बुझै छी। मुदा एते तँ जरूर बुझै छी जे भगवानेक बाँटल काज छिऐन ने। पुरुख आ स्त्रीगणक काज फुट-फुट अछि।

झमेलिया- राजा-दैवक काज ऐसँ फुट अछि। सभ दिन कहाँ बहारए अबै छेलौं। अखन तूँ दुखित छेँ, जखन नीक भऽ जेमे तखन ने तोहर काज हेतौ।

सुशीला- सएह बुझै छिही, ई नै बुझै छिही जे काजे पुरुख-स्त्रीगणक अन्तर कऽ ठाढ़ रखने अछि। भलेँ बेटा छिऐ एहेन-एहेन बेरमे तूँ नै देखमे तँ दोसर केकर आशा। मुदा..?

झमेलिया- मुदा की?

सुशीला- यएह जे माए-बाप बेटा-बेटीक पहिल गुरु होइ छइ। हिनके सिखैलासँ बेटा-बेटी अपन जिनगीक रस्ता धड़ैए।
(माएक मुँह झमेलिया ओहिना देखैए जहिना रोगसँ ग्रसित गाए अपन दूधमुहाँ बच्चा देख हुकड़ैए। तहिना हाथक बाढ़नि निच्चाँ मुहें केने सुशीला आँखि झमेलियाक चेहरापर रखि जेना पढ़ि रहल हुअए जे ऐ कुल-खनदान आ परिवारक संग माएओ बापक तँ यएह माटिक काँच दियारी छी जे अबैत दोसर दियारीकेँ नेसि टिमटिमाइत रहत। तखने भागेसर आ यशोधरक प्रवेश।)

भागेसर- (झमेलियासँ) बौआ साँझ पड़ल जाइ छै, दुआर-दरबज्जाक काज देखहक।

झमेलिया- दरबज्जा बहारि आँगन बहारए एलौं कि माए बाढ़नि छीन लेलक।
(बिना किछु बजने भागेसर नीक-अधलाक विचार करए लगल।)
(कनीकालक पछाइत।)

भागेसर- (पत्नीसँ) मन केहेन अछि?

सुशीला- अहूँ बुझिते छी आ अपनो बुझिते छी जे साल भरि दबाइ खाइले डाक्टर साहैब कहलैन से निमहत। जैठीम मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तैठीन साल भरि पथ-पानिक संग दबाइ खाएब पार लगत?
(बहिनक बात सुनि यशोधरकेँ देह पसीज गेल। चाइनिक पसीना पोछैत।)

यशोधर- बहिन, भगवानो आ कानूनो ऐ परिवारक जवाबदेह बनौने छैथ। जाबे जिबै छी ताबे एहेन बात किए बजै छह?

सुशीला- भैया, अहाँ किए..? खाएर छोड़ू काजक की भेल?

यशोधर- बहिन, मने-मन हँसीओ लगैए आ मनो कचोटैए। मुदा..?

सुशीला- मुदा की?

यशोधर- (मुस्की दैत) पनरह दिनमे पएरक तरबा खीया गेल मुदा काजक गोरा नै बैसल। एकटा लड़कीक भाँज नवानीमे लगल। गेलौं। दरबज्जापर पहुँच घरवारीकेँ अवाज दैते

आँगनसँ निकलला।
(बिच्चेमे भागेसर मुस्की देलैन।)

सुशीला- कथो-कुटुमैतीकेँ हँसीएमे उड़ा दइ छऐ?

यशोधर- हँसीबला काजे भेल। तँए हँसी लगलैन।

सुशीला- की हँसीबला काज भेल?

यशोधर- दरबज्जापर बैस गप चलेलौं कि जहिना हवाक सिहकीमे पाकल आम भड़भड़ा जाइत तहिना स्त्रीगण सभ आबए लगली।

सुशीला- स्त्रीगणे आबए लगली आ पुरुख नै?
यशोधर- स्त्रीगण बेसी पुरुख कम। एकटा स्त्री बिच्चेमे टपकि गेली।

सुशीला- की टपकली?

यशोधर- (मुस्की दैत) हँसीओ लगैए आ छगुन्तो लगैए। बजली जे बर पेदार अछि कि जे आनठाम कन्यागत जाइ छैथ आ अहाँ..? सुनिते मनमे नेसि देलक। उठि कऽ विदा भऽ गेलौं।

सुशीला- स्त्रीगणेक बात सुनि अगुता गेलौं। परिवारमे बेटा-बेटीक बिआह पैघ काज छिऐ पैघ काजक रस्तामे छोट-छोट हुच्ची-फुच्चीपर नजैर नै देबाक चाहिऐ।

यशोधर- एतबे टा नै ने, गामो नीक नै बुझि पड़ल। आमक गाछीसँ बेसी तरबोनी खजुर बोनी। एहेन गामक स्त्रीगण तँ भरि दिन नहाइए आ झुटकेसँ पएरे-मजैमे बीता देत। तखन घर-आश्रमक काज केना हएत। सोझहे उठि कऽ रस्ता धेलौं।

सुशीला- आगू केतए गेलौं?

यशोधर- ननौर। गाम तँ नीक बुझाएल। मुदा राजस्थाने जकाँ पानिक दशा। खाएर कोनो कि बेटीक बिआह करब। बेटाक करब। बैसिते गप-सप्प चलल। घरवारी कुल-गोत्र पुछलैन। कहलयैन। सोझहे सुहरदे मुहें कहलैन, कुटुमैती नै हएत।

सुशीला- किए, से नै पुछलयैन?
यशोधर- की पुछितिऐन। उठि कऽ विदा भेलौं।

सुशीला- भैया, दिन-दुनियाँ एहने अछि। केते दिन छी आ कि नै छी। मन लगले रहि जाएत।

यशोधर- कोनो कि बेटीक अकाल पड़ि गेल जे भागिनक बिआह नै हएत।

सुशीला- डाक्टर साहैब ऐठाम केते गोटे पेटक बच्चा जँचबए आएल रहए।

यशोधर- ओ सभ बिआहक दुआरे खुरछाँही कटैए। मुदा..?

सुशीला- मुदा की?

यशोधर- माएओ-बापक सराध छोड़ि देत? बिआहसँ की हल्लुक काज सराधक छइ?

सुशीला- ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मत्थापर हाथ दइ छइ। ई तँ बुझै छी जे, 'गाए मारि कऽ जूत्ता दान' करैए। मुदा बुझनहि की हएत? आगूओ बढ़लौं।

यशोधर- छोड़ि केना देब। तेसर ठाम गेलौं तँ पुछलैन जे लड़का गोर अछि कि कारी?

सुशीला- किए एहेन बात पुछलैन?

यशोधर- लोकक माथमे भुस्सा भरि गेल छइ। एतबो बुझैले तैयार नै जे मनुक्खक मनुखता गुणमे छिपल छै नै कि रंगमे।

सुशीला- (निराश मने) की झमेलिया ओहिना रहि जाएत। सृष्टि ठमकि जाएत?

यशोधर- अखन लगन जोर नै केलकै हेन, तँए। जहिया संयोग आबि जेतै तहिया सभ ओहिना मुँह तकैत रहत आ बिआह भऽ जेतइ।

सुशीला- भैया, दिन-राति एहने अछि। कखन छी कखन नै छी।

यशोधर- बहिन, अइले मनमे दुख करैक काज नै । जखन काजमे भीड़ गेलौं तँ कैये कऽ अन्त करब। ओना एकटा लगलगाउ बुझि पड़ल।

सुशीला- की लगलगाउ?

यशोधर- ओ कहलैन जे अहूठामक परिवारक काज देख लियौ आ ओहूठामक देख कऽ, काज सम्हारि लेब।

भागेसर- ई काज हेबे करत। अपनो ब्रह्म कहैए जे एक रंगाह परिवार (एक बेवसायसँ जुड़ल)मे कुटुमैती भेने परिवारमे हड़हड़-खटखट कम हएत?

सुशीला- (मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ हएत। मुदा विधाताकेँ चूक भेलैन जे मनुक्खोकेँ सींघ-नाँगैर किए ने देलखिन।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 793

तेसर दृश्य

(राजदेवक घर। पोता श्यामकेँ पढ़बैत।)

राजदेव- बौआ, स्कूलमे केते शिक्षक छैथ?

श्याम- थर्टिन गोटे।

राजदेव- ऐ बेर कोनमे जाएब?

श्याम- थ्रीमे।
(हाथमे अखवार नेने कृष्णानन्दक प्रवेश।)

कृष्णानन्द- कक्का, एकटा दुखद समाचार अपनो गामक अछि?

राजदेव- (जिज्ञासासँ) से की, से की?

कृष्णानन्द- (अखवार उनटबैत। आँगुरसँ देखबैत।) देखियौ। चिन्है छिऐ एकरा?

राजदेव- (दुनू आँखि तरहथ्थीसँ पोछि गौरसँ देखए लगैत।) ई तँ

चिन्हरबे जकाँ बुझि पड़ैए। कनी गौरसँ देखए दाए हाथमे तानल बन्दूक जकाँ बुझि पड़ैए।

कृष्णानन्द- हँ, हँ कक्का, पुरानो आँखि अछि तैयो चिन्ह गेलिऐ।

राजदेव- कनी औरो नीक जकाँ देखए दाए। गामक तँ एक्के गोटे सीमा चौकीपर रहैए। ब्रह्मदेव।

कृष्णानन्द- (दुनू आँखिक नोर पोछैत।) हँ, हँ कक्का। हुनके छातीमे गोली लगलैन। मुँह देखै छिऐ खुगल। देश भक्तिक नारा लगा रहला हेन।

राजदेव- (तिलमिलाइत।) बौआ, तोरे संगे ने पढ़ै छेलह।

कृष्णानन्द- संगीए छला। अपना क्लासमे सभ दिन फस्ट करै छला। हाइए स्कूलसँ मनमे रोपि नेने छला जे देश भक्त बनब। से निमाहियो लेलैन।

राजदेव- बौआ, देश भक्तक अर्थ संकीर्ण दायरामे नै बिस्तृत दयरामे छइ। ओना अपन-अपन पसन आ अपन-अपन विचार सभकेँ छइ।

कृष्णानन्द- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

राजदेव- देखहक, खेतमे पसीना चुबबैत खेतिहर, सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोनिहार, धारमे नाओ खेबैत खेबनिहार सभ देश सेवा करैए, तँए देशभक्त भेला।

कृष्णानन्द- (नमहर साँस छोड़ैत।) अखन धरि से नै बुझै छेलिऐ।

राजदेव- नहियों बुझैक कारण अछि। ओना देशक सीमाक रक्षा बाहरी दुश्मनसँ (आन देशक) रक्षा लेल होइए। मुदा जँ मनुखमे एक-दोसराक संग प्रेम जगत तँ ओहुना रक्छा भऽ सकैए। मुदा से नै अछि।

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत।) हँ से तँ नहियेँ अछि।

राजदेव- मुदा देशक भीतरो कम दुश्मन नै अछि। एहेन-एहेन रूप बना मुँह-दुबर लोकक संग कम अत्याचार केनिहारोक कमी नै अछि।

कृष्णानन्द- से केना?

राजदेव- देखते छहक जे जइ देशमे खाइ बेतरे लोक मरैए, घर दबाइ, पढ़ै-लिखैक तँ बात छोड़ह। तइ देशमे ढोल पीटनिहार देश सेवक सभ अपन सम्पति चोरा-चोरा आन देशमे रखने अछि ओकरा की बुझै छहक?

कृष्णानन्द- हँ, से तँ ठीके कहै छी।

राजदेव- केहेन नाटक ठाढ़ केने अछि से देखै छहक। आजुक समैमे सभसँ पैघ आ सभसँ बिकराल समस्या देशक सोझा ई अछि जे सभकेँ जिबै आ आगू बढ़ैक समान अवसर भेटै।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ जरूरीए अछि।

राजदेव- एक्के दिस एहेन बात नै ने अछि?

कृष्णानन्द- तब?

राजदेव- समाजोमे अछि। कनी गौर कऽ कऽ देखहक। पछिले साल ने ब्रहमदेवक बिआह भेल छेलइ?

कृष्णानन्द- हँ। बरियातीओ गेल रही। बड़ आदर-सत्कार भेल रहए।

राजदेव- एक्कोटा सन्तान तँ नै भेलैक अछि।

कृष्णानन्द- नहि। हमरा बुझने तँ भरिसक दुनू परानीक भेँटो-घाँट तेना भऽ कऽ नै भेल हेतइ। किए तँ गाम अबिते खबड़ि

भेलै जे सीमापर उपद्रव बढ़ि गेल, तँए सबहक छुट्टी केन्सिल भऽ गेल। वेचारा बिआहक भोरे बोरिया-बिस्तर समेट दौगल।

राजदेव- अखन तँ नव-धब घटना छै तँए जहाँ-तहाँ बाह-बाही हेतइ। मुदा प्रश्न बाह-बाहीक नै प्रश्न जिनगीक अछि। बेटाक सोग माए-बापकेँ आ पतिक दुख स्त्रीकेँ नै हेतै?

कृष्णानन्द- हेबे करतै।

राजदेव- एना किए कहै छह जे हेबे करतै। जहिना एक दिस मनुख कल्याणक धरम हेतै तहिना दोसर दिस माए-बाप अछैत बेटाक मृत्युक दोष, समाज सेहो देतैन।

कृष्णानन्द- (गुम होइत मुड़ी डोलबए लगैत।)

राजदेव- चुप भेने नै हेतह। समस्याकेँ बुझए पड़तह। जे समाजमे केना समस्या ठाढ़ कएल जाइए। तोंही कहह जे ओइ दूध-मुहाँ बच्चियाक कोन दोख भेलइ।

कृष्णानन्द- से तँ कोनो नै भेलइ।

राजदेव- समाज ओकरा कोन नजरिये देखत?

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत।) हूँ-अ-अ।

राजदेव- हुँहकारी भरने नै हेतह। भारी बखेरा समाज ठाढ़ केने अछि। ओइ, बच्चियाक भविस देखनिहार कियो नै अछि, मुदा..?

कृष्णानन्द- मुदा की?

राजदेव- यएह जे, एक दिस कलंकक मोटरीसँ लादि देत तँ दोसर दिस जीनाइ कठिन कऽ देत।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ करबे करत।

राजदेव- तोहीं कहह, एहेन समाजमे लोकक इज्जत-आवरू केना बँचत?

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत। नमहर साँस छोड़ि।) समस्या तँ भारी अछि।

राजदेव- नै, कोनो भारी नै अछि। समाजिक ढर्ड़केँ बदलए पड़त। विघटनकारी सोच आ काजकेँ रोकि कल्याणकारी सोच आ काज करए पड़त। तखने हँसैत-खेलैत जिनगी आ मातृभूमिकेँ देखत।

कृष्णानन्द- (मुस्की दैत।) संभव अछि।

राजदेव- ई काज केकर छिऐ?

कृष्णानन्द- हँ, से तँ अपने सबहक छी।

राजदेव- हँ। ऐ दिशामे एक-एक आदमीकेँ डेग बढ़बैक जरूरत अछि।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 663

चारिम दृश्य

(भागेसर दरबज्जा सजबैत। बहाड़ि-सोहाड़ि चारिटा कुरसी लगौलक। कुरसी सजा भागेसर चारूकात निहारि-निहारि गौर करैत। तहीकाल बालगोविन्द आ राधेश्यामक प्रवेश।)

भागेसर- आउ, आउ। कहूँ कुशल?

(कुरसीपर तीनू गोटे बैसैत।)

बालगोविन्द- (राधेश्यामसँ।) बौआ, बेटी हमर छी, बहिन तँ तोरे छिअह। अखन समए अछि तँए..?

भागेसर- अपने दुनू बापूत गप-सप्प करू।
(कहि, उठि कऽ भीतर जाइत।)

राधेश्याम- अहाँक परोछ भेने ने...। जाबे अहाँ छिऐ, ताबे हम...।

भागेसर- नै, नहि। परिवारमे सभकेँ अपन-अपन मनोरथ होइ छइ। चाहे छोट भाए वा बेटाक बिआह होउ आकि बेटी- बहिनक होउ।

राधेश्याम- हँ, से तँ होइते अछि। मुदा अहाँ अछैत जेते भार अहाँपर अछि ओते थोड़े अछि। तखन तँ बहिन छी, परिवारक काज छी, कोनो तरहक गड़बड़ भेने बदनामी तँ परिवारेक हएत।

बालगोविन्द- जाधरि अंजल नै केलौं हेन ताधरि दरबज्जा खुगल अछि। मुदा से भेलापर बान्ह पड़ि जाइए। तँए..?

राधेश्याम- हम तँ परदेश खटै छी। शहरक बेवहार दोसर रंगक अछि। गामक की बेवहार अछि से नीक जकाँ थोड़े बुझै छी। मुदा तैयो..?

बालगोविन्द- मुदा तैयो की?

राधेश्याम- ओना तँ बहुत मिलानीक प्रश्न अछि मुदा किछु एहेन अछि जेकर हएब आवश्यक अछि?

बालगोविन्द- आब की तहूँ बाल बोध छह, जे नै बुझबहक। मनमे जे छह से बाजह। मन जँचत कुटुमैती करब नै जँचत नै करब। यएह तँ गुण अछि जे अल्पसंख्यक नै छी।

राधेश्याम- की अल्पसंख्यक?

बालगोविन्द- जइ जातिक संख्या कम छै ओकरा संगे बहुत रंगक

बिहंगरा ठाढ़ होइए। मुदा जइ काजे एलौं हेन तेकरा आगू बढ़ाबह। की कहलहक?

राधेश्याम- कहलौं यएह जे कमसँ कम तीनक मिलानी अवस होइ। पहिल गामक दोसर परिवारक आ तेसर लड़का-लड़कीक।

बालगोविन्द- जँ तीनूक नै होइ?

राधेश्याम- तँ दुइओक।

बालगोविन्द- जेहने अपन परिवारक बेवहार छह तेहने अहू परिवारक अछि। गामो एकरंगाहे बुझि पड़ैए। लड़का-लड़की सोझहेमे छह।

राधेश्याम- तखन किए काज रोकब?

(जगमे पानि आ गिलास नेने भागेसर आबि, टेबुलपर गिलास रखि पानि आगू बढ़बैत। गिलास हाथमे लऽ।)

बालगोविन्द- नीक होइत जे पहिने काजक गप अगुआ लेतौं।

भागेसर- अखन धरि अहूँ पुरने विध-बेवहारमे लटकल छी। कुटुमैती हुअए वा नै मुदा दरबज्जापर आबि जँ पानि नै पीब, ई केहेन हएत?

(पानि पिबैत। तहीकाल झमेलिया चाह नेने अबैत। पानि पिआ दुनू गोटेकेँ चाहक कप दैत भागेसर अपनो कुरसीपर बैस चाह पीबए लगैत।)

बालगोविन्द- समए तेहेन दुरकाल भऽ गेल जे आब कथा-कुटुमैतीमे केतौ लज्जति नै रहैए। बेसीसँ बेसी चारि-आना कुटुमैती, कुटुमैती जकाँ होइए। बारह आनामे झगड़े-झंझटि होइए।

भागेसर- हँ, से तँ देखते छी। मुदा हवा-बिहाड़िमे अपन जान नै बँचाएब तँ उड़ि कऽ केतए-सँ केतए चलि जाएब, तेकर ठेकान रहत।

बालगोविन्द- पछिला लगनक एकटा बात कहै छी। हमरे गामक छी। कुल-खनदान तँ दबे छैन मुदा पढ़ि-लिख परिवार एते उन्नति केने अछि जे इलाकामे कियो कहबै छैथ।

भागेसर- वाह।

बालगोविन्द- लड़को-लड़की ऊपरे-ऊपरी। कमसँ कम पचास लाखक बियाहो भेल छेलइ। मुदा खाइ-पिबै बेरमे तेते मारि-पीट भेल जे दुनूकेँ मन रहतैन।

भागेसर- मारि किए भेल?

बालगोविन्द- पुछलयैन ते कहलैन जे बिआह-दानमे कोनो रसे नै रहि गेल अछि। बरियाती सदिकाल लड़कीबलाकेँ निच्चाँ देखबए चाहैत तँ सरियाती बरियातीकेँ। अही बीचमे रंग-बिरंगक बखेरा ठाढ़ कऽ मारि-पीट होइए।

भागेसर- एहेन बरियातीमे जाएबो नीक नहि।

बालगोविन्द- सज्जन लोक सभ छोड़ि देलैन। मुदा तैयो की बरियाती कम जाइए। तेते ने गाड़ी-सबारी भऽ गेल जे हुहुऔने फिरैए।

भागेसर- खाएर, छोड़ू दुनियाँ-जहानक बात। अपन गप करू।

बालगोविन्द- हमरेसँ पुछै छी। कन्यागत तँ सदति चाहै छैथ जे एकटा ऋृण उतारैमे दोसर ऋृण ने चढ़ि जाए। अपने लड़काबला छिऐ। केना दुनू परिवारक कल्याण हएत, से तँ..?

भागेसर- दुनियाँ केम्हरो गुड़ैक जाउ। मुदा अपनोले तँ किछु करब। आइ जँ बेटा बेच लेब तँ मुइलापर आगि के देत। बेचलाहा बेटासँ पैठ हएत।

बालगोविन्द- कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा समाजक जे कुकुर-चालि छै से मानता दुनू परिवार मिलि-जुलि काज ससाइर लेब। मुदा नढ़िया जकाँ जे भूकत तेकर की करबै?

भागेसर- हँ से तँ ठीके, पैछलो नीक चलैन आ अखुनको नीक चलैन अपनाए कऽ अधला चलैन छोड़ि देब। किए कियो भूकत। जँ भूकबो करत तँ अपन मुँह दुखौत।
(बरक रूपमे झमेलियाक प्रवेश...)

बालगोविन्द- बेटा-बेटीक बिआहमे समाजक पाँचो गोटे तँ रहैक चाहिऐ ने?

भागेसर- भने मन पाड़ि देलौं। घरे-अँगना आ दुआरे-दरबज्जापर तेते काज बढ़ि गेल जे समाज दिस नजरिये ने गेल।

बालगोविन्द- आबे की भेल, बजा लियनु। समाजकेँ तँ लड़का देखले छैन, हमहूँ दुनू बापूत देखिए लेलौं।

भागेसर- केहेन लड़का अछि?

बालगोविन्द- एते काल बटोही छेलौं तँए बटोहिक सम्बन्ध छल। मुदा आब सम्बन्ध जोड़ैक विध शुरू भऽ गेल तँए सम्बन्धी भेल जा रहल छी।

भागेसर- की कहूँ बालगोविन्दबाबू, जिनगीए तेते रिया-खिया गेल

अछि जे बेलक बेली जकाँ बनि गेल छी।

बालगोविन्द- (ठहाका मारि) समैध एक भग्गू कहलिऐ। छोटोसँ पैघ बनैए आ पैघोसँ छोट बनैए। छोट-छोट किड़ी-मकौरी समैक संग ससरैत-ससरैत नमहर बनि जाइए। तहिना कलकतिया आकि फैजली आम सरही होइत-होइत तेहेन भऽ जाइए जे बिसवासे ने हएत जे ई फैजली बंशक बड़वड़िया बीजू छी।

भागेसर- बालगोविन्दबाबू, गप-सप्प चलिते रहत समाजोकेँ बजा लइ छिऐन। (समाज दिस नजैर दौड़बैत भागेसर आँगुरपर हिसाब जोड़ैत...) ओह फल्लां दोगला अछि। (पुन: आँगुरपर जोड़ि) ओह फल्लाँ तँ दुष्ट छी दुष्ट। फल्लाँ पक्का दलाल छी। साला बेटी बिआहक बात बना रोजगार खोलने अछि। परिवारक बीच जाति होइए आकि समाजक बीच। जेकर विचार नीक रस्ते चलए ओ किए ने समाज बनाबए।

बालगोविन्द- समैध, किए अँटैक गेलौं?

भागेसर- बालगोविन्दबाबू, लोक तँ समाजेमे रहि समाजक संग चलत मुदा बिआह सन पारिवारिक यज्ञमे जँ समाजक लोक धोखा दइ तखन?

बालगोविन्द- समैध कहलौं तँ बेस बात, मुदा जहिना ई समाज अछि तहिना हमरो अछि। ठीके कहलौं जे बिआह सन काज जइसँ समाजक एक अलंग ठाढ़ होइत तइमे उचक्का सबहक उचकपन्नी औरो सुतरैए। बर-कनियाँक देखा-सुनीसँ लऽ कऽ सिनुरदान धरि किछु ने किछु बिगाड़ैक कोशिश करबे करैए।

भागेसर- एकटा बात मन पड़ि गेल। भाए-बहिनक बीचक कहै छी। (भागेसरक बात सुनि राधेश्याम चौंक गेल...)

राधेश्याम- की कहलखिन भाए-बहिन।

भागेसर- बाउ, अहाँक तँ बहिन छी। भाए-बहिनक बीच बरबैरिक जिनगी हेबाक चाही से तेहेन- तेहेन वंशक बतौर सभ जनम लेने जाइऐ जे..?

राधेश्याम- की जे?

भागेसर- अपन पड़ोसीक कहै छी। सौ-बीघाक परिवारमे पाँच भाए-बहिनक भैयारी। बीस बीघा माथपर भेल। बहिन सभसँ छोट। सौ बीघा स्तरक लड़कीकेँ दू बीघाबला परिवारमे भाए सभ बिआहि देलक।

राधेश्याम- पिता नै बुझलखिन?

भागेसर- सएह ने कहै छी। पिता जँ पुत्रपर बिसवास नै करैथ तँ किनकापर करैथ। तेते चढ़ा-उतरी चारू बेटा कहलकैन जे पिता अपन भारे सुमझा देलखिन। बेटा सभ केहेन बेइमान जे बहिनक कोढ़-करेज काटि अपन कनतोरी सजबए लगल।

राधेश्याम- पछाइतो पिता नै बुझलखिन?

भागेसर- बुझिए कऽ की करितथिन? मुइने एला वैद तँ किदनकेँ कऽ जेता।

राधेश्याम- बड़ अन्याय भेल!

भागेसर- अन्याय की भेल अन्याय जकाँ। ओही सोगे माए जे ओछाइन धेलखिन से धेनेहि रहि गेलखिन। पितो बौरा कऽ वृन्दावन चलि गेलखिन।

राधेश्याम- बाबू, जहिना माए-बापक बेटी- छिऐन तहिना बहिन हमरो छी। ओना खाइ-पिबै आ लत्ता-कपड़ाक दुख अखन धरि नहियेँ भेलै, मुदा आगूक तँ नै कहि सकै

छिऐन। दिन-राति माएक संग काज उदममे रहैए। माएक समकश तँ नै भेल मुदा दू-चारि सालमे भाइये जाएत। सभ सीख-लिख माएक छइ।

भागेसर- अहाँ केतए रहै छिऐ?

राधेश्याम- ओना बाहरे रहै छी। मुदा आन बहरबैया जकाँ नै जे गाम-घर, सर-समाज छोड़ि देलौं। जे कमाइ छी परिवारमे दइ छिऐ।

बालगोविन्द- समैध अबेर भऽ जाएत। कम-सँ-कम पाँचटा बच्चोकेँ शोर पाड़ियौ। अदौसँ अपना ऐठामक चलैन अछि। (गुरुकुलक अध्ययन समाजक काजक अनुकूल होएत)
(दरबज्जेपर सँ भागेसर बच्चा सभकेँ शोर पाड़लखिन...)
(पाँच-सातटा बच्चा अबैए...)

एकटा बच्चा-झमेलिया भैयाक बिआह हेतै कक्का?

भागेसर- हँ।

बच्चा- बरियाती हमहूँ जेबे करब।

भागेसर- तोरो लऽ जाए पड़तौ।

बच्चा- लऽ जाएब।

◌

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1184

पाँचम दृश्य

(बालगोविन्दक घर। पत्नी दायरानीक संग बालगोविन्द बैसल...)

बालगोविन्द- ओना जे बात भेल तइसँ कुटुमैती हेबे करत। मुदा समए-साल तेहेन भऽ गेल जे बिआहो मड़बासँ लड़का रुसि-फुलि कऽ चलि जाइए।

दायरानी- हँ, से तँ होइए। मुदा जहिना कुत्ता-बिलाइकेँ धिया-पुता खेनाइ देखा फूसला कऽ लऽ अनैए तहिना मनुखो फूसलबैक ने..?

बालगोविन्द- नै बुझलौं। कनी फड़िछा दियौ।

दायरानी- कोन काज सिरपर अछि आ कोन काज लदऽ चाहै छी। जखने सिरपड़क काज छोड़ि दोसर काजमे लागब तखने घुरछी लागए लगत। जखने घुरछी लगत तखने काज ओझरा-पोझरा जाएत।

बालगोविन्द- तखन?

दायरानी- जेतेटा आ जेहेन काज रहए ओइ हिसाबसँ काज सम्हारि ली। अखन बिआहक काज अछि तँए घटक भायकेँ बजा सभ गप कहि दियनु।

बालगोविन्द- अपनो विचार छल भने अहूँ कहलौं।

दायरानी- युग-जमाना अकानि कऽ चलैक चाही। जँ से नै करब तँ पाओल जाएब।

बालगोविन्द- कहलौं तँ बेस बात मुदा एहनो तँ होइ छै जे गाममे जखन चोर चोरी करए अबैए तखन ठेकयौने रहैए कतौ आ अपनेसँ हल्ला दोसर दिस करैए। लोक ओमहर गेल आ खाली पाबि चोर ठेकिएलहा घरमे चोरी कऽ लइए।

दायरानी- हँ, से तँ होइए। मुदा बेसी पिंगिल पढ़ने तँ काजो पछुआइए जाइए। तँए ओते अगर-मगर नै करू। एतबो नै आँखि अछि जे देखबै।

बालगोविन्द- कि देखबै?

दायरानी- बिना घटके केकर बिआह होइ छइ। समाजमे जखन सभ करैए तखन अपनो नै करब तँ ओहो एकटा

खोंटिकरमे हएत किने।

बालगोविन्द- की खोटिकरमा?

दायरानी- अनेरे लोक की-कहाँ बाजत। तहूमे जेकर जीविका छिऐ ओ अपन मुँह किए चुप राखत। छोड़ू ऐ-सभ गपकेँ। जाउ अखने घटक भायकेँ हाथ जोड़ि कहबैन जे बेटी तँ समाजक होइ छै, कोनो तरहेँ समाजक काज पार लगाउ।

बालगोविन्द- (बुदबुदाइत) केतए नै दलाली अछि। एक्के शब्दकेँ जगह-जगह बदैल-बदैल सभ अपन-अपन हाथ सुतारैए। तखन तँ गरा ढोल पड़ल अछि, बजबै पड़त।

दायरानी- बजैत दुख होइए। अगर जँ लोक अपनो दिन-दुनियाँक बात बुझि जाए तैयौ बहुत हेतइ। खाएर, देरी नै करू, बेरू पहर ओ सभ औता, अखुनका कहल नीक रहत। तँए अखने कहि अबियौन।
(घटक भाइक दलानपर बैस जोर-जोरसँ पत्नीकेँ कहै छैथ। आँगनसँ पत्नी सुनति छैथ..।)

घटक भाय- समए केतए-सँ-केतए भागि गेल आ डारिक बिढ़नी छत्ता जकाँ समाज ओतै-के-ओतै लटकल अछि। आब

ओ जुग-जमाना अछि जे बोही-खाता लऽ बैसल रहू आ आमदनी केतएतँ सवा रूपैआ। बाप रे, समैमे आगि लागि गेल।

पत्नी- (अँगनेसँ) ओहिना डिरियाएब। रखने ने रहू बेटाकेँ चूड़ा-दही खाइले। जेकर बेटा कमासुत छै ओकरा देखै छिऐ जे केतए-सँ-केतए आगू चलि गेल। सपनौँ सपनाएल रही जे बड़दक संगे भरि दिन बहैबलाक बेटा ट्रेक्टरक ड्राइवरी करतै। दू-सेरक जगह दू हजारक परिवार बना लेतै।

(बालगोविन्दकेँ देख घटक भाय दमैस कऽ खखास करैत। घटक भाइक खखास सुनि पत्नी बुझि गेलखिन। अपन बातकेँ ओतै रोकि देलैन।)

बालगोविन्द- गोड़ लगै छी भाय।

घटक भाय- जीबू-जीबू। भगवान खेत-खरिहाँन, घर-दुआर भरने रहैथ। एहनो समैकेँ अहाँ नहियेँ गुदानलिऐन। अहाँ सन-सन लोक जे समाजमे भऽ जाथि तँ केतए-सँ-केतए समाज पहुँच जाएत।

बालगोविन्द- भाय, सिरपर काज आबि गेल। तँए बेसी नै अँटकब।

घटक भाय- केहेन काज?

बालगोविन्द- बेटीक बिआह करब। उहए लड़की देखए बरपक्ष आबि रहल छैथ। तहीले..!

घटक भाय- अहाँकेँ नै बुझल अछि जे अही समाज लेल खुन सुखा रहल छी। की पागल छी। जेकरा लूरि ने भास छै से शहर-बजार जा-जा महंथ बनल अछि आ हम समाज धेने छी।

बालगोविन्द- हँ, से तँ देखते छी। तँए ने...।

घटक भाय- अच्छा बड़बढ़ियाँ। ओना हम अपनो कानपर राखब मुदा बुझिते छी जे दस-दुआरी छी। जँ कहीं दोसर दिस लटपटेलौँ तँ बिसरिओ जा सकै छी। तँए अबैसँ पहिने केकरो पठा देबै।

बालगोविन्द- बड़बढ़ियाँ। जाइ छी।

घटक भाय- ऐह, अहिना केना चलि जाएब। एते दिन ने लोक तमाकुले बीड़ीपर दरबज्जाक इज्जत बनौने छेलै मुदा आब ओइसँ काज थोड़बे चलत। बिना चाह-पीने केना चलि जाएब?

बालगोविन्द- अहाँकेँ की अइले उपराग देब। बहुत काज अछि। तँए माफी मंगै छी अखन छुट्टीए दिअ।

(बालगोविन्द विदा भऽ जाइत...)

घटक भाय- (स्वयं) भगवान बड़ीटा छथिन। जँ से नै रहितैथ तँ पहाड़क खोहमे रहैबला केना जीवैए। अजगरकेँ अहार केतए-सँ अबै छइ। घास-पातमे फूल-फड़ केना लगै छै...।

(बालगोविन्दक दरबज्जा। चौकीपर ओछाइन ओछाएल।

बालगोविन्द- सभ किछु तँ सुढ़िया गेल। कनी नजैर उठा कऽ देखहक जे किछु छुटल ने तँ...।

राधेश्याम- (चारू कात नजैर खिड़बैत...) नजैरपर तँ किछु ने अबैए। (कनी बिलमि) हँ, हँ, एकटा छुटल अछि। पएर धोइक बेवस्था नै भेल।

बालगोविन्द- बेस मन पाड़ि देलह। तँए ने नमहर काज (परिवारक ऐगला काज) मे बेसी लोकसँ विचार करक चाही। दसेमे ने भगवान वसै छैथ। जखने दसटा आँखि दस दिस घुमै छै तखने ने दसो दिशा देख पड़ै छइ।

(भागेसर आ यशोधरक आगमन...)

जहिना समए देलौँ तहिना पहुँचिओ गेलौँ। पहिने पएर-हाथ धो लिअ तखन निचेनसँ बैसब।

भागेसर- तीन-कोस पएरे चलैमे मनो किछु ठेहिया जाइ छइ।

(दुनू गोटेकेँ पएर-हाथ धोइतेकाल घटक भाइक प्रवेश...)

घटक भाय- पाहुन सभ कहाँ रहै छैथ?

बालगोविन्द- भाय, नवका कुटुम छैथ। ओना अखन रीता (बेटी) बिआह करै जोकर नहियेँ भेल छै, मुदा ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बापक कर्ज छी। अपना जीवैत केतौ अंग लगा देने भगवानो घरमे दोखी नै ने हएब।

घटक भाय- कुटुम, अपना ऐठामक जे बुद्धि-विचार अछि ओ दुनियाँमे केतए अछि। एक-एक काज ओहन अछि जेहेन पत्थर-कोइलाक ताउमे धिपा लोहाक कोनो समान बनैए।

भागेसर- हँ, से तँ अछिए।

घटक भाय- अपने ऐठाम खरही आ ठेंगासँ लड़का-लड़की (बर-

कन्या) केँ नापि बिआह होइत अछि।

यशोधर- आब ओ बेवहार उठि गेल।

घटक भाय- हँ, हँ, सएह कहै छी। बेवहार तँ उठि गेल मुदा ओइ पाछू जे विचार छल से नै ने मरि गेल। विचारवानक बखारीक अन्न तँ वएह ने छिऐन।

राधेश्याम- काका, कनी फरिछा दियौ। एक तँ नव कवरिया छी तहूमे परदेशी भेलौं।

घटक भाय- बौआ, तहूँ बेटे-भतीजे भेलह। बहुत पढ़ल-लिखल नहियेँ छी। लगमे बैसा-बैसा जे बाबा सिखौलैन से कहै छिअह। तहूँमे बहुत बिसरिए गेलौं।

राधेश्याम- जे बुझल अछि सएह कहियौ।

घटक भाय- समाजमे दुइओ आना एहेन परिवार नै अछि जिनका परिवारमे बच्चाक टिप्पणि बनै छैन। बाँकी तँ बाँकीए छैथ। अदौसँ लड़काक अपेक्षा लड़कीक उम्र कम मानल गेल। जेकरा तारीख-मरकुमामे नै, नापमे मानल गेल।

राधेश्याम- जँ दुनूमे सँ कोनो बढ़नगर आ कोनो भुटाड़ि हुअए,

तखन?

घटक भाय- बेस कहलह। तँए ने अबेवहारिक भऽ गेल। सदिकाल समाजकेँ आँखि उठा अहितपर नजैर राखक चाही।

भागेसर- हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा विचारलो बात तँ नहियेँ होइ छइ।

घटक भाय- बेस बजलौं। ऐमे दुनू दोख अछि। विचारनिहारोकेँ विचारैमे गड़बड़ होइ छैन आ राजादैवक (प्रकृति निअम) दोख सेहो होइत अछि। अखने देखियौ गोर-कारी रंगक दुआरे केते सम्बन्ध नै बनि पबैए। एतबो बुझैले लोक तैयार नै जे मनुख रंगसँ नै गुणसँ बनैए।

यशोधर- हँ, से तँ होइते अछि। हमरो गाममे हाथमे सिनुर लेल बरकेँ बरक बाप गट्टा पकैड़ घिचने-घिचने गामे चलि गेल।

घटक भाय- की कहूँ कुटुम नारायण देखैत-देखैत आँखि पथरा रहल अछि। मुदा अछैते औरूदे उरीसक दबाइ पीब उरीसे जकाँ मरिए जाएब से नीक हएत। तहिना देखब जे कुल-गोत्रक चलैत कुटुमैती भंगठि जाइए।

यशोधर- हँ, से तँ होइए।

घटक भाय- देखियौ, अपना बहुसंख्यक समाजमे अखनो धरि मुजबानीएक कारोबार चलि आबि रहल अछि। जे नीक-अधला बेरबैक विचार गड़बड़ा गेल। जेते मुँह तेते बात। जैठाम जे मुँहगर तैठाम तेकरे बात चलत। चाहे ओ नीक होय कि अधला।

यशोधर- कनी नीक जकाँ बुझा कऽ कहियौ?

घटक भाय- (बालगोविन्द दिस देख...) बालगोविन्द, आइ तँ कुटुम-नारायण सभ रहता किने?

बालगोविन्द- एक तँ अबेर कऽ एला हेन। तहूमे अखन धरि तँ आने-आने गप-सप्प चलल। काज पछुआएले रहि गेल अछि।

घटक भाय- आइ तँ कनियेँ देखा-सुनी हएत किने?

बालगोविन्द- हँ। मुदा बिआहसँ तँ बीध भारी होइए किने!

घटक भाय- हँ। से तँ होइते छइ। अखन जाइ छी। काल्हि सवेरे आएब। तखन जेना-जे हेतै से हेतइ।

भागेसर- काज जँ ससरि जाइत तँ चलि जैतौं।

घटक भाय- एहनो जाएब होइ छइ। जखन कुटुमैती जोड़ि रहल छी तखन एना औगतेने हएत।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1222

छअम दृश्य

(राजदेवक दरबज्जा। चद्दरि ओढ़ि राजदेव पड़ल)

सुनीता- बाबा, बाबा-यौ। आँखि लगल अछि। (एक हाथमे लोटा दोसरमे गोटी)

राजदेव- नहि। जगले छी। दबाइ अनलह।

सुनीता- हँ। लिअ।

राजदेव- (चौकिएपर बैस गोटी खा पानि पीब कऽ) नाहकमे परान गमबै छी। कहू जे जानि कऽ बेसाहब तँ मरब नहि। मुदा करबे की करू। जानि कऽ कियो थोड़े कुत्ता बधिया करए जाइए। जखन कुकुर-चालि नाकपर ठेक जाए छै तखने ने कियो जान अबधारि जाइए।

सुनीता- पाकल आम भेलौं। आबो जँ अपन पथ-परहेज नै राखब तँ केते दिन जीब?

राजदेव- बुच्ची, तहूँ आब बच्चा नै छह जे बात टारि देबह। मुदा

की करब? जखन समाजमे रहै छी तखन जँ बिआहमे बरियाती नै जाएब, मरलापर कठियारी नै जाएब, तँ समाज आगू मुहेँ ससरत केना।

सुनीता- से तँ बुझलौं, मुदा..?

राजदेव- मुदा यएह ने जे जे जुआन-जहान अछि ओ जाए। से अपना घरमे अछि। तौँ बेटीए जाति भेलह, श्याम बच्चे अछि, बाबू परदेशेमे छथुन तखन तौँही कहह जे की करब?

सुनीता- (कनी गुम्म भऽ) हँ, से तँ अछि। मुदा समाजो तँ नमहर अछि। बूढ़-पुरान जँ नहियोँ जेता तैयो किनको काज थोड़े रुकतैन।

राजदेव- कहै तँ छह ठीके मुदा तेहेन-तेहेन ढोढ़ाइ-मंगनू सभ समाजमे फड़ि गेल अछि जे अपेक्षा (सम्बन्ध) जोड़त की तोड़ैए पाछू पील पड़ल अछि।

सुनीता- से की?

राजदेव- बिनु-विधक विध सभ आबि रहल अछि आ नीक विध मेटा रहल अछि। देखै छी तँ तामसे शपथ खा लइ छी

जे आब बरियाती नै जाएब। मुदा फेर सोचै छी जे नै जेवइ तँ अपना बेर के जाएत।

सुनीता- बरियाती जाएब कोनो अनिवार्य छइ?

राजदेव- छैहो आ नहियोँ छइ। समाजमे दुनू चलै छइ। हमरे बिआहमे ममे टा बरियाती गेल रहैथ। सेहो बरियाती नै घरवारी बनि कऽ।

सुनीता- तखन फेर एते बरियाती किए जाइ छइ?

राजदेव- सेहो कहाँ गलती भेलइ। जही लग्नमे हमर बिआह भेल ओहीमे श्यामो दोसकेँ भेलैन। पचाससँ उपरे बरियाती गेल रहैन।

सुनीता- गोटी खेलौं हेन। कनीकाल कल मारि लिअ। खाइओक मन होइए?

राजदेव- अखन तँ नै होइए। मुदा गोटी खेलौं हेन तँए की कहबह?

सुनीता- जे मन फुरए सएह करब।
(कृष्णानन्दक आगमन)

कृष्णानन्द- बड़ अनखनाएल जकाँ देखै छी कक्का? चद्दरि किए ओढ़ने छी?

राजदेव- कोनो कि सुखे ओढ़ने छी। मन गड़बड़ अछि।

कृष्णानन्द- की भेल हेन?

राजदेव- एक तँ पेट गड़बड़ भेने मन गड़बड़ लगैए। तहूमे तेहेन-तेहेन किरदानी सभ लोक करैए जे होइए अनेरे किए जीवै छी।

कृष्णानन्द- हँ, भने मन पड़ि गेल। कामेसर भायकेँ पानि चढ़ै छैन।

राजदेव- किए। केहेन बढ़ियाँ तँ रातिमे संगे बरियाती पुरलौं। तैबीच की भऽ गेलइ।

कृष्णानन्द- अपने तँ नै पुछलयैन मुदा कात-करोटसँ भाँज लगल जे बरियाती जाइसँ पहिने खूब चढ़ा लेने रहैथ। ओही निसाँमे अढ़ाइ-तीन सए रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ खेलखिन।

सुनीता- (खिसिया कऽ) जिनगीमे कहियो देखने छेलखिन आकि

बरियातीए भरोसे ओरियाएल छला।

कृष्णानन्द- घरवारियो सबहक दोख छइ?

सुनीता- से केना?

कृष्णानन्द- ओते ओरियान किए करैए। जँ रहि जे जेतै तँ बरियाती कऽ सबारी कसत जे दुइर भऽ जाएत। तइसँ नीक ने जे दुइर नै हुअ दइ छइ।

सुनीता- तखन तँ दबाइओ आ डाक्टरोक ओरियान करए पड़तै किने?

राजदेव- कोन बातमे ओझरा गेलह। अच्छा अखन की हालत छइ?

कृष्णानन्द- आब तँ बहुत असान भेलैन। पहिने तँ दमे नै धरए दइ छेलैन। डाक्टर कहलखिन जे आँत फाटि जैतैन। मुदा सम्हरला। गुण भेलैन जे तीन-चारि बेर छाँट भऽ गेलैन। ओहिना सौंसे-सौंसे रसगुल्ला खसलैन।

सुनीता- ओहने-ओहने लोक समाजकें दुइर करैए।

कृष्णानन्द- से केना?

सुनीता- जे आदमी ओहन पेट बनौत ओ ओते पुरौत केतए-सँ। जँ पुराइओ लेत तँ ओते पचबैओ लए ने ओते समए चाही। जँ खाइए-पचबैमे समए गमा लेत तँ काज करखन करत।

राजदेव- (कनी गरमाइत...) अच्छा बुच्ची, कृष्णानन्द कक्काकें चाह पिआबहुन?

सुनीता- अहूँ पिबै?

राजदेव- केना नै पिबै।

सुनीता- अहूँक पेट तँ गड़बड़े अछि। जँ कहीं औरो बेसी भऽ जाए?

राजदेव- से तँ ठीके कहै छह। मुदा ई केहेन हएत जे दरबज्जापर असकरे कृष्णानन्द चाह पीता आ अपने संग नै देबनि।

सुनीता- भाँज पुरबैले कम्मे कऽ लेने आएब। सेहो सरा कऽ पीब।
(सुनीता चाह आनए जाइत...)

कृष्णानन्द- कक्का, जेहो काज लोक नीक बुझि करैए, ओकरो तेना ने करए लगैए जे जेते नीक बुझि करैए ओइसँ बेसी अधले भऽ जाइ छइ। तैपर सँ अचार जकाँ रंग-बिरंगक चहटगर नवका-नवका काज।

राजदेव- नै बुझि सकलौं।

कृष्णानन्द- पहिने दू-सँझू बरियाती होइ छेलइ। जँ कहीं पहिल दिन अबेरो भऽ गेल आ कोनो तरहक गड़बड़ियो होइ छेलै तँ दोसर दिन सम्हारि कऽ सभ समेट सेरिया लइ छल।

राजेदव- जँ दू दिना काज एक दिनमे भऽ जाए तँ नीके ने भेल।

कृष्णानन्द- यएह सोचि ने एक-सँझू भेल। मुदा पाछूसँ तेहेन हवा मारलक जे कोसो भरि जाइबला बरियाती गाड़ी-सबारी दुआरे लग्नक समए टपा-टपा पहुँचैए।

राजदेव- हँ, से तँ होइए।

कृष्णानन्द- (सह पाबि सहटि) एतबो बुझैले लोक तैयार नै जे कोस भरि जाइमे आधा-पौन घन्टा पएरे लगत। तइ टपैमे चरि-चरि घन्टा देरी भेल, कहू जे केहेन भेल?

राजदेव- हौ, की कहबह। 'इस्की मुइला माघमे।' तेहेन-तेहेन नवकविरया मनुख सभ भऽ गेलहें, जे माघोमे गाम-गमाइत बिना चद्दरिए जाएत। आब कहह जे अपना ऐठामक विचारधारा रहल जे कोनो वस्तुक उपयोग जरूरत भरि करी। तैठाम जँ घरवैया अपन चद्दरि दइ छैन तँ अपने कठुएता, जँ नै दइ छैन तँ आनकें दरबज्जापर कठुआएब उचित हएत।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ देखै छिऐ।

राजदेव- आब बरियातीएमे देखहक। पहिने दू दिना बरियातीक चलैन छल। जे एक-सँझू भऽ गेल। मूल प्रश्न अछि जे दुनू पक्षक (बर आ कन्या पक्ष) कि सभ क्रिया-कलाप (बिध-बेवहार) छइ। केकरा सुधारैक, केकरा तोड़ैक आ केकरा बचा कऽ रखैक जरूरत अछि से नै बुझि, कविकाठी सभ समए नै बँचब वा समैक दुरूपयोग कहि एक दिना चलैन चलौलक। मुदा...।

कृष्णानन्द- मुदा की?

राजदेव- तहूँ तँ आब बच्चा नहियें छह। केते कठियारी गेले हेबह।

कृष्णानन्द- कक्का, मुरदा जरबए कठियारी जरूर गेलौं हेन, मुदा मुरदा..?

राजदेव- हँ, हँ, कठियारी गेलह। मुरदा जरबए नै?

कृष्णानन्द- एते तँ जरूर करै छी जे शुरूमे खुहरी चढ़ेलौं आ पछाइत पँचकठिया फेकि घरमुहाँ भेलौं।

राजदेव- तैबीच?

कृष्णानन्द- कनी बगलि कऽ बैस ताशो खेलाइ छी आ चाहो-पान करै छी।

राजदेव- मुदा, जे मुइला हुनकर जीता-जिनगीक चर्चक गबाह एकोटा नै रहै छी।

कृष्णानन्द- नै बुझलौं कक्का?

राजदेव- समाजमे केकरो मुइने लोककेँ सोग होइ छइ। सोगक समए मन नीक-अधला बीचक सिमानपर रहैए। जहिना ग्रह-नक्षत्रक बीचक सिमानपर कोनो नव चीज देख पड़ैत तहिना होइए। एकठाम बैस जँ दस गोटेक बीच जीवन-मरणक चर्च भऽ गेल तँ ओ इतिहास बनि गेल। जइ अनुकूल आगू चर्च हएत।

कृष्णानन्द- मन थोड़े रहत।

राजदेव- मन रखए चाहबै तखन ने रहत। ओहुना तँ बिसरनहि छी। अपना ऐठाम मौखिके ज्ञान बेसी अछि। जे नीको अछि आ अधलो। अच्छा छोड़ह, बहकि गेलह।

कृष्णानन्द- हँ, तँ मुरदा जरबैबला कहै छेलिअ?

राजदेव- मुरदा जरबैकाल देखबहक जे चेरा जारनि एक भागसँ चुल्हि जकाँ नै लगौल जाइत अछि, एक्के बेर सौंसे शरीरक तर-ऊपर लगौल जाइए। मुदा मुर्दा सिकुड़ि-सिकुड़ि छोट होइत अन्तमे गेन जकाँ भऽ जाइए। जेकरा किछु जरौनिहार गेन जकाँ गुरका कऽ छोड़ि दैत अछि आ किछु गोटे ओकरो जरा दैत अछि।

कृष्णानन्द- अखन काजे जाइ छेलौं तँ सोचलौं जे कक्काकेँ समाचार सुनौने जाइ छिऐन। मुदा अहूँ तँ चहकल थारी जकाँ झनझनाइते छी।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1114

सातम दृश्य

(बालगोविन्दक दरबज्जा। चाह-पान, सिगरेट चलैत। बालगोविन्द आ राधेश्याम परसैत। भागेसर यशोधर एकठाम बैसल। बीचमे घटक भाय आ दोसर भाग समाजक रूपलाल, गरीबलाल, धीरजलाल बैसल।)

घटक भाय- कुटुम नारायण जेकरा जे जुड़वन लिखल रहै छै से भाइये कऽ रहै छइ।

यशोधर- हँ, से तँ होइ- छै, मुदा..?

रूपलाल- मुदा की?

यशोधर- लिखिनिहार के छैथ?

गरीबलाल- एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। छठिहारे राति विधाता सभ किछु लिख दइ छथिन।

यशोधर- जँ वएह लिखै छथिन तँ एना उटपटांग किए लिखै छथिन।

धीरजलाल- कथी उटपटांग?
(चाहक गिलास आ पानक तसतरी लेने राधेश्याम जा रखि पुन: आबि बैसैए)

यशोधर- एक तँ लेन-देन तेते बढ़ि गेल अछि जे जहिना चुमुक लोहा बीचक वस्तुकेँ नै पकैड़ लोहेटाकेँ खिंचैए तहिना पाइएबला नीक पाइ खर्च कऽ नीक घर (सुभ्यस्त) पकड़ैए भलेँ लड़का-लड़कीक जोड़ा बैड़सै कि नै बैड़सै।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ होइ छइ। मुदा किछु लाभो तँ होइ छइ।

यशोधर- की लाभ होइ छइ?

घटक भाय- जाति-पातिक (कुल-खनदानक) दबाएल लोक अपनासँ नीक घरमे पाइक बले कुटमैती कऽ लैत अछि।

यशोधर- तइ काल विधाता किछु ने सोचलैन जे कान्ही लगा जोड़ा लगैबतथिन। जइसँ जाति-पातिक रक्षा सेहो होइत।

घटक भाय- कुटुम नारायण जहिना मनुक्खोक मन सदतिकाल एके रंग नै रहैए तहिना ने हुनको (विधतोक) होइत हेतैन।

जखन असथिर रहैत हेता तखन नीक विचार मनमे अबैत हेतैन आ जखन टेन्शनमे रहैत हेता तखन किछुसँ किछु कऽ दैत हेता।

गरीबलाल- घटक भाय, एहेन बात नै छइ। कोनो ई औझुका विचार छिऐ आकि पुरना विचार छिऐ। कहलो गेल अछि- 'अजा पुत्रं बलिं दत्वा देवो दुर्बल घातकः।'

घटक भाय- छोड़ू ऐ सभ गपकेँ। ई सभ बैसारी कविकाठीक गप छी। जइ काजे एकठाम भेल छी पहिने एकरा निपटा लिअ। हमहूँ औगताएल छी, बजौनिहार दुआरपर आशा बाट तकैत हेता।

भागेसर- जिनगीमे पहिल बेर बेटाक बिआह करै छी। ओना समाजमे बहुत काज देखलौं हेन मुदा समाज की गामक सीमा भरिक अछि। जाति-जाति, कुल-खानदान, अड़ोसी-पड़ोसी, केते कहब। फाँकक-फाँक बनल अछि जइसँ एक काज (बिआह) होइतो एक रंग बेवहार नै अछि। तइसँ सभ दिना काज रहितो अपन बिध-बेवहार नीक-नहाँति नै बुझि पबै छी।

घटक भाय- हँ, से होइते अछि। अहाँ तँ अहीं भेलौं जे सालमे दस-बीस काजक अगुआइ करै छी तैयो केतेठाम भँसिया

जाइ छी। खाएर, ऐ सभकेँ छोड़ू।

यशोधर- हँ, हँ। अपने काज आगू बढ़ाउ।

घटक भाय- जहिना शुभ-शुभ कऽ बिआहक चर्च उठल, आ अखन धरि चलि रहल अछि तहिना आगूओ चलैत रहए।

बालगोविन्द- लाख टकाक गप कहलिऐ घटकभाय। आगूक शुभारम्भ अहीं करियौ।

घटक भाय- देखू किछुए मास छोड़ि बिआहक दिन सभ मास होइए। मुदा सभसँ नीक मास फागुन होइए।

रूपलाल- ठीके कहलिअ, शिवरातिक मास सेहो छी।

घटक भाय- कोनो कि औगता कऽ कहलौं, से बात नै अछि। किछु सोचिए कऽ कहलौं। खरमास (बैसाख-जेठ) मे आगि-छाइक डर रहै छइ। जाड़मे जाड़ेक आ आन-आन मासमे सेहो किछु ने किछु गड़बड़ रहिते अछि।

यशोधर- जहिना नीक मौसम रहैए तहिना खेबो-पीवोक समान पर्याप्त रहैए। टेन्ट-समेनाक बदला गाछीओ-कलमसँ काज चलि जाइत अछि।

घटक भाय- की सबहक विचार अछि किने?

(सभ- हँ-हँ)

एकटा काज सुढ़िआएल। आब बरियातीक गप उठबै छी। की बालगोविन्द, कुटुम नारायणकेँ केते बरियाती अबैले कहै छिऐन?

बालगोविन्द- पाँचो गोटेसँ वएह काज होइए जे पान सए गोटेसँ। तखन देखते छी हम्मर आँट-पेट। कौआसँ खइर लूटाएब तइसँ नीक जे ओते बेटीए-जमाएकेँ अगुआ कऽ देब जे नै सभ दिन तँ किछुओ दिन सुख भोग करत।

यशोधर- बड़ सुन्नर बात बालगोविन्द बाबूक छैन। मुदा..?

गरीबलाल- कनी खोलि कऽ बजिऔ।

यशोधर- अहाँ समाजक बात नै जनै छी मुदा हमरा समाजमे एहेन अछि जे जातिमे घरही एक गोटे, परजातिमे हित-अपेक्षित आ परिवारक जे सम्बन्धी छैथ, से तँ एबे करता।

बालगोविन्द- एते तँ उचिते भेल।

गरीबलाल- उचित तँ कहि देलिऐ भाय, मुदा पैघ घोड़ाक पैघ छानो होइ छइ। अहाँ पचघारा छी मुदा जैठाम सए-दू-सए घरक होय तैठाम?

यशोधर- ई तँ ठीके कहलिऐ मुदा छोट-छीन काजक दुआरे समाज टुटि जाए, सेहो नीक नहियेँ।

घटक भाय- जेहने सबाल ओझराएल अछि तेहने सोझराएलो अछि।

यशोधर- से की?

घटक भाय- ओझरी दू रंगक होइ छइ। एकटा, जहिना टीक कि झोंटामे चिड़चिड़ी लगने होइत अछि आ दोसर, डोरीक भिड़ी जकाँ होइए। एकटा ओरी पकैड़ लिअ काज करैत चलू। करवनो कथीले ओझराएत। चाहे तँ काजे सम्पन्न भऽ जाएत वा डोरीए सधि जाएत।

गरीबलाल- बालगोविन्द भाय, उक्खरिमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर। समाजक नीक लेल जँ अपन प्राणो गमबए पड़ै तैयो नीके। बिआह तँ समाजक उत्सव छी।

घटक भाय- एक लाखक विचार गरीबलालक छैन। एकठाम बैस खेलौं, रहलौं आ नीक-अधलाक गप-सप्प केलौं, ई उत्सव नै तँ की भेल।

यशोधर- घटक भाइक विचार टारैबला नै छैन।
(बिच्चेमे)

धीरजलाल- जखन उत्सव छी तखन नीक तँ नीक भेल मुदा अधला गप-सप्प किए करत?

घटक भाय- (ठहाका मारि) तूँ अखन अनाड़ी छह धीरज, मुदा जे बात उठौलह ओ आगू लेल काज औतह। तँए पहिने तोरे गप कहै छिअ।
(घटक भाइक विचार सुनि सभ साकांच भऽ घटक भाय दिस देखए लगैत...)

(मुँह चटपटबैत धीरजलाल किछु बाजए चाहैत की गरीबलालपर नजैर पड़ल। मुँहक बोल धीरजलाल रोकि लैत)

गरीबलाल- पहिने एकटा बात सुनि लिअ, तखन दोसर पुछहुन।

घटक भाय- बौआ, जहिना नीकक संग-संग अधलो चलैए तहिना अधलाक संग नीको चलैए। तँए दुनू गप चललासँ साधल बात लोक बुझैए।

धीरजलाल- गप झपाएल रहि गेल घटकभाय।

घटक भाय- अपना जनैत तँ कहि देलिअ। भऽ सकैए तूँ नै बुझने हुअह। देखहक पुरुष नारीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होइए। जेकरा विवेकी मनुख बिआहक बन्हनमे बन्हलैन। जे सृष्टिक विकास आ कल्याण लेल उचित अछि।

धीरजलाल- हँ, से तँ अछिए।

घटक भाय- मुदा एकरे दोसर भाग देखहक। जे, बन्हनसँ बाहर अछि ओकरा अधला बुझि अंकुश लगौल गेल। मुदा समाजेक लोक ओकरा राँइ-बाँइ कऽ कऽ तोड़ि देलक।

धीरजलाल- नै बुझलौं भाय?

घटक भाय- पुरुष प्रधान बेवस्था ओकरा संग अन्याय केलक। एक दिस पुरुष केतेको नारीकेँ पत्नी बना, संग-संग समाजोमे कुचालि आन-आन नारीक संग चलैन शुरू केलक। जइसँ नारीक डाँड़, टुटि गेल। केते नारी घरसँ निकालल गेल। जे रने-बने बौआइत अछि।

धीरजलाल- भाय, मन तँ औरो गप सुनैक होइए। मुदा जइ काजे एकत्रित भेल छी से काज आगू बढ़ाउ।

राधेश्याम- मानि लेलौं, जेते बरियातीक खगता होनि तेते लऽ कऽ औता।

घटक भाय- बौआ राधेश्याम, नमहर काज करैमे ने औगताइ आ ने खिसिआइ। जखने अगुतेबह, खिसिएबह तखने काजमे खोंच-खाँच बनए लगतह। कोनो रोग असाध होइए तँ मनुखे ने ओकरो साधमे अनैए।

बालगोविन्द- बौआ, अखन तूँ समाजक तरी-घटी नै बुझबहक। एक तँ नवकविरया छह दोसर गाम छोड़ि परदेश खटै छह। जखन समाजक संग छी तखन वएह ने पारो-घाट लगौता। बेटी की कोनो हमरे छी आकि समाजक छिऐन।

घटक भाय- बालगोविन्द भाय, हमरा जे धौंजनि समाजमे होइए से केकरा होइ छइ। जँ एहेन धौंजनि दोसराकेँ होइतै तँ पड़ा कऽ जंगल चलि जाइत। मुदा मोह अछि किने।

बालगोविन्द- की मोह?

घटक भाय- जइ काजे छी पहिने से फड़िआबह। एक समाजक दोसर समाजसँ मिलन समारोह छी। तँए समाजिक काज भेल। तइले समाजो अपन रस्ता बनौनहि अछि। किओ भार पूरि, तँ किओ डाल पूरि, तँ किओ असिरवादी दऽ काज पूरबैए।

भागेसर- ऐ लेल चिन्ता करैक नै अछि घटकभाय। अपनो ऐठामसँ तँ डाला भार एबे करत किने। तइ लेल...।

घटक भाय- सभ किओ सुनि लेलिऐ किने जे बरपक्ष जेते बरियाती आनए चहता से मंजूर केलिऐन।
(सभ हँ, हँ)

राधेश्याम- (उछलि कऽ) मुदा एकटा बातक फड़िछौट अखने भऽ जाए।

घटक भाय- कथीक?

राधेश्याम- जेते खाइ-पिबैक ओरियान करबनि से खा-पी कऽ जाए पड़तैन।

गरीबलाल- से पहिने ने किए बरियातीक हिसाब जोड़ि लेब। जइ हिसावसँ बरियाती औता तइ हिसाबसँ ओरियान करब। ने बाइस बँचत ने कुत्ता खाएत।

राधेश्याम- कक्का, दोसर बात कहलौं।

गरीबलाल- की?

राधेश्याम- तीन कोसपर गाम छैन। पाँच बजेमे जे पएरो चलता तैयौ आठ बजे आबि जेता। सभ काज सम्हरल चलतैन।

घटक भाय- बेस बजलह। खाइ-पीबैक जे समान दूइर हएत से मोटरी बान्हि कन्हापर लादि देबनि। अच्छा अखन एतै काजकेँ विराम दियौ।

यशोधर- बहुत समए लगि रहल अछि, जेते जल्दी काजक रूप रेखा बनि जाएत तेते नीक किने।

घटक भाय- हँ, हँ। से तँ नीक। मुदा जहिना कोनो वस्तुक बोझसँ चानि अगिया जाइत अछि तहिना ने विचारोक बोझसँ अगिया जाइत अछि। तँए आगूक विचार बढ़बैसँ पहिने एकबेर चाह-पान भऽ जाए।

गरीबलाल- बेस कहलिऐ घटकभाय।
बालगोविन्द- बाउ राधे, चाह बनौने आबह।
(राधेश्याम चाह आनए जाइत अछि।)

गरीबलाल- (मुस्की दैत) तैबीच किछु रमन-चमन भऽ जाए। अँए-

औ घटक भाय, मझौरा बरियातीमे परूँका की भेल रहए?

घटक भाय- बिसरलो बात मन पाड़ै छी। नीकक चर्च लोक दोहरा-तेहरा करैए। अधला बात (काज) बिसरबे नीक।

गरीबलाल- अखन औपचारिक नै अनौपचारिक किछु भऽ जाए।

घटक भाय- (मुस्की दैत) देखियौ, सालमे दस-बीस बिआहक अगुआइ करिते छी मुदा ओहन तँ नै छी जे लुत्ती लगा देव आ ससरि जाएब। जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजकेँ कैये कऽ छोड़ै छी।

यशोधर- की भेल रहए?

घटक भाय- जिनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लगल। कछुबीक बरियाती मझौरा गेल। ठीक आठ बजे बरियाती पहुँचल। घरवारियो सतर्क रहैथ। दरबज्जापर पहुँचते शर्बत चलल। शर्बत चलिते रहै कि स्त्रीगण सभ चंगेरामे दूबि-धान दीप लेने गीत गबैत पहुँचली।

यशोधर- से तँ होइते अछि।

घटक भाय- एतबे भेल। एक दिस बैसारमे बरियाती सभ गिलासपर गिलास शर्बत चढ़बैत तँ दोसर दिस गीतिहाइरो सभ गीतक वाण छोड़ैत। तखने एकटा परदेशिया करामात शुरू केलक।

यशोधर- की करामात?

घटक भाय- पहिने तँ नै बुझलिऐ मुदा पछाइत पता लगल जे ओ बरियातीए रहए। केलक ई जे गीतिहारिक बीचमे पाइ (एक-दू आ पाँचक सिक्का) लुटबए लगल। गीतिहारिक बीच हुड़ भेल। एक्के-दुइए चारि बेर पाइ फेकलक। झल-अन्हार रहबे करै।

यशोधर- से एना किए केलक?

घटक भाय- सएह ने, केतए-सँ सीखि कऽ आएल रहै से नै कहि। पाइ बीछैमे गीतो बन्न भऽ गेल। तैपर सँ तेना ने तरा-ऊपरी लोको खसए लगल आ धक्का-धुक्की सेहो हुअ लगल। दुबि-धान, दीपबला चंगेरा बरक उपरेमे खसल।

गरीबलाल- जे एहेन किरदानी केने रहै तेकरा पकैड़ कऽ धोलाइ नै देलक।

घटक भाय- ओहो कि अनाड़ी-धुनाड़ी रहै। लुत्ती लगा ससरि कऽ कातमे नुका रहल। घरवारी सभ जखन गीतिहारि सभकेँ पुछलकैन तँ ओ सभ हरिअरका कुरताबलाक नाओं कहलखिन। ओ सभ भँजियाबए लगल। मुदा कुत्ता केतौ आगिमे झरकै।

गरीबलाल- तइमे अहाँ केना फँसि गेलिऐ?

घटक भाय- हमरो कुर्त्ता हरियरे रहए। मुदा आब बुझै छी जे गलती कनी अपनो रहए।

गरीबलाल- की गलती अपन रहए?

घटक भाय- अपन गलती यएह रहै जे बरियातीक बीचक नहि कतका कुरसीपर बैसल रही। तीनि-चारि गोटे कातेसँ हियबैत रहै। हरिअर कुर्ता देख लगमे पहुँच गेल।

यशोधर- अहाँ नै बुझलिऐ।

घटक भाय- से कि कोनो देखलिऐ नहि। भेल जे किछु परसऽ आएल अछि।

यशोधर- किछु पुछबो ने केलिऐ?

घटक भाय- की पुछितिऐ, कोनो शंका रहए। ओहो सभ कि पुछलक। हाँइ-हाँइ कऽ ठुस्से चलबए लगल।

गरीबलाल- (ठहाका मारि...) बेसी ने तँ लगल।

घटक भाय- कोनो कि अनाड़ी-धुनाड़ीक ठुस्सा रहए। पाँचे-सात ठुस्सामे तँ बुझि पड़ल जे दिनका तरेगन देखै छी।

यशोधर- बरियाती सभ खाइए टाले गेल रहए।

घटक भाय- नै, परोछक बात छी, झूठ नै बाजब। बरियातीओ सभ तनला। मुदा हमहीं रोकलयैन।

गरीबलाल- अहाँ किए रोकलयैन?

घटक भाय- मारि-दंगा कोनो नीक छी। कोनो ठेकान छै जे केते हएत। जँ एहेन भऽ जाए जे काजे नाश भऽ जाए, तखन।

गरीबलाल- हँ, से तँ ठीके।

घटक भाय- ओना पाँचे-सात ठूस्सा ने लगल। जँ दोहराइत तँ बेसीओ लगि सकै छेलइ। तहूमे जहिना हौहटि-कलकैल

साले-साल ओही आदमीक ऐठाम अबैत जेकरा ऐठाम खाइ-पिबैक आ सुतै-बैसैक नीक जोगार देखैत। तँए सोचलौं जे कनी सहिये लेने नीक रहत।
(तस्तरीमे चाह लेने राधेश्याम आबि चाह परसैए...)

गरीबलाल- तरे-तर घटक भाय मुस्की मारै छैथ।
(गरीबलालक बात सुनि सभ घटक भाय दिस ताकए लगै छैथ। अपना दिस तकैत देख घटक भाइक मुस्की-हँसीमे बदैल गेलैन।

बालगोविन्द- घटकभाय, किछु बजता।

घटक भाय- एकटा आरो घटना मन पड़ि गेल। बरख पाँचे भेल हएत। तमोरियाक कुटुमैती अरड़ियामे भेल रहए। दुनूक अगुआ रही। दुनू चिन्हार।

बालगोविन्द- भेल कथी से कहियौ।

घटक भाय- ओइ काजमे दोखी घरबैइए रहए। नाहकमे दोखी बनलौं।

गरीबलाल- की भेल रहए?

घटक भाय- गरीबलाल एक रत्ती तल-बितल भेने काज विगड़ि कऽ

की-सँ-की भऽ जाइए। एते दिन देखै छेलिऐ जे दोकानदार सभ माथपर नूनक मोटरी आनि जिबैले कारोबार करै छल। आब देखै छी जे कारोबारीए सभ राजा भऽ गेल। जे जेना मन फुड़ै छे से तेना करैए।

गरीबलाल- जे बात कहै छेलिऐ, से कहियौ।

घटक भाय- ओइठीन देखौलक कोनो लड़की आ सिनुरदानक बेर दोसर लड़कीकेँ आनि सिनुरदान करबै लगल।

गरीबलाल- ओइठाम तँ बर पक्षक नै रहै छैथ तखन केना भाँज खुगल।

घटक भाय- सभ गप देखनिहार तँ घरपर बाजि चुकल छला ने। लड़कीक हुलिया भऽ गेल छेलै ने। ओही अनुमानसँ लड़का पकैड़ लेलक। कोनो लाथे निकलल आ पित्तीकेँ कहि देलक।

गरीबलाल- तखन तँ बड़का सरेड़ा भेल हएत?

घटक भाय- सरेड़ा कि सरेड़ा जकाँ भेल। मारि-पीट जे भेल से तँ भेवे कएल जे तीन बरख तक दुनू गामक सीमा रोका गेल। बिआह बेटा-बेटीक खेल नै दुनूक जिनगीक छी। ओना

तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे खेलोसँ खेल जिनगी बनि गेल अछि।

गरीबलाल- कनी फरिछा कऽ कहियो घटकभाय?

घटक भाय- की फरिछा कऽ कहब। अंतिम समए विद्यापतिओ लिखलैन- 'माधव हम परिणाम निराश।' तहिना छातीपर हाथ रखि आनो-आन बाजैथ। अच्छा अखन एतै विराम दियौ। खाइ-पिबैक बेरो भऽ गेल आ देहो-हाथ अकैड़ गेल।

राधेश्याम- तीमनो-तरकारी ठरि कऽ पानि भऽ गेल हएत।

घटक भाय- कुटुम नारायण तँ ठरलो खा कऽ पेट भरि लेता मुदा हमरा तँ कोनो गंजन गृहणी नहियेँ रखती।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 2082

आठम दृश्य

(बालगोविन्दक दरबज्जा। बालगोविन्द, भागेसर आ यशोधर बैस खेती-पथारीक गप करैत...)

बालगोविन्द- देखले दिनमे दुनियाँ केतए-सँ-केतए भागि गेल।

यशोधर- से की?

बालगोविन्द- अपना ऐठामक किसान खेती-गिरहस्तीक सभ कथुक बीआ अपने बनबै छला खेती करै छला। तीन सालसँ जे सुनै छी, से की कहूँ।

यशोधर- खोलि कऽ कनी कहियौ?

बालगोविन्द- तेसर साल हमरा गाममे बहुत गोटे तीन सए रूपैए किलो मकइओक आ धानोक बीआ, पँचगुना उपजा कहि कऽ अनलैन। खेती केलैन। शुरूहेमे ढक-बखारी सभ बनबा-बनबा रखलैन। ले बलैया मकैमे बाइले ने लगल।

यशोधर- से की भेलै?

बालगोविन्द- जहिना रिनिया-महाजन अगर-मगर करैत रहता तहिना सभ गिरहस्त अपनेमे कहा-कही शुरू केलैन।

यशोधर- की कहा-कही शुरू केलैन?

बालगोविन्द- कियो कहथिन जे खाद जे देलिऐ से माटि जाँच करौलिऐ? तँ कियो बाजैथ जे जेते पावरक दबाइ फसिलमे दइ छेलिऐ तइसँ बेसी पावरक देलिऐ की कम? तँ कियो बाजैथ जे बीआ बाग करैसँ पहिने दबाइ मिलौलिऐ। की कहब उपजाक बात बिसरि सभ अपनेमे सालो भरि रक्का-टोकी करैत रहला।

यशोधर- तब तँ बाढ़ि रौदीक संग तेसरो आफत आबि गेल।

बालगोविन्द- तेसरे किए कहै छिऐ। चारिमो ने कहियो।

यशोधर- चारिम की?

बालगोविन्द- अहाँ सभ दिस नहर नइए तँए ने नजैरपर आएल हेन। हमरा सभ दिस केहेन खेल होइए से सुनू। जखन खूब बरखा हएत तखन नहरिक मुँह (फाटक) खोलि देत आ जखन रौदी हएत तखन कहत जे नहरिमे पानिए ने छइ।

यशोधर- जेना अपना ऐठम पढ़ल-लिखल लोक छैथ तेना जँ दसो

प्रतिशत बुधिक (ज्ञानक) उपयोग अपना क्षेत्र लेल लगैबतैथ तँ की-सँ-की देखतिऐ। मुदा जेकर कपारे फुटि जाएत तेकर केते भरोस।
(राधेश्याम चाह लेने अबैए। तहिकाल गरीबलालक संग घटक भाय सेहो अबै छैथ...)

भागेसर- घटको भाय आबिए गेला।

घटक भाय- चाहमे हमरो अंश छल तँए दुनूक मिलानी भेल। दाना-दानामे खेनिहारक अंश लिखल अछि मुदा..?

गरीबलाल- घटकभाय, अहाँमे यएह अवगुन अछि जे करैले जाइ छी कोनो काज आ करए लगै छी कोनो काज। जइ काजे एलौं तेकरा पहिने सोझराउ। दोसरो काज करए जाएब।

घटक भाय- अखन तँ सभ जुटबो ने केला अछि तैबीच काजक चर्च उठाएब नीक हएत।

गरीबलाल- जँ ओ लोकैन नै आबैथ तँ छोड़ि देब नीक हएत।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) कहलौं तँ बेस बात, मुदा जमात करए करामात।

गरीबलाल- ई तँ ठीके कहलिऐ मुदा जमातसँ पहिने जमात बनैक प्रक्रियापर नजैर दिअए पड़त।

घटक भाय- से की?

गरीबलाल- जहिना बड़का आम सरही होइत-होइत बीजू बड़बड़िया भऽ जाइए। तहिना बिज्जुओ बनैत-बनैत बड़का फैजली-सजमनिया बनि जाइए। तहिना छी जमात। बनैत-बनैत बनत आ मेटाइत-मेटाइत मेटाएत। समाजिक काज छोड़ि सभ अपना नून-रोटीमे लगि समाजकेँ तहस-नहस कऽ देने अछि तैठाम जमात तकने काज चलत।

घटक भाय- बेस बजलौं गरीबभाय। एकटा बात मन पड़ल। पड़ोसिया गाममे रामरूपक माए मरल। अज-गजबला लोक भोज केलक। गामे-गाम एकघारा-दूघारा जाति। एगारह गाममे तीन सए एगारह पंच भेल।

गरीबलाल- फेर अहाँ बौआए लगलौं।

घटक भाय- बौआइ कहाँ छी। ऐगला बात सुनि ने लियौ। गेलौं तमोरिया स्टेशनपर टहलए। रामरूपक बेटाकेँ आ

गनोरक बेटाकेँ झगड़ा करैत देखलौं। बच्चा बुझि दुनूकेँ छोड़बैत पुछलिऐ जे किए झगड़ा करै छह। गनोरक दादीक सराधक भोज सेहो भेल। ओकाइत तँ एकरंगाहे दुनूक। ओ दुइए गामक भोज केने रहए। दुइए गाममे तोहर सए पंच भेल। तहीले झगड़ा।

गरीबलाल- (मुस्की दैत) अनकर झगड़ा अपना कपारपर लऽ लेलौं।

घटक भाय- लेलौं कि लेला जकाँ। बकार बन्न भऽ गेल। भीतरे-भीतर मन खिसिया कऽ कहए जे अनेरे अनकर झगड़ा अपना सिर बेसाहि लेलौं। भने अलकतरा बैसाएल प्लेट-फार्म छइहे दुनू फरिछा लिअ। मुदा सेहो आब केना हएत।

गरीबलाल- फेर केलिऐ की?

घटक भाय- कहलिऐ जे बौआ ताबे थमहह। कनी बैंकक काज अछि। हूसि जाएत। ई तँ कनी अगाइत-पछाइत भऽ सकैए मुदा ओ (बैंक) तँ नै हएत।

गरीबलाल- मानि लेलक दुनू?

घटक भाय- बानरक बटबारा (पनचैती) भऽ गेल। जहिना रोटी बरबरि करैमे सौंसे रोटी बानर खा गेल तहिना हुअ

लगल।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक्के बात एक गोटे मानि लिअए तँ दोसर तत्-मत् करैत अगर-मगर करैत, कोना-छिन्ना निकालि सबाल उठा दिअए। मुदा हमरो बहाना तँ भरिगर रहए तँए हड़बड़ करैत किछु कहबो करिऐ किछु नहियोँ कहिऐ।

गरीबलाल- दुनूक नजैर केहेन रहए?

घटक भाय- दुनूक नजैर जेते चढ़ल बुझि पड़ै ओतबे उतरलो। तइसँ शंका हुअए जे परोछ भेलापर कहीं फेर ने फँसि जाए। फेर हुअए जे पनचैती भेने सोलहो आना तँ नहियेँ फरियाएत। ओ जँ फरियाएत तँ अपने दुनूसँ।

गरीबलाल- जे नीक होइत से ने करितौं।

घटक भाय- जाबत बरतन ताबत बरतन।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- जाधरि धोती वा साड़ी सीओ कऽ काज चलैए ताधरि

एकटा समस्या (धोती कीनैक) तँ हटल रहैए।

गरीबलाल- मुदा धोतीक जरूरत तँ सबदिना छी, केते दिन टारल जा सकैए।

घटक भाय- हँ, से तँ छी। मुदा कोनो काजो करैक (धोतीओ कीनैक) तँ अनुकूल समए होइत अछि। अच्छा छोड़ू ऐ गपकेँ। ओ सभ जँ नहियोँ एला तँ की हेतइ। नै पान तँ पानक डन्टीए-सँ तँ काज चलिए जाइ छइ। घुमा-फिरा कऽ सभ तँ छीहे।

गरीबलाल- हँ, से तँ छी मुदा दाउ-गिरकेँ कोनो गर भेटक चाही।

घटक भाय- से कि कोनो तेहेन काज छी। दुइए परिवारक काज छी जँ दुनू राजी-खुशी सहमत भऽ करैथ तँ तेसरकेँ की चलत।

भागेसर- हमरो समए बहुत लगि गेल। एक घन्टाक काजमे जे दिनक दिन लगा देब सेहो नीक नहि। तहूमे काजक दौर छी सएओ रंगक जोगार-पाती करए पड़त। जँ अहिना समए लगैत गेल तखन बान्हल दिन (निर्धारित समए) मे काज केना हएत?

गरीबलाल- हँ, शुरूहे लग्नमे काज हेबाक चाही चिक्कन-चुनमुन तँ पछाइतो भऽ सकै छइ। ओना अपनो चलैत-चलैत चिक्कन भऽ जाइए।

बालगोविन्द- घटकभाय, जखन एते गप भाइये गेल तखन एक-सँझू बरियाती रहता कि दू-सँझू आकि तीन-सँझू।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) हमर नजरिये नै ओम्हर गेल छल मुदा ईहो तँ दमगरे सबाल अछि।

राधेश्याम- जखन सगतरि सभठाम एक-सँझू भऽ गेल तखन दू-सँझू तीन-सँझू अनेरे चलाएब छी।

घटक भाय- बौआ कहलह तँ बड़ सुन्नर बात मुदा तोहीं कहह जे जखन बरियाती पहुँचैए तखन शर्बत ठंढा-गरम, चाह-पान, सिगरेट गुटका चलैए। तैपर सँ पतोरा बान्हल जलपान, तैपर सँ पलाउओ आ भातो, पूड़िओ आ कचौड़ियो, तैपर सँ रंग-बिरंगक तरकारियो आ अचारो, तैपर सँ मिठाइओ आ माछो-मासु, तैपर दहीओ, सकरौड़ियो आ पनीरो चलैए।

राधेश्याम- किए एते जोड़बै छी?

घटक भाय- जोड़बै कहाँ छिअ। जे चलैए से कहै छिअ। आब तोहीं कहह जे एक दिनक खेनाइ एते भेल?

राधेश्याम- नै केना भेल? कियो कि मोटरी बान्हि घरपर लऽ जाइ छैथ आकि पेटेमे दइ छथिन।

घटक भाय- दइ तँ छथिन पेटेमे मुदा जँ सभ दिन अहिना देथिन तँ कोरोओ-बत्ती घरमे रहतैन आकि ओहो पेटेमे चलि जेतैन। नै जँ एहने हाथी सन सभ भऽ जाए तँ हरबहना बड़द केतए-सँ आनब। हाथीसँ बड़ काज लेब तँ देह-हाथ डोलबैत सबारी करब।

गरीबलाल- (मुस्कियाइत) सबारियो तँ जरूरीए अछि?

घटक भाय- (खिसिया कऽ मुदा हँसैत...) सबारियो नीक लगै छै समैए पाबि कऽ। भरि दिन जँ खलासी-डरेबर जकाँ सबारीए कसने रही तँ डरेबरे-खलासी हएब आकि यात्रा केनिहार यात्री।

गरीबलाल- केते दूर यात्रा करैक अछि जे लोक यात्री बनि चलत। ‘मियाँ दौर महजिद।’

बालगोविन्द- ‘गरीबलाल अहाँकेँ कचकचबै छैथ घटकभाय। अहूँ

तेहने छी जे सभ गपकेँ धइए लइ छिऐ। जइ काजे सभ एकत्रित भेलौं तेकरा आगू बढ़ाउ।

घटक भाय- (सह पाबि...) केतबो गरीबलाल कचकचेता तइसँ की हम कब-कबा जाएब। गरीबलाल एक घाटक पानिक सुआद बुझै छैथ। हमरा जकाँ सतरह घाटक सुआद थोड़े बुझथिन।

राधेश्याम- एक-सँझू नीक आकि दू-सँझू आकि ओइसँ बेसी।

घटक भाय- बौआ, सँझूकेँ दिना बना दहक। एक दिना कि दू दिना आकि तीन दिना। जँ तीन दिना भेल तँ बहत्तरि घन्टाक चक्र भेल। चौबीस घन्टाक दिन होइए तँ एक चक्रमे अनेक अछि। किछु छोड़ि किछु जोड़ि आ किछु सुधारि एक चक्रमे आनल जा सकैए।

गरीबलाल- आब की पहुलका जकाँ लोककेँ ओते पलखति छै जे पएरे बत्तीस-बत्तीस कोस भोज खाइले जाइत। एक दिना बढ़ियाँ।

घटक भाय- गरीब लाल, साँपोसँ टेढ़-बौकली लोकक चालि छइ।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक दिनोकेँ एक रतुक बना देलक।

गरीबलाल- चौबीस घन्टाकेँ बारहमे बाँटल जा सकैए किने?

घटक भाय- बँटैक तराजुए ढील-ढिलाह अछि। कखनो कऽ डोरी ओझरा जाइ छै तँ बेसीए जोखा जाइ छै आकि कम्मे जोखाइ छइ।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक तँ भगवानेक काज आ बोलमे अन्तर छैन दोसर मनुख तँ आरो पँजिया कऽ लिड़ी-बीड़ी करैए।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- कनी नजैर उठा कऽ देखबै तँ बुझि पड़त जे कोनो मासक दिन नमहर भऽ जाइए आ कोनो मासक राति। तखन केना अदहा-अदहीमे बँटबै।

गरीबलाल- एकरा छोड़ू। दोसरपर आउ।

घटक भाय- (मुँह बिजकबैत...) मनुख तँ मनुखे छी। एतबो होश नै जे रतुका यज्ञ संध्याक गीतसँ शुरू होइत अछि आ

दिनुका परातीसँ। से होइए कि से तजबीज केलिऐ हेन?

गरीबलाल- नै?

घटक भाय- तेज सबारी भेने तीन कोसक बरियाती तीन बजे भोरमे पहुँचैए। आब अहीं कहू जे पराती बेरमे संध्या होइ। तैपर सँ दिनका यज्ञ मानबै आकि रतुका।

गरीबलाल- एहेन जंगल-पहाड़ काटि सड़क बनौल हएत।

घटक भाय- (मुस्की दैत) नै किए हएत। अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे नीक बुझिमे औत सएह ने नीक भेल। तहूमे असगर-दुसगरमे गड़बड़ाइओ सकैए मुदा पाँच गोटे बैस जँ विचार करब तँ कनी-मनी झुस-झास भऽ सकैए।

राधेश्याम- जँ शुभ लग्नमे बिआह नै हएत तँ बरियाती सभ मारि खेता।

घटक भाय- जहिना टायरगाड़ीक बड़दकेँ आनो-आनो गामक खच्चा-खुच्ची आ बान्ह-सड़क टपैक भाँज बुझल रहै छै तहिना ने छी। खाएर शुभ-शुभ कऽ काज सम्पन्न हुअए।

गरीबलाल- घटकभाय, अपना सभ समाज छी किने? समाजिक बन्हनमे बान्हि जिनगीक अंग छी। मुदा परिवारक काजक भार तँ परिवारेपर रहतैन।

घटक भाय- रहबे करितैन किने। समाज परिवारक बीच जे सम्बन्ध छै तेकरे पहरुदार छी किने? नीक करता नीक कहबैन अधला कऽ अधलो कहबैन आ सजाएओ देबनि।

बालगोविन्द- (मुस्कियाइत) जहिना अखन धरि सभ काज शुभ-शुभ कऽ चलि रहल अछि तहिना आगूओ चलैत रहए।

भागेसर- नचारीए बिआह कऽ रहल छी। तँए..?

बालगोविन्द- केते दिनसँ पत्नी बिमार चलि रहल छैथ। बाहरक काज अपने सम्हारि लइ छी, मुदा घर-अँगनाक काज राइ-छित्ती होइए।

घटक भाय- बालगोविन्द, जहिना संगीक काज नीक-अधलामे संग देब छी तहिना ने सरो-समाज आ कुटुमो-परिवार छी। जेते जल्दी सम्हारि सकी ओते जल्दी सम्हारि लिअ। आठम दिन सेहो नीक लग्न अछि। जँ सम्हरि जाए तँ सम्हारि लिअ।

बालगोविन्द- बड़बढ़ियाँ।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1566

नअम दृश्य

(राजदेवक दरबज्जा। नजैर निच्चाँ केने कुरसीपर राजदेव मने-मन किछु सोचबो करैत आ कखनो कऽ दहिना हाथ उठा आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगैत। बजैत तँ नै मुदा ठोर पटपटबैत।)

सुनीता- बिनु दूधेक चाह छी। कहुना कऽ पीब लिअ।

राजदेव- दूध नै छेलह।

सुनीता- अमरस्साक समए छी, फाटि गेल।

राजदेव- दूध फाटि गेलह तँ नेबोए दऽ देलहक ने। अच्छा जे छह सएह नीक। एते दिन चाह पेय छल आब तँ अम्मल बनि गेल। नै पीने मने ढील भऽ जाइए। उत्तरबारि टोल दिससँ जनीजातिक जेर अबैत देखने छेलिऐ। से केतए-सँ अबै छेलइ?

सुनीता- हकार पुरि कऽ।

राजदेव- कथीक हकार। केकरा अइठीनसँ।

सुनीता- भागेसर कक्काक बेटाक बिआह भेलैन, वएह कनियाँ देख-देख अबै छेलइ।

राजदेव- बियाहै जोकर बेटा कहाँ भेल छेलइ?

सुनीता- बिआहोक कोनो सीमा-नाँगैर छइ। देखबे करै छिऐ जे कोनो-कोनो जाति छेटगर बेटा-बेटी भेने बिआह करैए आ कोनो-कोनो जाति बच्चेमे कऽ लइए।

राजदेव- हँ, से तँ देखै छिऐ। तोहू तँ आब बच्चा नहियेँ छह, कौलेजमे पढ़ै छह। दुनूमे नीक कोन?

सुनीता- दुनू नीको अछि आ अधलो।

राजदेव- से केना?

सुनीता- जुआन बेटा-बेटीक बिआह ऐ दुआरे नीक अछि जे अपन भार उठा चलै जोकर भेल रहैए।

राजदेव- हँ, से तँ रहैए। फेर अधला केना भेल?

सुनीता- जेतेक जे भार उठा कऽ चलैक चाही से नै चलैए, तँए अधला।

राजदेव- तूँ तँ किताबक भाषामे बुझबै छह। कनी विलगा कऽ कहह।

सुनीता- एक ध्रुव (एक सीमा) देश-दुनियाँक अछि आ दोसर ध्रुव (दोसर सीमा) परिवार आ बेकतीक। आजुक जे परिवारक रूप-रेखा बनि रहल अछि ओइमे सभ छुटि रहल अछि। सिकुड़ि कऽ लोक तेते छोट परिवार बनबए चाहैए जे मनुखक सम्बन्धे चौराहापर ढेड़ियाएल गाड़ी-सबारी जकाँ भेल जा रहल अछि।

राजदेव- फेर किताबेक भाषा बाजए लगलह।

सुनीता- नहि। परिवारमे मनुखक जनम होइत अछि। माए-बाप जनमदाता होइ छथिन। मुदा भऽ की रहल अछि जे या तँ विचारे वा लड़ि-झगैड़ माए-बाप छोड़ि परिवार फुटा लइए। जहिना सोनक सूत मिला कऽ सक्कत जौड़ बनि जाइए। जइसँ भारी-भारी बोझ बान्हल जा सकैए ओइ जौरकेँ उधाड़ि वा तोड़ि एक-एक रेशाकेँ बेरैबते एते कमजोर बनि जाइत अछि जे कोनो काजक नै रहैत। तहिना भऽ रहल अछि।

राजदेव- (मुड़ी डोलबैत...) कहै तँ छह ठीके, मुदा..?

सुनीता- मुदा-तुदा किछु ने। सोझ रस्ता बनि रहल अछि। जे बेटा-माए-बाप, परिवार छोड़ि सकैए ओ समाज, देश-दुनियाँकेँ केना पकैड़ सकैए। जँ से तँ मातृभक्त, पितृभक्त, समाजभक्त, देशभक्त बनि केना सकैए।

राजदेव- (मुड़ियो डोलबैत आ कनडेरीए आँखिए सुनीताकेँ देखबो करैत...) ठीके कहै छह। अच्छा बाल-बिआहकेँ केना-नीक आ केना अधला कहै छहक।

सुनीता- बाल-बिआहक परिस्थिति भिन्न अछि। जे परिवार सम्पन्नताक (आर्थिक) दृष्टिएँ जेते अगुआएल अछि ओ ओते बाल-बिआहसँ दूरो अछि। मुदा जे परिवार जेते पछुआएल (आर्थिक दृष्टिए) अछि ओइमे ओते बेसी छइ।

राजदेव- किए?

सुनीता- अपना सबहक समाजो, परिवारो आ बेकतीओ वैदिक रीति-नीतिसँ बनि चलैत आबि रहल अछि। जइमे ढेरो दाउ-घाउक संग हवो-बिहाड़ि लगैत आएल अछि। बालो-बिआहक पाछू सएह कारण अछि।

राजदेव- कनी बिलगा कऽ कहह।

सुनीता- जिनगीक उतार-चढ़ाव होइ छइ। जेना बच्चाक सेवा माए-बाप करैए तखन ओ अपन जिनगी सम्हारै जोकर नै रहैए। जखन बेटा-बेटी जुआन (कमाइ-खटाइबला) होइत अछि आ माए-बापक लौटानी अबैए। तखन सहाराक जरूरत होइ छइ। जहिना दुनियाँमे मनुखकेँ एबा काल (बच्चा) दोसराक सहाराक जरूरत होइत अछि तहिना जेबोकाल होइत अछि।

राजदेव- (मुड़ी डोलबैत...) हँ, से तँ होइते अछि। हमहीं छी जँ तूँ सभ नै देखबह तँ केतेक दिन जीब।

सुनीता- वएह माए-बाप अपन आचार-विचार निमाहैत बेटा-बेटीकेँ दोसराक अंग (संगी) लगा अपन भार ढील कऽ लैत अपनाकेँ बेटा-बेटीक रीनसँ उरीन हुअ चाहैत।

राजदेव- एते औगता कऽ किए उरीन हुअ चाहैत। जखन कि दुनू अखन आश्रिते अछि।

सुनीता- जैठाम जिनगी जीवैक ने साधन अछि आ ने खोज-खबड़ि लेनिहार तैठाम लोक अपनापर केते भरोस करत। कियो सुखे (सुख रोग भेने) उपास कऽ देवमंदिरमे पूजा करए जाइए तँ कियो दुखे (नै रहने)

साँझक-साँझ, दिनक-दिन उपास करैत भोलाबाबाकेँ नचारी सुनबैए। खाएर छोड़ू। अपन दुख-धंधा सोचू।

राजदेव- तहूँ दुनू माए-धी जा कऽ देख अबिहह।

सुनीता- हकार अबैत तब ने जइतौं। बिनु हकारे...। जँ पुछि दिअए जे..?
(कृष्णानन्दक प्रवेश)

कृष्णानन्द- कक्का, नजैर उतरल (सोगाएल) बुझि पड़ैए। किछु होइए की?

राजदेव- बौआ कृष्ण, केकरा कहबै के सुनत। अपने दुनू गोटेक परिवार अछि, सातपुस्तसँ अपेच्छा अछि। मन रखैबला एकोटा बात नै भेल। तोरा देख कऽ खुशी होइए। मुदा...।

कृष्णानन्द- निराश जकाँ किए बजै छी कक्का?

राजदेव- तीर जकाँ पोतीक बात छेदने अछि। मन कलैप रहल अछि जे आब किछु करै जोकर नै रहलौं आ जखन करैबला छेलौं तखन...।

कृष्णानन्द- की तखन?

राजदेव- की कहबह। एक्के बेर कहि दइ छिअ जे अपन गाछी भुताहि भऽ गेल।

कृष्णानन्द- कनी खोलि कऽ कहबै तखन ने बुझबै। चिक्कारी तँ कविकाठीक भाषा छिऐ। भलेँ उनटे किए ने बुझिऐ।

राजदेव- भागेसर बेटाक बिआह केलक। एते दिन कनियाँ देखैक हकार आँगनमे अबै छेलैन। जाइ छेली आ असीरवादो दइ छेलखिन। कियो तँ अपना भाग-तकदीरे जनम लइए। तइ सूत्रे समाजिक सम्बन्ध तँ छल। मुदा अनका-अनका हकार देलक आ...।

कृष्णानन्द- कक्का, भागेसर भैया कोनो सुखे बेटाक बिआह केलैन।

राजदेव- (औगता कऽ) तँ..?

कृष्णानन्द- केते माससँ भौजी ओछाइन पकड़ने छथिन। भानसो-भातमे दिकते होइ छैन। ई तँ ओही वेचाराकेँ धैनवाद दिऐन जे भौजीकेँ जिआ कऽ रखने छैथ। हमरा अहाँ घरमे होइत तँ टाँग पकैड़ फेकि गंगा लाभ कऽ अबितौं।

राजदेव- जखन समाजसँ टुटि रहल छी तखन...।
(एकाएक चुप भऽ जाइत। आँखि उठा कखनो सुनीतापर तँ कखनो कृष्णानन्दपर दैत। तहिना कृष्णानन्दो कखनो राजदेवपर तँ कखनो सुनीतापर आ कखनो मेघ दिस ऊपर देखैत तँ कखनो निच्चाँ दिस। तहिना सुनीतो।)

सुनीता- बाबा, बाबा!!

(आँखि उठा राजदेव सुनीतापर दऽ पुन: निच्चाँ धरती दिस देखए लगैत। दुनू हाथसँ आँखि पोछैत, भरियाएल अवाजमे...)

राजदेव- बुच्ची सुनीता आ बौआ कृष्ण, दुखे कि सुखे जेते दिनक दाना-पानी लिखल अछि से तँ भोगबे करब। मुदा...।

सुनीता- मुदा की?

राजदेव- आन कियो किए मन राखत मुदा तूँ दुनू गोटे तँ लगक भेलह। तँए किछु कहि दइ छिअ।

कृष्णानन्द- बितलेहे जिनगीक कथा ने इतिहास छी।

राजदेव- हमरा जकाँ बाबाकेँ एते अज-गज नै रहैन। मुदा समाजमे एहेन प्रतिष्ठा बनल रहैन जे जहिना कोनो पाखरि वा इनारक पानि सटल रहैए, तहिना रहैन। खेत-पथार, वाड़ी-झाड़ीसँ काज कऽ आबैथ आ लोटा लेने मैदान दिस विदा होथि। जैठाम जेत्तै कियो भेट जान्हि तेत्तै गामक चर्च उठा बैस जाथि। जेना सौंसे गाम इस्कूले होइ।

सुनीता- की चर्च उठबथिहिन।

राजदेव- से कि बुझल अछि। ताबे हमर उदैओ-प्रलय भेल रहए आकि नहि।

सुनीता- तखन केना बुझलिऐ।

राजदेव- साँझु पहरकेँ दादी अँगनामे बिछान बिछा दइ छेलखिन आ बाबाक खिस्सा कहै छेलखिन। एक दिन पूछि देलिऐन जे बाबी बाबासँ झगड़ो करिऐन?

सुनीता- की कहलैन?

राजदेव- पहिने तँ भभा कऽ हँसली। मुदा जहिना तेल वा दूध हरा जाइ छै जेकरा आँगुर-तरहत्थीसँ हिलोरि-हिलोरि बासनमे रखल जाइए। तहिना दादियो हँसीकेँ हिलोरि-

हिलोरि रखि बजली।

सुनीता- बजैकाल मन केहेन रहैन?

राजदेव- जहिना सूर्यास्तक समए सुरूजक किरिण बोरिया-बिस्तर समेट-समेट समटाइत तहिना दादीक दुनियाँ पाछू छुटि गेलैन। बजली जे, बुढ़ामे आदत रहैन जे साँझु पहरकेँ जे लोटा लऽ कऽ विदा होथि तँ कखन धुरि कऽ अबितैथ तेकर ठीक नहि।

सुनीता- केतए चलि जाइ छेलखिन?

राजदेव- केतए जाइ छेलखिन से दादियोकेँ नै ने कहथिन।

सुनीता- तँए ने झगड़ा होइन?

कृष्णानन्द- नै, दुनू कारण भऽ सकैए।

सुनीता- की?

कृष्णानन्द- जँ चारि घन्टा वोनाएल रहलापर जेते काज भेल ओते जँ परिवारोमे दोहरौल जाए तँ ओतेक समए आरो चाही। जँ ओते आरो समए लगौल जाए तँ परिवारक काज आ

बेकतीगत जीवन (खेनाइ-सुनताइ) प्रभावित हएत।

सुनीता- तखन तँ समाजोक (काज) बातसँ परिवारक सदस्य हटल रहत?

कृष्णानन्द- एक अर्थमे हटल रहबो नीक, आ दोसरमे नहियोँ। बेकती आ समाजक बीच परिवारक सीमा अछि। जहिना लोकक समूह परिवार होइत तहिना परिवारक समूह समाज होइत।

सुनीता- हँ, से तँ होइत, मुदा एक दोसरमे सटल केना रहत। आकि नल-नीलक पाथर जकाँ भँसियाइत रहत।

कृष्णानन्द- जँ भँसियाइत रहत तँ अनेरे हवा-बिहाड़िमे एक-दोसरसँ टकरा-टकरा, फुटि-फुटि पानिमे डुमैत रहत।

सुनीता- तखन, की उपए छइ?

कृष्णानन्द- यएह तँ प्रकृतिक अद्भुत खेल अछि। जेतै दुखक जनम होइत अछि ओतइ सुखोक होइत। सुख-दुख जौंआँ सहोदर छी।

सुनीता- नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छी।

कृष्णानन्द- जहिना धरती अकासकेँ शीतल-गर्म हवा जोड़ि कऽ रखने अछि तहिना मनुख-परिवार आ समाजक बीच अछि।

समाप्त।

शब्द संख्या : 1266

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN : 978-93-87675-39-1

जगदीश प्रसाद मण्डल

मिथिलाक बेटी





मिथिलाक बेटी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित



ISBN : 978-93-87675-37-7

दाम : ₹ 200/-
© श्रुति प्रकाशन
तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

MITHILAK BETI
By Jagdish Prasad Mandal a Play in Maithili Language.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

आमुख

1.

मिथिलाक बेटी नामसँ ई जगदीश प्रसाद मण्डल जीक पहिल नाट्य रचना छी। प्रस्तुत नाटक समस्या प्रधान अछि। मैथिल समाज आ वृहत रूपमे भारतीय समाजमे जाति-पाति तँ छइहे, निष्ठावान कर्मनाथ अपन बेटीक बिआह बिनु दहेजक करता तइ क्रममे दीर्घ कथोपकथनक माध्यमसँ ई देखौल गेल अछि। ई नाटक पठनीय भऽ सकै छइ। विशेषता ई छै जे ई नाटक अपन समाजमे पसरल कुरीतिपर आँगुर रखैत अछि। कर्मनाथ विशेष रूपसँ आदर्श चरित्रक रूपमे उभरल मुदा आशा करै छी जे मंडलजी ग्राम्य जीवनमे रहि कऽ अनेक समस्यासँ ग्रसित आ अनेक भाव स्तरपर जीवित लोक-समाजकेँ अप्पन रचना सभमे अहिना रेखांकित करैत रहता।

रामेश्वर प्रेम, निर्मली, जिला सुपौल।

2.

श्री जगदीश प्रसाद मंडलजीक मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ल, ऐमे आधुनिक समाजिक समस्याक श्री मंडलजी द्वारा नीक चित्रण भेल अछि। आइ समाज दहेजक बिमारीसँ ग्रस्त अछि। एकरा नव जीवन प्रदान केनाइ सभ व्यक्तिक दायित्व अछि। मात्र कर्मनाथे नहि, ऐ समस्यासँ लड़बाक काज सभ लोकक समाजिक धर्म अछि। लेखक अपन भावनाकेँ अभिव्यक्ति मात्र केने छैथ। दिशा स्वयं समाजकेँ तकबाक अछि।

कथा मूलतः मिथिलाक धरतीक उपज अछि। आ ई खाली मिथिलाक नहि, भारतवर्षक समस्या अछि। नाटक विधामे ई कमजोर भलेँ देखा पड़ए मुदा कथोपकथन समाजिक विरुपताकेँ निरुपित करबामे सक्षम अछि। नाटक लेल कहल गेल अछि- नाटक जीवनक अनुकृतिकेँ शब्दगत संकेतमे संकुचित कऽ तकरा सजीव पात्र द्वारा एकटा चलैत-फिरैत सप्राण रुपमे अंकित कएल जाइत अछि। नाटक जीवनक सांकेतिक अनुकृति नहि, सजीव प्रतिलिपि छी।

मण्डलजी मैथिली साहित्यमे सशक्त उपन्यासकार आ कथाकारक रुपमे नवोन्मेष प्राप्त कऽ रहल छैथ। हुनकामे भाव, भाषा, शैली आ मोहाबराक जबर्दस्त जमघट अछि। हमर आकांक्षा अछि जे ओ ऐ तथ्य सभकेँ समन्वित रूप दऽ मैथिली साहित्यक श्री वृद्धिमे सहयोग करैथ।

रामजी प्रसाद मंडल, निर्मली, जिला सुपौल।

अप्पन बात

पहिल पुष्प रहने सफलताक आशा तँ नहि मुदा प्रेरणा आ प्रोत्साहनक तँ अछिए। मैथिलीक फुलवारीकेँ पटबैले मालीक जरूरत तँ अछिए, ऐ आशाक संग मिथिलाक प्रसिद्ध नाटककार श्री रामेश्वर प्रेमजी, अपन अमूल्य समय दए मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ि हर्षसँ भूमिका लिखबाक कष्ट केलैन, तइले आभारी छी।

श्रुति प्रकाशन–दिल्ली–क सहयोग एहेन उर्जा हदैमे भरि देलैन जइसँ फुलवारीमे फूल लगबैक उत्साह दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि। श्रुति प्रकाशनक टीमक संग श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक हंस दष्टि लेल कोनो शब्द शब्दाकोषमे नहि अछि।

सहयोगी सभकेँ साधुवाद।

जगदीश प्रसाद मण्डल

पहिल अंक

(कर्मनाथक डेरा। बहराक कोठरीमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : (घड़ी देख) पौने पाँच बजि रहल अछि, किएक ने अखन धरि बच्चा सभ पढ़ि कऽ आएल। भऽ सकैए जे बाटमे किछु देखए लगल हुअए। ओना हमहूँ आन दिन पाँच बजेक बादे ऑफिससँ अबै छेलौं, मुदा आइ किछु पहिनहि आबि गेलौं। केना ने अबितौं, आन दिन तेते काज रहै छेलए जे ओकरे निपटबैमे अबेर भऽ जाइ छल, मुदा आइ तँ महगीक विरोधमे कर्मचारी सबहक हड़ताल ऑफिसे बन्न कऽ देलक। खाएर जे हौउ, किछुकालमे तँ सभ आबिये जाएत।

(कहि कुरसीपर बैस अखबार पढ़ए लगैत)

(चम्पा आ चमेलीक आगमन। दुनूकेँ हाथमे झोरा। एकटा झोरामे चाउर, दालि, तरकारी आ दोसरमे दूधक डिब्बा, चाह पत्तीक डिब्बा, छोट-छोट पुड़ियामे मसाला, नूनक एकटा पैकेट आ शीशीमे करूतेल।)

चमेली : बजारमे आगि लगि गेल अछि। बाप रे बाप, एना केतौ महगी आबए! (दूधक डिब्बा निकालि) जे वौस कीनैले

जाउ, अग्गहसँ बिग्गह दाम। केना लोक कोनो चीज खाएत? जे दूधक डिब्बा बीस रूपैआमे कीनै छेलौं, आइ अट्ठाइस रूपैआमे देलक। जे चाहपत्तीक डिब्बा (डिब्बा देखबैत) दस रूपैआमे दइ छल ओकर दाम बारह रूपैआ लेलक। कोनो की एक्के-दुइए-टा चीजक दाम बढ़ल, सभ चीजक दाम अकास ठेकल जाइए। तहूमे नोकरिया जिनगी, सभ चीज पाइये हाथे हएत। सालमे एक्को दिन एहेन अवंच नै रहैए जइ दिन केकरो-ने-केकरो तगेदा नहि सुनै छी।

कर्मनाथ : केते अनघोल केने छी। बजैत-बजैत होइए जे बताहि भऽ जाइ। जेतै देखू तेतै महगीक चर्च! बजैत तँ सभ अछि जे देशव्यापी महगी भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहू जे महगी केतए-सँ आएल। ओकरा अबैत कियो ने देखलक। अगर जँ अकासक रस्तासँ हवाइ जहाजपर आएल तँ ओकरा हवाइये फिल्डपर किए ने रोकल गेल। जँ से नै पानिक रस्तासँ आएल तँ पनियाँ-जहाजक बन्दरगाहमे ढुकैये किए देल गेल। जँ सेहो नहि, माटियेक रस्तासँ आएल तँ ओकरा सिमानेपर ने किए रोकल गेल। मुदा से तँ किछु नइ भेल, तखन कोन दोग देने चोर जकाँ महगी चलि आएल? जे एते नमहर देशमे, एते लोककेँ एक्केबेर चद्दैर जकाँ, ओढ़ा देलक..?

चमेली : अहाँ अहिना नून-तेल मिला बातकेँ बतंगर बना बजैत रहै छी। एतबो ने बुझै छिऐ जे बड़का-बड़का लोकक कहब छै जे अधिक उपजाबाड़ी भेलासँ चीजक दाम कम होइ छै आ कम भेने दाम बेसी होइ छइ। जइसँ दामक घटती-बढ़ती होइ छइ। हरिदम रेडियोओ मे कहै छै आ

अखबारोमे लिखै छै जे खेतो आ करखन्नोमे बेसी पैदावार भेल हेन।

कर्मनाथ : तखन ई महगी किए भेल?

(माइक बाँहि पकैड़, डोलबैत चम्पा)

चम्पा : गे माए, तूँ जे कहलीही उ सोझका बात कहलीही जे हमहूँ हाइये स्कूलसँ पढ़ैत एलौं। मुदा अइकें तरमे असल बात अछि। बड़का-बड़का पाइबला वेपारी सभ जे अछि ओ खेतोक उपजाकें आ करखन्नोक वौसकें कीनि लइए आ ओकरा नमहर-नमहर गोदाममे जे माटिक ऊपरो आ माटिक तरोमे बनौने अछि तइमे डिक दइए। जइसँ वौस घेरा जाइए। घेरेलासँ जखन वौस निंग्हैट जाइए, तखन जा कऽ ओ सभ-वेपारी कनी-कनी करि कऽ निकालि-निकालि महग करि कऽ बेचैए।

चमेली : (मुँह चमकबैत) गोदाममे जे वौस नुकबैए ओकरा जनता आ सरकार नै देखै छइ?

चम्पा : ऊँह! गे तेहेन ठीम रखै छै जे लोकक कोन बात जे कानूनो ने देखै छइ। ओ सभ करैत कि अछि जे बड़का-बड़का पनियाँ-जहाजमे समान लादि कऽ समुद्रमे ठाढ़ कऽ दइए। तेतबे नहि, जे वौस माटिक ऊपरको गोदाममे रहै छै, ओकरा तेहेन कानूनी पेंच लगा दइए जे ओ देशक छी आकि विदेशक से बुझबे ने करबीही।

चमेली : (पतिसँ, कर्मनाथ दिस देख) अहाँ हाकिम छिऐ कि माटिक मुरूत। मोटका-मोटका जे कानूनक किताब सभ रखने छिऐ ओ झींगुर खाइ-ले। जखन कानून हाथमे अछि, पुलिस अछि, जहल अछि तखन ओकरा सभकें छुट्टा खेलाइले किए छोड़ि देने छिऐ। पैछला खेप–सात

दिन पहिने–अढ़ाइ साएमे जेते समान भेल रहए ओतबे समान कीनैमे आइ तीन साए लागल! अहाँ नोकरिया छी, अहूँक दरमाहा अहिना बढ़ैए?

कर्मनाथ : केते खापैड़क मक्कै जकाँ, भरभड़ाइ छी। होइए जे हम खूब बजन्ता छी।

चमेली : उलटे चोर कोतबालकें डाँटए! अहीं हमरापर आँखि लाल-पीअर करै छी। एतबो आँखि उठा कऽ नै देखै छिऐ जे अहाँकें जखन एतेक दरमाहा अछि तखन ई रामा-कठोला अछि जे बेटी बिआह करै-जोकर भेल जाइए मुदा हाथमे एकोटा फुटल कौरियो ने अछि। अहींक ऑफिसमे जे कम महिना पबैबला संगी सभ छैथ, हुनका सभकें की दशा होइत हेतैन। तहूमे कम महिना पौनिहारकें धियो-पुतो बेसी होइए। जइसँ परिवारो नमहर रहै छइ।

(चमेलीक बातक गम्भीरताकें आँकैत कर्मनाथ तीन बेर चमेलीकें ऊपरसँ निच्चाँ धरि देख, नमहर साँस छोड़ैत।)

कर्मनाथ : बड़ सुन्नर बात अहाँ बजलौं मुदा हम तँ पढ़बे केलौं नोकरीए करैले। जे आइ बुझै छी, भूल भेल। जेना हम जमीनबला परिवारक छी तेना हमरा खेतीक सम्बन्धमे पढ़क चाही छल। जेतेक धन माटिक तरमे साले-साल बिला जाइए ओकर चौथाइयो नोकरीमे नइ कमाइ छी। तेतबे नहि, जाधैर सभ अपन-अपन गामक सम्पैतकें नहि जगौत ताधैर आन ठामसँ जे सम्पैत औत ओ या तँ भीख बनि कऽ औत वा कर्जा बनि कऽ। खाएर जे हौउ। हँ, तँ कहै छेलौं जे लगले तँ हम्मर दरमाहा बढ़त नहि। तखन तँ दुइए-टा उपाय दिवस गुजारैले अछि। पहिल अछि जे

जेहेन चीज-वौस कीनै छेलौं, तइसँ कनी झूस माने दब कीनू चाहे जेहेन कीनै छेलौं तेहने कनी कम करि कऽ कीनू। जँ से नइ करब तँ पाओल जाएब। कर्जा तरमे पड़ब। अइले एते आमील किए पीबै छी। महगी कि कोनो हमरे-अहाँटा-ले भेल हेन, जे एते आफन तोड़ै छी। आकि सभले भेलैए। जहाँ धरि हाकिमक बात अछि, हाकिमक मतलब ई नहि ने अछि जे जे मन फुरत से कऽ देबइ। महगी रोकब हमरा सबहक बुत्ताक बात छी जे रोकि देबइ। जेकर हम नोकरी करै छिऐ ओकरे काज छिऐ महगी आनब।

चमेली : तखन झुठे एते लाम-काफ किए देखबै छिऐ?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) दरमाहा तरे देखबै छिऐ। जे होइ छै ओ देखियौ। जखन अकासे फाटल अछि तँ केते सीबै। तखन तँ मेघ तरकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दऽ 'साहोर-साहोर' करैए। (चम्पासँ) बुच्ची, चीज-वौस घरमे रक्खू। (दुनू झोरा उठा चम्पा जाइए) अच्छा एकटा बात कहू जे आन दिन बजारसँ सबेरे अबै छेलौं, आइ किएक एते अबेर भेल?

चमेली : (अकचकाइत) से नइ बुझलिऐ।

कर्मनाथ : कहबै तब ने बुझबै। हम कि कोनो भगवान छी जे बिनु सुननौं सुनि जाएब।

चमेली : परसूका गप छिऐ। बजारमे एक गोरेक बेटीक बिआह छेलइ। बनारससँ बरियाती आएल छेलइ। बरियातियो लाजवाब छेलइ। बरियातीमे मौगी-मरद सभ रहइ। खूब निम्मन बैण्डपार्टी सेहो छेलइ। बैण्ड-पार्टीमे छौड़हरे

कौरनेटिया रहइ। कहाँदन ओकरा मोछक पम्ह अबिते छेलइ।

(बिच्चेमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : कोन खेरहा पसारि देलिऐ!

चमेली : एँह, एतबेमे औगताइ छी। अस्सल बात तँ आब अछि। खाली सुनैत रहियौ। बड़ी बजंत्री ओ छौड़ा छेलइ। बैण्ड-पार्टीक संग बरियातियोक मौगी-मरद आ बजारोक छौड़ा-छौड़ी सभ खूब नाचल। ओही कौरनेटियाक संग बजारमे रस्ताक पछबारि भाग जे बड़का गद्दी छै, ओकर बेटी चलि गेलइ।

कर्मनाथ : तब तँ ओकरा बापकें बेटीक बिआहमे एक्को-पाइ खरचो ने पड़लै!

चमेली : अहाँ तँ अहिना आगुए-सँ लोइक लइ छिऐ। सुनियौ, कहाँदन ओ छौड़ा नोकरी करैए। ओइ छौड़ीकें माए-बाप केतबो रोकलकै मुदा ओ किन्नौं नहि मानलक। ओकरे संगे चलि गेल।

कर्मनाथ : ओ लड़की केहेन छेलइ?

चमेली : वएह सभ बजै छेलै जे ओ-लड़की कौलेजोमे पढ़ै छेलै आ नाचो सिखै छेलइ। (अपशोच करैत) से देखियो जे ओइ छौड़ीक गुजर ओइ कौरनेटियाक संग केना चलतै! कहाँ ओ धनी-मनीक बेटी आ कहाँ ओ गरीब घरक कौरनेटिया...।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) गुजर किए ने चलतै। एकटा बजंत्री अछि दोसर नचनियाँ। दुनू मिलि कऽ एकटा पार्टी ठाढ़ कऽ लेत आ गामे-गाम नाचत।

(तैबीच फुलेसर आ जुहीक आगमन। दुनूक हाथमे किताब) (बेटासँ) बौआ, आइ बीस तारीक भऽ गेल। एक तारीककेँ गाम चलब। तैबीच तूँ दुनू भाए-बहिन अपन-अपन स्कूल कौलेजमे दरखास्त दऽ कऽ दू मासक छुट्टी लऽ लिहह।

फुलेसर : बाबू, ऐगला माससँ एक घन्टाक स्पेशल क्लास चलत। ओ तँ छुटि जाएत। तँए, मन होइए जे हम एतै रहि जैतौं।

कर्मनाथ : विचार तँ बड़ सुन्नर छह, मुदा असगर रहब नीक हेतह (बिच्चेमे चमेली पतिसँ)

चमेली : अहाँ तँ दोसर गप करए लगलौं। एकटा गप सठबे ने कएल आ दोसर लाधि देलिऐ।

कर्मनाथ : अहाँ अपना बातकेँ थोड़े पछुआए देबइ। हमहीं अपना बातकेँ पाछू कऽ लइ छी। बाजू...।

चमेली : हँ तँ बरियातीक गप कहै छेलौं ने। उ तँ कौरनेटियाक कहलौं। अहूसँ चोखगर गप आब सुनू।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) ओइमे कनी तेतरिक रस मिला देबइ।

चमेली : अहूँ तँ हद छी। स्त्रीगणक बातकेँ कोनो मोजरे ने दइ छिऐ।

कर्मनाथ : छुच्छे मोजर देने की हएत। फड़बो करए तब ने।

चमेली : बुझैमे अहूँ बिहाड़िये छी। नट्टा होइए पुरुख आ कहियौ मौगीकेँ। अनरनेबा गाछ देखलिऐ हेन। मरदनमा गाछ खाली फुलेबे करैए, फड़ै नइए। मुदा मौगियाही गाछ जेते फुलाइए तेते फड़बो करैए। हँ, तँ सुनू बरियातीक दोसर गप। बरियाती आबि दुआर लगलै। दुआर लागि जखन बैसकीमे बरियाती बैसल तँ बरक बाप कहलकै जे पहिने दारू पीब डान्स करब तेकर बाद बिआहक कोनो विधि-

बेवहार हएत। मुदा घरवारी ओ बात मानैले तैयारे नइ भेल। दुनूक (बरियाती आ घरवारीक) बीच रक्का-टोकी शुरू भेल। दुनूमे सँ कियो पाछू हटैले तैयारे नहि। ओमहर बैण्ड बाजा गड़गड़ाइते रहए। दुनूक बीच कहा-कही होइत-होइत पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ी होइते पटको-पटकी आ मुक्को-मुक्की शुरू भेल।

कर्मनाथ : (हँसैत) बाह-बाह, तखन तँ कुरथी दौन हुअ लगल हएत।

चमेली : अहाँ तँ बाजै ने दइ छी, बिच्चेमे लोइक लइ छिऐ। पटका-पटकी करिते टेन्टक बाँस घीचि-घीचि एक-दोसरकेँ मारए लगल। केतेकेँ कपार फुटलै। तैबीच हड़हड़ा कऽ टेन्ट खसल। सभ ओइ तरेमे झँपा गेल। केकरो निकलिये ने होइ। जहिना महजालमे माछ फँसैए, तहिना।

कर्मनाथ : मरदे-मरदी सभ रहै आकि मौगियो सभ रहइ?

चमेली : सभ रहै की। केतए के ओंघराएल रहै से कोइ देखै। बड़ीकालक पछाइत गौआँ सभ समियाना हटौलक। समियानाक तरमे जेते गोरे रहै सभ गरदासँ नहा कऽ गरदे-रंगमे रंगि गेल। पी कऽ सभ बुत्त रहबे करए। टगैत-टुगैत सभटा बरियाती निफाहेमे जा-जा बैसल। थोड़े खान जब हवा लगलै तब बारह गोरे (बरियाती) अपन-अपन बैग-एटैची लऽ-लऽ जाइले तैयार भऽ गेल। घरवारी सभ गोढ़ियाबए लगलै। मुदा कियो मानैले तैयारे नहि भेल।

कर्मनाथ : तब तँ वेचारे बरियाती सभकेँ नै सुतरलै।

चमेली : एँह, एतबे भेलइ। जेते बजरूआ पौकेटमार सभ रहै सभ सबहक (बरियातीक) रूपैयो, मोबाइलो आ आनो-आनो चीज छीनि कऽ निकैल गेल। रौतुका मौसिम रहबै करइ।

कर्मनाथ : बरियातीक सोंखैर ओराएल कि आरो अछि।

चमेली : एतबेमे औगता गेलौं। अच्छा, एकटा आरो कहि दइ छी। बरियाती सभ तेते छुड़छुड़ी आ फटाका अनने रहै जे दुआरपर पहुँचते, गदमिशान उठा देलक। लड़कीक नन्ना ओहीकाल पैखाना गेल रहैथ। एकटा बड़का फटाका ओइ पैखाना कोठरीक देबालमे एकटा बरियाती मारलक। से कहाँदन ओ फटाका (बम) गुंगुंआ कऽ तेते जोरसँ अवाज केलकै जे ओ वेचारे धड़फड़ा कऽ भागए लगला। केबाड़ बन्न रहइ। वेचारेक होश तँ उड़ि गेल रहैन, देबालेमे टकरा गेला। कपारो फुटि गेलैन आ चोटसँ चोन्ह आबि गेलैन। चोन्ह अबिते तिलमिला कऽ खसला कि दहिना पएर पैखानाक नालीमे फँसि गेलैन बड़ीकालक पछाइत जखन दोसर गोरे पैखाना जाए लगला कि केबाड़ बन्न देखलखिन। थोड़ैकाल ओतै ठाढ़ रहैथ, मुदा कोनो सुनि-गुनि नै बुझि हल्ला केलखिन। तखन केबाड़क छिटकिल्ली अलगौल गेल। केबाड़क छिटकिल्ली अलगैबते, बुढ़ाकेँ अचेत-भेल पड़ल देखलखिन।

कर्मनाथ : (हँसैत) तब तँ बिआहक संग सराधोक जोगार लागि गेलैन।

चमेली : अहाँ तँ अहिना अनका दुखकेँ दुख ने बुझै छिऐ।

कर्मनाथ : हम की अहाँ जकाँ अनकर सुख देख कऽ नाचै थोड़े छी। सुख-दुखक बीच जिनगीक रस्ता छै, तँए जिनगी जीबैले

सुख-दुख अँगेज कऽ चलए पड़ै छइ। जे यात्री सुखमे मगन भऽ जाएत आ दुखमे विचलित ओ जिनगीक यात्रा केना सफर कऽ सकैए। छोड़ू दुनियाँदारीक गप। अपन जिनगीक गप करू। (चम्पाक आगमन) भने चम्पो आबिये गेल।

फुलेसर : दू मासक छुट्टी लऽ कऽ की करबै, बाबूजी?

कर्मनाथ : चम्पाक बिआह करैक विचारसँ गाम जाएब। मुदा तूँ जे कहने छेलह जे स्पेशल क्लास चलत तँए रहि जाइक विचार होइए। बड़ सुन्नर विचार छह, मुदा ई बात बुझए पड़तह जे हर मनुखकेँ पहिल कर्तव्य होइत जिनगीक रक्षा। जीबैत रहबह तखने बुझि पड़तह जे दुनियाँ छै, नइ तँ किछु नहि। पढ़ैक खियालसँ तोहर विचार नीक छह। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअ। हम अफसर छी तँए विशेष अनुभव अछि। अखन अपन परिवारक बीच छी तँए बजैत एक्को पाइ असोकर्ज नै भऽ रहल अछि। जँ अखन सरकारक कुरसीपर रहितौं वा लोकक बीच तँ नइ बजितौं।

जुही : बाबूजी, केतेकाल सरकारी आदमी रहै छिऐ?

कर्मनाथ : बाउ, जे सवाल पुछलह, ओकर उत्तर साधारण नै अछि। अखन परिवारक काजक विचार करैक अछि, तँए तोरा सवालक जवाब नीक नहाँति नै दऽ सकबह। निचेनमे दोसर दिन बुझा देबह। अखन थोड़ेक इशारामे कहि दइ छिअ। अखन जे अपना देशक स्थिति अछि, ऐमे कियो सुरक्षित नै अछि। जेना सभ दिन अपहरणक घटना सुनै छहक। घटनामे की सुनै छहक जे पाइक दुआरे अपहरण (फिरौती) होइ छइ। ईहो होइ छइ। मुदा एतबे नहि होइ

छइ। आँखि उठा कऽ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे बिनु पाइयोबलाक अपहरण होइ छइ। तेतबे नहि, पाइबला तँ पाइ दऽ कऽ जानो बँचा लइए मुदा बिनु पाइबलाकेँ जानक अपहरण होइ छइ।

जुही : ई बात लोक कहाँ बजैए।

कर्मनाथ : लोककेँ अखबार आ रेडियो पढ़बै छइ। तँए जे अखबारमे पढ़ैए से दोसरकेँ पढ़बैए। मुदा अस्सल बात ऐसँ आगू अछि। जे थोड़-थाड़ कहियोकाल रेडियोओ आ अखबारो कहियो दइए आ बेसी नहियेँ कहैए। हँ, तँ कहै छेलियह जे अपहरण भेलापर बिनु पाइबलाक जान नहियेँ बँचैए। तँए, ई बात बुझए पड़तह जे के केकर जान लइले, खून पीबैले तैयार अछि से कहब कठिन। (बेटासँ) तूँ कहबह जे अहाँ तँ गलत काज कहियो ने केलौं आ ने करै छी, तखन हमरा किएक किछु हएत। मुदा ऐ सवालक जवाब बुझैले ऐ बातपर नजैर देबए पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राति होइए, धनिकक गरीब आ सुखक विपरीत दुख होइए, तहिना जखन एकरे उलटा कऽ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राति होइए तहिना रातियोक विपरीत दिन होइए। तहिना धनिको आ सुखोक होइ छइ।

जुही : बाबूजी, हम ई बात नै बुझि सकलौं जे विपरीतक माने की?

कर्मनाथ : बाउ, अखन हम दोसर काजक गप करए चाहै छी, तँए अखन तोरा प्रश्नक उत्तर नीक जकाँति नै दऽ सकबह। मुदा तोरा जे शंका भऽ रहल छह, ओ हमहूँ बुझि रहल छी। अखन एतबे बुझह जे दिन-राति प्रकृतिसँ जुड़ल

अछि, तँए ओ हेबे करत। एक-दोसरक विपरीत रहबे करत। मुदा धनीक-गरीब आ सुख-दुख से नहि छी।

जुही : बाबूजी, अहाँ जे कहलिऐ तइसँ हमर मन नै मानलक।

कर्मनाथ : (जुहीक बात सुनि कर्मनाथ मने-मन सोचए लगला जे जखन हाइ स्कूलक बच्चाकेँ हम संतुष्ट नै कऽ सकलौं, तखन परिवार आ समाज तँ बड़ नमहर होइए। सोचि-विचारि) बाउ, एकठाम भोज भेलइ। भोज नै भेलै, पाँच गोरे आन मुलुकसँ एक गोरे ऐठाम एलखिन। आन मुलुकक रहने नमहर पाहुन भेलखिन। ओ घरवारी (जिनका ऐठाम आएल रहैन) खाइ-पीबैक नीक ओरियान केलैन। आन मुलुकक पाहुन बुझि अपनो दस समांगकेँ खाइक नोत देलखिन। खाइक सभ बरतन (थारी, लोटा, गिलास, बाटी, चम्मच) सोनाक रहइ। खेला-पीलाक पछाइत घरवारीक अपन एकटा समांग एकटा चम्मच चोरा कऽ जेबीमे रखि लेलक। घरवारी देख लेलखिन। देखला पछाइत घरवारीक मनमे हुअ लगलैन जे जँ कहीं पाहुनो सभ देख नेने होथि। मुदा दोसर दिस अपन मुलुक आ समांगक प्रश्न छेलैन। असमंजसमे वेचारे पड़ि गेला। तत्-मत् करैत ओ घरवारी एकटा मैजिक केलैन।

जुही : खाइये कालमे मैजिक केलैन।

कर्मनाथ : हँ। आगू सुनह। मैजिक ई केलैन जे कहलखिन- जिनका जेबीमे जे वस्तु अछि से हम देखै छी। सभकेँ आश्चर्य भेलैन। अपन समांग दिस इशारा करैत कहलखिन जे हुनका जेबीमे एकटा चम्मच अछि। जइ समांगक नाओं कहलखिन, ओ भड़ैक उठला। दोसर गोरे, जेबीमे हाथ

दऽ चम्मच निकालि टेबुलपर रखि देलखिन। तँए बाउ, तूँ जे प्रश्न केलह ओ अहूसँ नमहर मैजिक अछि। आब तूँ चुप रहह। आगूक गप बढ़बए दएह।

जुही : भैयाक सवालक जवाब अधखड़ुऐ रहि गेल छैन।

कर्मनाथ : बौआ, समए एहेन परिस्थिति पैदा कऽ देलक अछि जे कियो अपनाकेँ सुरक्षित नै बुझैए। सचमुच ऐछो नहि। अखन एकटा अपहरणक चरचा केलियह। एहेन-एहेन अनेको अछि। एक राज्यक लोक दोसर राज्यबलाकेँ दुश्मन बुझैए। आ दुश्मनक संग जेहेन बेवहार होइ छै, से करबो करैए। तेतबे नहि, एक सम्प्रदायबला दोसरकेँ दुश्मन बुझैए। तहिना एक जातिक लोक दोसर जातिकेँ बुझैए।

जुही : तेना ओझरा-पोझरा कऽ कहलिऐ जे हम किछु बुझबे ने केलौं।

कर्मनाथ : अपन देश विभिन्न राज्य, विभिन्न सम्प्रदाय आ सैकड़ो जातिमे बँटल अछि। ऊपरसँ सभ कहैए जे हम सभ एक देशक बासी छी। तँए, मिलि-जुलि कऽ रहक अछि। मुदा से थोड़े अछि। एक राज्यबला दोसर राज्यबलाकेँ मारै-पीटै, बहु-बेटीक इज्जत लुटै, कमाएल पाइ छीनैक पाछू लागल रहैए। तहिना आरो सभ अछि।

जुही : तैयो अहाँ ओझराइले बात कहलिऐ।

(एक टकसँ जुहीपर नजैर राखि कर्मनाथ कनीकाल गुम्म रहि)

कर्मनाथ : बाउ, अखन धरि तूँ सभ शहर-बजारमे रहलह, तँए नै देखै छहक। हमरा तँ गमैया लोक सभसँ गप-सप्प होइए किने। सुनह, गाम सभमे की होइ छै; एक जातिक लोक

जे बुतगर अछि, दोसर जातिक लोकक–जे अब्बल अछि–बहु-बेटीकेँ दिन-देखार इज्जत लुटैए। तहिना एक सम्प्रदायबला दोसर सम्प्रदायबलाकेँ करैए।

फुलेसर : (नमहर साँस छोड़ैत) बाबूजी, जे बात अहाँ आइ बिकछा कऽ कहलिऐ, ओइ बात दिस हम्मर नजैर आइ धरि नै गेल छल।

कर्मनाथ : अगर जँ अखन धरि तोहर नजैर ऐ बात दिस नहियेँ गेल छेलह तँ ओहो कोनो बड़ भारी गलती नहियेँ भेल। किएक तँ अखन धरि तूँ किताबक बीच रहलह, दुनियाँ दारीक बात थोड़े बुझै छहक। मुदा एकटा बातपर हरिदम आँखि-कान ठाढ़ करि कऽ राखए पड़तह जे सिरिफ किताबेक ज्ञानसँ जिनगी नै चलैए। जिनगी-ले दुनू ज्ञानक–किताबो आ बाहरियो ज्ञानक–जरूरत होइए।

फुलेसर : बाबूजी, अखन देखै छिऐ जे छोटका स्कूलक विद्यार्थीसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक विद्यार्थी, सिनेमा आ खेल-कूदक सभ बात जनैए मुदा अपन परिवार, समाज आ वंशक विषयमे किछु ने जनैए। बहुत दिनसँ मनमे अबैए जे अपन परिवारक सम्बन्धमे अहाँसँ पुछी। मुदा समैक एहेन उटपटांग रूटिंग बनि गेल अछि जे पुछैक गरे ने लगैए।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) अपनो ई इच्छा दस बरख पहिनेसँ मनमे अछि, किएक तँ ऐ शरीरक कोनो ठेकान नै अछि। कुम्हारक बनौल माटिक काँच बरतन जकाँ मनुक्खोक शरीर अछि।

(बिच्चेमे)

चमेली : बेटा फुल, एकटा बात आरो जोड़ि दहक जे दू परिवार, दू समाज आ दू वंशक योगसँ नव परिवारक उदय होइए। तँए, दुनूकेँ जानब जरूरी अछि।

कर्मनाथ : (हँसैत) हँ तँ पहिने अहीं परिवारक खेरहा कहै छी। पुरुष-नारीक संयोगसँ नव मनुखक जन्म होइए। एकर अतिरिक्त जे सभ अछि ओ बाहरी छिऐ, ऊपरी छिऐ। तँए, अखन एतबे कहब। मुदा हमरा संग जे अहाँक बिआह भेल, ओ बच्चा सभकेँ जरूर कहि देबइ।

जुही : (थोपड़ी बजबैत) पहिने यएह कहियौ बाबूजी। तखन आन बात कहबै।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत पत्नीसँ) हम अहाँ छोड़ि बच्चा सभकेँ कहै छिऐ। तँए, बीचमे रग्गड़ नइ ने ठाढ़ कऽ देबइ?

चमेली : (मुँह चमकबैत) हम बड़ रगड़ी छी किने!

कर्मनाथ : अपना की बुझि पड़ैए। अहीं सन लोकक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे नाक नै रहैत तँ की सभ ने खेइतौं तेकर कोनो ठीक नहि।

चमेली : छुछुनैर होइए पुरुख आ दुसियौ मौगीकेँ।

कर्मनाथ : पुरुष की छुछुनैर होइए?

चमेली : बजार जाइ छी तँ देखै छिऐ जे जहाँ पुरुख कोनो स्त्रीगणकेँ देखत कि अनेरे ओकर जाँघक दिनाइ चुलचुलाए लगै छइ।

कर्मनाथ : अहाँ कोनो डाक्टर छी जे दिनाए देख दबाइ सोचए लगै छी। अहाँ दिनाए देखै छिऐ केना?

चमेली : आँखि छी। ओकरा पकैड़ कऽ रखबै से हएत।

कर्मनाथ : अच्छा बुझि गेलौं। अहूँकेँ अपन बिआहक बात सुनैक मन अछि, तँ सुनै जाउ। जखन हम बी.ए. पास केलौं,

तखन बाबूजी बिआह करैक चर्च चला देलैन। सभ दिन दू-चारि कन्यागत आबए लगला। ता हम दरभंगेमे रहैत रही। एमहर बाबूजी एकठाम बिआहक बात पक्का कऽ लेलैन। जे हम पछाइत बुझलिऐ। कहाँदन ओ कन्यागत भरिपोख द्रव्य आ कन्याक खोंछिमे बीस बीघा जमीन दइले तैयार रहथिन। मुदा अन्तिम बात हमरेपर अँटकल रहए। जेठ मास। गोटे-गोटे गाछमे गोटि-पँगरा आम फड़ल रहै नहि तँ नहियेँ जकाँ फड़ल रहए। दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगइ। जेना बुझि पड़ै जे खेत सभमे आगिक चिनगारी जकाँ नाचि रहल अछि। हम खा कऽ दरबज्जेक ओसारक कोठरीमे रही। ओसारक दुनू भाग–उत्तरो आ दछिनो–दूटा कोठरी बनल रहै आ बीचमे खाली रहइ। ओइ खाली ओसारमे एकटा मोथीक सोंफ माने नमहरका बिछान बिछौल रहै छेलइ। सतासीक बाढ़िमे ओ दरबज्जा खसि पड़ल। करीब बारह बजे तोहर नन्ना आबि कऽ, ओइ सोंफपर चारूनाल चीत भऽ कऽ ओंघरा गेला। ओंघरेलापर जे बिछान खड़बड़ेलै तँ हमहूँ कोठरीसँ बहरेलौं, तँ देखलिऐ जे एक गोरे दुनू बाँहिकेँ मोड़ि माथ तरमे नेने आँखि मूनि कऽ पड़ल छैथ आ कनी हटा कऽ मत्थे सोझे एकटा बटुआ सेहो रखने छैथ।

जुही : बटुआ केहेन होइ छै, बाबूजी?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) बटुआ कपड़ाक बनै छइ। दरजी सभ बनबैए। कोठरीनुमा ओइमे हन्ना सभ बनल रहै छइ। जेकरा लोक डाँरक डोराडोरिमे बान्हि कऽ रखैए। ओइमे अमलोक वस्तु आ पाइयो-कौरी रखैए। हमरो हरल ने फुरल, ओतै बैस कऽ बटुआ उठा देखए लगलिऐ। एँह,

की कहबह अजीव खजाना बटुओ होइए। जहिना लोक पीढ़ी, केबाड़ आ सन्दूक सभमे रंग-बिरंगक चित्र बनबैए तहिना ओइ बटुआक ऊपरमे एकटा इनार बनौल रहए। ओइ इनारपर पाँचटा जनिजातिक चित्र बनौल रहए। एक गोरे इनारमे डोल खसबैत रहए। दोसर उग्हैन पकैड़ डोल ऊपर करैत रहए। तेसर काँखतरमे घैल रखने छल। आ बाँकी दुनू इनारक दुनू भाग ठाढ़ भऽ कऽ बाँहि फरका-फरका झगड़ा करै छल।

फुलेसर : इनारो-पोखैरमे लोक झगड़ा करैए?

कर्मनाथ : (ठहाका मारि) हौ, इनार-पोखैर तँ स्त्रीगणक लड़ैक अखड़ेहे छी (पत्नी दिस देख, मुड़ी डोला हँसि) उठा-पटक तँ स्त्रीगण कम करैए मुदा गरिखर बेसी होइए। सात पुरखाक नाओं आ सातो पुरखाकेँ कोन गारि केकरा लगतै, से सभकेँ बुझल रहै छइ।

चमेली : (मुँह चमकबैत) इनार-पोखैर ढाठैए पुरुख आ झगड़ाउ होइए मौगी! (मुड़ी डोलबैत) निरलजकेँ ने लाज पेट भरला से काज! पुरुख नीक रहतै तँ मौगी अधला भऽ जेतै की!

फुलेसर : बटुआ जे उठौलिऐ से ओ नै बुझलैन?

कर्मनाथ : (उदास होइत) ओ केना बुझितैथ। ओ कोनो रौदक जरल रहैथ, ओ तँ जिनगीक ठोकरसँ घाइल बटोही रहैथ। चिन्ता आ दुखक अथाह समुद्रमे डुमल छला। जइसँ निकलैक कोनो रस्ते ने देखैथ।

जुही : बटुआमे की सभ रहैन?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) जखन बटुआक डोरा दुनू हाथे पकैड़ खोललिऐ कि भक-दे एक्केबेर नअटा मुँह बाबि देलक।

नबो हन्नामे नअ रंगक वौस छल। पहिल हन्नामे नोइसिक डिब्बा रहइ। नोइसिक डिब्बाकेँ उठबिते गमैक उठल। गमक देख हमरो मन भेल जे कनी निकालि कऽ नाकमे लगा ली मुदा फेर मनमे आएल जे नाकमे नोइस लगाएब तँ छींक हेबे करत। जँ कहीं जोरसँ छिक्का भेल आ ओ आँखि खोललैन तँ देखिये जेता, तँए नोइस नै लगेलौं।

फुलेसर : नोइस नै लगेलिऐ?

कर्मनाथ : हँ, लगौलिऐ। पाछू। दोसर हन्नामे छलिया सुपारी रहइ। शुद्ध कालापानी, चारिटा। खूब नमहर-नमहर। तेसर हन्नामे पानक पनबट्टी। चारिममे दूटा जरदाक डिब्बा। एकटा हरिशंकर काली-पत्ती आ दोसर पान साए नम्बर-पीली पत्ती। पाँचममे चानीक रूपैआ रहइ। ओ नीक जकाँति नै देखलिऐ। मुदा कम्मे बुझि पड़ल। छठममे लंग-इलायची छेलइ। सातममे बिलैंती तमाकुल, आठममे एकटा चुनौटीमे चून आ दोसर शीशीमे बुकल खएर आ नवममे रामपट्टीक बनौल एकटा सरोता रहइ। नबो हन्नाकेँ देख कऽ नोइसिक डिब्बासँ कनी नोइस निकालि, चुटकीमे रखलौं। बटुआ बन्न करि कऽ रखि नाकमे नोइस लगेलौं। नोइस लगैबते खूब जोरसँ छिक्का भेल। जहाँ छिकलौं आकि ओ फुर-फुरा कऽ उठि बैस रहला। हमरा नाकमे सुरसुरी लगल छल तँए नाक मलैत रही।

फुलेसर : नाना किछु बजला नहि?

कर्मनाथ : ने ओ किछु बाजैथ आ ने हम किछु पुछिऐन। हुनक बगए आ शरीरक रूप देख हम्मर बोली बन्न रहए। मनमे ढेरो रंगक सवाल सभ उठैत रहए। जहिना कोनो राही-

बटोही बिनु खेने-पीने रस्ता-बाट चलैत रहैए, मुदा रूकैक नाओं नै लइए तहिना बुझि पड़ल। बड़ीकालक पछाइत, मनकेँ असथिर करैत पुछलयैन, अपने केतए रहै छी, नीक जकाँति नै चीन्हि रहल छी? आँखिक नोर पोछैत ओ बजला- बौआ, अहाँ अखन बच्चा छी, तँए हम अपन सभ बात तँ नहियेँ कहब मुदा एते जरूर कहब जे जइ धनुषकेँ तोड़ि राम वीर भेला, ओइ धनुषकेँ मिथिलाक बेटी-सीता बामा हाथे उठा बाहरै-नीपै छेली। ओइ मिथिलाक आइ एते पतन भऽ गेल अछि जे बेटीक हाथ पकड़निहार, बिना रूपैआ नेने कियो ने अछि।

फुलेसर : (चौंक कऽ) बड़ भारी बात कहलैन, बाबूजी?

(चमेली, चम्पा आ जुहीक आँखिमे नोर आबि गेल)

कर्मनाथ : हमर करेज दहैल गेल। आँखि भारी भऽ गेल। मुँहक बकार बन्न भऽ गेल। हम्मर आँखि कखनो हुनक मुँह देखैत तँ कखनो बगए। तखने पितोजी एला। पिताजीकेँ तोहर नन्ना कहलखिन जे एकटा कूल-शील कन्याक भार उतारि देल जाए। जैपर पिताजी तुरूछ भऽ कऽ जवाब देलखिन जे कूल-शील लऽ कऽ हम धो-धो चाटब। द्रव्यक जुग छी। टका धरम टका करम छी। अहाँ अपन बेटीक प्रति केते खरच करए चाहै छी से बाजू। ..जहिना पानि बरफ बनैत, तहिना हम्मर कोमल ह्रदए कठोर बनए लगल। मनमे अन्हर-बिहाड़ि उठए लगल। मुदा चुप रही। तोहर नन्ना कहलखिन, हम्मर हालत पाइ-कौरी खरच करै-जोकर नइ अछि। अपनेक पएर पकैड़ कहै छी जे एकटा मुइल बापक बेटीक भार उतारि देल जाए। द्रव्यसँ तँ अपनेक इच्छापूर्ति हम नहियेँ कऽ सकब, तखन

एकटा नोकरनी परिवारमे जरूर देब। हुनकर बात सुनि पिताजी उठि कऽ बाड़ी दिस विदा भऽ गेलखिन। हमरा हुअए जे बोम फारि कानए लागी। मनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक। एक दिस पिता, दोसर दिस निरीह कन्याँ...।

फुलेसर : नाना बैसले रहलैथ कि उठि कऽ चलि गेला?

कर्मनाथ : बैसले रहलैथ। उठैक साहसे ने होइन। मुँह करिछौन भेल जाइत रहैन। लगले-लगले हाफी करैथ। मिरमिराइते हम पुछलयैन- अपने केते खरच करए चाहै छिऐ? ओ बजला- बौआ, जखन अहाँ पुछलौं तँ हम अपन दुख कहै छी। हम दू भाँइ छी। हमरासँ जेठ भाय छैथ। हम पढ़लौं-लिखलौं तँ बेसी नहि, मुदा अखड़ाहापर जरूर जाइ छेलौं। दुनू भाँइक बीच जखन बँटवारा हुअ लगल तखन ओ खेत-पथार तँ बाँटि देलैन, मुदा घरक बरतन-बासन, गहना-जेबर आ नगद-नारायण किछु ने देलैन। एक दिन हम खिसिया कऽ कहलयैन। हुनको दाँव-पेंचक दाबी। ओहो ओहिना जोरसँ कहलैन जे जे बँटैबला छेलह से बाँटि देलियह आब किछु ने देबह। हमरो अखड़ाहा परहक ताउ रहबे करए। दरबज्जेपर उठा कऽ पटैक पान-सात थापर मुँहमे लगा देलिऐन...। कहि दुनू हाथ माथपर लऽ चुप भऽ गेला।

फुलेसर : किए चुप भऽ गेला?

कर्मनाथ : थोड़ेकालक पछाइत फेर कहए लगला। हौ बाउ, पेंच-पाँच तँ हम जिनगीमे कहियो सिखलौं नहि। कोटमे केसो कऽ देलक आ गौओं सभकेँ मिला लेलक। दुनू दिस हम फँसि गेलौं। बलजोरी लोक सभ जजातो काटि लिअए,

बाँसो-गाछ काटि लिअए आ आमो तोड़ि लिअए। तारीकपर जाइ तँ एककेँ तीन ओकिलो-मुन्सी ठकि लिअए। केस हारि गेलौं। जेकरा चलैत छह मास जहलोमे रहलौं। कोनो करम बाँकी नै रहल। सभ सम्पैत नष्ट भऽ गेल। हारि कऽ बेटा पड़ा कऽ दिल्ली चलि गेल। एहेन स्थितिमे बेटी बिआह करै-जोकर भऽ गेल अछि।

चमेली : (नोर पोछैत) हे भगवान, एहेन दिन केकरो नै दिहक।

(चम्पा आ चमेली माइक मुँह तकैत आ फुलेसर पिताक मुँह)

फुलेसर : बाबा घुमि कऽ एलखिन कि नहि?

कर्मनाथ : ने घुमि कऽ एलखिन आ ने केतौ गेलखिन। अँगनाक पछुआरक रस्ता देने आबि कऽ अढ़मे बैस गेला।

फुलेसर : सोझामे किए ने एलखिन?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानैथ। मुदा हम्मर मन हुनकासँ हटए लगल आ हिनका (ससुर) दिस झुकए लगल। मने-मन सोचए लगलौं जे अखन जँ हम बलजोरी (पिताक बिना विचारे) बिआह कऽ लइ छी तँ परिवारमे जबरदस विवाद ठाढ़ हएत। जँ बिआह करैसँ इनकार करै छी तँ दरबज्जाक इज्जत चौपट हएत।

जुही : दरबज्जाक इज्जत की छिऐ?

कर्मनाथ : बाउ, दरबज्जा अँगनाक नाक होइत अछि। आँगन बेकती-विशेषक बुझल जाइत, जबकि दरबज्जा दसगरदामे बदैल जाइए। आँगन आँगनवालीक (पत्नीक) बुझल जाइत जबकि दरबज्जा दुआर होइत अछि। केकरो आँगनमे पुरुखक आगमन आँगनवालीक आदेशसँ होइत जबकि दरबज्जा-ले आदेशक जरूरत

नहि। सबहक-ले हरिदम खुजले रहैत अछि। पुरुखक परीक्षाक केन्द्र दरबज्जा छी। परिवारमे जेहेन पुरुख रहत दरबज्जाक इज्जत ओइ रूपक हएत। हमर-अहाँक पुरुखा ऐ इज्जतकेँ बुझै छला, तँए, बहुतो गोरे ऐ प्रतिष्ठाकेँ उच्च सीढ़ी धरि मर्यादित बना कऽ रखलैन। एहेन-एहेन हजारो पुरुख भेल छैथ जे कानैत आएल मनुखकेँ दरबज्जापर सँ हँसा कऽ विदा केलैन। यएह विचार हमरो मनमे आएल।

जुही : ई विचार बाबामे किएक ने एलैन?

कर्मनाथ : ई तँ ओ जानैथ। मुदा हमरा मनमे जरूर भेल जे जहिना तोहर नन्ना कानैत एला तहिना हम हँसा कऽ विदा करबैन। चाहे परिवारमे जे होइ। फेर मनमे आएल जे जाधैर परिवारसँ नीच विचार हटत नहि, ताधैर उच्च विचार आबि केना सकैए। ई तँ कोनो जादू-टोना छी नहि, छी तँ बेवहार। जे सोझे काज-करमसँ जोड़ल अछि।

फुलेसर : तेकर बाद की केलिऐ?

कर्मनाथ : (गम्भीर होइत) थोड़ेकाल मने-मन विचार केलौं जे अखन तँ हमरो स्थिति काटल गाछक छाहैरे जकाँ अछि। तँए बिआह करैसँ पहिने अपन अस्तित्व काइम करी। अगर जँ से नहि कऽ पहिने बिआहे कऽ लेब आ कनियाँ घर लऽ आनब तँ ओहने दशा कनियाँक संग हेतैन जहिना अनभुआर चिड़ैक दशा चिड़ैक जेरमे भऽ जाइ छइ। तँए जरूरी अछि जे पहिने अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे लऽ कऽ चली। मुदा ई हएत केना। सोचैत-विचारैत तँइ केलौं जे आब ऐ घरकेँ छोड़ि केतौ नोकरी करी। नोकरी करैक

विचार मनमे अबिते हम कहलयैन जे ऐठाम अपनेक जे नोर खसल ओ उद्धार जरूर करत।

जुही : (हँसैत) तब तँ नानाक मन खूब खुशी भेल हेतैन?

कर्मनाथ : ओ बड़ पारखी रहैथ। किछु बाजैथ नहि, हमरे मुँहक बात सुनए चाहैथ। जबकि हमरा मनमे भीतरसँ समुद्रक लहैर जकाँ उठए। हुअए जे की कहिऐन- केते कहिऐन जे ओ ठहाका मारि हँसैथ। हम कहलयैन- अपने भोजन कए लेल जाउ। ओ कहलैन, बौआ अहाँ अखन बच्चा छी तँए अपना ऐठामक विधि-बेवहार नइ बुझै छिऐ। अखन हम कन्यागत छी, केना भोजन करब। मनमे भेल जे कहि दिऐन- जौर जरि गेल मुदा अँइठन नै गेल। हम भूखल बुझि कऽ कहलयैन आ ओ शास्त्र पढ़बए लगलैथ। मुदा हम चुप्पे रहलौं। फेर कहलयैन जे कम-सँ-कम एक गिलास पानि पीब लेल जाउ। पानिक नाओं सुनि धड़फड़ा कऽ बजला- हँ, ई भऽ सकैए!

जुही : चाह-ताह पीबैले नै कहलयैन?

कर्मनाथ : अपना ऐठाम (इलाका) तँ चाहक चलैन–1935 ई.क पछाइत भेल–आब भेल हेन। जखन पानि पीबैले राजी भऽ गेला, तखन सोचलौं जे भरि मन शरबत पीआ देबैन। बाउ, अपना ऐठाम गिलासमे पानि बच्चा पीबै छल चेतन लोटामे पीबै छल। एकटा बड़का लोटा अपना घरमे अछि, जइमे तीन किलोसँ बेसीए पानि अँटैए। ओहीमे भरि लोटा शरबत बना कऽ अनलौं आ आगूमे रखि देलिऐन। लोटा देखते ओ हँसए लगला।

जुही : शरबत देख कऽ हँसलैथ आकि मने खुशी भऽ गेल रहैन?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानैथ। मुदा तखनसँ हँसी मेटेलैन नहि। लोटो भरि शरबत पीब लेलैन। शरबत पीब, बटुआ खोलि पान निकालि मस्तगर खिल्ली लगा, मुँहमे लैत बजला- आब मन हल्लुक भऽ गेल। जेते हुनकर मन हल्लुक होइत जाइन तेते हमरो मनमे शान्ति अबैत गेल। मुदा करेज सक्कत हुअ लगल। ..कहलयैन- किछु दिन अपनेकें प्रतीक्षा करए पड़त। मुदा एते अखन जरूर कहि दइ छी जे जइ काज-ले अपने परेशान छी ओ परेशानी जरूर मेटा जाएत। एते सुनिते ओ बाजए लगला जे हम सभ मिथिलाक बासी छी तँए मैथिल छी। हमरा सबहक पूर्वज नारीक जीबठकें जनै छला। किएक तँ जिनगी-जिनगी भरि नारी परपुरुषक मुँह नै देखलैन, भलें ओ बाल-विधवे किएक ने भऽ गेल होथि। जे हमर धरोहर सम्पैत छी। हँ, आइ भलें समाजक विकृतताक चलैत किछु अनुचित जकाँ जरूर भऽ गेल अछि। मुदा अस्सल तथ्य सभकें बुझक चाही। हम दुनू गोरे गप-सप्प करिते रही कि ओमहर पिताजी गरजैत अन्ट-सन्ट बाजए लगला।

फुलेसर : अढ़ेसँ बाबा बजैथ, सोझामे किए ने एला?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानता। मुदा तोहर नाना उठि कऽ विदा हुअ लगला कि हम गोड़ लगलयैन। गोड़ लगिते ओ बटुआ खोलि पाँचटा रूपैआ हमरा हाथमे दैत कहलैन- बाउ मिथिला अखनो पुरुष-विहीन नै भेल अछि, आ ने हएत। आब अहीं सबहक (नव युवक) हाथमे सभ किछु अछि, तँए, जेना कऽ आगू लऽ चली...। कहि चलि गेला।

फुलेसर : अहाँ की केलिऐ?

कर्मनाथ : बी.ए. धरि हम कहियो, कोनो क्लासमे फेल नै केने छेलौं, तँए मनमे पढ़ैक उत्साह एक्को पाइ कमल नै छल। सोचलौं जे जखन नोकरी करबाक अछि तखन एकबेर प्रशासनिक परीक्षामे बैस कऽ देखिऐ। नै पास करब तँ नै करब। दू बरख मेहनत कऽ परीक्षामे बैसलौं। पास केलौं। पास केला पछाइत बिआह केलौं। आब पैछला खिस्सा-पिहानी छोड़ह। अखन परिवारक सभ कियो छी, तँए एकटा विचार काइये ली।

फुलेसर : (साकांच होइत) हम सभ तँ बच्चा छी, की विचार दऽ सकै छी। मुदा बुझि तँ सकै छी।

कर्मनाथ : बौआ, कोनो परिवारक बच्चा ने एक्केबेर सियान होइए आ ने एक्केरंग रहैए। किएक तँ सभ परिवारक वातावरण एक्केरंग नै होइ छइ। पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चा आ बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चामे बहुत अन्तर होइ छइ। तहिना अगुआएल परिवारक माने सम्पन्न परिवारक बच्चा आ पछुआएल परिवारक माने गरीब परिवारक बच्चामे सेहो बहुत अन्तर होइए। एहेन- एहेन अनेको कारण अछि जइसँ दू परिवारक बच्चाकें दू रंगक वातावरण भेटै छइ। तँए दू रंगक होइए।

चमेली : जेकर माए-बाप खुट्टा सन-सन ठाढ़ रहत, अनेरे ओइ बच्चाकें परिवारक काज किए पुछबै?

कर्मनाथ : बिनु बुझने अहाँ किए सभ बातमे टाँग अड़ा दइ छिऐ। (भाव बदलैत) ओना अहूँक दोख बड़ बेसी नहियेँ अछि किएक तँ अहुँक विचार एक रस्तेक अछि। जे रस्ता बेवस्थासँ जुड़ल अछि। ऐ दुनियाँक अजीव बनाबट अछि। कनी नीक जकाँति बुझियौ। जहिना विष्वत रेखा,

बीच दुनियाँमे अछि। रेखासँ उतरो आ दच्छिनो, समान दूरीपर एक्केरंग मौसम होइए, मुदा विपरीत समैमे। तहिना विचारो आ जिनगियोक अछि। अखन चम्पाक बिआहक सम्बन्धमे विचार करैक अछि तँए बेसी नै कहब। कोनो परिवार, परिवारक सभ सदस्यक होइत, नहि कि परिवारक गारजने मात्रक। हँ, ई बात जरूर अछि जे परिवारक सभ काजक भार गारजनेपर रहैए एकर माने ई नहि जे बच्चा सभ बुझबे ने करए।

फुलेसर : बहिनक बिआहक चरचा करै छेलिऐ?

कर्मनाथ : जे बात बौआ तूँ पुछलह, सएह हमहूँ कहए चाहै छिअ। तीनू भाए-बहिनमे चम्पा जेठ छह। बी.ए.क रिजल्टो निकलिये गेलइ। अपना मनमे जे छल ओ भाइये गेल। उमेरोक हिसाबसँ अठारहम पूरि उनैसम चढ़लै, तँए आब बिआह कऽ लेब उचितो हएत। कथा-कुटुमैतीक सवाल अछि तँए किछु समैयो लगबे करत।

फुलेसर : किछु दिनक पछाइत चलितौं...।

कर्मनाथ : देखहक, ओना तँ हमहूँ नीक-नाहाँति नहियें बुझै छी किए तँ सभ दिन बाहरे रहलौं। मुदा देखै छिऐ जे किछु मास छोड़ि लोक बेटा-बेटीक बिआह सभ मास करैए। तखन तँ सभ मासक अपन-अपन गुण छइ। तइमे हमरा बुझैत फागुनक काज बढ़ियाँ होइए। जाड़क मासमे बेसी जाड़ आ गरमी मासमे हवा-बिहाड़िक संग रौद सेहो तीख होइ छै तँए फागुनक दिन सभसँ नीक।

(चम्पाक बिआहक चर्च सुनि सबहक मनमे सभ रंगक विचार उपकए लगलै। चमेलीक मनमे बेटी जमाए आ परिवार नाचए लगलैन। जबकि चम्पाक मनमे बदलैत

जिनगी। जुहीक मनमे बहिनक बिआहक आनन्द तँ फुलेसरक मनमे माए-बापक परेशानी। खुशीसँ जुही गीत गाबए लगली।)

चमेली : बेटी बिआहक चर्च, बेटीक सोझामे करैत लाज-धाक नै होइए?

कर्मनाथ : से की?

चमेली : आइ धरि एहेन केतौ देखने-सुनने छेलिऐ। आकि मनमे सनकी सवार भऽ गेल अछि। जे मनमे अबैए बकने जाइ छी!

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) जेकरा अहाँ नीक परम्परा बुझै छिऐ, भऽ सकैए, जखन समाजमे दहेज (खरीद-बिक्रीक) चलैन नै रहल हेतइ। पढ़लो-लिखल नहियेँ जकाँ छेलइ। मुदा आइक बेटी पढ़लक-लिखलक हेन। ओ अपन जिनगीक बात बुझए लगल हेन। तँए माए-बापक ओकाइत आ अपना प्रति माए-बापक सेवा ओकरा सोझामे अछि। तँए ओ खुद–अपन बिआहक विचार–कऽ सकैए। एहेन तँ नहि, जे बेटीक चलैत माए-बाप डुमि जाए वा माइए-बाप बेटीकेँ डुमा दइ। जहाँ धरि अनमेल बिआहक बात अछि ओ लेन-देनक चलैत रहल अछि। तँए बेटीकेँ अपनापर भरोस कऽ ऐगला जिनगी-ले डेग बढ़बए पड़तै। जइ समाजमे नारी शिक्षाकेँ अधला मानल गेल ओइ समाजमे लड़का-लड़की समान केना भऽ सकैए। तखन रहल रंग-रूपक समानता, रंग-रूपक समानता परिवारक रंगरूप समाप्त कऽ दइए। तहूसँ जुआएल गहुमन बिनु केंचुआ छोड़ने कातमे बैसल अछि। ओ छी जातिक भीतर जातिक कूल-मूल।

फुलेसर : बाप रे बाप, जइ समाजमे एते रंगक विषमता अछि ओ समाज एक रस्तासँ चलि केना सकैए! समाजक बात तँ कात रहह जे परिवारो केना चलि सकैए! मर्द-औरत माने पति-पत्नी परिवारक मुख्य अंग होइत, जहिना गाड़ीक पहिया। मुदा गाड़ीक एक पहिया मजगूत होइ आ दोसर कमजोर तँ समुचित भार लऽ गाड़ी केना चलि सकत! तहिना तँ परिवारो अछि।

कर्मनाथ : बौआ, समाज आ परिवार ऐ रूपे, पुरान कपड़ा जकाँ, चिरी-चोंत भऽ कऽ फाटि गेल अछि जेकरा सीलासँ काज नै चलि सकैए। जाधैर ओइमे पीओन-चेफड़ी लगा-लगा काज चलौल जाइए, जाइए। मुदा ऐसँ काज केते दिन चलत। अखन हम ऐसँ बेसी नै कहबह। किएक तँ अखन अपने सिरपर काज अछि जइले सोचबाक अछि।

चमेली : जखन चम्पाक बिआहक विचार करै छी तँ गहना जेबरक ओरियान कहिया करब?

कर्मनाथ : (चम्पा दिस देख) कहलौं तँ ठीके, मुदा जेकरा रूपैआ नै रहतै ओ की करत?

चमेली : छुच्छ देहे बेटी सासुर जाएत से अपना नीक लागत?

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके, मुदा जेकरा अहाँ मान-मरजादा बुझै छिऐ ओ खाली गहने-जेबर छी। गरीब लोक जे गहना-जेबरक सेहन्ता करैए ओ ओकर मुरुखपना छिऐ। कनी आँखि उठा कऽ देखियौ जे कोन परिवारक माए-बाप अपना बेटीकेँ किछु-ने-किछु गहना नै देलक, मुदा केकरा घरमे एकटा कनौसियो छइ। तँए गरीब लोककेँ सेहन्ते नै करैक चाही।

फुलेसर : बाबूजी, जखन एहेन ओझरौठ काज अछि आ अखन धरि किछु केलौं नहि, तखन लगले केना काज निपटाएब?

कर्मनाथ : हम संकल्प करि कऽ गाम जा रहल छी, तँए बिआह हेबे करतै। काज केना हएत से हमरा मनमे अछि। हम्मर बेटी जुगक अनुकूल अछि, तँए बिआह नै होइक कोनो कारणे ने अछि। (चम्पा से) बाउ, तूँ हमर जेठ बेटी छिह। पढ़ल-लिखल सेहो छह। तँए तोरा किछु बात कहि दिअ चाहै छिअ। दुनियाँ दिस नै देखह अपना आ अपन माए-बापकेँ देखह। हम पढ़ि कऽ प्रशासनिक अफसर बनलौं मुदा तोहर माए केते पढ़ल छथुन? तँ किछु ने! फेर परिवार केना चलैए। तोरा हम बी.ए. पास करा देलियह। तोरामे ओते क्षमता आबि गेल छह जे स्कूल, आँफिस, बैंक वा आन कोनो काज कऽ सकै छह, तखन तोहर जिनगी भारी किए हेतह। मनसँ ई हटा लएह जे हम उपार्जन नै कऽ सकै छी। जहिना पुरुख उपारजन करैए तहिना तहूँ कऽ सकै छह। हम तोहर बाप छिअ, तोहर अधला हुअ ई हमरा मनमे केना औत, कहियो ने औत।

चमेली : गाममे जे खेत-पथार अछि, जइसँ एक्को सेरक आशा कहियो ने होइए, भाय सभ बेच-बेच खाइए, ओ बेच कऽ बेटीक बिआह कऽ लिअ।

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके मुदा जाधैर पिताजी जीबै छैथ ताधैर हम्मर बेचब उचित हएत? एक तँ ओहिना पिताजी हमरापर बिआहेसँ कड़ुआएल छैथ, तैपरसँ जँ एहेन काज करब तँ परिवारमे विस्फोट होइमे बाँकी रहत। हम बेटीक बिआह करैले गाम जाएब कि घरमे आगि लगबैले?

फुलेसर : (चिन्तित भऽ) बड़ भारी काज उपस्थिति भऽ गेल अछि, बाबूजी।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) बौआ, अखन तूँ बच्चा छह; तँए नीक जकाँति परिवार आ समाजकेँ नै जनै छहक। जहिना फुलवारीमे सैकड़ो रंगक फूल रहै छै, मुदा कातसँ देखनिहार तँ कातेक फूल देखैए। बीचमे कोन फूल केहेन छै, से थोड़े देखैए।

फूलेसर : अहाँक बात हम नै बुझि सकलौं, बाबूजी।

कर्मनाथ : फुलवारीक तँ उदाहरण देलियह। असल बात समाजक अछि। फुलबारीए जकाँ समाजोमे अछि। हजारो रंगक मनुख समाजमे रहैए। हर मनुखकेँ अपन-अपन जिनगी, अपन-अपन विचार होइ छइ। जइसँ अपन-अपन संकल्प आ उदेस सेहो होइ छइ। नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला मनुख समाजक पेटमे नुकाएल अछि। जेकरा मात्र देखनिहारे देख पबैए। सभ नहि। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअ- जखन कोनो काज करैले डेग उठाबी तँ देहक सभ अंगकेँ चौकन्ना करि कऽ राखी। जेकर सभ अंग क्रियाशील रहत ओ माटिक रस्ताक कोन बात जे पानियोँ आ हवोक रस्तासँ चलि सकैए। तँए हरिदम आशावान भऽ कऽ डेग उठबैत-बढ़बैत रहक चाही।

◌

शब्द संख्या : 6171

दोसर अंक

(सोमनाथक दरबज्जा। सोमनाथ मसलनपर ओंगठल,
आशा आ नूनू दुनू भाग बैसल।

सोमनाथ : बाउ नूनू, आइ जे भाँग पिऔने छेलह से केतए-सँ अनने छेलहक? अपन घरक पत्ती तँ नै छेलह। बहुत दिन बाद एहेन मस्तगर भाँग पीलौं। आब कनी चाह पीआबह। तखन, परसू जे कर्मनाथक पत्र आएल छेलह, ओ पढ़ि कऽ सुना दिहह।
(नूनू चाह आनए जाइए)
(पत्नीसँ)
एकटा बात कहौं?

आशा : की?

सोमनाथ : कनी बिआह दिनक बात मन पाड़ियौ तँ। ओइ दिन ई बात कल्पनो केने रही जे एक दिन हमहूँ सभ अथबल हएब?

आशा : (खौंझा कऽ) मन वौआइए। जेते बुढ़ भेल जाइ छी तेते बुधियो टुटि-टुटि खसैए। एतबो ने बुझै छिऐ जे ऐ दुनियाँक नियमे छै जे जन्म लेब, जुआन हएब आ बुढ़ भऽ कऽ मरि जाएब। अगर जँ से नै होइत आ पहिलुको

लोक सभ जीविते रहितैथ तँ अहाँकेँ आकि हमरा के पुछितए?
(चाह लऽ कऽ नूनू अबैए। एकटा कप सोमनाथक हाथमे आ एकटा आशाक हाथमे दइए)

सोमनाथ : (चाहक चुस्की लैत) सात घर मुद्दैयो किए ने हुअए मुदा भगवान जँ ओकरो बेटा देथुन तँ नूनू सन देथुन। जे बेटा बाप-माइक सेवा नइ केलक ओहो कोनो बेटे भेल। कखनोकाल मनमे अबैए जे दूटा समाजोक लोककेँ आ अपनो दियादबादकेँ बैसा कहि दिऐ जे हमरा मुइलापर नूनूए आगि दिअए।

आशा : एना किए बजै छी। लोक सुनत तँ की कहत। जखन भगवान तीनटा बेटा देने छैथ तँ हमरा लिए सभ बरबैर। जेकरा हाथे आगि लिखल हएत, ओ देत। कोनो कि देखैले एबइ। माए-बापक अपन करतब छै, बेटा-बेटीक अपन करतब छइ। तइले अनेरे माथ किए धुनै छी।

सोमनाथ : (बिगैड़ कऽ) जे बेटा जीबैतमे कटहर लगा कऽ मोजर नहि दइए ओ मुइलापर सोनाक मन्दिर बना देत, अहाँ सएह बुझै छिऐ!

आशा : (झपटैत) जेना अहाँ अपना माए-बाबूकेँ सोनाक मन्दिर बना देने होइयैन तहिना बजै छी। जेहने किरिया-करम करि कऽ मरब तेहने ने फलो हएत। जँ अधला किरिया करि कऽ मरब तँ भूत-प्रेत बनि गाछी-बिरछीमे वौआएब, नहि जँ नीक किरिया करि कऽ मरब तँ स्वर्गमे जाएब। देखै नै छिऐ जे पपियाहा सभ जे मरैए तँ ओहिना वौआइत रहैए। पियास लगै छै तँ इनारपर जा-जा लोकक धैला फोड़ैए आ भूख लगै छै तँ बाट-बटोहीकेँ

पटैक-पटैक सनेस छीनि-छीनि खाइए। हमरा आकि अहाँकेँ आकि केकरो जे विधाता छठियारे राति लिखि देने छैथ, से तँ हेबे करत।

सोमनाथ : (पिनैक कऽ) ठीके मौगीक बातक कोनो ठीक नहि। लगले कहै छी जे जेहेन किरिया करब तेहेन फल हएत आ लगले कहै छी जे छठियारे राति जे विधाता लिखि देलैन से हएत। अच्छा, एकटा बात कहू तँ- जाबे जीबै छी ताबैये ने लिखलाहा हएत आकि मुइला पछातियो?

आशा : अहाँकेँ की होइए जे मुइला पछाइत फेरसँ लिखाएत। आकि छठियारे रातिक लिखल मुइला पछाइतो हएत।
(पनबट्टीसँ पान निकालि मुँहमे लैत सोमनाथ)

सोमनाथ : (मुँहक पान गाल तर दबैत) बेटा नूनू, अगर जँ भगवान गाहीक-गाही बेटा नहियों दैथ आ तोरा सन एकोटा रहए तँ ओइ गाहीक-गाहीसँ नीक। अपना सबहक जे बाप-दादा कहने छैथ जे माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैध धरम छी, से कोनो अधला कहने छैथ। अखनो जे ई दुनियाँ चलैए से तोंरे सन-सन बेटाक धरमपर। नहि तँ ई दुनियाँ कहिया ने अलोपित भऽ गेल रहैत। किएक तँ तेते ने चोर-उचक्का, बेइमान-शैतान सभ फड़ि गेल अछि जे एक्को दिन ई धरती असथिर रहैत। अच्छा, एकटा बात कहह जे औझुका भाँग केतए-सँ अनने छेलह?

नूनू : औझुका कोन भाँग छेलए से नै बुझलिऐ। दछिनबारि टोलमे जे दिनेश अछि वएह दरभंगासँ अनने अछि।

सोमनाथ : के दिनेश?

नूनू : हीरा कक्काक बेटा। दरभंगा कौलेजमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (किछु मन पाड़ैत) हीरालाल! ओकरा तँ कहियो भाँग मुँहमे लैत नै देखलिऐ। तेकर बेटा एहेन ओसताज भऽ गेल!

नूनू : एँह, जेहने मजगर भाँग पीबैए तेहने टिपगर तमाकुलो खाइए। गाममे ओहन माल के देखत। अपना सभ तँ ओ भाँग पीबै छी जे बाड़ी-झाड़ीमे अनेरूआ जनमैए मुदा ओ शुद्ध कलमी भाँग पीबैए।

सोमनाथ : भाँगो कलमी होइ छै हौ?

नूनू : अहाँ तँ पुरना गीत गबै छी। विज्ञान केते आगू बढ़ि गेल अछि से नइ बुझै छिऐ। आकि सोझे हवाइये जहाज आ रौकेटेटा बुझै छिऐ। विज्ञान बढ़लासँ खैयो-पीबैक वस्तु बढ़ल किने। अहाँ ने हरिदम कहै छिऐ जे बासमती धानक चूड़ाक जोड़ा दोसर नइ अछि। मुदा आब जे चूड़ा बजारमे बिकाइए ओकर जोड़ा बासमतीक चूड़ा करतै।

सोमनाथ : चूड़ाक गप छोड़ह। देखते छहक जे छह माससँ तेहेन रोग ने तरे-तर देहमे घोंसिया गेल अछि जे सभ खेलहा-पीलहा बिसैर गेलौं। जे ने करै बिमारी। नहि तँ जइ जअकेँ कहियो अन्नमे नै गनलौं, से भऽ गेल अछि अहार! 'थाकल पाँउ पलंग भेल भारी, आब की लादब हौ वेपारी।' खाइक बात छोड़ह। कलमी भाँग केना होइ छै से कनी बुझा दएह।

नूनू : एकटा बड़ भारी कम्पनी अछि। जेकर अरबो-खरबोक कारोबार छइ। वएह भाँगोक कारोबार करैए। भाँगक जूस बनबैए, मोदक बनबैए, आरो विन्यास सभ बना-बना देश-विदेश सगतैर बेचैए। वएह कम्पनी भाँगक खेती करैले किसानकेँ अगुरबारे खरचो आ शंकर

किस्मक बीओ दइ छइ। किसानो सभकें आन फसिलसँ बेसी रूपैयो होइ छै आ मेहनतो कम होइ छइ। बाधक-बाध किसान सभ काते-कात मक्के रोपने अछि आ बीचमे बीधाक-बीघा भाँग लगौने अछि। ओही भाँगमे मसल्ला सभ मिला कऽ जूसो, मोदको आ आनो-आनो विन्यास सभ बनबैए।

सोमनाथ : अच्छा, आब दुनियाँदारीक बात छोड़ह, पत्र निकालि कऽ सुनाबअ।

(जेबीसँ चिट्ठी निकालि नूनू मने-मन पढ़ए लगैत)

नूनू : (चिट्ठी पढ़ि) सबतूर भैया नीके छैथ। चम्पा बी.ए.पास केलक। ओकरे बिआह-ले लड़का भँजियाबए लिखलैन हेन।

सोमनाथ : (उत्तेजित होइत) तोरा दुनू भाँइकें लिखने छौ आकि हमरा?

नूनू : अहींकें लिखने छैथ।

सोमनाथ : (आरो उत्तेजित होइत) पढ़ल-लिखल लोक केते बेसरमी होइए से देखही। तोरा मन हेतौ कि नहि, जखन उ बी.ए. पास केने रहए, तखन बिआहक चरचा उठौलिऐ।

(अपशोच करैत)

ओ-हो-हो, हूसि गेल! गरदैन कटि गेल! सम्पैत दोबर भऽ जइतौ। बीस बीघा खेत तँ बेटीक खोंइछमे दइले तैयार रहए। नगद आ जेबरक कोन ठेकान। कहह जे केते भारी नोकसान परिवारमे भेल?

आशा : अहाँ तँ तेना बताह जकाँ बजै छी जेना करमू ऐ घरक कियो छिहे नहि। ने अहाँ कियो छिऐ आ ने ओ कियो

छी। बाल-बच्चा जे कनी-मनी किछु काइये गेल तँ की हेतइ। तइले अहाँ किए एते आमील पीने छी।

सोमनाथ : हूँह! एते दिन बेटा सिखौलक आ आब अहाँ सिखाउ। गीदरक नाँगैर केमहर होइ छै से अहीं बुझबै। दिन-राति कमाइ छी, घर चलबै छी हम, आ अहाँकें बुझि पड़ैए जे अहिना दिन-दुनियाँ चलै छइ।

(चिन्तित होइत)

आब तँ सहजे अथबले भेलौं, अपनो जिनगी पहाड़ बुझि पड़ैए। मान-अपमान, इज्जत-आबरु सभ बिसैर गेलौं। जाबे जीबै छी ताबे कौआ जकाँ टाँहि-टाँहि करै छी।

(अपशोच करैत)

घरक की मान-प्रतिष्ठा छल, की रूआब छल, सभटा चलि गेल! भगवानो रच्छ रखलैन जे सभ सुख-भोग छोड़ा देलैन। जअकें फाँटीपर आनि कऽ रखि देलैन। नहि तँ हम्मर की दशा होइतए से तँ उगलेहे देखितैथ।

(गम्भीर होइत)

अच्छा अहीं कहू जे बेटा मनसम्फे कमाइए की नहि, मुदा माए-बापकें की दइए?

आशा : (मुँह बिजकबैत) अहाँकें कोनो गत्तर मे लाजे ने होइए। जखन करमू नोकरी शुरू केलक आ महिने-महिने पान साए रूपैआ पठबए लगल, तँ तीनियेँ मासक पछाइत लिखि पठौलिऐ जे पान साए रूपैआ लऽ कऽ चुट्टीक बिल गहब। आ आब निरलज भट्टा जकाँ कहै छिऐ जे रूपैये ने दइए। अगर पान साए रूपैआ झुझुआन बुझि पड़ल तँ कहितिऐ जे बौआ मासे-मास नहि, छह मासपर एक्के ठीन पठबिहह, जइसँ कोनो काज चलत।

सोमनाथ : बड़ बुधियारि छी अहाँ। एकटा बात कहू तँ, बेटा-बेटीक बिआह-दुरागमन करब माए-बापक मर्यादा छी की नहि? आकि अपने मने बिआह कऽ लिअए।

आशा : अगर जँ करमू अपने मने बिआह काइये लेलक तँ कोन भारी जुलुम कऽ लेलक। कोनो कि जाति गमा लेलक? खाली दहेज नै लेलक सएह ने। तँ की हेतइ। वएह कन्यागत अहाँक तिजोड़ी भरि दइतए तँ बड़ बढ़ियाँ आ नै भरलक तँ बड़ अधला!

सोमनाथ : की हौ बौआ नूनू। माइक बातकें तूँ नीक बुझै छहक कि अधला?

नूनू : बाबू, माए पुरना विचारक लोक छैथ तँए हिनको विचार बेजाए नहियेँ छैन। मुदा आब तँ जुग बदैल चुकल अछि। अर्थ जुग आबि गेल। जेकरे पाइ छै ओकरे लोक मनुक्खो बुझै छै आ समाजमे मानो-प्रतिष्ठा दइ छइ। तँए एते घाटा तँ परिवारमे जरूर भेल जे मोट रकम हाथसँ ससैर गेल। मुदा माए, आब परीक्षो बेर आबिये गेल अछि। करमू भैया दहेज नै लेलैन, बड़बढ़ियाँ। मुदा आब तँ अपनो बेटीक बिआह करबाके छैन किने?

सोमनाथ : (फरैक कऽ) हँ-हँ, बेस कहलहक बौआ। 'जनिहें मियाँ धुनै बेरिया।' भने तँ आबिये रहल अछि। भगवान नीक केलैन जे अथबल बना देलैन। ने किछु करब आ ने दोखी हएब।

आशा : बौआ नूनू, तूँ ने कहै छहक जे अर्थ जुग आबि गेल, तँए सभ काज पाइयेक हाथे हएत। मुदा एकटा बात बुझै छहक, मनुख मनुक्खे रहत। जुग कोनो अबै आकि जाइ मुदा नीक करैबला नीके काज करत आ अधला करैबला

अधले करत। जइ बेटाक दोख तूँ दुनू बापूत लगबै छहक ओइ बेटाक गुणो बुझै छहक। अपन परिवारक कोन बात जे गामेमे अपन कर्मनाथक जोड़ा कएटा अछि। मनुख तँ सौंसे गामे भरल अछि।

सोमनाथ : अहाँ हाकिम बेटा लऽ कऽ नाचू मुदा हम तँ सोमनाथे छेलौं आ रहबो करब। हमरा नूनू सन बेटा रहक चाही। जखन जे कहै छिऐ, दासो-दास रहैए।

आशा : अहीं सन हमहूँ नइ ने छी जे कर्मनाथ सन बेटापर ओंगरी उठाएब। अपनो तँ दूटा बेटी आ (कर्मनाथ छोड़ि) दूटा बेटो अछिए, किए ने एकोटा हाइयो स्कूल धरि देखलक। बेटेक चलैत पोती बी.ए. पास केलक। तेकरा अहाँ मनुखे ने बुझै छिऐ। जेकरा अहाँ नै मनुख बुझबै ओ अहाँकें मनुख बुझत?

सोमनाथ : (शान्त होइत) आब हमरा कोन मनुख बनैक काज अछि, मृत्युक रस्तामे अँटकल छी। जखन रसीद कटि जाएत, राम-राम करैत विदा भऽ जाएब।

(लालबाबूक आगमन)

सोमनाथ : भरि दिन तूँ केतए निपत्ता रहै छह लालबाबू?

लालबाबू : एँह, की कहब बाबू! केकर मुँह देख कऽ आइ उठलौं जे समैपर अनजलो ने भेल। सबेरे चौक दिस गेलौं तँ देखलिऐ जे मारे-लोक घोल-फचक्का कऽ रहल अछि। अनगौंवो आ गौंवो थाहा-थही कऽ रहल अछि। ससैर कऽ हमहूँ गेलौं, तँ देखलिऐ जे अनगौंआँ सभ शन-शन कऽ रहल अछि, गौंआँ सभ मुड़ियारी दऽ दऽ खाली सुनैए। मन असथिर भेल। एक गोरेकें पुछलिऐ जे भाय की बात छिऐ जे अहाँ सभ एना शन-शन करै छी? एना

हेँड़ बान्हि कऽ केतए जा रहल छी? ओ कहलक- हमरा गामक–माने खरबोनीक–एकटा विद्यार्थी दरभंगामे पढ़ैए। लॉजमे रहैए। ओही लॉजमे पिपराघाटक सेहो पान-सात गोरे रहैए। एकठाम रहने सभकेँ-सभसँ चिन्हारे छइ। पिपराघाटक विद्यार्थी सभ हमरा गामक विद्यार्थीकेँ फुसला कऽ अपना गाम लऽ गेल आ एकटा लड़कीक संग बलजोरी बिआह करा देलकै।

सोमनाथ : लड़िकाक बापकेँ बिना पुछिनहि?

लालबाबू : हँ, तँए ने लड़काक समांग सभ जुटि कऽ पिपराघाट जाइए। लड़काक पितियौत भाए कहलक जे दस लाख रूपैआपर लड़काक बिआह सत-गछिया ठीक भेल छइ। जइमे एक लाख रूपैआ अगुरवारे देनौं अछि आ बाँकी रूपैआ बिआहसँ चारि दिन पहिने देबाक बात पक्का भऽ गेल अछि।

सोमनाथ : जखन लड़का-लड़कीक बिआह भऽ गेलै, तखन लड़काबला सभ जा कऽ की करतै?

लालबाबू : की करतै! तेहेन गरमाएल लोक सभकेँ देखलिऐ जे बुझि पड़ल जेना बेटीबलाकेँ घरक कोरो घीच लेतइ। आ अहाँ कहै छिऐ की करतै।

सोमनाथ : केते गोरे खरबोनीबला सभ छेलइ?

लालबाबू : कोनो की गनलिऐ मुदा चालीस-पचासक धत-पत तँ बुझिये पड़ल।

नूनू : आइये खरबोनीबला सबहक दालक छुटतै। तेहेन शैतानक चरखी पिपराधाटबला सभ अछि जे आइये बुझि पड़तै। तहूमे एकटा तेहेन खूंखार नेताक धसना पार्टी अछि जे काजे यएह करैए।

सोमनाथ : (दुनू हाथ माथपर लऽ) कोन जुग-जमाना चलि आएल से नहि जाइन।

नूनू : बाबू, भगवानकेँ कहियौन जे दस बरख आरो औरदा दैथ। तखन देखबै जे की सभ होइ छइ।

सोमनाथ : तेकर बाद की भेलइ?

लालबाबू : सभ कियो चाह-पान खा उत्तर-मुहेँ सनकल विदा भेल। चौकसँ जखन ओ सभ कनी आगू बढ़ल आकि हमहूँ ससैर कऽ रतनाक चाहक दोकानपर आबि गेलौं। चाहक देकानपर नीक-नहाँति बैसलो ने रही कि सुरजा आएल। तामसे ओकर मुँह तुरुछ जकाँ भेल देखलिऐ मुदा बाजए किछु नहि। पुछलिऐ जे सुरुज मन बड़ खिसियाएल छह? ओ कहलक- 'लालबाबू की कहब! दुनियाँमे सभ बेइमान भऽ गेल! केकरा के अपन बुझत।' पुछलिऐ- 'से की?' कहलक- 'हमरा सारकेँ बेटीक बिआहमे करजा भऽ गेलइ। ने रूपैआ होइ छेलै आ ने महाजनकेँ दइ छेलइ। खिसिया कऽ महाजन लालीस कऽ देलकै। हमर सारो चलाकी केलक। ओ अपन सभ जमीन ममियौत भायक नामसँ फरजी कऽ देलक। ओहो साला तेहेन नेतघट्टू जे सभ जमीन बेइमानी कऽ दफानि लेलक। सएह, ओतैसँ समाद आएल हेन जे कनी आबि कऽ फरिया दिअ।'

नूनू : के केकरापर बिसवास करत। एक तँ ओ वेचारा अपन बुझि जमीन फरजी केलक आ ओ साला केहेन गैखौक भऽ गेल जे सभटा बेइमानी करै छइ!

लालबाबू : अखन तँ अनकर बात सुनलिऐ। आब अपन बात सुनू; चाह पीब कऽ जहाँ घर दिस विदा भेलौं कि आगूऐसँ गंगाइ घेर कऽ कहए लगल।

सोमनाथ : (उत्सुक भऽ) की, की गंगाइ कहए लगलह?

लालबाबू : कहए लगल जे अहाँक मोहन हमर गरदैन काटि लेलैन। गरदैन काटैक नाओं सुनि हम चौंकलौं। मनमे रंग-बिरंगक बात आबए लगल। पुछलिऐ जे कनी सेरिया कऽ कहह। ओ कानैत कहए लगल जे पनरह कट्ठा खेत हुनकासँ नेने छेलौं। दस हजार रूपैये कट्ठा देने रहैथ। जेकरा तीन-चारि मास भेल हएत। खेत जोइत कऽ मक्के केने छी। परसू खन मुनेसरा आबि कऽ कहलक जे गंगा भाइ मक्के हमरा बाँटि दिहह। हम चौंक गेलौं कहलिऐ जे जखन हम खेत किनने छी तँ तोरा किए बाँटि दिअ। एते सुनिते ओ जेबीसँ दस्ताबेज निकालि कऽ देखा देलक। ओकर रजिष्ट्री हमरासँ दू मास पहिलुके छइ।

सोमनाथ : (अकचकाइत) मोहनक तँ चालि-परकित एहेन नइ छइ।

नूनू : लोकक किरदानी मुँह-कान देखने बुझबै। बेटीक बिआह जे ओते ताम-झामसँ केने छला से केतए-सँ। एक लाख रूपैआमे पटनासँ खाली टेन्टे अनने छला। कहाँदन पच्चीस हजार भनसिया नेने छेलै, तैपरसँ चारि साए बरियातीक खेनाइ-पिनाइ। तहूमे जेते बरियाती खेलक तइसँ बेसी समान उगरिये गेलैन।

लालबाबू : सात लाख रूपैयो गनने छला?

सोमनाथ : जे सात लाख रूपैआ गनत ओ ओहने लड़का आनत?

नूनू : लड़का अनलैन कि धन। डेढ़ साए बीघा जमीन लड़का माथपर पड़ै छइ।

सोमनाथ : अच्छा, छोड़ह दुनियाँदारीक गप। लालबाबूकेँ कर्मनाथक पत्र देखए देलहक?

नूनू : कहाँ। नहि!

(नूनू लालबाबूक हाथमे चिट्ठी दइत। लालबाबू चिट्ठी पढ़ए लगैत)

लालबाबू : दिन पनरहम छिऐ। हम चौकेपर गुलटेनक पानक दोकानपर रही। वएह कहैत रहए जे मालिक आइसँ पानक खिल्लीमे एक रूपैआ बढ़ा देलिऐ। किएक तँ पानक सभ मसल्ला महग भऽ गेल। तैबीच एक गोरे साइकिलसँ आएल। साइकिल दोकानेक आगूमे ठाढ़ कऽ गुलटेनकेँ पुछलकै, प्लोथीन अछि। गुलटेन मुस्कियाएल। तैपर ओ कम्पनीक नाम पुछलकै। पानोबला मुड़ी डोला देलकै। किलो भरिक एकटा प्लोथिन बढ़ा देलकै। ओहो बटोही एकटा पचसटकही निकालि दोकानबलाकेँ दऽ देलकै। ठाढ़े-ठाढ़ ओ बटोही गट-दे प्लोथिन पीब गेल। पीला पछाइत दोकानदारकेँ पुछलकै, कर्मनाथ बाबूक घर ऐठामसँ केमहर छैन। हमरो कान ठाढ़ भेल।

सोमनाथ : ओकरा किछु पुछबो केलहक?

लालबाबू : नहि। अपने मने बाजए लगल जे कर्मनाथ बाबू आ हम्मर भाय साहैब एक्के ठीन रहै छैथ। कमा कऽ हम्मर भाय साहैब अमार लगा देलखिन। हमरा गाममे एक्को गोरे नै अछि जे बेटी बिआहमे एते खरच केने हएत।

नूनू : अपन कर्मनाथ भैया कि रूपैआ नै रखने छैथ। तखन तँ हम सभ दियाद छिऐन तँए छिपौने छैथ। पाइ रखैक लूरि सभकेँ होइ छइ। कियो ढोल जकाँ ढनढनाइत रहत आ कियो चुपचाप दबने रहत।

सोमनाथ : पत्रक बात तँ सभ बुझबे केलहक। आब, अपना सभ चारू गोरे विचारि लएह जे की करब?

नूनू : जखन अहाँ दुनू गोरे (बाप-माए) छिहे तखन हम सभ की कहब।

सोमनाथ : हमरा तँ साँप-छुछुनैरक पड़ि भऽ गेल अछि। ने 'हँ' कहैत बनैए आ ने 'नइ' कहैत। 'हँ' कहैत ऐ दुआरे नै बनैए जे सत पुछह तँ हमर मन कर्मनाथपर सँ ओही दिन हटि गेल जइ दिन ओ अपना मने बिआह कऽ लेलक। देखल लक्ष्मी घुमि गेली। खाएर, बिआहो केलक तँ केलक जे कमाइयो कऽ तँ एक्को पाइ कहियो नहियेँ देलक। मुदा छी तँ बेटे। तहूमे बेटीक बिआह करत। बेटी तँ सिरिफ माइए-बापक नै होइए ओ तँ सबहक होइ छइ।

आशा : अहाँकेँ अपने मन कखनो थीर नइ रहैए। कखनो किछु बजै छी तँ कखनो किछु। अहीं कहू जे जखन करमू पान साए रूपैआ मनिआडर करैत रहए तखन चिट्ठीमे लिखि कऽ पठौलिऐ जे पान साए रूपैआसँ चुट्टीक बोहैर मुनब आ आइ कहै छिऐ जे एक्को पाइ नै कहियो देलक। वेचारा नोकरी करैए जएह दरमाहा रहतै तहीमे ने काज चलौत। अनका देख कऽ करमूओकेँ ओहिना बुझबै से ओहिना ओहो घूस-पेंच लैत हुअए तखन ने। दुनियाँमे सबहक चालि एक्केरंग होइ छइ?

सोमनाथ : औझुका लोकक भाँज अहीं पेबै? केकरा रूपैआ बकछुहुल लगै छइ। एकबर लोककेँ दरमाहा रहै छै आ सातबर बाइली होइ छइ।

लालबाबू : माए गइ, भैयेक एकटा संगी कमा कऽ अमार लगा लेलक हेन। एक्के काज दुनू गोरेकेँ छैन।

आशा : बौआ, एकटा बात तोँही सभ कहह जे जइ सम्पैतक सुख तूँ सभ करै छहक ओइमे ओकर हिस्सा नइ छइ? ओकर

हिस्सा तँ अपने सभ खाइ छिऐ। ओ कहियो किछो पुछबो केलकह हेन। एतबो आँखिमे पानि नै छह। अगर जँ ओकरा बेटीक बिआहमे खरच नै जुमतै तँ की ओ ऐ सम्पैतमे सँ नइ लेत?

लालबाबू : हमरो रहत तब ने देबइ। तूँ नै देखै छीही जे साले-साल खेत बेचै छी तखन कहुना कऽ काज चलैए। ने एकोटा पुरना गाछ गाछीमे रहल आ ने बाधमे खेत। लऽ दऽ कऽ घराड़ी आ घरक आगूमे जे अछि तेतबे रहल हेँ, सेहो अपना बुते खेती कएल होइते ने अछि। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे दूध महक डारही बाँटि कऽ दइए। मुदा ओहू वेचारा सभकेँ की कहबै, कोनो साल रौदी होइ छै तँ कोनो साल दाही। लगतौ बुड़ि जाइ छइ।

आशा : से तँ हमहूँ देखै छिऐ, मुदा रौदी-दाही दुआरे केकरो उचित कल्याण रूकि जेतइ? बेटा-बेटीक बिआह सभकेँ हेबे करतै। घर-दुआर बनबए पड़तै। धिया-पुताक पढ़ौनी, बर- बेमारीमे खरच हेबे करतै। तहूमे हम दस कुटुम-परिवारबला छी। एकरा सभकेँ छोड़बहक से बनतह। परिवार किए कहौलकै..!

सोमनाथ : एते राँउ-झाँउ करैक कोन काज छह, बौआ। अन्हार घर साँपे-साँप। जखन कर्मनाथ औत, बिआहक चरचा करत तखन ने पुछबै जे बौआ केना काज करबह? ऐठाम तँ देखते छहक जे जेकरो ने किछु रहै छै, बोइन-बुत्ता करैए, ओहो एक-आध लाख रूपैआ बेटीक बिआहमे खरच करैए। जबकि अपन परिवार तँ से नै छह। केतबो काटि-छाँटि कऽ बिआह करबह, तैयो दस लाख खरच हेबे करतह। तहूमे अपना सबहक समाज तेहेन गँरिबोहू अछि

जे एतबो ने बुझैए जे जे माए-बाप अपना बेटीकेँ पढ़बैमे ओतेक खरच करैए ओकरासँ रूपैआ केना मंगबै? से लाज थोड़े केकरो होइ छइ। नमहर-नमहर भाषण कऽ लेत मुदा करैकाल छुतहरोसँ छुतहर भऽ जाइए। एहेन छुतहरक समाजमे लोक केना जीबत।

भीतरसँ : दादी, दादी, कर्मनाथ काका एलखिन।

(आशा उठि कऽ भीतर जाइत अछि। कर्मनाथक परिवार अबैक गल्ल-गुल भीतरमे होइत अछि।)

नूनू : बाबू, हम दुनू भाँइ तँ छोट छी, तहूमे अहाँ जीविते छी। तखन तँ भैया जे कहता से कऽ देबैन।

सोमनाथ : (मुड़ी डोलबैत) एकटा बात हमरा मनमे उपकैए।

नूनू : से की?

सोमनाथ : कहीं एहेन ने हुअए जे कर्मनाथ अपन रूपैआ दाबि लिअए आ खेत बेचैले कहथुन। जँ से हेतह तँ हाथो तरक जेतह आ पएरो तरक।

लालबाबू : तखन की करबै?

सोमनाथ : की करबहक से हमहीं कहबह। आब तहूँ दुनू भाँइ धीगर-पुतगर भेलह, आबो जे नै सोचबहक तँ कहिया सोचबहक। हम तँ सहजहि अथबल भेलियह, चलन-पियारा छिअ। हम्मर आशा केते दिन करबह। जाधैर दाना-पानी लिखल अछि ताधैर मुँह देखै छह। जहिया उठि जाएत तहिया चलि जाएब।

(कर्मनाथक प्रवेश। पिताकेँ प्रणाम करैत। लालबाबू आ नूनू कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत)

सोमनाथ : (असिरवाद दैत) कल्याण हुअ। बौआ, आब तँ हम्मर हालत एते रद्दी भऽ गेल जे मुइले बुझह। छह माससँ

डाक्टर सभ किछु बरा देलक। जअक फाँटी खाइ छी, तँए अखनो ठाढ़ छी। नहि तँ कहिया ने चलि गेल रहितौं। सौंसे देह जाँचि कऽ डाक्टर कहलक जे रोग जड़िसँ नहि मेटाएत, तखन तँ पथ-पानि करैत रहू। मन भेल जे सवा लाख महादेवक पूजा करा कऽ सेहो देखिऐ। मुदा आइ-काल्हि करै छी, ओहो अखैन धरि नहियेँ केलौं हेन। सभ परिवार आनन्दसँ छह किने?

कर्मनाथ : हँ। सभ आनन्दसँ छी। दू मास पहिने हमरो परमोशन भेल। चम्पो बी.ए. कऽ लेलक। बड़बढ़ियाँ नम्बर एलइ। फुलेसर बी.ए. मे आ जुही मैट्रिकमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (हँसैत) परमोशन भेलह तँ दरमहो बढ़ल हेतह किने?

कर्मनाथ : हँ। अढ़ाइ साए टाका महिना बढ़ल। मुदा तइसँ की जिनगीमे कोनो बदलाव औत।

सोमनाथ : (अकचकाइत) से की?

कर्मनाथ : दरमाहा जे बनल छै ओ परिवार आ पदक स्तरक हिसाबसँ बनल छइ। तहूमे इनकम-टेक्स ओकरा नियंत्रित केने रहै छइ। जहिना दरमाहा बढ़ै छै तहिना इनकम-टैक्स सेहो बढ़ि जाइ छइ। तेतबे नहि, मकानक भाड़ा, पानि आ बिजलीक खरच सभ बढ़ि जाइ छइ। घुमा-फिड़ा कऽ कहुना परिवार चलबैत जीब लइ छी। तीन-तीनटा विद्यार्थीक खरच शुरूहेसँ रहल, अपनो पढ़ै-लिखैक अभ्यास बनि गेल अछि, तहूमे खरच होइते अछि। तैपरसँ जइ समाजमे रहै छी ओहूमे खरच होइते अछि। ई सभ खरच तँ दरमहेमे से होइए। महिना लगैत-लगैत हाथ साफ भऽ जाइए। साल कहियौ कि मास, एक्को दिन ओहन नै बँचैए जइ दिन केकरो-ने-केकरो,

किछु ने किछु बाँकी नै रहैए। तखन तँ कहुना जीब लइ छी।

सोमनाथ : तोरोसँ छोट-छोट नोकरी करैबला सबकेँ देखै छिऐ जे कमा कऽ बुर्ज कऽ लइए, से केना कऽ लइए?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) जहिना शरीरमे रोग होइए तहिना मनोमे रोग होइ छइ। जे बात अहाँ कहलौं ओ मनक रोग छी। मुदा सबहक शरीर वा मन रोगाएले होइए एहनो बात तँ नै अछि।

लालबाबू : भैया, पछबारि गामक एक गोरे छैथ, भरिसक अहाँ चिन्हतो हेबैन, जे कमा कऽ अमार लगा लेलैन अछि।

कर्मनाथ : हुनका हमहूँ चिन्है छिऐन। हमरासँ एक बैच पाछू छैथ। पहिने बेसीकाल डेरापर अबै छला आ हमहूँ हुनका ऐठाम जाइ छेलौं मुदा धीरे-धीरे सम्बन्ध कमैत गेल। आब ने हम हुनका ऐठाम जाइ छी आ ने ओ हमरा ऐठाम अबै छैथ। रस्ते-पेरे जँ केतौ भेँट भऽ गेला तँ भऽ गेला।

लालबाबू : भैया, अहाँ जे चम्पाक बिआहक सम्बन्धमे चिट्ठी लिखने छेलौं से तँ आब अपनौं आबिये गेलौं। जहिना चम्पा अहाँक बेटी छी तहिना तँ हमरो भतिजीए छी। जेना जे करब तइमे हम सभ कोनो अरंगा करब।

कर्मनाथ : अखन तँ हमहूँ बिआहेक उदेसे एलौं, तँए दोसर तेसर गप करब नीक नहि, मुदा एकटा बात जरूर कहबह जे समए बहुत तेजीसँ बदैल रहल अछि, तँए समैयक संग अपनोकेँ बदलए पड़तह। जँ से नै बदलबह तँ पाओल जेबह। बाबू बुढ़ भेलखुन, केते दिन छथुन तेकर कोनो ठीक नहि। मुदा तूँ दुनू भाँइ तँ जवान छह। परिवार बढ़बे करतह, घटतह तँ नहि। तँए खरचो बढ़बे करतह। ई तँ

तोरा अपने पुरबए पड़तह। अखन छोट परिवार छह तखन तँ खेत बिकाइ छह आ जखन खर्चा बढ़तह तखन केना पुरेबहक।

लालबाबू : हँ, ई तँ ठीके कहलौं। मुदा नोकरियो तँ अपना हाथमे नै अछि। तखन की करबै?

कर्मनाथ : नोकरीएकेँ सीमा-नाँगैर छै जे जे करत ओकर गुजर चलतै आ जे नै करत ओकर गुजर नै चलतै। बहुत रास काज सभ अछि, जेकरा केलासँ धनक उपारजन होइए। जे करैबला अछि ओ तँ नोकरियो छोड़ि अपन काज ठाढ़ कऽ करैए।

लालबाबू : (मुड़ी डोलबैत) ठीके कहै छी भैया, पाछू घुमि कऽ तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे अखन धरिक समए फुर्र-फाँइमे बीति गेल। आब बुझि पड़ैए जे जीबैले सभकेँ मेहनत करैये पड़त।

कर्मनाथ : निचेनमे कोनो दिन नीक जकाँति बुझा देबह। अखन हमहूँ काजेमे पड़ल छी तँए पहिने ऐ काजकेँ निपटबैक अछि।

नूनू : भैया, बेटीक बिआह परिवारक सभसँ भारी काज भऽ गेल अछि। तहूमे जेकरा पाइ-कौरीक अभाव छै ओकर तँ इज्जत-आबरू बँचब कठिन भऽ गेल अछि। सभसँ आश्चर्यक बात समाजमे ई अछि जे बेटी केहनो पढ़ल-लिखल हुअए, शील, गुण, सौन्दर्यसँ पूर्ण किएक ने हुअए मुदा आइ ओकर कोनो मोल नहि अछि।

कर्मनाथ : (दृढ़तासँ) बौआ, चम्पाक बिआह हेबे करतै। ई हमरा अपन ब्रह्म कहि रहल अछि। जहाँ धरि दहेजक सवाल

अछि, ओ हम एक्को पाइ नै देबइ। हँ, जे बेवहारिक चलैन अछि ओ तँ पुरबए पड़त।

नूनू : दहेज नै देबै तँ काज हएब कठिन अछि।

कर्मनाथ : जइ समाजमे तूँ दहेजक चलैन देखै छहक ओ चुतिया समाज छी। ओइ समाजपर हम थूक फेकै छी। मुदा वएह टा समाज नै छिऐ। ओइ समाजसँ हटि दोसरो समाज अछि जे मनुखक समाज छी। जइ समाजमे कियो केकरो अधला नै करैए आ ने केकरो अधला हौउ ई मनमे अनैए। चम्पाक बिआह ओही समाजमे हेतै तँए, हमरा दहेजक चिन्ता नै अछि। तखन तँ सभ दिन समाजसँ हटि कऽ रहलौं, जइसँ अनभुआर थोड़ेक जरूर छी।

◌

शब्द संख्या : 3851

तेसर अंक

(विकास दरबज्जापर प्लास्टिकक डोरीसँ कुरसी बीनैत)

श्रीचन : (भीतरसँ) विकास भाय? यौ, विकास भाय?

(कुरसी बीनब छोड़ि। चकोना होइत, चारूभाग विकास ताकए लगैत)

विकास : के छिअ हौ? (फेर चारूभर चकोना होइत)

श्रीचन : (प्रवेश करैत। कान्हपर कोदाइर, हाथमे खुरपी) विकास भाय। यौ विकास भाय?

विकास : श्रीचन। किए एना अपसियाँत होइ छह, की भेलह?

श्रीचन : नाश भऽ गेल! गरदैन कटि गेल..!

विकास : (अकचकाइत) की नाश भेलह? मन असथिर कऽ कऽ बाजह।

श्रीचन : ऐसँ एकटा बेटा मरि जाइतए से नीक। मुदा भरल-पुरल चास नाश भेने तँ दू मासक मेहनत बुड़ि गेल।

विकास : एना किए मुहसँ अधला बात निकालै छह?

(कोदाइर, खुरपी रखि, दुनू हाथ माथपर लैत, कानैक मुद्रामे श्रीचन)

श्रीचन : भाय की कहब! भगवानो बड़ धड़कट-बेइमान छैथ। किए लोक अपनाकेँ हुनकर सन्तान बुझैए। जखन ओ भगवान छैथ तँ सभपर एकरंग नजैर राखैथ। से कहाँ रखै

छैथ। हुनकोमे दूजा-भाव छैन! केकरोपर खुशी भऽ कऽ खूब दइ छथिन आ केकरो भोतहा हाँसूसँ गरदैन हलालि दइ छथिन!

विकास : तेना ने तूँ बजै छह जे हम किछु बुझबे ने करै छी! कनी खोलि कऽ साफ-साफ बाजह।

श्रीचन : की खोलि कऽ कहब भाय! अहाँ तँ सभटा बुझिते छी, तैयो अनठा कऽ पुछै छी।

विकास : अनठा कऽ कहाँ पुछै छिअ। तेना ने तूँ बजै छह जे हम अखनो धरि वौआइते छी। उनटे तोंहि कहै छह जे सभटा अहाँ बुझिते छिऐ। कनी फरिछा कऽ कहह ने।

श्रीचन : अहाँ तँ जनिते छी जे हम ने गिरहत छी आ ने बोनिहार। चौदह-पनरह कट्ठा खेत अछि, तहीमे खेतियो करै छी आ जखन अपना काज नै रहैए तँ बोइनो करए जाइ छी। पान-सात कट्ठा तरकारी खेती करै छी जइसँ अपनो खाइ छी आ दू-चारि पाइक बेचियो लइ छी। चारि कट्ठा टमाटरक खेती केने छेलौं से सभटा गलि गेल! जेना कियो चोरा कऽ नून छीटि देने हुअए तहिना भऽ गेल।

विकास : टमाटर गलि गेलह तँ हमरा की कहै छह?

श्रीचन : चलु, कनी मधमन्नी।

विकास : किए?

श्रीचन : ओइ बीआबला कम्पनीपर लालीस करबै। अपने तँ कोट-कचहरीक पेंच-पाँच बुझै नइ छी, तँए अहाँकेँ संगे लऽ जाएब। ओइ बीआबलाकेँ सिखा देबै जे मर्दक पाला केहेन होइ छइ। जाबे ओकरा जहल नइ ढुकाएब ताबे हमर मन असथिर नहि हएत। जँए चारि कट्ठा टमाटर गेल तँए दू हजार आरो जा..!

विकास : कनी सेरिया कऽ सभ बात कहह।

श्रीचन : दू मास पहिलुका गप छी। जतराक परात झंझारपुर हाट बीआ कीनैले गेलौं। ओना, अपन चिन्हरबो दोकान अछि। मुदा कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेल जे ओइ दोकान नै जा हाटे दिस बढ़ि गेलौं।

विकास : अपन चिन्हरबा दोकान किए ने गेलह?

श्रीचन : की कहब भाइ, हाटसँ कनी पाछुए रही कि बड़का भोमहा-हौरनसँ बीआ-बालिक प्रचार होइत सुनलिऐ। खूब जोर-जोरसँ अमेरिकन कम्पनीक प्रचार करैत रहए। हमरो जेना डोरी लगि गेल। जहिना अजगर साँपक आँखिपर आँखि पड़लासँ होइ छै तहिना ओइ भोमहाक अवाज हमरा मनकेँ पकैड़ लेलक! आन कोनो चीज देखबे ने करिऐ। जाइत-जाइत हमहूँ ओतए पहुँच गेलौं। एकटा खूब नमहर मोटर गाड़ीक ऊपरमे दूटा भोमहा, दुनू भाग घुमा कऽ लगौने रहए। गाड़ीक बगलमे बीआ-बाइलिक खूब नमहर दोकान सेहो लगौने रहए। ओइ दोकानक चारूभर लोक सभ बैस कऽ बीआक पौकेट सभ देखैत रहइ। दू गोरे दुनू भाग बैस कऽ बीआ बेचैत रहइ। पाँच ग्रामसँ लऽ कऽ किलो भरिक पौकेट सभ रहइ। पौकेट सभपर, जइ चीजक बीआ रहै तेकर खूब रंगर फोटो सभ छापल रहइ।

विकास : अमेरिकन कम्पनी रहै से तूँ केना बुझलहक?

श्रीचन : भोमहोसँ प्रचार करै छेलै आ दोकानदारो कहैत रहइ।

विकास : देखैमे दोकानदार केहेन छेलइ?

श्रीचन : एँह, की कहब भाइ; तीनू गोरे एक्केरंग देखैमे लगइ। घोरहा रंग, पितरिया आँखि आ मक्कैया केश तीनूक रहइ।

विकास : (छुब्ध होइत) घोरहा रंग, पितरिया आँखि आ मक्कैया केश..!

श्रीचन : अहाँ नै बुझलिऐ भाय। तीनू गोरेक एक्केरंग घोर जकाँ छेलै, छालही मोहि कऽ जे घोर बनैए तेहने उज्जर दप-दप! तँए कहलौं घोरहा रंग। अपना सबहक आँखि, केहेन सुन्नर कारी अछि आ ओइ तीनूक आँखि पित्तैर जकाँ देखैमे लगइ। तँए कहलौं पितरिया आँखि। आ जहिना मक्कै बालिक ऊपरमे जे रूइयाँ जकाँ रहै छै तहिना तीनूक केश देखैमे लगइ। अपना सबहक केश केहेन सुन्नर कारी अछि से ओकरा सबहक नइ रहइ।

विकास : (हँसैत) तीनू मौगी रहए कि पुरुख?

श्रीचन : यौ भाय, ई हम ठीक-ठीक नइ कहब। किएक तँ तीनूक मुहोँ-कान आ उमेरो एक्केरंग बुझि पड़इ। मोछ-दाढ़ी रहितै तखन ने बुझितिऐ। से तीनूमे केकरो ने रहइ। रहबे ने करै आकि कटौने रहए, से नै कहि।

विकास : मोछ-दाढ़ी नइ रहै, मुदा माथोक केशसँ नै बुझलहक?

श्रीचन : की कहब भाइ! अपना सबहक केश केहेन मरदनमा अछि। स्त्रीगणक केश नमहर होइ छै, से ओकरा सबहक नइ रहइ।

विकास : तब केहेन छेलइ?

श्रीचन : ने मौगियाही केश रहै आ ने मरदनमा। ने बाबरी सीटे जोगर रहै आ ने जुट्टी गुहै-जोकर। खोपाक तँ कोनो बाते नहि। ओहिना, माने सोझे पाछू-मुहेँ उनटौने रहए। जे लटैक कऽ गरदैने धरि रहइ।

विकास : सिनुरो लगौने रहए की?

श्रीचन : ओह! एक्को गोरे सिनुर नइ लगौने रहए।

विकास : आँखि केहेन रहइ?

श्रीचन : कहलौं तँ पित्तैर जकाँ बुझि पड़इ। मुदा तइमे एक गोरेक आँखि बिलाइ जकाँ चारूभर चकोना होइत रहइ।

विकास : (मुस्कियाइत) आँइ हौ श्रीचन, तोँहू जीवनी भऽ कऽ अनाड़ी भऽ गेलह, जे मौगी रहै कि पुरुख सेहो ने बुझि सकलह।

श्रीचन : यौ भाइ की कहब! तीनू गोरे एक्केरंगक पेन्टो आ एक्के रंगक अंगो पहिरने रहए। खाली बोलीक अवाजमे कनी फरक बुझि पड़इ। दू गोरेक अवाज कनी मोट बुझि पड़इ आ एक गोरेक मेही।

विकास : जेकर अवाज मेही रहै, ओ केहेन रहए?

श्रीचन : अरे बाप रे! बिलाइक आँखि जकाँ ओकर आँखि चमकबो करै आ नचबो करइ। मुदा तेते हबर-हबर बजै जे बुझैक कोन बात, सेरिया कऽ सुनबो ने करिऐ। हम तँ खाली ओकरे-मुहेँ दिस ताकै छेलौं।

विकास : (हँसैत) उ तोरा दिस देखह कि अनका दिस?

श्रीचन : ऐ भागसँ ओइ भाग जे आँखि नचबै, तखन हमरो देखए मुदा बेसी ओ पाइयेबला सभ दिस देखै। हम तँ तीनियेँ साए रूपैआ लऽ कऽ गेल रही। सेहो ढट्ठामे रखने रही। सोचने रही जे एक साएक बीआ कीनि लेब आ दू साएक घरक चीज-वौस कीनि लेब। किए तँ लोक थोड़े सभ दिन हाट-बजार जाइए।

विकास : बीआ जे किनलहक तेकर रसीदो देलकह?

श्रीचन : हँ। (जेबीसँ रसीद आ बीआक खाली डिब्बा निकालि विकास दिस बढ़बैत) हे, यएह दुनू छी।

विकास : (रसीदो आ पैकेटोमे लिखल मिलबैत) ऍँह, ओ तँ सोलहन्नी ठकि लेलकह! रसीदमे किछु लिखल छह आ पैकेटमे किछु। तहूमे तूँ कहै छह जे अमेरिकन कम्पनीक प्रचार करै छेलइ। तीनू तीन रंगक भऽ जाइ छह।

श्रीचन : (निराश होइत) तब तँ लालीस नै हेतइ?

विकास : नहि। अगर ऐ सबूतपर केस करबहक तँ अपने फँसि जेबह। उनटे जहल जाए पड़तह।

श्रीचन : हमरे तीन साए रूपैयो ठकि लेलक आ हमहीं जहलो जाएब..!

विकास : कानूनक अपन रस्ता छइ श्रीचन। जेना कहै छह तेना जे तीनूक मिलान रहितह तँ केसो होइतह। से तँ नै छह।

श्रीचन : तब की करब?

विकास : नीक हेतह जे भरमे-सरम चुपे रहि जाह। नहि तँ अनेरे खरचो हेतह, खेतियो बुड़लह आ जहलो जेबह।

श्रीचन : (गुम्म भऽ मुड़ी डोलबैत) भाइ अहाँक बात तँ हम सभ दिन मानैत एलौं, तँए मानि लइ छी। मुदा हमर मन जरल अछि, जाबे ओकरा या तँ दसटा गारि नै पढ़बै वा दस थापर मारबै नइ वा जहल नै ढुकेबै ताबे हमर मन नहि शान्त हएत।

विकास : अपना गलतीसँ सभ किछु भेलह। कान पकैड़ लएह जे केकरो लल्लो-चप्पोमे नै पड़ब। एकपर एक ठक दुनियाँमे अछि। अच्छा, एकटा बात कहह तँ एना अल्लग-बल्लगमे ठका केना गेलह?

श्रीचन : (कानै-कानै सन मुँह करैत) भाय, बेगरताक मारल मन वौआ गेल। ओना तँ दूटा बेटी अछि, मुदा जेठकी बेटीक बिआह तेसरे सालसँ करैक विचार अछि। तेसराँ बाढ़िमे

सभ दहा गेल, तँए नै कए भेल। पौरुकाँ रौदीए भऽ गेल, तँए ने सम्हरल। ऐबेर सोचने छेलौं जे जेना-तेना बेटीक बिआह काइये लेब, मुदा सेहो आशा टुटि गेल। देखते छिऐ जे हमरा सभकेँ बैंकसँ करजो ने भेटैए आ गामक महाजनो सभ हाथ-पएर समेट लेलक। तँए सोचने छेलौं जे जेना-तेना खेतेमे खूब मेहनत कऽ बेटीक बिआह कऽ लेब। से नै भेल। आब किछु फुरबे ने करैए जे की करब।

विकास : श्रीचन, आशा नै तोड़ह। जखने गरीब भेलह तखने चारू दिससँ बेगरता खिहारबे करतह। मुदा की करबहक। नइ ऐ साल बेटीक बिआह हेतह तँ ऐगला साल करिहह।

श्रीचन : भाय, हएत तँ सएह। मुदा गामक स्त्रीगण सभ कुट्टी-चौल करैत रहैए!

विकास : ओहिना स्त्रीगण सभ बजै छइ। केकरो बजैमे किछु लगै छइ। साहस करह।

श्रीचन : भाय, अपन मन तँ, समए-साल देख कऽ मानि जाइए मुदा घरवाली हरिदम कनिते रहैए। ओकरा जे कानैत देखै छिऐ तँ अपनो छाती दहैल जाइए।

विकास : से तँ होइते हेतह। एकबेर तमाकू खाह।

श्रीचन : (जेबीसँ तमाकुल-चुन निकालि, तमाकुल चुनबए लगैत) एकटा बात तँ पुछबे ने केलौं। आब मन पड़ल। ओ बीआबला सभ जे ओहन उज्जर दप-दप लगै छेलै से ओकरा सबहक रंगे ओहिना होइ छै कि चरक फुटल छेलइ? किएक तँ अपनो गाममे एक गोरे ओहने अछि। जेकरा नै सभ चरकाहा कहै छइ।

विकास : जइ मुलुकमे ओ सभ रहैए, ओइठाम बारहो मास ठंढे रहै छइ। अपना सभ जकाँ गरमी नै होइ छै ओतए, तँए ओकरा सबहक रंगे ओहेन भऽ जाइ छइ।

(तमाकुल खा कऽ श्रीचन विदा हुअ लगैत)

विकास : एकटा बात सुनि लएह श्रीचन। जाबे तक अपना ऐठामक किसान नीक बीआ, नीक खाद आ कीटनाशक नीक दबाइ बनबैक लूरि अपने नहि सीखि लेत, ताबे तक अहिना ठक सभ आबि-आबि ठकैत रहतै। बजैत दुख होइए जे अपन देश किसानक देश छी। मुदा किसानक जिनगी मुरदोसँ बत्तर अछि। ने खेती करैक लूरि किसानकेँ छै, ने खेतीक उपकरण छै आ ने पटबैक कोनो जोगार छइ। धार-धुरक अपन इलाका रहने खेत चौरसो ने अछि। एहेन स्थितिमे लोक केना जीवित रहत?

(श्रीचन जाइए। कर्मनाथक प्रवेश। विकासकेँ प्रणाम करैत)

विकास : आ-हा-हा, बाउ कर्मनाथ! बहुत दिनक पछाइत तोरासँ भेँट भेल। कहिया गाम एलह। सपरिवार आनन्दसँ रहै छह किने। बच्चा सबहक कुशल कहह...।

कर्मनाथ : सभ आनन्दसँ छी। जेठकी बच्चिया बी.ए. पास केलक। बचबा कौलेजमे आ छोटकी बच्चिया हाइ स्कूलमे पढ़ैए। परसू गाम एलौं।

विकास : बेटी तँ बिआहै-जोकर भऽ गेल हेतह?

कर्मनाथ : हँ। वएह सोचि दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं। मुदा ऐठाम जे हवा-बिहाड़ि देखै छी तइसँ मने घबराइए। आन नोकरिया जकाँ तँ हम्मर जिनगी नै अछि।

विकास : बाउ कर्मनाथ, अखन धरि तोरा बच्चे जकाँ बुझैत एलियह आ आगूओ बुझैत रहबह। भने कहलह जे दहेजक बिहाड़ि समाजमे उठि गेल अछि। अखन धरि तँ कहियो कोनो काज केलह नहि, तँए मन घबराएब उचिते छह। मुदा एकटा बात बुझए पड़तह जे हवा-बिहाड़ि जहिना समाजमे उठैए तहिना समाजे ओकरा रोकबो करैए। अज्ञानी, लोभी आ समाज विरोधी लोक ओकरा बढ़बैए। मुदा ऐसँ समझदार लोक थोड़े घबराएत। जहिना एक्के खेतमे बगुरोक गाछ रहैए आ नीक-नीक फलोक गाछ रहैए तहिना समाजोमे होइ छइ। नीक-सँ-नीक लोक आ अधला-सँ-अधला लोक एक्के समाजमे अछि। हँ, ई बात जरूर अछि जे कखनो अधला लोक नीक लोककेँ पछाड़ैए तँ कखनो नीक लोक अधला लोककेँ पछाड़ैए।

कर्मनाथ : जँ अहिना होइत रहत तँ समाज नीक केना बनत?

विकास : अखन धरिक जे इतिहास अछि ओइ आधारपर नीक लोक पछड़ैत रहल अछि। किएक तँ जइ शक्तिक हाथमे समाज सत्ता रहल ओ धूर्त, बेइमान आ शोषकक रहल। तँए ओइ शक्तिक संग इमानदार, मेहनती आ भलमानुस लोककेँ संगठित भऽ मुकाबला करए पड़तै। जइसँ उठा-पटक हेबे करतै मुदा अन्तिम विजय इमानदारेक होएत। किएक तँ एहेन लोकक संख्यो बेसी अछि आ काजो नीक अछि।

कर्मनाथ : तखन फेर एना किए होइ छइ?

विकास : (मुस्कियाइत) कम संख्यामे धूर्त, बेइमानकेँ रहितो, बुधि आ सम्पैत ओकरे हाथमे छइ। जे दुनू हथियारक रूपमे

काज करै छइ। कमजोर, मुर्ख अधिक रहितौं अखन धरि पछड़ैत रहल अछि।

कर्मनाथ : ऐ बातकेँ अखन छोड़ूँ। हम जइ काजसँ अहाँ लग एलौं तैपर कनी विचार कएल जाए। अपने सिरिफ गुरुए नहि, समाज निर्माता सेहो छी। हम्मर बेटी आइक मनुख छी, नै कि घसल-पिटल परम्पराक। तँए, हमरा मनमे अटुट बिसवास अछि जे हमरा बेटीक बिआह हँसी-खुशीसँ हेबे करत। मुदा हम तँ समाजसँ सभ दिन अलग रहलौं, तँए कनी चिन्ता मनमे जरूर अछि।

विकास : बौआ, तोरा पितासँ हमरा मतभेद किएक अछि, से पहिने सुनि लएह। तोहर परबाबा जे रहथुन ओ नामी-गामी लोक छला। समाजो अनुकूले रहैन आ समैयो तेहने रहए। जहिना हुनका धन-सम्पैत रहैन तहिना मानो-प्रतिष्ठा। जखन ओ मुइला तँ मास दिन धरि सराधक भोज होइते रहल। हमहूँ ताबे ढेरबे रही मुदा सभ किछु मन अछि। तीस गाम नोति कऽ खुऔल गेल रहइ। एक-एक गामकेँ एक-एक दिन। गामक सभ जातिक लोक ओइ काजमे जुटल रहए। किएक तँ काजो भारी छेलइ। खेनाइक सभ वस्तुक ओरियानसँ लऽ कऽ नोत पठौनाइ आ खुऔनाइ धरिक काज रहइ।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) ई बात हमरा नै बुझल छल। भने अहाँ कहि देलौं।

विकास : करीब पचास-पचपन बरख पहिलुका बात छी। ताधैर गाममे दोसर तरहक विचार चलै छेलइ। अखुनका जकाँ लोकमे दूजा-भाव नै छेलइ। ओइ समए लोकक जिनगियो छोट छेलइ। तेकर बाद, करीब पैंतीस-चालीस

बर्ख पहिने, तोहर बाबा मरलखुन, ता हमहूँ शिक्षक भऽ गेल रही। समाजमे विचारो बदलए लगल छेलइ। तोहर पिताजी भोज-ले समाजकेँ बैसौलैन। हमहूँ छेलौं। ओ कहलखिन जे नअ गामक जे सौजनियाँ अछि तेते लऽ कऽ भोज करब। किछु गोरे समर्थनो केलकैन। मुदा किछु गोरे विरोधो केलकैन, जइमे हमहूँ छेलौं।

कर्मनाथ : विरोध किए केलिऐन?

विकास : (हँसैत) हमरा सबहक–माने विरोध केनिहारक–विचार छल जे कोनो भोजमे समाजक लोककेँ छोड़ि–माने आन जातिक लोककेँ छोड़ि–अनगोंआँकेँ नोत दऽ खुआएब उचित नहि। जेते खरच कऽ भोज करए चाहै छी ओ गौंवेकेँ नोत दऽ कऽ खुआउ। गामक कोनो जाति किएक ने हुअए मुदा छी तँ ओ समाज। समाजक काज हरिदम लोककेँ होइ छइ। कोनो बेर बेगरतामे समाजे ठाढ़ होइए। अनगौंआँ तँ सिरिफ भोजे खाइए आ खुआबैए। तँए ई काज अधला छी।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) ई तँ वैचारिक मतभेद भेल।

विकास : सिरिफ वैचारिके मतभेद नहि, एकरा पाछू वास्तविकतो अछि। बेटा-बेटीक बिआह लोक आन गाममे करैए। जइसँ ओ समाज नहि, कुटुम होइए। जिनका संग नोत-पिहान चलिते अछि। मुदा आन गामक जातिकेँ समाज मानि खाइ-पीबैक बेवहार बनाएब, उचित नहि। हँ, उचित तखन जखन समाजक सभ जातिकेँ खुआ, आनो गामक लोककेँ खुआबी। मुदा समाज तँ जीबैतसँ लऽ कऽ मृत्यु धरि संग रहैबला होइत। तँए, आन गामक जातिसँ पैध अपन समाज होइए। जेना केतौ आगि लगै

छै तँ समाजेक लोक, चाहे ओ कोनो जातिक किएक ने हुअए, आबि कऽ मिझबैए। तहिना कियो बिमार पड़ैए वा कोनो आफत-असमानी होइ छै तँ समाजे आगू अबैए। अही लऽ कऽ दुनू गोरेक बीच मतभेद अछि। मतभेदे नहि अछि, एक जाति रहनौं खेनाइयो-पिनाइ बन्न अछि। हमरो समाज अलग अछि आ हुनको अलग छैन। सिरिफ एक गाममे छी तँए गौंआँ छिआ।

कर्मनाथ : तखन तँ गाम दू समाजमे बँटि गेल अछि?

विकास : (दृढ़तासँ) निसचित! निसचित दू भाग मे बँटल अछि। एक-समाजक लोक गौंआँसँ जुड़ल अछि आ दोसर समाजक लोक अनगौंआँ जाति सभसँ जुड़ल अछि। तँए अहाँक ऐठाम जे कोनो भोज होइए तँ हम खाइ-ले नै जाइ छी आ ने अहाँक परिवार हमरा ऐठाम अबै छैथ।

कर्मनाथ : ई तँ जबरदस कारण अछि!

विकास : हमरा संग एहेन समस्या अछि जे जँ अहाँक ऐठाम खाइ-ले जाएब तँ अपन वैचारिक समाज टुटि जाएत। जँ वैचारिक समाज टुटि जाएत तँ फेर ओहिना बिनु जड़ि-पालोक समाजमे मिज्झर भऽ जाएब। जइ समाजमे बलात्कारकेँ धिया-पुताक खेल बुझल जाइए। गारिकेँ मजाक बुझल जाइए आ आर्थिक शोषणकेँ–माने धनक बेइमानीकेँ–परम्पराक चलैन बुझल जाइए।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) हँ, ई तँ होइए।

विकास : आइ धरिक जिनगीमे हम दुइए-टा काजक संकल्प कऽ करैत एलौं आ अखनो करै छी। पहिल, समाजक भोज आ दोसर बेटा-बेटीक बिआहमे दहेज, ने लेब आ न देब। जे सिरिफ हमहींटा नहि, अपन जे समाजक लोक अछि

ओ सभ करैए। अही दुनू काजे तोरा परिवारसँ हमरा मनमुटाउ बुझहक वा पार्टी बुझहक वा दू समाज बुझहक, भऽ गेल अछि। अच्छा, आब अपना काजपर आबह। तूँ तँ अफसर छह, तखन किए अफसरक समाज छोड़ि गामक समाजमे कुटुमैती करए चाहै छह?

कर्मनाथ : अफसरक समाज कहियौ वा नोकरिया, ओ अस्थाइ होइए। जहिना रबड़क बैलूनमे जाधैर हवा रहल ताधैर अकासमे उड़ैत रहैए मुदा हवा निकैलते वा बैलून फुटिते केतौ जा कऽ खसि पड़ैत अछि। तहिना नोकरियाक जिनगी सेहो अछि। जाधैर नोकरी रहल, पावरमे रहैए आ नोकरी समाप्त होइतै जिनगी केतए-सँ केतए चलि जाइ छइ। मुदा समाजिक जिनगी से नहि, स्थायी होइत अछि। समाजिक जिनगी बहुआयामी होइत अछि। जहिना गनगुआरिकेँ सैकड़ो पएर होइए, जइमे सँ एकाध-टा टुटनौं कोनो अन्तर नहि, तहिना। एकर अतिरिक्तो कारण सभ अछि।

विकास : आरो की कारण छइ?

कर्मनाथ : नोकरी करैबला सिरिफ एक्के इलाकाक नै होइत। जइसँ जिनगीक एहेन अनेको काज अछि जइमे एकरूपता नै आबि पबैत अछि। मुदा समाजिक जिनगी ओइसँ विपरीत होइत। जाधैर हमरो नोकरी अछि ताधैर हमहूँ घरसँ बाहर छी, मुदा नोकरी समाप्त होइते गाम चलि आएब।

विकास : बहुत बढ़ियाँ विचार छह। आइ जे देखै छहक जे गाम घरक दशा दिनो-दिन पछुआएल जा रहल अछि, एकर की कारण? एकर कारण अछि गामक पढ़ल-लिखल

लोककेँ गाम छोड़ि कऽ चलि जाएब। जाधैर गामक सम्पैतमे बुधिक उपयोग नै हएत ताधैर गामक सम्पैत निच्चैं-मुहेँ ससरैत जाएत। ओकरा आगू-मुहेँ बढ़बैले नव ज्ञानक जरूरत अछि। जखने नव ज्ञानक उपयोग गाममे हुअ लगत तखने नव तकनीक, नव लूरि आबि जाएत। नव तकनीक आ नव ढंग नव मनुख पैदा करत। नव मनुख पैदा होइते नव समाज बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जे समैक अनुकूल चलए लगत।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) हूँ-उ-उ!

विकास : एतबे नहि, अपना इलाकाक–माने मिथिलांचलक–जे अमूल्य बेवहार, अमूल्य क्रिया-कलाप अछि ओ धीरे-धीरे घटि रहल अछि। आ एहेन बुझि पड़ैए जे घटैत-घटैत मेटा जाएत। लोकक जीवन शैली बदैल रहल अछि, जइसँ समाजिक सम्बन्ध, कला, संस्कृति सभ किछु प्रभावित भऽ रहल अछि। नान्हि-नान्हिटा काज, नान्हि-नान्हिटा बातमे लोक तेना ने दिन-राति ओझराएल रहैए जे आगू-मुहेँ ससरैक कोन बात जे पाछूए-मुहेँ ढरैक रहल अछि। जइसँ हरिदम वातावरण दूषित भेल रहैए। अनेरो लोक हरिदम चिन्ता आ तनावमे पड़ल रहैए।

कर्मनाथ : ऐ दिशामे समाजक बुद्धिजीवी लोकैनकेँ आगू आबए पड़तैन।

विकास : निसचित। कोनो समाजकेँ आगू बढ़बैले वा गलत दिशासँ सही दिशा दिस लऽ जाइले बुद्धिजीविये अगुआइ कऽ सकै छैथ। जेकरा अपने दिशाक बोध नइ छै ओ आगू-मुहेँ केना बढ़ि सकैए। ओना पढ़लो-लिखल सभकेँ दिशाक बोध होइते छैन, सेहो बात नहि। जेना कहल

गेल अछि जे पोथीए पढ़ि लोक ज्ञान अर्जित करैए आ पोथीए लोककेँ अज्ञानोक दिशामे बढ़बैए।

कर्मनाथ : (गम्भीर होइत) अपने जे बात कहि रहल छी, ओइ दिस हमरो धियान अखन धरि नै गेल छल।

विकास : (मुस्कियाइत) अखन धरि तोहर धियान, एक बेवस्थाक बीच रहलह तँए नीक-अधला बेरबैक ज्ञान नै भेलह। किएक तँ बेवस्था बेवहारक माध्यमसँ चलैए।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) तखन तँ नीक-अधला बुझैले मनसँ नै विवेकसँ निर्णए..?

विकास : निसचित! ऐमे एक्को पाइ सन्देह नहि। मन निर्णए करै, बुधिक हिसाबसँ। बुधि बनै छै बेवस्थाक हिसाबसँ, तँए लोकक जे सोचैक आ बुझैक प्रक्रिया अछि ओ बेवस्थाक अनुकूल होइए। मुदा बेवस्था केहेन अछि, से ओइसँ आगूक प्रक्रिया छी। हमरा नीक हुअए, ई सभ चाहैए। मुदा अहीक भीतर प्रश्न उठैए जे अपन नीकक संग जँ दोसरकेँ अधला होइ, तखन? नीक तँ तखन ने नीक जे अपना संग-संग दोसरो-ले नीक होइ। जँ दोसरकेँ नीक नै होइ तँ अधलो नै होइ। हँ, ई बात जरूर जे किछु काज बेकतीगतो होइए, जइसँ दोसरकेँ मतलब नइ होइत अछि।

कर्मनाथ : (नमहर साँस छोड़ैत) तब तँ बिआहमे जे दहेजक चलैन अछि, सेहो ओहने अछि?

विकास : (मुस्कियाइत) निसचित! दहेज लेनिहार तीन रंगक अछि। पहिल अछि जे जेते दहेज लइए ओइसँ दोबरा-तेबरा कऽ बजैए। दोसर तरहक अछि, जे बेटा बिआहमे जेते दहेज लइए ओइसँ कम बेटीक बिआहमे दइए वा

नहियोँ दइक विचारमे रहैए। तेसर तरहक अछि जे दहेज लेलाक बादो छिपबए चाहैए। आब तोँही कहह जे एना किए अछि?

कर्मनाथ : एहेन ओझराएल सवालक हल केना होएत?

विकास : (हँसैत) यएह काज तँ हम अपना समाजमे कऽ रहल छी। ऊपरसँ नइ बुझि पड़तह मुदा समाजक भीतर समाज बनि चलि रहल अछि। जहिना बेटा तहिना पढ़ौल शिष्य। तूँ हमर पढ़ौल शिष्य छिअ, तँए तोरा हम बिसवास दइ छिअह, हम्मर जे जरूरत तोरा हुअअ, तइले तैयार छिअ। तोहर बेटी हम्मरो तँ पोतीए छी। तोरा हम शुरूहेसँ जनै छिअ जे आन नोकरिया जकाँ तूँ लेन-देनसँ परहेज केने छह। तोरा एक्को पाइ दहेज कहि खरच नइ हेतह। तखन तँ बेटा-बेटीक बिआह छी। जे बेवहार अदौसँ आबि रहल अछि ओ तँ पुरबैये पड़तह।

कर्मनाथ : आइ धरि जे समस्या माथकेँ भरियौने छल से निकैल गेल। मन हल्लुक भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहि दइ छी काका, हम तँ नोकरिया छी। गनल दिनक छुट्टी अछि तँए दोहरा कऽ छुट्टी नै लिअ पड़ए तैपर नजैर राखब।

विकास : (मुड़ी डोलबैत) हमहूँ नोकरी कऽ चुकल छी तँए छुट्टीक महत बुझै छिऐ। काल्हियेसँ हम तोरा काजक पाछू पड़ि जाएब। परसू फेर भेँट हएब। बेटी किछु विशेष पढ़ल छह तँए काज थोड़े भरिगर जरूर अछि। किएक तँ गाम-घरमे लड़कीक कोन बात जे लड़को कम पढ़ल-लिखल अछि। बी.ए. पास लड़की-ले कम-सँ-कम एम.ए. पास लड़का चाहिये। नहि तँ इंजीनियर, डाक्टर, वकील तँ चाहबे करिऐ।

कर्मनाथ : आब हम कनी हटि कऽ एकटा सवाल पुछै छी। अखनो आ पहिनौंसँ देखैत एलौं जे नीक-सँ-नीक–बेसीसँ बेसी–पढ़ल-लिखल लड़काक संग अनपढ़ लड़कीक बिआह होइए वा होइत आएल अछि। ओ उचित बुझल जाइ छै, मुदा अधिक पढ़ल-लिखल वा पढ़ल-लिखल लड़कीक संग कम पढ़ल वा अनपढ़ लड़काक संग बिआह करब उचित वा अनुचित?

विकास : ऐ प्रश्नक उत्तर दोसर दिन देबह। अखन हमर मन तोरा काजमे ओझरा गेल अछि।

ः

शब्द संख्या : 3392

चारिम अंक

(रामविलासक घर)

रामविलास : जिनगीक साठिम बरखमे आइ बुझि पड़ैए जे निचेन भेलौं सेहो सोलहन्नी नहि, पाँच पाइ चिन्ता अखनो बाँकीए अछि। मुदा तैयो आइ अपनाकेँ निचेन मानै छी, किएक तँ जहिना एक दिन बितने पूर्वज सौंसे माध बीतब मानि लेलैन, तइ हिसाबे पाँच पाइ भार किछु ने भेल। जिनगीक साठि बरखक रगगरघसक उपरान्त जे फल भेटल ओ तँ सुअदगर आ मीठ हेबे करत, तँए मनमे खुशी सेहो अछिए।

माधुरी : मनमे खुशी आछि तँ नाचू।

रामविलास : नाचत तँ शरीरक भीतर जे मन अछि ओ। हम कोनो नचनियाँ छी जे मंचपर नाचब। तखन हँ, एकटा बात मनमे जरूर उपकैए जे अहाँसँ भरि मन गप करी।

माधुरी : ठीके लोक कहै छै जे 'पुरुखक बात आ गाड़ीक पहिया, दुनू बरबैर!' जहिना गाड़ीक पहिया घुमैत रहैए तहिना पुरुखोक बात। कहू जे केहेन अकरहर बात बजै छी जे एते दिन दुनू गोरे संग-संग रहलौं मुदा भरि मन गप कहियो ने केलौं..!

रामविलास : (मुँह बिजकबैत) अहाँकेँ की होइए जे हम फुसिए कहलौं?

माधुरी : अपना की बुझि पड़ैए जे साँचे बजलौं?

रामविलास : सुआइत लोक कहै छै जे 'पुरुख आगू बढ़ैत-बढ़ैत चोर-डकैत, लुच्चा, लम्पट सभ बनि गेल मुदा मौगी गोबरक चोत जकाँ ठामे-के-ठामे रहि गेल!' अहींसँ पुछै छी- कहू काल्हि धरि हम कहिया निचेन भेल छेलौं आ अहाँसँ भरि मन हँसी-खुशीक बात केलौं?

माधुरी : कोन बड़का पहाड़ उनटाबैमे छेलौं जेकरा उलटबैमे साठि बरख लागि गेल?

रामविलास : (गम्भीर होइत) बड़ सुन्नर बात कहलौं। सभसँ पहिने ई बात बुझि लिअ जे जहियासँ हम-अहाँ एकठाम भेलौं आ जाधैर नै भेल छेलौं, तँए पहिने दुनू गोरेक बिआहसँ पहिलुका बात कहि दइ छी। तेकर बाद बिआहक बादक बात कहब। जहिया अहूँ अपना गाममे रहै छेलौं आ हमहूँ अपना गाममे।

माधुरी : अहाँक अपन कोन गाम छल? हम तँ अपन गाम अपन नैहरकेँ बुझै छी।

रामविलास : एतबो ने बुझै छिऐ जे अपन गाम होइए अपना रहने। से जँ नै रहलौं तँ 'अपन गाम' केना भेल? बड़बढ़ियाँ अहाँ अपन नैहरकेँ अपन गाम कहलिऐ। मुदा हमरा तँ अपना गामसँ भगा देलक।

माधुरी : के भगा देलक?

रामविलास : गरीबी भगा देलक। जखन हम दसे-बारह बरखक छेलौं बाबू दुखित पड़ला। तीनियेँ गोरेक परिवार छल, माए-बाबू आ हम। हम ताबे खेलाइते-धुपाइते रही आ धरीए पहिरैत रही। दुखसँ बाबूक हालत दिनो-दिन बिगैड़ते जाइत रहैन। असकरे माए बोइनो करि कऽ आनए आ

बाबूओक सेवा टहल करैत रहए। दिन-राति तंग-तंग रहैत छल। बेवस भऽ एक दिन कहलक जे बौआ गाममे सभ अन्न बेतरे मरि जेबह। गाममे ने कियो काज करौनिहार अछि आ ने अपना कोनो आए-उपाए छह। तँए केतौ जा कऽ कमा आनह।

माधुरी : गामसँ माइये जाइले कहलैन?

रामविलास : हँ। मुदा ओहो वेचारी की करैत।

माधुरी : गामसँ असकरे केतए गेलिऐ?

रामविलास : असकरे कहाँ गेलिऐ। अपनो गामक आ लग-पासक आनो-आनो गामक लोक सभ साल पटुआ कटैले, धनरोपनी करैले पूभर जाइ छल। ओकरे सबहक संगे हमहूँ गेलौं। तीन दिने मोरंग पहुँचलौं। ताबे कोसी धारमे पुलो ने बनल छेलइ। नाहेपर पार भेलौं। भीमनगरसँ जगबोनी बस चलै छेलइ। कोसी पार भऽ कऽ बथनाहामे बस पकड़लौं जे नेने-नेने जगबोनी पहुँचा देलक। जगबोनीसँ पएरे मोरंग विदा भेलौं। तेसर दिन किरिण डुमैत-डुमैत मोरंग बजार पहुँचलौं। ओइ दिन हाटो रहइ। हम सभ हाटेपर रही कि एकटा थारू जे दुनू परानी हाट आएल रहए। ओ जे हमरा सभकेँ देखलक तँ बुझि गेल जे पछबरिया सभ छी। लगमे आबि कऽ कहलक जे 'ऐ देशवाली भैया, हमरा संगे चलह।' सभ कियो ओकरे संगे विदा भेलौं। जहाँ हाटसँ निकलए लगलौं कि कहलक- 'भैया तोरा सभकेँ भूख लागल हेतह, पहिने किछु खा लएह।' दू छिट्टा मुरही आ कचड़ी कीनि कऽ दऽ देलक। सभ कियो गमछाक खोंचैड़ बना मुरही लऽ लेलौं आ खाइते विदा भेलौं। तेसर साँझमे ओकरा ऐठीम

पहुँचलौं। देखैमे तँ ओ अलबटाहे जकाँ बुझि पड़ए, मुदा रहए पूजिगर। आठ जोड़ा बड़द खुट्टापर बन्हने छल।

माधुरी : केते दिन ओकरा ऐठाम रहलिऐ?

रामविलास : दू मास। एक मास पटुआक काज चललै आ एक मास धनरोपनी।

माधुरी : काजक लूरि केना भेल?

रामविलास : सभकेँ जेना-जेना करैत देखिऐ, तहिना-तहिना हमहूँ करिऐ।

माधुरी : दू मासमे केते कमेलिऐ?

रामविलास : डेढ़-डेढ़ साए रूपैआक फाँट सभकेँ भेलइ। ओइमे सँ हम सबा साए रूपैआ गाम पठा देलिऐ आ पच्चीस रूपैआ लऽ कलकत्ता चलि गेलौं। कलकत्ता तँ गेलौं मुदा कियो चिन्हारए रहबे ने करए। बस स्टैण्डमे उतैर एकटा दोकानमे खाइ-ले गेलौं। खाइते रही कि तीन-चारिटा मटिया चाह पीबैले आएल। ओ सभ अपने बोली बजइ। हम खेबो करी आ ओकरे सभ दिस तकबो करी। हमहूँ हाँइ-हाँइ कऽ खा हाथ धोइ, दोकानदारकेँ पाइ दऽ एक गोरेकेँ कहलिऐ, भाइ हमहूँ काजे करैले एलौं, केतौ जोगार लगा दएह। ओ सभ अपने संगे हमरो नेने गेल।

माधुरी : मटिया सभ काज की करइ?

रामविलास : बोरो उधै आ आनो-आनो सामान सभ उधै। ओकरे लाटमे हमहूँ काज करए लगलौं। बरख दिन ओकरे सबहक संगे रहलौं। बरख दिनक पछाइत ओहो सभ गाम आएल आ हमहूँ एलौं। बर्खे दिनमे केते गोरेसँ चिन्हारए भऽ गेल। गाम आबि एकटा भीतघर बन्हलौं। बाबूओक मन नीक भऽ गेलैन। अपन मासुल-ले रूपैआ

रखि अन-पानि कीनि कऽ घरमे दऽ देलिऐ आ डेढ़ मासक पछाइत फेर चलि गेलौं।

माधुरी : फेर मटियेबला काज करए लगलौं?

रामविलास : हँ, पाँच बरख धरि मटियाक काज करैत रहलौं। तेकर बाद अहाँक संग बिआह भेल। बिआहक पछाइत जे कलकत्ता जाइत रही कि दरभंगामे एक गोरे अपन परिवारक संगे हमरे लगमे आबि कऽ बैसलैथ। ओहो कलकत्ते जाइत रहैथ। समस्तीपुर तक हमहूँ चुप्पे-चाप बैसल रही, मुदा ओ सभ अपनामे गप-सप्प करैत रहैथ। ताबे समस्तीपुर तक छोटकीए गाड़ी चलइ। समस्तीपुरसँ बड़की गाड़ी कलकत्ता जाइ। जखन समस्तीपुर टीशन लगिचाएल कि ओ हमरा पुछलैन, 'बौआ केतए जेबह?' हम कहलयैन- 'कलकत्ता।' ओ कहलैन- 'हमहूँ कलकत्ते जाएब।' हमरा समानो सभ अछि आ दूटा बच्चो अछि, तँए कनी समस्तीपुर टीशनमे बच्चा सभकेँ सम्हारि दिहह। हमहूँ सएह केलौं।

माधुरी : समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ी पकड़लिऐ ओ सोझे कलकत्ता लऽ गेल, आकि बीचमे केतौ फेर बदलए पड़ल?

रामविलास : नहि। बीचमे केतौ नै बदलए पड़ल। समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ीपर बैसलौं, तखनसँ वएह चाहो पीआबैथ। ओ अपने इलाकाक रहैथ। हिन्द मोटर कारखानामे इंजीनियर छला। देखैमे तँ साधारणे बुझि पड़ैथ, मुदा साक्षात् देवता छला। ओ कहलैन जे बौआ तूँ हमरे संगे चलह। हमरे ऐठाम रहिहह आ तोरा हम करखन्नेमे काज धरा देबह। तहियासँ हम हुनके ऐठाम रहए लगलौं।

माधुरी : (मुस्कियाइत) अखन धरि बिआहसँ पहुलके जिनगीक बात कहलिऐ?

रामविलास : हँ। बिआहक पछाइत तँ अहूँ आबिये गेलौं आ देखबे करैत एलिऐ जे सालमे एकबेर महिना दिनक छुट्टीमे अबै छेलौं आ तैबीच जे-जेना घरक काज रहै छल ओकरे सम्हारैमे मासो बीति जाइ छल। तखन आब अहीं कहू जे हम कहिया निचेन भेलौं?

माधुरी : अच्छा, आब अपन खिस्सा-पिहानी छोड़ू। काल्हि तँ बौआक रिजल्ट निकैलिये गेल। पढ़ाइयो ओकर समाप्ते भऽ गेलइ। आब ओकर बिआह कऽ लिअ।

रामविलास : अपनो मनमे सएह अछि। मुदा अखन धरि तँ घरक गारजन अहाँ रहलौं, हम तँ सभ दिन बाहर खटलौं। घरक तीत-मीठ तँ बुझलिऐ नहि। आब रिटायर भऽ कऽ एलौं हेन, आब जे घरक भार उठबए चाहब से हमरा बुते सम्हरत?

माधुरी : कोनो काज केनहि लोक काज सिखैए। अहाँ केतबो अनाड़ी छी तैयो तँ पुरुखे छी। हम केतबो जीवनी छी तैयो तँ स्त्रीगणे छी। घरक काज सम्हारि सकै छी, मुदा घरसँ बाहरक काज केना सम्हारल हएत।

रामविलास : अहूँक बात एकतरहक जरूर अछि। मुदा आब तँ तीन गोरे भेलौं। मदनोक पढ़ाइ समाप्ते भऽ गेल, तँए सभसँ पहिने ओकर बिआह कऽ लेब अछि।

(विकासक आगमन)

रामविलास : (हँसैत) आउ-आउ, मास्टर साहैब। अहोभाग्य हम्मर आ हमरा परिवारक! बहू दिनक पछाइत अपनेसँ भेँट भेल। शरीरसँ स्वस्थ रहै छिऐ किने?

विकास : हँ।

रामविलास : परिवारक सभ आनन्दसँ छैथ किने?

विकास : हँ। बेटा हाइ स्कूलमे मास्टरी करैए। अपने तँ आठ साल पहिनहि रिटायर भऽ गेलौं।

रामविलास : (मुस्कियाइत) वाह, वाह। हमरो मदन एम.कम. केलक। काल्हिये ओकर रिजल्ट निकललै। फस्ट डिवीजन भेलइ।

(पत्नीसँ)

अनासुरती मास्टर साहैब एला हेन, भाग्य हम्मर। किएक तँ मास्टरे साहैबक पढ़ौल मदन छिऐन, तँए सभसँ पहिने मास्टर साहैबकेँ मिठाइ खुअबियौन।

(माधुरी जाइए)

विकास : मदन कहाँ अछि? बिना असिरवाद देने मिठाइ केना खाएब!

रामविलास : ओ तँ आइये भोरुका गाड़ीसँ दरभंगा गेल, अपन संगियो-साथी आ प्रोफेसरो सभसँ भेँट करए। भऽ सकैए सौंझुका गाड़ीसँ घुमत। नहि जँ संगी सबहक संगे सिनेमा देखए लगत, तखन काल्हि कखनो औत। हमहूँ पैछला मास रिटायर कऽ गेलौं। मदनेक दुआरे घरक सभ काज जक-थक पड़ल अछि। किएक तँ जाधैर ओ पढ़ैत छल ताधैर घरक काजमे केना हाथ लगैबतौं। मुदा सोचै छी जे सभसँ पहिने ओकर बिआह कऽ ली। ओना अखन धरि घरो बनौनाइ पछुआएले अछि।

विकास : हँ, हँ, बड़बढ़ियाँ विचार अछि।

रामविलास : एकटा भार मास्टर साहैब अहूँकेँ दइ छी, किएक तँ गाम-घरक (समाजक) बात अपने बुझै छी नहि। घन्यवाद

घरेवालीकेँ दी जे वेचारी स्त्रीगण रहितौं अखन धरि घर सम्हारि कऽ चलौलैन। हम तँ जिनगी भरि केवल कमेलौं, एकर अलाबा तँ किछु केलौं नहि। अपनेकेँ यएह भार दइ छी जे मदनक बिआह करा दियौ।

विकास : भार तँ बड़बढ़ियाँ देलौं, मुदा..?

रामविलास : मुदा की?

विकास : बेटा-बेटीक बिआह आब विजनेस भऽ गेल अछि। जइसँ हमरा सख्त घृणा अछि। सत्तैर बरखक जिनगीमे, सैकड़ो बिआहक अगुआइ केलौं मुदा एकोटामे लेन-देन नहि केलौं। तखन आब अहीं कहू जे ई भार हमरा उठत?

(प्लेटमे मिठाइ नेने माधुरीक प्रवेश)

रामविलास : मास्सैब, लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा अछि, अगर जँ ओकरो बेचिये लेब तखन मुइला पछाइत एक चुरूक पानियोँ के देत। बेचलाहा बेटा जँ देबे करत तँ ओइसँ थोड़े संतोख हएत।

विकास : (मुस्कियाइत) कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ, मुदा आब लोक थोड़े ई बात बुझैए। आब तँ लोककेँ रूपैआक आगि मनमे लागि गेल छइ। रूपैयेकेँ धरम-करम सभ बुझैए। समाजोक एहेन रूखि भऽ गेल छै जे जेकरा रूपैआ छै ओकरे पुछैए आ जेकरा नै छै ओकरा कियो ने पुछैए।

रामविलास : (मुस्कियाइत) मास्सैब, हम अपन बात कहै छी, जाधैर हमहूँ नै बुझै छेलिऐ ताधैर मनमे हरिदम रूपैयेक बात रहै छल। 'संतोख'केँ एकटा शब्द मात्र बुझै छेलिऐ। मुदा धन्यवाद ओइ इंजीनियर साहैबकेँ दिऐन जे आँखिक परदा हटा देलैन। आब रूपैआकेँ एकटा साधन मात्र बुझै छी, जिनगी नहि।

विकास : ओ इंजीनियर के छला?

रामविलास : हुनकर घर अपने इलाका छैन मुदा बच्चेसँ ओ कलकत्तेमे रहला। ओतै पढ़बो केलैन आ हिन्द मोटरमे नोकरियो केलैन। बहुत दिनक बात छिऐ, हमहूँ कलकत्ता जाइत रही आ ओहो दरभंगामे गाड़ी पकैड़ कलकत्ते जाइ छला। गाड़ीए-मे भेँट भेला। अपने संगे हमरो लऽ जा पहिने तँ, उठे काजमे घरौलैन मुदा किछुए दिनक पछाइत हमरो परमानेन्ट नोकरी भऽ गेल। हरिदम ओ यएह कहैथ जे 'रामविलास! गरीबक पूजी मेहनत छिऐ, तँए मेहनतकेँ अपन दोस्त बना कऽ चली। हुनके परसादे हम हेड मिस्त्री भऽ कऽ रिटायर केलौं। मुरुख रहितौं हम कमा कऽ बुर्ज लगा देलिऐ।

विकास : की बुर्ज लगा देलिऐ?

रामविलास : जेना-जेना आमदनी बढ़ैत गेल तेना-तेना अपन कारोबार बढ़बैत गेलौं। जाबे मशीनक ज्ञान नै भेल छल ताबे एकटा सेकेण्ड हेण्ड टैक्सी किनलौं। एकटा ड्राइवरकेँ पचास रूपैआ रोजपर चलबैले दऽ देलिऐ। अपन जे दरमाहा हुअए ओइमे अदहा गाम पठाबी आ अदहा जमा करी। किछुए दिनक पछाइत पुरना टेक्सीकेँ बेच नवका कीनि लेलौं। तखन भड़ो बेसी हुअ लगल आ तैबीच अपनो मिस्त्रीक हेल्परसँ मिस्त्री बनि गेलौं।

विकास : बाह-बाह। तखन?

रामविलास : जखन मिस्त्री बनि गेलौं तखन दरमहो दोबरा गेल। आ गाड़ीकेँ बनौनाइ सेहो सीखि लेलौं। आठ घन्टा कारखानामे ड्यूटी करी बाँकी समैमे बजारक गाड़ी सभके ठीक करए लगलौं। फेर तेसर टेक्सी लेलौं। ओहो

भाड़ापर लगा देलिऐ, मन पड़ैए तँ हँसी लगैए। जहिना रूपैआ-ले मन जरल रहै छेलए तहिना रूपैआक बरखा हुअ लगल...।

विकास : बाह-बाह! तेकर पछाइत?

रामविलास : आमदनी देख मन हुअ लगल जे कलकत्तेमे जमीन कीनि मकान बना ली। मुदा जखन हुनका–माने इंजीनियर साहैबकेँ–पुछलयैन तँ ओ कहला जे विचार तँ बड़बढ़ियाँ छह मुदा मुरूखपाना हेतह। अपना इलाका सन दुनियाँमे कोनो इलाका नै अछि। खाली पाइये सभ किछु नइ छिऐ। ऐठाम ने खेत किनह आ ने मकान बनाबह। हँ, जाबे नोकरी करै छह ताबे किछु टेमप्रोरी कारोबार करै छह तँ से करह। मुदा रिटायर भेलापर गाम चलि जइहह।

विकास : किए गाम अबैले कहलैन?

रामविलास : हमहूँ ई बात पुछलयैन तँ बुझबैत कहला जे 'देखहक अपन इलाका बजारक हिसाबे बड़ पछुआएल अछि। पछुआएल इलाकामे लोकक आमदनियों आ जिनगियो पछुआएले रहै छइ। मुदा ऐसँ केकरो घबरेबाक नै चहिये। कोनो इलाका अगुआएल अछि ओइठामक लोकक मेहनतसँ। तँए जँ लोक मेहनत नै कऽ अपन इलाक्केकेँ छोड़ि देत तखन ओ इलाका अगुएतै?

विकास : (गम्भीर होइत) बड़ पैघ बात कहलैन।

रामविलास : तैबीच मदन चिट्ठी लिखलक जे बाबू अपने गाम होइत 'राष्ट्रीय राज पथ' (एन.एच.डब्ल्यू) बनि रहल अछि। अपने तँ चिट्ठियो ने पढ़ल होइए हुनके–इंजीनियरे साहैबकेँ–पढ़ैले देलिऐन। चिट्ठी पढ़ि मने-मन खूब हँसला। कहलैन- 'रामविलास, अहाँ मिस्त्री छिहे, आब

अहाँले कलकत्ता गामे भऽ जाएत।' हमरा कोनो अर्थे ने लागल। तखन ओ बुझा कऽ कहलैन जे 'नोकरियो लगिचाएले अछि आ बड़का सड़को बनियेँ रहल अछि। ठाठसँ ऐठामक सभ गाड़ी बेच एकटा नमहरका बस कीनि लेब। ताबे बेटोक पढ़ाइ समाप्ते भऽ जाएत। बेटाकेँ बस दऽ देबै आ अपने एकटा लेथ मशीन कीनि कऽ रोडे-साइडमे बैसा देबइ।' हमहूँ खेत-पथार नै किनलौं। सिरिफ घर लग तीन कट्ठा कीनि लेलौं।

विकास : बड़ सुन्नर विचार अछि।

रामविलास : ओना अखन सभ काज पछुआएले अछि। ने घर बनेलौं हेन आ ने बस किनलौं। मुदा तीस लाख रूपैआ हाथमे रखने छी। तहीसँ सभ काज भऽ जाएत। अपनो नोकरीए करै छेलौं आ बेटो पढ़िते छल, तँए केना करितौं। आब पाइक भूख मेटा गेल आ दुनियाँकेँ देखैक ढंग सेहो बदैल गेल।

विकास : दुनियाँ देखैक की ढंग बदैल गेल?

रामविलास : जाबे मिस्त्री नइ बनल छेलौं आ कम आमदनी छल ताबे जे लोकक हाय-फाय देखिऐ तँ हुअए जे कोन दरिदराहा भगवान हमरा सभकेँ जनम देने छैथ जे सभ दिन सभ चीजक अभावे रहैए। मुदा जखन मिस्त्री बनलौं आ आमदनी बढ़ल तहियासँ बुझि पड़ए लगल जे हमरा सन-सन दरिद्र तँ सौंसे दुनियेँ भरल अछि। जइसँ मनमे संतोषक अंकुर जनमए लगल। आब ओ अंकुर विशाल गाछक रूपमे भऽ गेल अछि। जइसँ आँखिक इजोत सुन्नर होइत गेल। आब बुझि पड़ैए जे दुनियाँ बड़ सुन्नर अछि।

विकास : की सुन्नर?

रामविलास : आब देखै छी जे दुनियाँ, स्वर्गोसँ सुन्नर आ हजारो तीर्थ स्थान मिलौलासँ जेहेन होइत तहूसँ पवित्र आ पैध अछि। कोनो देव स्थानमे गनल-गूथल देवताक बास अछि मुदा दुनियाँ रूपी तीर्थ स्थानमे अरबो-अरब देवता बास करैए। किए लोक ऐ देवस्थानसँ हटए चाहत। मनमे संकल्प शक्तिक जन्म भेल। जे संकल्प शक्ति विचारक रस्ता बदैल देलक। जइसँ जिनगी फूलोसँ हल्लुक बनि गेल अछि।

विकास : ई तँ दुनियाँ देखैक नजैर भेल, मुदा अपना जिनगीमे की सभ आएल?

रामविलास : जाधैर जिनगी नै बदलल छल ताधैर कमेनाइ-खेनाइ मात्र बुझै छेलौं। मुदा आब दोसरकेँ मदैत करब सेहो बुझए लगलौं। अनका हाथे जे अपन मेहनत बेचै छेलौं ओ मेहनत आब अपना काजमे लगबए लगलौं। जइसँ मनक गुलामी मेटा गेल।

विकास : आब अपना काज दिस आउ। जहिना अहाँक लड़का पढ़ल-लिखल छैथ तेहने एकटा लड़की हमरो नजैरमे अछि। बी.ए. पास ओ लड़की अछि। शील-सोभाव आ गुणक भण्डार अछि। शुद्ध लक्ष्मी पात्र। ओहेन लड़की भागमन्ते घरमे जन्म लइए।

रामविलास : मास्सैब, हम मदनक पिता जरूर छिऐन मुदा ज्ञान दइबला गुरु तँ अहीं छिऐन। तँए, मदनकेँ अहाँ अपन बेटा बुझि जेतए बिआह करा देबैन, हमरा दिससँ एको-पाइ आपैत नहि। पाइ-कौड़ीक हमरा एकोअना लोभ नै अछि।

विकास : (मने-मन खुश होइत) देखियो ओ लड़की एकटा पैध अफसरक छिऐन। ओ अपनो साक्षात् देवता छैथ। ओना ओहो हमरे पढ़ौल छैथ, तँए हमरापर हुनको अटुट बिसवास छैन। जे कहबैन से ओ जरूर करता। मुदा आइ-काल्हि देखै छिऐ जे झूठ-फूसक शादी-बिआहमे झगड़ा-झंझट भऽ जाइ छइ। खास कऽ स्त्रीगणक चलैत। जँ से सभ नै हुअए तँ हम ऐ काजमे पड़ब।

रामविलास : मदन तँ अखन नै अछि, नहि तँ अहाँकेँ संगे लगा दैतौं। ओना हम कन्यागत नहि, बरपक्ष छी तँए पहिने पएर केना उठाएब। मुदा अहाँ ऐठाम जेबामे तँ कोनो असोकर्ज नै अछि। चलू हम अहींक संग चलै छी आ कन्यागतसँ गप-सप्प करा दिअ।

माधुरी : माहटरबाबू, बेटा तँ हमरो छी आ पुतोहुओ हेती, तँए, एकटा बात हमहूँ कहै छी। लोक सभ बजैए जे दुनियाँ बड़ आगू बढ़ि गेलै, ई तँ नीक बात। किएक तँ जेतेक आगू दुनियाँ बढ़तै तेते आगू सभ बढ़त। मुदा हम सभ तँ मिथिलाक गाममे रहै छी, जैठाम अखनो लोक पएरे नैहर-सासुर करैए। कोनो सौखे तँ नै करैए, अभावमे करैए। शहर-बजारक लोक हवाइ-जहाजपर उड़ैए आ हमरा सबहक सबारी अखनो नाहे अछि। तँए, ऐ सभकेँ नजैरमे राखब जरूरी अछि।

विकास : (ठहाका दैत) ई सभ कहैक जरूरत नै अछि। पहिनहि कहि देलौं जे कन्या लक्ष्मीपात्र छैथ। साक्षात् लक्ष्मीक आगमन परिवारमे हाएत।

रामविलास : मास्सैब, शुभ काजमे बिलम नै करक चाही। हमरो कपार परहक अन्तिम भार उतैर जाएत। जेहो पाँच पाइ चिन्ता

अछि ओहो मेटा जाएत, तँए हम्मर विचार अछि जे अखने अहाँक संग चलि कऽ सभ बात आइये फरिछा लेब।

◌

शब्द संख्या : 2652

पाँचम अंक

(विकासक दरबज्जा। विकास, रामविलास आ तीन चारि गोरे बैसल)

विकास : राधेश्याम, कनी कर्मनाथ बाबूकेँ बजौने आबह?
(राधेश्याम जाइए)

रामविलास : केते दूरपर हुनकर घर छैन?

विकास : थोड़बे दूरपर, लगले चलि औता।

रामविलास : मास्सैब, जखन ऐठाम धरि आबिये गेलौं तखन कहुना काजकेँ सलटियाइये देबइ।

विकास : देखियौ, हम तँ अपना भरि परियास करबे करब तखन तँ...।
(राधेश्यामक संग कर्मनाथ अबैत)

विकास : आउ, आउ कर्मनाथ बाबू। हमरा तँ होइ छल जे अहाँ गाममे छी कि नहि। मुदा संयोग नीक अछि।

कर्मनाथ : अखने हमहूँ मात्रिकसँ एलौं। ममो संगे एला हेन।

विकास : हुनको किए ने संगे नेने एलिऐन?

कर्मनाथ : केना नेने अबितिऐन। राधेश्याम सोझे कहलक जे विकास काका बजौलैन अछि।

विकास : (रामविलासकेँ देखबैत) हिनका तँ अहाँ नै चिन्हैत हेबैन। हिनकर घर सुन्दरपुर छिऐन। हिनका एकटा लड़का छैन जे ऐबेर एम.कम. केलैन अछि। काल्हिये रिजल्ट

निकललैन। ओना ओ लड़का हमरे पढ़ौल छी मुदा किछु दिन पहुलका देखल अछि। मुदा लड़का दिब हेबे करत।
(कर्मनाथ मुस्कियाइए)

रामविलास : रिजल्ट सुनि बौआ पराते भिनसुरका गाड़ी पकैड़ संगी-साथी सभसँ भेँट करए चलि गेल। भऽ सकैए जे रौतुका गाड़ीसँ आबि जाए, नहि जँ संगी साथीक संग सिनेमा देखए लगए तँ काल्हि औत।

विकास : रामविलासजी, कर्मनाथ बाबूकेँ तँ अहूँ नहियेँ चिन्हैत हेबैन। ईहो हमरे पढ़ौल छैथ। मुदा हमरा गामक रत्न छैथ। गामक पहिल फूल। बड़का अफसर छैथ। भगवान एहेन बेटा सभकेँ देथुन। जेहने पैघ अफसर तेहने इमानदार। सज्जनक तँ चरचे नहि। ओना जिनगी भरि हमहूँ गुरुआइये केलौं। मुदा औझुका शिक्षक सभ जकाँ नहि, जे अपनो पढ़ौल विद्यार्थी सोझहेमे सिगरेट, बीड़ी पीबैत रहत आ शिक्षक मुड़ी निच्चाँ केने रहता। आजुक जे छौड़ा-माड़े सभ भऽ गेल अछि ओ ने माए-बापकेँ आदर करैए आ ने शिक्षककेँ।

रामविलास : (हड़बड़ा कऽ कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत, मने-मन सोचैत जे कहुना कुटुमैती भऽ जाए।) मास्सैब, अहाँकेँ तँ हम कहि देलौं जे भलेँ मदन हम्मर बेटा छी मुदा शिष्य तँ अहींक छी। तँए, मदनपर जेते अधिकार हमर अछि ओइसँ मिसियो भरि कम अहूँकेँ नै अछि। माए-बाप जन्म दइए मुदा जिनगीक रस्ता तँ गुरुए बतबै छथिन।

विकास : (मुस्कियाइत) अहाँ दुनू गोरे सोझामे छी, तँए हमरा किछु बजैत असोकर्ज नहियेँ भऽ रहल अछि। कर्मनाथ बाबू, अपने तँ बड़ ज्ञानी लोक छी तँए हम किछु बाजी से हमरा

उचित नहि बुझि पड़ैए। मुदा दू परिवारक बीचक सम्बन्ध अछि तँए चुप्पो रहब उचित नहि।
(कर्मनाथो आ रामविलासो ठहाका मारि हँसैत)
हम दुनू गोरेकेँ परिचय करा देलौं। आब एकटा बात औझुका समैक सम्बन्धमे कहि दइ छी।

रामविलास : अबस्स, अबस्स अपने कहि देल जाओ।

विकास : अखुनका समैक सम्बन्धमे कहि रहल छी। कर्मनाथ अहाँ जेठरैयैत परिवारक छी जे आब निच्चाँ-मुहेँ भऽ रहल अछि। ऊपरसँ निच्चाँ उतरैत आ निच्चाँसँ ऊपर चढ़ैत समाजिको, आर्थिको आ शैक्षणिको स्तरक एक सिमानपर दुनू गोरे पहुँच गेल छी, तँए, दुनूक बीचमे सम्बन्ध बनब समयानुकूल अछि। रहल बात लड़का-लड़कीक। अपना ऐठामक जे समाजिक ढर्रा बनि गेल अछि, ओकरा हम झूस बुझै छी। किएक तँ मुरुख लड़कीक संग पढ़ल-लिखल लड़काक बिआहक चलैन अछि। जेकरा सभ कियो नीक बुझि अंगीकारो कऽ नेने छी। मुदा ऐठाम एकटा प्रश्न उठैए जे मुरुख लड़काक संग पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआहकेँ नीक मानल जाए वा अधला? मुदा अहाँ दुनूक सम्बन्धमे तँ से बात नहियेँ अछि। तँए, ऐ सम्बन्धमे किछु कहैक जरूरते ने अछि। हृदैसँ असिरवाद बुझिऐ वा धन्यवाद से हम मदन आ चम्पा–दुनू गोरेकेँ दइ छिऐन।

रामविलास : (हँसैत) से की?

विकास : जहिना अहाँक मदन बोनिहार परिवारक दुआरे स्तरपर रत्न भेला तहिना हम नारी शिक्षाक स्तरपर चम्पाकेँ रत्न बुझै छिऐन। तँए, चाहे रत्नक हाड़ होइ वा फुलक, एकोटाक माला बनैए आ सैयोक, मुदा दुनू पहिरल जाइ छै गरदैनेमे। भलेँ एकक डोरा सबहक नजैरपर पड़इ आ दोसराक झँपाएल होइ।

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, हम तँ मुरुख छी तँए अहाँक सभ बात बुझियो ने रहल छी, मुदा एते बिसवास मनमे जरूर अछि जे अहाँ हमर अधला कखनो नहि सोचब।

विकास : देखियौ, दुनू गोरेक विचार एक रस्ताक अछि, तँए ऐ सम्बन्धमे किछु अटकलबाजी करब उचित नहि। आब काजक गपकेँ आगू बढ़ाउ।

कर्मनाथ : हमरा मनमे एक्को पाइ ई शंका नै अछि जे हम लड़काकेँ नहि देखलौं। मुदा जखन ऐठाम पहुँच गेल छी तँ कनी हम अपन दुनू भाँइयोकेँ बजा लइ छिऐन। ऐ दुआरे नहि कि हुनकासँ पुछब जरूरी अछि, बल्कि ऐ दुआरे जे हुनको सबहक मनमे ई ने होनि जे भैया हमरा सभकेँ कहबो ने केलाह। तेतबे नहि, हम तँ चाहब जे अपना बेटियोकेँ देखा दी।

रामविलास : आइ अहाँक बेटी छी तँए सभ भार अहाँ ऊपरमे अछि। मुदा बिआहक उपरान्त तँ हमरो पुतोहुए हेती। तँए, जखन ऐठाम धरि आबिये गेल छी तँ असिरवादो देनै जेबैन।

विकास : (हँसैत) बड़बढ़ियाँ। राधेश्याम, तूँ कनी फेर दोहरा कऽ कर्मनाथ बाबू ऐठाम जा दुनू भाँइयो–माने लालबाबू आ नूनूकेँ–आ चम्पोकेँ सेहो बजौने आबह।
(राधेश्याम बजबैले जाइत)

कर्मनाथ : काका, हम्मर बेटी आइक मनुख छी। सिरिफ पढ़ले-लिखल अछि तेतबे नहि। कम्प्यूटरक ज्ञान सेहो छइ। परिवार चलबैक सभ लूरि छइ। आ सभसँ पैघ गुण ई छै जे मिथिलाक सभ बेवहार, जे नारी-ले अछि, तेकर ज्ञाने नै बेवहारमे सेहो छइ। ओ सिरिफ कुशल गृहिणियेँ नहि, अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जीवन-यापन करैक लूरिसँ सेहो सम्पन्न अछि।

रामविलास : कर्मनाथ बाबू, हम मुरुख रहितौं ओहन विचारवान आदमी लग रहि जिनगी बितेलौं, जिनका हम देवता बुझै छिऐन। ओ हमरा अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जीबैक लूरि सिखा देलैन। हरिदम ओ कहैथ जे श्रमिक अपन श्रम पूजीपतिक हाथे बेच लइए, जे उचित नहि। तँए, हम अपन श्रमकेँ अपना काजमे लगेबाक सतत प्रयास करैक चेष्टा करी। ओना हमहूँ जिनगी भरि नोकरीए केलौं किएक तँ एहेन मजबूर परिवारमे जन्म भेल जे दोसर चारा नइ छल। मुदा आब हम एते कमा लेलौं जे अपना परिवारकेँ कहियो नोकरी-ले मुहताज नै हुअ पड़त।
(लालबाबू, नूनू आ चम्पाक प्रवेश)

विकास : रामविलासजी यएह बच्चिया छी।
(एकटकसँ रामविलास चम्पाकेँ देखैत)

रामविलास : मास्सैब, हमरा पाइक भूख नहि, मनुखक भूख अछि। (हँसैत) हम अपन बेटेटा नहि देब, बिआहोक खरच करब!

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) बौआ तोरा दुनू भाँइ (लालबाबू आ नूनू) केँ हम ऐ दुआरे बजौलियह जे जहिना बेटी तहिना भतीजी, तँए तोहूँ दुनू भाँइ अपन विचार दएह।

दुनू भाँइ : (लालबाबू आ नूनू) भैया, जैठाम अहाँ आ विकास काका छी, तैठाम हम सभ की बाजब। अहाँ लोकैनक पसिन हमरो पसिन।

कर्मनाथ : (चम्पासँ) बाउ, गोड़ लगहुन।
(सभसँ पहिने चम्पा विकासकेँ, तेकर बाद अपन पिता कर्मनाथकेँ तेकर बाद रामविलासकेँ गोड़ लगलकैन)

रामविलास : (हजारी नोट दैत) भगवान जिनगी दैथ। मास्सैब, भलेँ हम बेटाबला छी मुदा कर्मनाथ बाबूक आगूमे किछु नै छी। धन्यवाद अहाँकेँ (विकासबाबू) दइ छी जे कीचड़सँ निकालि सिंहासनपर पहुँचा देलौं।

विकास : रामविलासजी, हम दुनू गोरेसँ आग्रह करब जे शुरूहेक लगनमे वैवाहिक काजकेँ निपटा जइ जाउ।

रामविलास : हमरा दिससँ कोनो आपैत नहि।

विकास : एकटा बात आरो। अखन जे लोकक रूखि भऽ गेलैए जे खूब लाम-झामसँ बिआह करैए से नै हेबाक चाही। जेते खरच–चाहे कन्यागतक होइ वा बरक बर पक्षक–फूसमे करब, ओ बेकार। ओ पइसा जँ बँचा कऽ कोनो काज कऽ लेब तँ ओ जिनगी-ले हएत। हम अपने बात कहै छी, हम्मर जे बिआह भेल छल ओइमे सिरिफ पितेजीटा बरियाती गेल रहैथ। तैयो काज भेलइ। तँए, कौआसँ खड़र लूटाएब कोनो नीक बात नहि।

रामविलास : अपनेक विचारसँ हमहूँ सहमत छी। जेना कर्मनाथ बाबू कहता तहिना करब।

कर्मनाथ : हम्मर कोनो विचार नहि, जेना विकास काका कहता, तहिना करब।

विकास : बिआहक बात तँ समपन्ने जकाँ भऽ गेल। आब जँ किनको मनमे किछु बात बाँकी हुअए से अखने बाजि चलू।

कर्मनाथ : हम जइ समाजमे अखन धरि छी ओइ समाजक बीच तँ बेटीक बिआह नहियेँ कऽ रहल छी, मुदा ओइ समाजमे तँ बहुत अधिक सम्बन्ध लेन-देनक बनि चुकल अछि। तँए, हम आग्रह करब जे एकबेर, बिआहक पछाइत, बेटीकेँ अपना संगे लऽ जाएब। ओकरो सखी-बहिनपा छै तेकरो सभसँ भेँट-घाँट कऽ लेत। तेकर बाद तँ अहाँ ऐठाम रहत आ वएह अपन घर हेतइ।

विकास : हम नीक जकाँति अहाँक बात बुझि नै सकलौं, कर्मनाथ बाबू।

कर्मनाथ : काकाजी, जइ समाजमे हम रहै छी–माने अफसरक समाजमे–ओहू समाजक बीच पच्चीसो-पच्चास काज, जेना बिआह, मूड़न इत्यादि सभ साल होइते छइ। जइमे हमहूँ आमंत्रित होइत रहलौं। हम तँ सिरिफ भोजने करै छी मुदा प्रति काज पाँच साएसँ दू हजार धरि खरच होइए। मुदा हम तँ ओइ समाजसँ अलग भऽ कऽ अपन काज कऽ रहल छी। तँए, ओइ समाजमे रहैले हमरो किछु करए पड़त किने।

विकास : ओऽऽऽ! हँ ई तँ उचिते छी। की यौ रामविलासजी अहूँकेँ किछु समस्या अछि?

रामविलास : हँ। समस्या तँ हमरो अछि। मुदा हम्मर समस्या दोसर तरहक अछि।

विकास : की?

रामविलास : अपनेकेँ कहिये देने छी जे किछुए दिन पहिने नोकरीसँ निवृत्त भेलौं आ मदनो पढ़िते छल। मरदा-मरदी कियो घरमे छेलौं नहि, जइसँ घरक सभ काज पछुआएले अछि। जेना, घर बनौनाइ, काज सभ ठाढ़ केनाइ, जइकेँ पुरबैमे कम-सँ-कम छह मास जरूर लागत। अखन घरो ने अछि, जइमे रहब। तँए हमरो किछु समए चाही। ओना, बिआह अखन कैयो लेब, मुदा जहाँ धरि बिदागरीक सवाल अछि से ऐगला साल करब।

विकास : की सभ काज करैक अछि?

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, जाधैर कमाइ छेलौं ताधैर अपनो अनके घरमे रहै छेलौं आ बेटो होस्टलेमे रहै छल। सिरिफ पत्नीए-टा घरमे रहै छेली, तँए ने बेसी घरक जरूरत छल आ ने बनबैक समए भेटल। आब दुनू बापूत निचेनो भेलौं आ दुनू काजो सम्पन्न भऽ गेल। तँए, दुनूठाम–रहैयो-ले आ कारोबार करैले–पहिने मकान बनबैक अछि।

विकास : की सभ कारोबार करैक विचार अछि?

रामविलास : सभसँ पहिने रहैले चौघारा घर बनाएब। तीन अलंग आँगन मे रहत आ एक अलंग दरबज्जा रहत। तेकर बाद चौकपर–एन.एच.क बगलमे–तीनटा कोठरी बनाएब, जइमे एकटा कोठरीमे लेथ मशीन बैसाएब। दोसरमे अपन मिस्त्रीआइक कारोबार रहत आ तेसरमे बच्चाकेँ ऑफिसनुमा बना देबै, जइमे ओ अपन कारोबारक हिसाब-किताब राखत।

विकास : वाह, बड़ सुन्नर योजना अछि। तेकर बाद की करब?

रामविलास : घर बनौला पछाइत दुनू बापूत कलकत्ता जाएब। ओतुक्के बैंकमे रूपैयो अछि। रूपैआ उठा इंजीनियर साहैबकेँ संग कऽ एकटा बस बेटा-ले कीनब। अपना-ले मशीन आ जखन पुतोहु कम्प्यूटर सीखने छैथ तँ हिनका-ले एकटा कम्प्यूटर कीनब। तेकर बाद जे रूपैआ उगरत ओहो आ सभ सामानो बसेमे लादि कऽ लऽ आनब। ऐ सभ काज करैमे छह माससँ बेसीए समए लागि जाएत।

विकास : काज तँ बहुत अछि। बड़बढ़ियाँ, नहि छह मास तँ साल भरिमे सभ काज भाइये जाएत।

रामविलास : हँ, से किए ने हएत।

विकास : भने दुनू गोरे, ऐ साल भरिमे अपन-अपन काज सम्हारि कऽ लेब। बिआह तँ अखन काइये लिअ, विदागरी ऐगला साल करब। मुदा दुरागमनोक विधि समपन्ने कऽ लेब। अखन कनियाँकेँ अपन सीमा पार कऽ घुमा लेब। बिआहक काज तँ समपन्ने बुझू।

◌

शब्द संख्या : 1667

समाप्त।

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,

माता : स्व. मकोबती देवी।

पिता : स्व. दल्लू मण्डल।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN : 978-93-87675-37-7

स्वयंवर

जगदीश प्रसाद मण्डल



स्वयंवर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-42-1

दाम : ₹ 100/-
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SWAMVAR
A Play in Maithili Language by Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

पात्र परिचय-

पुरुष पात्र-

1. मकशूदन-	22 बर्ख।
2. सोनेलाल-	52 बर्ख।
3. सिहेश्वर-	55 बर्ख।
4. रूपलाल-	22 बर्ख।
5. जीयालाल-	45 बर्ख।
6. सोहनलाल-	21 बर्ख।
7. रौदी-	22 बर्ख।
8. मोहनलाल-	22 बर्ख।
9. किशोर-	15 बर्ख।

नारी पात्र-

1. बुधनी-	50 बर्ख।
2. रुक्मिणी-	42 बर्ख।
3. सुशीला-	20 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(सोनेलालक दलान। बेरुका समए। दलानक ओसारक चौकीपर सोनेलाल बैसल आँखि बन्न केने किछु सोचि रहल छैथ। तैबीच मकशूदनक प्रवेश।)

मकशूदन- काका, छेहा बैसारी भऽ गेल अछि। अहूँ जेना कानमे तूर-तेल दऽ देलिऐ।

सोनेलाल- हौ, कानमे तूर-तेल कहाँ देलिऐ, केना उपकैर-उपकैर लोककेँ कहबै जे हमर काज छह। अनेरे बाबू जन लेब तँ सतरह बापूत अपने छी।

मकशूदन- उपकैर कऽ केकरो नइ कहबै, मुदा काजक उचाढ़ि तँ लगा सकै छी। लोको सभ तेहेन पनिमरू भऽ गेल अछि जे अपनो काज पछुअबैत रहत मुदा समैपर काज नहि करए चाहैए।

सोनेलाल- हौ, लोकेकेँ की दोख देबै, सभटा समैयक किरदानी छी।

मकशूदन- समैयक की किरदानी छी?

सोनेलाल- तेहेन ने जुग-जमाना आबि गेल जे जेहो किछु पुछै छल सेहो अपने मने मतंग रहैए। किछु कहितो संकोच

होइए जे कहीं किछु कहबै आ उनटे मुँह दुसए लगए।

मकशूदन- हँ, से तँ बेस कहलौं मुदा थोड़बे काजक चालि आ मुँहक बोलकेँ बदलैक काज अछि। जखने से करए लगब अनेरे जुग संग चलि औत। जुग संग भेल, जमानाक हाथ पकड़ाएल!

सोनेलाल- कहलह तँ बेस मुदा चालिये ने जिनगी आ बोलीए ने इज्जत छी, जँ सएह उनैट-पुनैट जाएत तखन तँ जिनगीए ने उनैट-पुनैट जाएब भेल?

मकशूदन- हद करै छी अहूँ काका! एतबो नइ सोचै छिऐ जे कोनो वस्त्रक सेखी दिने भरि रहैए, अन्हारमे केकरा के देखैए आ केकर ओहन आँइखे छै जे देखत।

सोनेलाल- हौ, कहलह तँ ठीक, मुदा देखै छी जहिना गाम-घरक लोकक ठेकान नहि छै तहिना तँ राजो-पाटक सएह छइ। केमहर की करब से बुझैयेमे नइ अबैए।

मकशूदन- राज-पाटक की दैखै छी?

सोनेलाल- की देखै छी से तूँ नै देखै छहक। हाथमे एटेची नेने ऑफिस पहुँच जा आ पैघ-सँ-पैघ काज हाथक-हाथ करौने चलि आबह। मुदा, जँ से नहि लऽ कऽ जेबह तँ बड़का ऑफिसकेँ के कहए जे छोटको ऑफिसक काज साल-साल भरि लटकले रहै छइ।

मकशूदन- काका, ओते जे मगजमारी करब से पार लागत। केतौ आगि लगौ आकि बज्जर खसौ, अपन कुरथी उलबैक अछि।

सोनेलाल- हँ से तँ बेस कहलह जे अनेरे अनका दिस मुँह तकै छी। जखन एके सरकारमे मंत्रियो सबहक बीच मिलान नै रहै छै, एक-दोसराक काज नै बुझैए तखन जनताक तँ जनारदने मालिक किने..?

मकशूदन- हँ, तँ आरो की। अनकर भजन करैसँ नीक जे अपन दुखनामाक भजन करी।

(रौदीक प्रवेश)

सोनेलाल- बड़ हलचलाएल देखै छिअ रौदी। केतौ किछु भेल हेन की?

रौदी- सुनलौं हेन जे गाछ लगबैले सरकार गाछो दइ छै आ देखभाल करैले रूपैयो दइ छइ। सएह कनी ग्राम सेवकसँ भेँट करए जाएब।

सोनेलाल- जखन ओहन काज छेलह तँ पहिने ओम्हरेसँ ने भेल अबितह।

रौदी- ओमहुरका कोनो ठेकान अछि जे कखन हएत कखन

नहि। तइले अपन मूड बनाएब छोड़ि देब। तहूमे साँझका समए छी। ओहो जाबे भरि मन पीब मूडमे नहि अबैए ताबे की सोझ डारिये किछु बजैए।

सोनेलाल- हँ, से तँ हमहूँ सुनै छी। मुदा सभकेँ अपन-अपन खाँच होइ छइ। जेकरा-जेकरा संग खाँच बैसै छै तेकरा तेकरा-ले मूडक जरूरी नइ पड़ै छइ। सदिखन मूड बनले रहै छइ।

रौदी- काका, खाँच बैसैले एकत्वक जरूरत होइ छइ। तइले तँ मने ने राजा छी। सोचलौं जे अपनो भाँग पीबाक समए भाइये गेल, से नहि तँ मूड बनौनहि जाइ जे सभ काज करौनै आएब।

मकशूदन- भजार भाय, कथी सबहक गाछ छै, हमरो मन होइए जे अनेरे तीन कट्ठा हगनार बनौने छी। ओइमे गाछीए लगा देब नीक हएत।

रौदी- बहरबैया गाछ सभ छी। अपना ऐठाम अखन धरि कियो ने लगौने अछि। तँए कनी बेसी मन भऽ गेल। अछि।

मकशूदन- कोन बहरबैया गाछ सभ छइ?

रौदी- सबहक नाओं तँ नै बुझल अछि मुदा एक-आधटाक नाओं मन अछि, जेना- सागवान, महोगनी आ सौंख।

सोनेलाल- (मुस्की दैत) फल केहेन होइ छइ। आमसँ नमहर आकि छोट?

मकशूदन- अहूँ भाँसि गेलौं काका। आमो तँ सभ अकारक होइ छै किने! सजमनिया- घीबहा सजमनि जकाँ होइए आ बरबरिया सुपारी जकाँ।

रौदी- ओ गाछ फल-ले थोड़े लगौल जाइए। ओकर लकड़ी सुन्दरो आ सकतो होइ छै, जइसँ घरक समान नीक बनैए तँए महग बिकेबो करैए।

मकशूदन- कीनतै के? धनिकाहा कोठा-कोठी बनाइये नेने अछि बाँकी अछि गरिबाहा। ओ की करत ओहन लकड़ी? ओकरा तँ जिलेबियोक तरव्‍ताक केबाड़ जँ घरमे लगि जेतै तँ भरि दसमी दुर्गास्थानमे साँझ देत।

(छिपलीमे भाँगक तीनटा गोली, लोटामे पानि आ गिलास नेने बुधनीक प्रवेश)

सोनेलाल- (पत्नीसँ) ऐठाम भाँग रखि दियौ आ थर्मशमे छह कप चाह आ पान-सात खिल्ली पानो आनि कऽ रखि दियौ, अहाँकेँ छुट्टी भऽ गेल।

बुधनी- अहाँ छुट्टी देब की काज छुट्टी देत!

सोनेलाल- पएर पकैड़ कहै छी अहीं खुशी रहू।

बुधनी- अहींकेँ खुशी-ले ने अहू अवस्थामे सिलौट-लोढ़ी रगड़ै छी, तँ की बुझै छिऐ जे हम भंग पिसनिहारियेटा छी। केतए देखलिऐ जे देवता परसाद खाइ छथिन आकि सुंगहनियेँटा लइ छथिन।

सोनेलाल- अखन जाउ, दोसर गपमे लागल छी आ नहि जँ अहूँ गपकेँ गहियाबए चाहै छी तँ झब-दे भाँग खेने आउ ताबे हमहूँ सभ भाँग खा लइ छी।

बुधनी- जे गप करै छी से जँ सुनियेँ लेब तँ की होइए, पनचैतीए कऽ देब जे एना टारै छी।

सोनेलाल- टारै कहाँ छी, बहटारै छी। अधखरुआ गप सुनि जे सौंसका पनचैती कऽ देबै तइसँ नीक जे नइ सुनू।

(बुधनी विदा भऽ जाइत अछि)

मकशूदन- अँए यौ काका, अहाँ ब्लौक जेनाइ छोड़ि देलिऐ जे अहींकेँ नै बुझल अछि?

सोनेलाल- धरमागती पुछह तँ ब्लौक दिस जाइमे नइ मन लगैए। समए छल जखन बुझै छेलिऐ जे ब्लौक हमरो छी मुदा तेहेन-तेहेन...।

रौदी- ई बात अहाँ ठीके कहै छिऐ काका, बी.डी.ओ. छला चौधरीजी जे रस्तो-पेरा आकि चौको-चोराहापर कागत हाथमे दइते दसखत कऽ दइ छला...।

सोनेलाल- चौधरीजीक विषयमे बुझल छह जे केहेन परिवारक छैथ।

रौदी- अहाँ जकाँ हम थोड़े बिडीओ साहैबक चौखरीमे बैसै छी जे केकरो जड़ि-छीप ताकब!

सोनेलाल- बौआ, आजादीक लड़ाइमे कालापानीक सजा पबैबला परिवारक छैथ चौधरीजी, मुदा सभ किछु...।

रौदी- मुदा की सभ किछु?

सोनेलाल- किछु ने। बौआ अखन भाँग नै पीलौं हेन चारि भरिसक बजबो ने कएल, तँए नीक-अधलाक कोनो विचार नै करै छी मुदा भाँग खेला पछाइत शिवजीक दरबार जखन पहुँच जाइ-छी तखन गंगा स्नान कऽ गंगासागर धरि टहैल-बुलि अबै छी।

रौदी- ओना, हमहूँ औगताएले छी काका, की कहब तेहेन-तेहेन मुँहगरहा सभ भरि दिन मुड़ियारी देने रहैए जे पछुआएब तँ हुसि जाएब।

सोनेलाल- बौआ रौदी, जहिना भातीज मकशूदन तहिना तूँ छह।

शिवजीक स्थानमे पहुँच गेल छी। आगुक थारीमे रखले अछि, हमरो लोक गामक ठीकेदारे बुझैए।

मकशूदन- काका, बिना कारणे टिटही नइ लगै छइ। हमरो बजैमे धाक नहियेँ होइए। अहूँक खेल-बेल देखले अछि।

सोनेलाल- तूँ दोसर नजरिये बुझि गेलहक। भेल कि जे गामेक नाओंपर बीस किलो धानक बीआ दऽ दइ आब कहह जे केना दू साए किसानक बीच बँटाएत?

मकशूदन- तेकर माने ई नहि ने भेल जे सोल्होअना अपनेटा खा ली?

सोनेलाल- तहूँ बिसैर जाइ छहक मकशूदन। ओइबेर अढ़ाइ साए ग्रामबला तोरी बिआक जे पौकेट आएल से तोंरे ने सोल्होअना दऽ देने रहिहह।

रौदी- अहूँ सदिकाल काका रग्गड़े तकैत रहै छी। भेल तँ अहाँ धानक बीआ सोल्होअना खेलिऐ आ तोरीक बीआक जे आएल से सोल्होअना मकशूदन खेलक। दुनू गोरे जखन सोलहन्नीए खेलौं तखन तँ पनचैतियो ने सोलहन्नीए हएत तँ छोड़ू ओइ बातकेँ...।

सोनेलाल- हँ, हँ, छोड़ह। एकठाम रहब तँ अहिना कनी तीत कनी मीठ होइते रहत, तइले लोक मुहाँ-फुल्ली कऽ लेत।

रौदी- काका, एकटा बात तँ बिसरिये गेल छेलौं?

सोनेलाल- (सुनैक जिज्ञासा) की हौ, की..?

रौदी- अहाँक रमचेलबा घिनौलक!

सोनेलाल- के रमचेलबा हौ? हमरा तँ गामेमे केतेक ने रमचेलबा अछि। केकरा दऽ कहै छहक?

रौदी- सोझहेमे जे मकशूदन अछि?

सोनेलाल- की भेल?

रौदी- से ओकरेसँ पुछियौ।

सोनेलाल- की हौ मकशूदन?

(मकशूदनक मुँह लटकैत गेल, चुपचाप निच्चाँ मुहेँ मुड़ी गोंतए लगल, तैबीच फेर सोनेलाल बाजल।)

सोनेलाल- अच्छा छोड़ह मकशूदनकेँ। तोहीं बाजह रौदी?

रौदी- परसूखन एकटा बम्बैया दोस भँजियाएल। बम्बइसँ आएले रहए। सेठ ओकरा परसादी-ले एक किलो कोन-ने-कोन रस देने रहइ। तइ चढ़बैले हमरो आ मकशूदनोकेँ कहलक, निमंत्रण देलक।

सोनेलाल- सोझहे रसेटा रहै आकि ओइ लागल औरो किछु रहइ?

रौदी- अहूँ सभ दिन गमैये रहि गेलौं काका। एक चम्मछसँ पेट थोड़े भरै छै, खैयो-पीबैक ओरियान केने रहए। कि कहाँ ढेरी रहै मुदा सभसँ नीक रसगुल्ला छल।

सोनेलाल- बीचमे अँठियाएल ने तँ रहह! अच्छा भेल की से बाजह।

रौदी- एक तँ हम सभ भंगखौका भेलौं, तहूमे दिनका नहि रौतुका, तइमे ओ किदैनक रस पिआ देलक। आगूमे रसगुल्ला देख मकशूदन चढ़बए लगल। ऊहो बुझहै जे साक्षात देवते पहुँच गेल छैथ। आँजुर-आँजुर देने जाइ आ ई–मकशूदन–चढ़बए लगल।

सोनेलाल- एको दरजन चढ़ौलक की?

रौदी- अँए! दरजने कहै छिऐ, पचाससँ टपा देलक।

सोनेलाल- तखन तँ बहादुर, गामक टेक रखलक।

रौदी- गामक टेक जँ ठेक जकाँ रखैत तखन ने, से खाइते-खाइते पत्तेपर बोमकए लगल।

मकशूदन- ऐमे हमर कोनो गलती नै रहै काका, रहै एतबे जे जइ

सीमानक जे नशेरी होइए ओ सभ निसाँकेँ एक्के सीमा तक पचा सकैत अछि। मुदा सीमे नइ बुझि पेलिऐ। भेल सएह, नव चीज रहै लगले चढ़ि गेल। खाइकाल बुझबे ने केलिऐ, एमहर बरदक नाँगैर जकाँ पकैड़-पकैड़ कहए लगल। बेठेकान भऽ गलइ।

सोनेलाल- अच्छा जे भेल से भेल, एकटा कहह रौदी, जखन सागबाने लगेबह तखन आम-महु केतए बिआहबहक?

मकशूदन- काका, अहूँ बड़ रगड़ी छी। पशुपति नाथक सुखेलहा हड्डी चिबबै छी। अच्छा, काका एकटा कहू जे कौल्हका घटकैतीमे अहूँ जेबइ?

सोनेलाल- केकर, जीयालालक! हँ, कहने तँ छैथ मुदा जखन फजहैतमे पड़ै छी तखन होइए जे अनेरे कोन कुत्ता-बधिया करए चलि एलौं, मुदा जखन अढ़ाइ साए रसगुल्ला आ पाँच किलो मासुक आगि पेटमे बिलाइ जकाँ कुदैए तखन...।

(बुधनीक प्रवेश)

बुधनी- निरलज हएब जे घटकैतीमे जाएब। जिनगी भरि तँ घिनेलहे काज केलौं, आबो चेतू। बिआहक जे बरियाती चौबीस घन्टाक छल ओ भेल चारि-पाँच घन्टासँ एक घन्टाक। तइमे केकर मुँह के देखत?

सोनेलाल- अहाँ घर आँगनमे रहै छी, गामक बात नइ बुझबै। जखन बरियातीमे जाइ छी आ गौँआँ खाइबला खलीफा सँ पल्ला पड़ैए, तैठाम गामक पाग जँ गामक लोक नै राखत तँ अनगौँआँ केकरा के मदैत केलकै हेन।

मकशूदन- मन हमरो जाइक नहि होइए, मुदा गुरु भऽ कऽ अहाँ जाइ आ हम संग छोड़ि दी ईहो तँ पापे हएत किने।

सोनेलाल- तोरा किए घटकैती बकछुहुल लगै छह?

मकशूदन- बुझलो बातकेँ अहाँ तेना ने बजै छी जेना अहाँकेँ किछु बुझले ने हुअए?

सोनेलाल- कोनो कि एकेटा काज एकरंगक अछि, काज-मे-काज गांथल अछि। कनी दूर बाजह, मन पड़ि जाएत।

मकशूदन- गंगबा बिआहमे नै देखलिऐ, दुनू पक्ष तेना उल्लर बना देलक जे छगुन्तेमे रहि गेलौं। जदी अधला काजकेँ नीक बना करब तखन ने नीक बात भेल। मुदा नीक काजकेँ अधला बना दइए! तँए...।

सोनेलाल- पिऔज जकाँ सोहैत जेबह, केतौ ने किछु भेटतह। मुहेँमे सभटा छइ। केतौ देखबहक जे कहतह- 'दस मिल करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज।' मुदा दोसर चौकपर जाइते-जाइते कहै छै, 'संग मिल करी

काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज।' आ केकर संग? संगियों तँ संगीए छी। ◌

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1671

दोसर दृश्य-

(दलान नमहर। ओसारक एक भागमे एकटा टेबूल आ चारिटा कुरसी लागल। दोसर दिस सेहो टेबुलक संग कुरसी लागल। टेबुलपर देखनुक वस्तु राखल। बीचमे सिंहेश्वर ठाढ़। एक भाग मोहनलाल आ सोहनलाल बैसल आ दोसर दिस रूपलाल बैसल।)

रूपलाल- (मुड़ी उठा रस्ता दिस देखैत) सिंहेश्वर काका, केते बजेक समए देने छला बरतुहार?

सिंहेश्वर- आब कि हमरा सबहक जुग-जमाना रहल जे समैकेँ समए बुझि लोक चलत, आब तँ गाड़ी-सवारीक जुग एलइ। बाटमे तेते रूक्तापुर बनि गेल अछि जे जखने पहुँच जाथि तखुनके समए।

मोहनलाल- काका, ई की कहि देलिऐ, 'हमरा सबहक जुग-जमाना'?

सिंहेश्वर- बौआ, अखन तूँ सभ कौलेजमे पढ़ै छह, जखन जिनगीक कौलेजमे पढ़बह तखन हमरा बातक माने लगतह।

रूपलाल- काका, नश्ता-पानीक तँ ओरियान भाइये गेल अछि तखन औगताइये कथीक अछि, कनी ऐ बातकेँ

सोझराइये दियौ। एते तँ जरुर बुझै छी जे पहिने जकाँ चारि गोरे एकठाम बैस जिनगीक गप नै करैए।

सिंहेश्वर- देखहक, एना जे जहपटार बजबहक तँ सवालक पथार लागि जेतह, जेकरा समटब पार नै लगतह, तइसँ की हेतह जे कोन सवालक जवाब की भेल सएह ओझरा जेतह तँए...।

मोहनलाल- अहाँक विचारकेँ हमहूँ मानै छी काका, रूपलाल भाइक प्रश्नकेँ पूरक प्रश्न मानि लिअ। जँ समए भेटत तँ कहि देबैन नहि तँ बाँकी रहलैन।

सिंहेश्वर- मोहन, ओना तोरो सवालक उत्तर नीक जकाँ नहियेँ देबह किएक तँ मन चौचंग अछि, बरतुहार सबहक समए भऽ गेल। दसे बजेक समए देने छला सबा दस बजैए।

मोहनलाल- काका, चारू दिस ताकब छोड़ि अदहो-छिदहो किछु कहियौ?

सिंहेश्वर- देखहक मोहन, जुग-जमानाक भीतर बहुत रास बात अछि मुदा तेतेमे नइ जा, अखन बियाहेक गप करह।

मोहनलाल- (मुस्की दैत) हँ, हँ! बड़बढ़ियाँ! बड़बढ़ियाँ!

सिंहेश्वर- ओना, दूटा विचारणीय बात अछि, मुदा समैयक

लुकझुकी दुआरे पहिने बिआहक बरियातीक बात कहै छिअ।

रूपलाल- जखन कहै छिऐ तखन दुनू घाट मिला तेना कऽ कहियौ जइसँ धारक दुनू महारक सीमा बनि जाए।

सिंहेश्वर- बुझले छह जे धनिकपना ढाठीमे पढ़लौं कम बजलौं बेसी से साफे कहि दइ छिअ। अपना ऐठाम धर्मसूत्र-गृहसूत्र विषयपर ऋषि-मुनि सोचि-विचारि अपन विचार रखलैन।

मोहनलाल- ओ सभ तँ साक्षात् सरस्वतीक बरद पुत्र छला जे अखनो ओहिना टक-टक अहाँ दिस तकै छैथ।

सिंहेश्वर- हँ, से तँ छेलाहे। अपना ऐठाम बिआह परिवारक संग समाजोक महान यज्ञ छी। ऐ यज्ञ-ले चौबीस घन्टाक समए निर्धारित भेल। जे आग्रहपर अड़तालिसो घन्टाक भेल आ दुराग्रहपर घन्टो भरिक भऽ गेल मुदा अखुनका जकाँ मड़बा परहक बर जकाँ घुर-बहुर एते नइ भेल।

मोहनलाल- लड़का-लड़की–माने बर-कन्या–क पूछ केते छल बिआहमे?

सिंहेश्वर- सोलहन्नी छल। जेकर जीवन्त उदाहरण सीता स्वयंवर छी। कहाँ दशरथ बुझियो सकला जे बेटाक बिआह

जनकपुरमे हएत। एहेन स्वयंवर सिरिफ सीते-टाक नहि भेलैन, समाजक बीच चलैन छल।

मोहनलाल- चौबीस घन्टाक समए-ले कार्यक्रमो तँ निर्धारित रहल हएत?

सिंहेश्वर- निसचित रहल अछि। प्रश्नो नान्हिटा नहि नमहर अछि। ओ ई अछि ई समाजक संग दू बेकतीक ओहन मिलन छी जे दुनियाँक रंगमंचपर आबि रहल अछि।

रूपलाल- सिंहेश्वर काका, भूखे भजन ने होई गोपाला, खाली बरे-कन्या आ बिआहक गप करब आकि किछु अनजलोक गप हेतइ।

मोहनलाल- काका, नश्ता-पानीक कथी ओरियान केने छी?

सिंहेश्वर- एना धिया-पुता जकाँ अनाड़ी किए बुझै छह जे अ-आ सिखबै छह?

मोहनलाल- काका, अहाँ दोसर हिसाबे हमरा गपकेँ बुझि गेलिऐ?

सिंहेश्वर- मोहन, बेटा-भातीज छह, एकर माने ई नहि जे तोरा विचारकेँ कदर नै कएल जाए, मुदा अखन तँ मने चौचंग अछि नहि तँ...।

रूपलाल- अनेरे अहाँ मनकेँ चौचंग केने छी काका, अच्छा अहाँ

कनियेँ बिलमू हमसब सभ सरंजाम देखने अबै छी। परसै-ले तँ सतरह बापूत छीहे, ऐ बातकेँ सम्पन्ने कऽ दियौ।

सिंहेश्वर- आइक जे बरियाती आकि बिआहसँ पूर्वक जे प्रक्रिया अछि, जेना हथपकड़ी, लड़ूपान तिलक इत्यादि-इत्यादि जइमे खेनाइ-पीनाइ चलैए- ओकर की रूप छै समाजमे?

मोहनलाल- अहाँ जे बात कहै छिऐ ऐसँ तँ समाजे बहबाँरि भऽ गेल अछि! तखन..?

सिंहेश्वर- (मुड़ी डोलबैत) बिल्कुल सत कहलह। एहनो होइए जे एक गामसँ दोसर गाम अबै-जाइक आग्रहो होइए आ एहनो तँ होइते अछि जे माछ खाइले परसू अबै छी।

मोहनलाल- अनेरे कोन खता उपछैक भाँजमे पड़ल छी, ओकर आड़िये गिलगर माटिक छिऐ, कखन टुटि जाएत से बुझबे ने करबै?

सिंहेश्वर- हँ, से तँ अछिए। मुदा अही समाजमे ने जीबो करै छी। तेकरा निमाहैत चली सएह ने नीक हएत। मुदा विचारणीय प्रश्न तँ ऐछे जे एक-काजक-ले एक नियम बना चलब आ यत्र-कूत्र चलबमे अन्तर अछि। समाजक बन्धनकेँ ढील करैए।

मोहनलाल- खाएर छोड़ू, बड़ झमेल बुझि पड़ैए। जे कियो बरतुहार औता हुनका भरि मन खुएबैन किने?

सिंहेश्वर- यएह भारी बात भऽ गेल अछि। एक दिस लोक भरि दिन योगाभ्यासेक चर्च करैए दोसर दिस खाइ-पीबैक ठेकाने ने छइ! भरि मन खुआएब असान अछि।

मोहनलाल- से की?

सिंहेश्वर- देखै नै छहक जे बाप-बेटा एकठाम बैस बोतल-शीशी पीबैए आ नैतिकताक भाषण करैए। ओना अपन परिवारेक पीबैक चलैन बनि गेल अछि तँए पीबैक ओरियान की करब ओ तँ रहिते छइ। चारि-पाँच गोरे औता एक गोरेक चारि-पाँच दिनक खोराक भेल। मुदा एकटा बात...।

मोहनलाल- (अकचकाइत) की एकटा बात?

सिंहेश्वर- अपना सभ एक गामक छिऐ तँए एक समाज भेलिऐ। जखने एक समाज भेलिऐ तखने सबहक जीवन-मरण भऽ गेल। किएक तँ समाजक प्रतिष्ठा बेकतीक नहि समाजक होइ छइ। तँए एक बनि हुनका सभकेँ डटि कऽ सुआगत करैक छह?

मोहनलाल- काका, कोन मरदुआरी सवाल उठा देलिऐ, आब की ओ जुग-जमाना रहल, आब तँ एक आदमी पचास

आदमीक सुआगत कऽ सकैए।

सिंहेश्वर- देखहक बौआ, अपना समाजमे बुढ़बे लोक सभ दिससँ आएल अछि जे जेकर नून खाइऐ तेकर सेरियत दिऐ।

मोहनलाल- तइमे कोनो सन्देह बुझाइए?

सिंहेश्वर- बाजलपर बजै छी, अपने बाबाक खिस्सा कहै छिअ। बारीक दुआरे भोज घिना गेल। मुदा तैयो समाज तँ अथाह समुद्र छी एहेन-एहेन होइतो एलैए आ ताधैर होइते रहतै जाधैर समाजिक तंत्र कमजोर रहत।

मोहनलाल- अखन हम सभ परीक्षे पास करै दुआरे प्रश्नोत्तरेसँ काज चलबैत एलौं, तँए ई सभ बात नै बुझै छी।

सिंहेश्वर- देखहक हमरा परिवारमे, परिवारमे की अपना गामेमे सुनील पहिल डाक्टर बनत, तीन महिना पछाइत सर्टिफिकेट लऽ कऽ एबे करत।

मोहनलाल- हँ, से तँ सुनील पढ़ैयोमे सभ दिन नीक रहला।

सिंहेश्वर- ऐठाम प्रश्न सुनीलक अछि आकि समाजक। हरेलहो-भोथलेलहोक बिआह दस लाखक भऽ गेल अछि तैठाम ओही नजरिये ने देखए पड़त।

रूपलाल- से तँ देखइ पड़त। जँ से नै देखब तँ आन समाज कोन नजरिये देखत।

सिंहेश्वर- आन समाजक बात किए बजै छह, अपनो विचारि कऽ देखहक जे मरूआ-गहुम एके भेल?

रूपलाल- काका, अहाँकेँ सभ पीछराह कहै छैथ तँए अहाँसँ मुँह लगाएब गल-थोथैर हएत मुदा की मरूआ अन्न नहि छी?

सिंहेश्वर- हद करै छह रूपलाल, के कहै छह जे मरूआ अन्न नइ छी, ओइमे आयरन नै पएल जाइ छइ। केरलक लोक जे पढ़ैमे ओते तेज अछि से किए, ओकर खानो-पान तेहने छइ।

रूपलाल- तखन?

सिंहेश्वर- हम से नहि ने कहै छिअ। कहै छिअ जे मरूआ अन्नो छी आ ओइमे पौष्टिक तत्व सेहो पएल जाइ छै मुदा, अन्नके जखन बिलगेबहक तँ बुझि पड़तह जे अन्नो की सभटा अन्ने छी। कोनो कुअन छी तँ कोनो सुअन। मरूआ, शाम-कौन इत्यादि कुअन छी।

रूपलाल- श्यामा चाउर केतए-सँ अबै छै जेकर तसमै पैघ-पैघ स्थान सबहक भोज्य अन्न छी।

सिंहेश्वर- देखहक रूपलाल, जलवायुक अनुकूल अन्न, फल, फूल इत्यादिक ग्रहण धरती करैत अछि। ओना किछु प्रकृति प्रदत छै जे धरती अपनो धारण कऽ लइए मुदा किछु मनुखोक अछि।

(आगू-आगू सोनेलाल हाथमे बेंत नेने, तइ पाछू रौदी-मकशूदन आ तइसँ पाछू छता नेने जीयालाल प्रवेश। कनी फरिक्केमे रूपलाल, मोहनलाल आ सोहनलाल ठाढ़ होइत)

रूपलाल- कुटुम नारायण सभ आबि गेला काका, अहाँ बैसले रहू, बतरसिया छी अहाँ।

सिंहेश्वर- आब तँ उमेरो भेल किने।

रूपलाल- ठेहुन ठीक अछि किने?

सिंहेश्वर- ठेहुन कहाँ ठीक अछि, जहिना बाँहि कनकनाइत रहैए तहिना ठेहुनो।

(चारू कुरसीपर चारू गोरेकें बैसबैत रूपलाल, मोहनलाल आ सोहनलाल दोसर सत्तैरमे कुरसीपर बैसैत। तैबीच एक गोरे तसतरीमे दस-बारह गिलास ठंढा नेने अबैत। समाजबला टेबुलपर रखि गिलास उठा आगू बढ़ि सोनेलालक आगूमे रखैत अछि।)

सोनेलाल- बाउ, ई किए अनलौं हम सभ कन्यागत छी, आगू बढ़ि केना मुँह ऐंठाएब।

सिंहेश्वर- अपने शास्त्रीए बात कहलिऐ। मुदा समाजो आ समाजक बीच परिवारोक एहेन बेवहार होइ छै जे शास्त्रसँ हटियो कऽ होइ छइ। मानलौं अहाँ कन्यागत छी मुदा अखन तँ बटोही छी। जखन कथा कुटुमैतीक चर्च चलत तखन ने अहाँ कन्यागत आ हम सभ बरपक्ष हएब मुदा अखन तँ से नहि भेल अछि।

सोनेलाल- कहलिऐ तँ बेस बात मुदा दुनू गोरेक मंशा की अछि। यएह ने हम अपन बेटीक बिआह करब आ अहाँ बेटाक।

सिंहेश्वर- अपनेक सभ बात मानल मुदा कन्यागत आ बटोहीक बीच जे सीमा अछि ओइठाम शंका तँ अछिए।

मोहनलाल- कुटुम नारायण, ई सभ पुरना जमानाक चलैन भेल, समाज बदलल, समए बदलल, लोक बदलल, विचार बदलल तैसंग बेवहारो बदलत किने। ओ सभ छोड़ू। जहिना अहाँ कहै छी कन्यागत तहिना सिंहेश्वर काका, भेला बरपक्ष। हम सभ समाज छी समाजिक रूपमे आग्रह करै छी।

सोनेलाल- जँ समाज बनि कहलौं तँ सहर्ष स्वीकार अछि।

(ठंढाक गिलास चारू गोरे हाथमे उठबैत अछि। तखने चाह-बिस्कुटबला अबैए। कियो हाँइ-हाँइ ठंढा पीबए लगैए तँ कियो एक्के बेरमे पीब जाइए। कियो हाँइ-हाँइ चाह पीबए लगैए। तही बीच एक गोरे पंचमेबा नेने अबैए।)

सोनेलाल- जहिना अहाँक समए अछि तहिना हमरो सबहक अछि, तँए नीक हएत जे ईहो सभ चलैत रहतै आ गपो-सपो चलैत रहतै।

मोहनलाल- कुटुम नारायण, कहलिऐ बड़ सुन्नर बात मुदा यएह तँ छी जिनगी। जे धियो-पुताकें अपना हाथे किछु पढ़ा-लिखा नै पबै छी। मुदा आशा करै छी अपनेबला बुधि होइ। पढ़तै अनकासँ बुधि हेतै अप्पन! मुदा जिनगीक जे क्रिया-कलाप, जैपर जिनगी ठाढ़ छै ओ तँ छइहे।

सोनेलाल- बढ़ियाँ बात कहलिऐ, ओछाइनपर माए-बाप पड़ल काहि काटि रहला अछि, मुदा सेवा-ले सन्तान लग समए कहाँ..!

मोहनलाल- (पंचमेवाक टुकड़ी मुँहमे लैत) कुटुम नारायण, लड़कीक की योग्यता छैन?

सोनेलाल- डाक्टरी पढ़ै छैथ। अन्तिम बर्खमे छह मास शेष रहलैन अछि।

सिंहेश्वर- लड़का-लड़कीक जोड़ा एकतरहक अछि। मुदा कुटमैतीमे तँ तीन जोड़ा लगबए पड़ै छइ। जहिना बरियाती तीन मन तहिना ने घरदेखियो एक जोड़ा लड़का-लड़की दोसर जोड़ा परिवार गाम समाज आ तेसर जोड़ा।

मोहनलाल- हँ से तँ बेस कहलिऐ काका, जोड़ा तँ तीनूक हेतै मुदा आब तँ लोक फुद्दी भऽ गेल। बिआहक पछाइत चतुर्थीसँ पहिने दुरागमने भऽ जाइ छइ। आ दुरागमन होइते कियो केतौ, कियो केतौ जा कऽ रहए लगैए। आब कहू जे ओकरा समाज आ परिवार पछुएने फिरतै।

सिंहेश्वर- से तँ नै पछुएने फिरतै, मुदा आँखि मूनि किछु कैयो लेब नीक नै हेतइ।

सोनेलाल- गप-सप्प बहैक गेल।

सिंहेश्वर- बहकल कहाँ, भूमिका बन्हाएल। अहीं कहू जे अहाँ गामकें सुति उठि भोरे-भोर कियो नाओं नै लइए, से किए?

सोनेलाल- ई कहिया-केतएसँ लोक कहैए मुदा आब समाज आगू बढ़ल। ई नन्हिटा बात जे कोनो समाज लड़की डाक्टर लड़की वैज्ञानीक आ लड़की पायलट पैदा केलक। तँ

आब ओइ नजरिये देखए पड़त।

सिंहेश्वर- एक अर्थमे उचित अछि। मुदा एक जमीन्दार परिवारक डाक्टर आ दोसर साधारण परिवारक डाक्टरक बीच ने कुटमैती भऽ रहल अछि।

सोनेलाल- हँ, से तँ भाइये रहल अछि। ओना जँ दुनू समाजक परिचए भऽ जाए तँ लाभे-लाभ हएत।

मोहनलाल- पहिने कन्यागत दिससँ हुअए।

मकशूदन- पहिने जैठाम आएल छी से ने उचित हएत। घरक माइने नहि आ बाहरक माइन!

रूपलाल- सभ बातमे जोर केने ओहिना होइ छै जहिना गाड़ी आकि हरमे एकटा असथिर बरद रहल आ एकटा फरकाह। एहेन जोड़ासँ काज चलतै। कुटुमेक बात मानि लहुन।

मोहनलाल- काका, हम सभ छौड़ा-मारेड़ छी, गामक तरी-घटी नहि बुझै छी, अहाँ तँ परिवारे नै समाजमे श्रेष्ट छी तँए नीक हएत जे अपने परिचए दियौ।

सिंहेश्वर- अपन परिचए की दियौ, कोनो नुकाएल परिवार अछि। बेसी दूर तँ नइ जाएब, ओना पाँच पीढ़ी आ सात पीढ़ीक मिलान तँ कुटुमैतीमे हेबेक चाही।

रौदी- कुटुम नारायण, कहलिऐ बड़बढ़ियाँ मुदा एहनो समाज अछि जेकर बोही-खतियान नइ छै आ एहनो अछि जेकर छइ। एहेन स्थितीमे सतो झूठ आ झूठो सत हेतै कि नहि?

सिंहेश्वर- होइक संभावना छै, मुदा गारंटी नहि, भओ सकै छै आ नहियोँ भऽ सकै छइ।

सोनेलाल- फेर बात बहैक गेल! कुटुम नारायण, जे मन फुरैए जेते मन फुरैए बजैत जाउ। कियो अपन अधकट्टी नाओंसँ परिचए दइ छैथ तँ कियो संज्ञाक संग सर्वनाम आ विशेषण इत्यादिक संग, मुदा छी परिचाइये।

सिंहेश्वर- हमर आठम पीढ़ी जमीन्दारी कीनि ऐ गाम ऐला। धर्मात्मा लोक रहैथ। धर्मसँ बेसी सिनेह रहैन। तइसँ परिवार उठिते गेल। पाँचम पीढ़ी अबैत-अबैत एगारह गामक जमीन्दार भेल।

मोहनलाल- काका, तेहेन कऽ चासब धरौलयैन जे दूओ कट्ठा समारल हएत की नहि हएत। ओते नै कहियौ। खाली लड़का, लड़काक परिवार आ समाजक विषयमे अखुनका बात बजियौ।

सिंहेश्वर- देखहक मोहन, भलेँ हिनको बेटी ओही विद्यालयमे पढ़लकैन जइमे हमरो बेटा पढ़लक। मुदा खरचो आ

बेवस्थो एक रंग थोड़े रहल। हमरा की कोनो सेहन्ता अछि जे बेटा नोकरीए करए। मुदा...।

मोहनलाल- ‘मुदा’ की?

सिंहेश्वर- हिनकर बेटी कोनो की डाक्टरी करती। रानी बनि हाउस वाइफ रहती।

मोहनलाल- काका, आब अपन बात विसर्जन करू। मुरकुटी गप पुछै छी, दुनू गोरे जवाब दिअ। अनेरे केतौ नहि खाँच बैस जेतइ। कुटुम नारायण, अपने किछु कहियौ।

सोनेलाल- जीया भाय, जे जनै छी से बाजू। थोड़-थाड़ हमरो बुझल अछि पछाइत जोड़ि देबइ।

जीयालाल- सोने भाय, अहूँकेँ बुझल अछि जे हमर बाबा दोखतरीपर छैथ। तँए कोन गामक परिचय दिऐन।

मोहनलाल- अखन जइ गाममे छी तेकर परिचए दियौ। गामक कोनो ठेकान नहि अछि, लगले पुर सँ पुरा भऽ जाइए आ विहाने-भने गमा चाहे टोलिया बनि जाइए। तँए छोड़ू ओइ झमेलकेँ।

सिंहेश्वर- तहूँ तँ बेटे-भातीज भेलह मोहन, जेहने मांग रहत तेहने ने हाथी जकाँ ढबगर रंगो छजत, से तँ विचार करए पड़तह किने?

जियालाल- जहाँ धरि सकरता हएत तहाँ धरि संग पूरब नहि तँ अहूँ अपन बाट धड़ब हमरो-ले दुनियाँ छइ।

सिंहेश्वर- ई तँ मानै छहक किने मोहन जे जेकरा घराड़ियो ने छै सेहो पाँच लाखक बिआह करैए, तइमे हमरा सन लोककेँ केहेन हेबा चाही?

मकशूदन- एना झाँपि-तोपि बजला सँ नइ हएत। कुटुमैती केना हएत ई जोगार सभ मिल लगाउ। जखने कियो किछु आ कियो किछु टिपबै तखने काज भँगठत।

सिंहेश्वर- एक्केबेर बाजि दइ छी जे पच्चीस लाख रूपैआ कन्यागत खर्च करैथ कुटुमैती हेबे करतैन।

(पच्चीस लाख, सुनि गुमा-गुमी पसैर गेल। सभ सबहक मुँह, आँखि उठा-उठा देखबो करैत आ गरो करैत। जीयालालक आँखि सौनक मेघ जकाँ भरि जाइ छैन। मुड़ी गोंतने चद्दैरसँ आँखि पोछए लगै छैथ। मुदा मकशूदन आ रौदीक आँखि लाल गेल।)

मकशूदन- जीया काका, अपन अन्तिम विचार बाजि दियौ पछाइत बुझल जेतइ।

जीयालाल- बौआ मकशूदन, कोनो बड़ पुरान बात नहियेँ छी। चारि-पाँच बर्ख पहिलुका छी। पनरह बीघा अपना

खेत छेलै साढ़े सत-सत बीघा दुनू भाए-बहिनक भेलइ। देखते छहक जे बेटी केहेन पढ़ैमे तेज अछि।

मकशूदन- ऐमे के दूसत।

जीयालाल- अपनो मन मानि गेल जे बेटी किछु करत। अदहा सम्पैतक बाजी लगा देलौं, बेच कऽ पढ़ा देलिऐ।

सोनेलाल- पंचवेदीमे गाए नहि खाएब। अहाँ जे कहै छिऐ ओ भरि छाती गंगामे पसि बजलासँ हुअए वा गीता-रमायण उठौलासँ हुअए। सोलहन्नी सत बजलौं हेन। कुटुम नारायण, अखन धरि जे जीया भाय बेटीक प्रति उत्सर्जन केलैन ओ तँ अहींक हएत, तखन किछु विचार करियौ?

मोहनलाल- कुटुम नारायण, गंगा-कोसीक जखन बाढ़ि अबै छै तखन कोन घर खसौत आ कोन गाम देने कटनियाँ करत आ धार बनौत तेकर कोनो ठेकान छइ।

सोनेलाल- हँ, से तँ नहियेँ छै, मुदा..?

मोहनलाल- अहीं छातीपर हाथ रखि बाजू जे सिंहेश्वर काका जे बजला हेन से एहेन बजनिहार यएहटा छैथ आकि आनो-आनो गाम-समाजमे अछि।

सिंहेश्वर- पूबारि गामबला पनरह लाख टाका आ गाड़ी सोना

सभ किछु दइले आएले छला, लड़की डाक्टरी नै पढ़ल छैलैन तँए कुटुमैती नइ भेल।

मोहनलाल- हँ, से तँ लड़केक माँग छैन।

सिंहेश्वर- किछु भेल तँ पढ़ल-लिखल जवान बेटा भेल किने, जे मुँहछोहैन केलक से जँ पूर्ति नै करबै से केहेन हएत। (रूपलाल दिस इशारा करैत)

रूपलाल- भाय साहैब, हम सभ बरपक्ष छी, अहूँ बातक मान नै हएत से थोड़-थाड़ हेबे करत मुदा सिंहेश्वर कक्काक विचार सर्वमान्य हेबा चाही।

जीयालाल- (देह थरथराइत) अपनेक ऐठाम नुकाइ-ले आएल छेलौं, जँ नुकाइक जगह नहि देब तँ चलिये जाएब मुदा हमहूँ झूठ नै कहलौं।
(ढबढ़बाएल आँखि चद्दैरसँ पोछए लगला।)

(मकशूदन उठि कऽ ठाढ़ होइए। तइ पाछू रौदी सोनेलाल सेहो उठि कऽ ठाढ़ होइ छैथ। जहिना मकशूदन तहिना रौदी सिंहेश्वरपर आँखि गड़ा मने-मन गुम्हरैत अछि। दोसर दिस रूपलाल, मोहनलाल, सोहनलाल सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेल। तीनू गोरे कखनो सिंहेश्वर दिस तकैत तँ कखनो जीयालाल दिस।)

सोहनलाल- (फरैक कऽ) अँइ हौ, डाँरमे दम नै छेलह तँ बेटी किए

जनमेलह?

मकशूदन- (बाँहि समटैत) डाँरमे दम नै छइ। तोरा समाजकेँ डाँरमे दम नै छह जे दिन-देखार बेटी हलाल होइत रहै छह आ सभ मुँह तकै छह।

रूपलाल- (पीहकारी मारैत) बुड़ि कहीं-के, बड़ समाजबला भेला हेन! बाजह तँ गाममे केतेक हाथी आ घोड़ा छह। बड़ हेतह तँ कौल्हजोता बरद आ बोझउट्ठा घोड़ी, तहीपर समाजबला बनै छह।

(रौदी छड़ैप कऽ आगू बढ़ैए मुदा सोनेलाल पकैड़ लइ छइ।)

सोनेलाल- बौआ रौदी, एना बिगड़ह नहि। कियो अपन महींस कुरहैरे सँ नाथत तँ नाथह, मुदा जइ समाजमे विचारे नहि छै तेकर हम-तूँ की करबै।

(रूपलाल सोनेलालक गट्टा पकैड़ लैत अछि।)

रूपलाल- बड़ उचितवक्ता भेला अछि। बाप-माएक ठेकाने ने छैन आ प्रवचन झाड़ै छैथ!

सोनेलाल- अखन दरबज्जापर छी, गारि पढ़ी, मारी अपन मान-प्रतिष्ठा-ले करब। असकर छी जे मन फूरए सभ कऽ लिअ।

मकशूदन- (सोनेलालक हाथ पकड़ैत) काका चलू। सभ अपन-अपन समाजक मालिक होइए। समाजक सभ माए-बहिनकेँ कहबै जे अर्द्धांगिनी कहौनिहारि वा जीवन-संगीनी कहौनिहारिक प्रति जे जोर-जुलुम भऽ रहल अछि, ओकर रक्षा अपने नइ करब तँ...। पुरुख सभ दिन अवहेलना करैत आएल आ सभ दिन करैत रहत।)

सोहनलाल- मुँह की तकै छह मोहन, दू हाथ चलए दहक।

मकशूदन- जँ केकरो माए दुध पीएने हेतै तँ हमरो सभकेँ पानि नै पिऔलक! फरिछेनहि जेबह।

सिंहेश्वर- छोड़ू, अनेरे अहाँ सभ बातक बतंगर करै छी। अहूँले दुनियाँ खाली अछि आ हमरो-ले अछि। जखने ब्रह्मा गढ़ै छथिन तखने जोड़ाक नामकरण सेहो कऽ दइ छथिन। जँ एक पुरुख तँ दोसर नारीए ने छी। अहीं दुनूक बीच ने मैत्री होइ छै जे जीवन संगीक रूपमे चलैत जिनगीक नैयाकेँ ऐपार-सँ-ओइपार पार करै छइ।

मकशूदन- सभ झूठ, सभ बकबास! जेहेन समाज तेहेन विचार...।◌

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 2774

तेसर दृश्य-

(सोनेलालक दरबज्जा। चौकीपर बैस देबालमे ओडैठ आँखि बन्न केने सोनेलाल।)

मकशूदन- काका! काका! एना किए कुसमयमे सुतै छी?

(मकशूदनक अवाज सुनि बुधनी अँगने सँ बजैत।)

बुधनी- के छी यौ, के छी यौ। (बजबो करैत आ दरबज्जापर एबो करैत।)

सोनेलाल- बौआ मकशूदन, आबह-आबह!

मकशूदन- बड़ भकुआएल बुझि पड़ै छी?

सोनेलाल- भकुआएल कहाँ छी। किछु बात जिनगीक मन पड़ि गेल सएह बुकौर लगैए जे की चाहै छेलौं आ की भऽ रहल अछि...।

बुधनी- जिनगी भरि तँ छकल-बकलमे लागल रहलौं आ आब बुढ़ाड़ीमे सुमारक होइए।

सोनेलाल- अहाँ बातक मिसियो भरि दुख नै होइए, अपनो बुझि पड़ैए जे ठीके छकले-बकले केलौं। पेटक खातीर की ने केलौं। समाजसँ शासन धरि, जेतए गड़ लागल तेतइ किछु पाबए चाहलौं।

मकशूदन- आब की उपाय हएत?

सोनेलाल- की कहबह। एते दिन ठीके बुझै छेलौं जे समाज बनि बजै छी मुदा एहेन बिगड़ान समाज बिगैड़ जाएत से कहियो मनमे उठलो ने छेलए।

मकशूदन- गारजन तुल्य छी, बेकतीगतो रूपे तँ किछु विचार देब किने।

सोनेलाल- विचार देबसँ नीक विचार करब हएत।
(पत्नी सँ)
कनी दू-घोंट चाह पीआ दइतौं तँ कण्ठ सर्रास भऽ जाइत।

बुधनी- चाह तँ बनिते छल। वएह छोड़ि कऽ ने आएल छेलौं।

सोनेलाल- नेने आउ।

(बुधनी जाइत अछि)

बौआ, समाजमे जखन डाक्टर सन लड़कीक एहेन

गति भऽ रहल अछि तखन कम पढ़ल-लिखल वा नइ पढ़ल-लिखलक की गति हएत?

मकशूदन- यएह नहि बुझै छी काका! कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल-लिखलक तँ समस्या ऐछे मुदा एते भारी नइ अछि।

सोनेलाल- हमरा-तोरा-बुते रोकल हएत?

(बुधनी चाह नेने अबैए। तीनू गोरेक हाथमे चाह।)

सोनेलाल- श्यामक माए, जिनगीमे ऐते दुख कहियो नहि भेल जेते आब होइए। परसू जे घटकैतीमे गेलौं आ जे दशा भेल से अपने जनै छी। ऐसँ नीक मौगैत!

बुधनी- आब ऐ बुढ़ाड़ीमे कएल की हएत। जखन करैबला उमेर छेलए तखन करबे ने केलौं आ आब..?

सोनेलाल- छातीपर हाथ रखि बजै छी- बुझबे नहि केलौं। कोन बाट की भऽ जाइ छै से कहाँ बुझै छी।

बुधनी- एकटा काज करू, मनक सभ मौगैत मेटा जाएत।

सोनेलाल- (जिज्ञासासँ) की?

बुधनी- समाजकेँ कहि दियौन जे भाए-बहिन हमरासँ जे भूल-

चूक भेल तेकरा अहाँ लोकैन माफ कऽ दिअ।

सोनेलाल- तइसँ भऽ जाएत?

बुधनी- भऽ केना जाएत! पैछला बुधिपर आड़ि पड़ि जाएत। आगू जे किछु करब से समाजक राय-विचारसँ करब। समाजक शक्ति समाजेक हाथ अछि।

सोनेलाल- गमैया काज गाममे हएत, मुदा बिआह तँ आने समाजमे हएत?

बुधनी- जहिना ऐ समाजमे बेटा-बेटी छै तहिना ओहू समाजमे ने छइ। एक समाजक नीक दोसरो-ले ने नीक हएत। आकि दोसर-ले अधला हएत।

सोनेलाल- से तँ नहि हएत।

बुधनी- तखन?

सोनेलाल- मकशूदन, अखन तक जे किछु नीक-बेजाए केलौं से सभ झूठ! नीको आ अधलो भूत बनि माटिमे गड़ि गेल, मुदा...।

मकशूदन- ‘मुदा’ की?

सोनेलाल- यएह ने जे कहबह नहि। कहने ई होइ छै जे काका

कहलैन, ओहिना थोड़े कहने हेता, तइसँ की हेतह जे तूँ ओङैठ जेबह आ हमहूँ हुकुमदार जकाँ कहैत रहबह।

मकशूदन- काका, किछु भेलिऐ तँ अहाँ श्रेष्ठ भेलिऐ किने। जहिना नमहर जिनगी बीतल तहिना ने आमक आँठी जकाँ बुधियो-विचार सकताएल।

सोनेलाल- तूँ अपन भार फेकै छह बौआ। अपन मन हारि मानि गेल जे अखन धरिक जिनगी पानिमे चलि गेल। तइसँ नीक बुझि पड़ैए जे तूँ अखन कौलेजे छोड़लह अछि। तोरामे हमरा जकाँ अधला वृत्ति बेसी नै पैसलह, तूँ बेसी कऽ सकै छह।

(रौदीक आगमन।)

रौदी- काका, किए समाद पठेने छेलौं। बजार जाइक विचार केने छी। कोनो तेहेन औगताइ अछि?

सोनेलाल- बौआ, औगताइ ऐछो आ नहियोँ अछि।

रौदी- से की?

सोनेलाल- पचास-पचपनक उमेर भऽ गेल हएत, मुदा...।

मकशूदन- नहि! तइसँ बेसी भेल हएत।

सोनेलाल- ओना नीक जकाँ ठेकान नइ अछि, मुदा तइसँ कमे भेल हएत जे बेसी नहि।

मकशूदन- से केना बुझै छिऐ। देखै छी नीचला दाँतो सँपधड़ू जकाँ हिलैए, माथक केशो सिलेब-चरक भऽ गेल आ साठि नहि टपल हएब!

सोनेलाल- हौ, तेते ने कोट-कचहरीक डल्डा-फल्डा खेने छी ने जे अछैते उमेर देह खा गेल। देखै नै छहक तौला जकाँ पेट भऽ गेल अछि।

रौदी- काका, हम औगताएल छी।

सोनेलाल- हँ, तँ कहै छेलियह जे अपन पैछला जिनगी दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे ओहिना चलि गेल..! आगू जे बँचल अछि तेकरा चाहे छी जे काजमे लगाबी।

रौदी- ऐमे के नै कहत?

बुधनी- (मुस्की दैत) अहीं सन-सन लोक ने वृद्ध वेश्या तपस्विनी होइ छैथ।

मकशूदन- काका, अहाँ अपन औरदा दऽ दिअ, देखा दइ छी जे केना होइ छइ।

सोनेलाल- हौ, औरदा के देलकै हेन जे हम देबह। ओहिना लोक कहै छइ। हँ, अपन विचार, अपन इच्छा, अपन संकल्प दऽ सकै छिअ।

बुधनी- अहाँ सन-सन पुरुखक जेहने विचार तेहने संकल्प। कौआ जकाँ भरिये रातिमे तीन बेर विचार बदलै छी।

रौदी- काका, जखन अहाँक मनमे एहेन विचार आएल तँ सभ तरहेँ पीठपर रहब। परसुए, अहीं दुआरे गम खेलौं नहि तँ देखा दैतिऐ जे केकरो माए दूध पिऔलकै तँ हमरो पानि नै पिऔलक।

सोनेलाल- कियो अपन दुआर-दरबज्जाक मान-प्रतिष्ठा अपने बनबैए। एक दरबज्जा ओहन होइए जैठामसँ लोक हँसि कऽ जाइए आ दोसर ओहनो होइए जैठाम लोक कानि कऽ जाइए।

रौदी- काका, कहलिऐ बेस बात। मुदा जहिना दुनियाँमे ढेरो सवाल छिड़ियाएल अछि तहिना ने ओकर जवाबो छिड़ियाएल छइ।

सोनेलाल- हँ, से तँ छइहे।

रौदी- जहिना अहाँ बुझै छी जे कियो अपना दरबज्जापर जँ दोसराकेँ गारिये पढ़ै छै आकि मारबे करै छै, तँ अपन गमबैए नै की मारि खेनिहारक किछु जाइ छै, तहिना

तँ...।

मकशूदन- हँ काका, जँ कनी-मनी गारिये आकि मारिये खेने रहल तँ देह झाड़ि लेत मुदा जँ मौगैत आकि अधमौगैत करि कऽ मारै तँ के मरत?

सोनेलाल- (गुम भऽ मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ ठीके कहै छह! मुदा...।

रौदी- ‘मुदा’ की। यएह ने जे मारा-मारी करत तँ आन गामक गनल लोक गामक अनगिनत लोकक आगू फिका पड़ि जाएत, मुदा रणभूमि छिऐ।

सोनेलाल- की रणभूमि?

रौदी- काका, रणमे मरै दोख नहि लागे, ओहिना नै ने महराइमे लोक गबै छइ।

मकशूदन- काका, दुनू गोरे कोन बतकटौबैलमे लागि गेलौं। खैयो-पीबैक बेर भेल जाइए। जल्दी बिसरजन करू।

सोनेलाल- बौआ, होइए जे आब जेते औरदा अछि आ जेते काज करब से आइए की जे अखने करैले मन तनफनाइए। तँए, नहि किछु तँ की करब से तँ कम-सँ-कम विचारि लेब किने।

रौदी- (मुड़ी डोलबैत) बेस कहलिऐ काका। मुदा काजक शुरू केतए-सँ करब, सएह ताकब कठिन अछि।

सोनेलाल- से की?

रौदी- रोटी जकाँ सौंसे एके रंग अछि। ओकर मुँह केनए बनेबै?

बुधनी- हाथसँ पकैड़ जेतएसँ तोड़ि कऽ उठा मुँहमे देबै तेतै ने रोटीक मुँह बनत।

सोनेलाल- हौ, बड़ भारी ओझरी देखै छी। जहिना खड़ौआ जौरकेँ देखै छहक जे कखनो जौर बँटला बाद ओझरेतह तँ कखनो पाके उघैर ओझरा जेतह, कखनो बँटैएकाल ओझरा जेतह तँ कखनो खेतक आड़ियेपर ओझरा जेतह।

मकशूदन- तेकर फलो तँ ओकरे होइ छै किने?

रौदी- ई पड़ाइक रस्ता भेल। भने सोनेकाका कहलखिन जे साबे उपजैसँ लऽ कऽ जाबे घरहट नहि कऽ लेब, ताबे तक ओझराइते रहैए। मुदा ओकरे नाओंपर 'घर बान्हब' कहलो जाइ छै किने?

सोनेलाल- तेतबे किए? जौर तँ पटुआक सेहो होइ छइ। जहिये-सँ गाछ जनमै छै तहिये-सँ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ असगरे

रौद-वसात सहैत पानिमे सड़ैत अपन रंग निखारि ओहन जौर बनैए जइसँ उपनैन-बिआहक मड़बा सेहो ठाठल जाइए।

बुधनी- आबो कनी होश करू। लगले किछु, लगले किछु बाजि दइ छिऐ!

सोनेलाल- कोनो झूठ बजलौं जे अहाँकेँ तामस उठि गेल?

बुधनी- केना नै तामस उठत। ठिकिया कऽ एकेटा बात किए ने बजलौं। जखन देखै छिऐ जे एक रहितो दुनूक दू जिनगी छै, तखन दुनू किए बजलिऐ? कोनो एक्केटाक ने ताक केतौ अबै छइ।

सोनेलाल- नै बुझलौं, कनी मुँह खोलि कऽ बजियौ।

बुधनी- हमरा कोनो लाज-धाक होइए जे नै बाजब। देखियौ, उघरल जौर जकाँ समाजक लोक उघैर गेल अछि। सभकेँ सभसँ मिलाने आ झगड़े रहै छइ। तँए एक-एककेँ पकैड़ जोड़ि काजक माध्यमसँ समाज बनत। वएह समाज बढ़ैत-बढ़ैत समाजिक प्रतिष्ठा पाबि फड़त-फुलाएत। जे नान्हिटा नहि अछि।

सोनेलाल- केना नै अछि, नेनाकेँ जँ पोसबै-पालबै तँ की ओ समए पाबि पुरुष नइ भऽ सकैए। छोड़ू आब किछु ने, मकशूदन जीयालालकेँ बजाबह। सभ कियो छीहे।

अखने विचारि लेब जे आगू की करैक अछि। भने परसुका घटना टटके अछि। जीयालालकेँ बजाबह।

(मकशूदन जाइत अछि)

रौदी- हमहूँ अखन बजार जेनाइ छोड़ि दइ छिऐ।

(जीयालाल आ मकशूदनक प्रवेश)

सोनेलाल- संयोग शुभ बुझि पड़ैए। जेना रस्तेपर जीयालाल ठाढ़ भेट गेल हुअ तहिना लगले आबि गेलह।

जीयालाल- सोने भाय, परसूसँ जेना राति-के नीन नै होइए। भरि दिन भरि राति मन वौआइत रहैए जे बेटीकेँ अनेरे किए पढ़ेलौं। जे बेच कऽ पढ़ेलौं तइसँ बिआहे कऽ दैतिऐ। बापक धरम तँ निमाहि लइतौं।

सोनेलाल- बेटा-बेटीक बिआह करब माए-बापक धरम भेल, मुदा पढ़ाएबकेँ की कहबै?

(जीयालाल गुम भेल। कखनो सोनेलालक चेहरा देखैत तँ लगले आँखि घुमा बुधनीक चेहरा देखैत। लगले फेर रौदीपर नजैर दैत आ लगले बाहर दिस देखैत।)

मकशूदन- काका, एना झँपने-तोपने काज नहि चलत। दोहरा

कऽ ओहनठाम नइ जाएब, जैठाम मनुखक खरीद-बिकरी होइए।

सोनेलाल- मकशूदन बजलह तँ लाख रूपैयाक, मुदा विवाह-पद्धति तँ दू समाजक काज छी, एक समाजसँ केना बनत?

बुधनी- किए नहि बनत? जे बेटी जइ समाजमे जनम लेलक की ओइ समाजकेँ ओकर जीवन दान करैक शक्ति नइ छइ? एक समाज नहि, सभ समाजक बीच बेटा-बेटी अछि। तँए सभकेँ रस्ता बनबए पड़तैन। समाजिक रोग दहेज छी, जे देव निर्मित नहि मनुख निर्मित छी।

रौदी- जीयालाल काका, अहूँ सोल्हन्नी भार नइ उठा सकै छी। कारण जे महिलाकेँ खुद तैयार हुअ पड़तैन। हम सभ सहयोगी हेबैन।

सोनेलाल- जँ सभ कियो कहह तँ एकटा बात बाजब?

(मकशूदन, रौदी, जीयालाल समवेत स्वरमे)
बाजू-बाजू।

सोनेलाल- जीया भाय, अहाँ सुशीलाकेँ कहि दियौ। बेटी, जन्मसँ लऽ कऽ पढ़ा-लिखा कऽ जुआन बना देलियह। आब अपन, अपन परिवार, अपन समाजक नाक-कान बँचबैत तूँ स्वतंत्र जिनगी जीबैक हकदार छह। अपन

करह। ◌

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1506

चारिम दृश्य-

(जीयालालक दरबज्जा। जीयालाल बैसल। रूक्मिणीक प्रवेश।)

रूक्मिणी- एना गोबर-गोइठा जकाँ बैसने काज चलत?

जीयालाल- से तँ नइ चलत। मुदा अनेरे पानियोँ डेंगाएब तँ काज नहियेँ ने छी।

रूक्मिणी- की पानि डेंगाएब?

जीयालाल- कोनो काज करैमे जखन बाधा उपस्थित भऽ जाइ छै तखन बिनु बाधाकेँ भगौने काज थोड़े हएत।

रूक्मिणी- से तँ नहि हएत मुदा तँए की लोक परियास छोड़ि देत।

जीयालाल- से तँ नइ छोड़त, मुदा ऐगलो परियासक फल नीके हेतै तेकरो ठेकान तँ नहियेँ ने अछि।

रूक्मिणी- से तँ नहि छै, मुदा सोलहन्नी नहियेँ छै एहनो तँ नहियेँ ने मानल जाएत, भैयो सकै छै किने?

जीयालाल- करेज खोलि कऽ चारिम दिनक बात कहै छी। ओना

झँपले-तोपल कहने रही तइसँ भरिसक अहूँ नीक जकाँ सभ बात नहियेँ बुझलिऐ।

रूक्मिणी- यएह ने पुरुखक दोख कहियौ आकि छल-कपट कहियौ जे स्त्रीगणकेँ अपन कएल काज मुँह फोरि नै कहता। ई दोख की कोनो अहींटामे अछि आकि सभ दिनेसँ होइत आएल अछि।

जीयालाल- कहलौं बेस बात, मुदा सभ बात कहबो तँ नीक नहियेँ ने हएत। खाएर जे हौउ। चारिम दिन जे सुशीलाक प्रति बरक भाँजमे गेल रही से कहै छी।

रूक्मिणी- आइ जे कहै छी से चारिम दिन एला पछाइत किए ने कहलौं?

जीयालाल- किछु एहनो बात भेल जेकरा नहियेँ बाजब उचित बुझलौं तँए नै कहलौं। मुदा अखन बुझै छी जे बाजबे उचित अछि तँए कहै छी। अपना काजे समाज मारियेटा नहि खेलैन बाँकी कर्म तँ भाइए गेलैन।

रूक्मिणी- (जिज्ञासासँ) से की! से की?

जीयालाल- जखन सुशीलाक बिआहक खर्चक बात उठल तँ लड़िकाक पिता पच्चीस लाख रूपैआ खर्च करैक मांग रखलैन।

रूक्मिणी- अहाँ की उत्तर दिलिऐन?

जीयालाल- कहलयैन एते सकरता नै अछि।

रूक्मिणी- केहेन बढ़ियाँ तँ कहलयैन तखन...।

जीयालाल- (फरैक कऽ) एह! तखन! पीहकारी-पर-पीहकारी पड़ए लगल। पीहकारीकेँ पीहकारी बुझि पहिने तँ किछु ने कियो बजला मुदा पछाइत जखन गारिक बौछार कानमे पड़ए लगलैन तखन...।

रूक्मिणी- ऐ सबहक जड़ि कारण अछि बेटीकेँ पढ़ाएब। अनेरे एते बेटीकेँ पढ़ेलौं। जेते पढ़ेबामे खरच भेल ओते जँ बिआहेमे करितौं तँ डाक्टर परिवार बनि बेटी रहैत।

जीयालाल- हँ से तँ रहैत। मुदा बेटा-बेटीमे की अन्तर छइ। बाप-माएले जहिना बेटा तहिना बेटी।

रूक्मिणी- बहुत अन्तर छइ। मनाही केने रहौं जे घर-परिवार चलबैक लूरि बेटीकेँ भऽ जाए, बस भऽ गेल ओकर पढ़ाइ।

जीयालाल- किए?

रूक्मिणी- बहुतो कारण अछि। मुदा सोझहा-सोझही बुझू जे नारीकेँ पुरुखक संग ऐ दुआरे लगौल जाइ छै जे

सन्तान पैदा होइसँ पहिनौं आ पछाइतो रोग-वियाधिक बीच पड़ि जाइत अछि, तैठाम दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। तैसंग देहोक एते शक्तिक ह्रास होइ छै जइसँ दैनंदिनक जे क्रिया-कलाप अछि से नहि कऽ पबैए।

(किशोरक प्रवेश)

जीयालाल- बौआ, स्कूल किए ने गेलह?

किशोर- पढ़ाइए ने होइ छै तँ अनेरे की करए जाएब।

जीयालाल- किए ने पढ़ाइ होइ छै, शिक्षक सभ नै छैथ?

किशोर- ने अबैक ठेकान छैन आ ने पढ़बैक।

जीयालाल- स्कूलक जखन यएह गति छह तखन घरोपर तँ ओइ हिसाबक समए बना पढ़बह तखने ने पासो करबह आ दू अक्षरक बोधो हेतह।

किशोर- से तँ साँझ-भोर पढ़िते छी। चारिम दिन जे बहिनक बिआहक विषयमे गेल रही से की भेल?

जीयालाल- बाल-बोध बुझि तोरा नै कहबह से नीक नै बुझि पड़ैए। बहिन तँ तोरे छिअ। जिनगी भरि तोहीं सोझहामे रहबहक। हम दुनू बेकती तँ बुढ़ाएल जाइ छी। दिनो-

दिन घटिते जाएब।

(सुशीला अबैत अछि)

जीयालाल- बुच्ची, आब केते दिन पढ़ाइ बाँकी रहलह?

रूक्मिणी- आब सुशीलाक बिआहोक जोगार करैक अछि।

सुशीला- (उत्साहित होइत) माए, हमर चिन्ता छोड़ि दे।

रूक्मिणी- बेटी जाति छह एना नै बाजह!

सुशीला- मुँह बन्न केने थोड़े हएत। चारिम दिनक सभ बात बुझल अछि। जहिना जनकपुरमे सीता धनुष उठा एक संकल्प पैदा केलैन तहिना दहेजक खिलाफ हमहूँ अपन संकल्पसँ संकल्पित होइ छी।

जीयालाल- (खुशी होइत) बुच्ची, अकलबेराक बाल-बोधक खेल संकल्प नहि होइ छइ। संकल्प कठिन मेहनत आ साहस मंगै छइ।

सुशीला- जहिना दुनू प्राणी अहाँ हमरा पराने नहि, जिनगी जीबैक प्रण सेहो देलौं तहिना अहीं सोझहामे स्वतंत्र जिनगी जीबैक प्रण सेहो लइ छी। दुनियाँ किछु कहह, मुदा अहाँ महापुरुषक काज कऽ चुकल छी। हमहूँ किछु करब।

जीयालाल- बुच्ची, अही आशा-ले ने एते केलौं। नहि तँ आन बापकेँ देखै छिऐ जे खेत कीनै-ले जे रूपैआ गनि कऽ रखि दइए ओ बेटोक बिमारीमे नै खर्च कऽ पबैए, भलें बेटा मरिये किए ने जाउ। तैठाम हम अपन दुनू परानीक हिस्सा काटि बेच-बिकीन कऽ चुका देलियह। आब बाँकी की बँचैए जे...।

सुशीला- आइए नहि, अदौसँ नारीक प्रति अवहेलना होइत एलैए। पुरुष प्रधान समाज नव-नव अवहेलनाक बाट सिरैज-सिरैज अवहेलना करैत आएल, जेकरा रोकैक जरूरत छइ।

जीयालाल- हँ से तँ छइ! मुदा अपना संग अपन परिवार आ समाजोक प्रतिष्ठाकेँ अंगीकार करैत ने कियो किछु करत।

सुशीला- (हँसैत) बाबू, जहिना महान साधक जनक धनुष तोड़ेसँ पहिने सीताक कौमार्य जीवन आ परिवारिक जीवनक सम्बन्धमे विचारलैन आकि नहि विचारलैन से तँ ओ जानैथ मुदा जहिना सासुरमे कियो कनियाँसँ माए, माएसँ दादी होइत जिनगी गुदस करैए तँ कियो बेटी, बहिन, दीदी, दादी होइत सेहो ओतै पहुँच जाइए तहिना...।

रूक्मिणी- बेटी, बेटी-जातिक सीमासँ बाहर नइ हुअ। किछु

भेलखुन तँ जन्मदाता गुरु भेलखुन। अखन हम छिअ जे कहैक छह से हमरा कहह। जँ हम नै रहितिय तखन तोरा मुँह फोड़ैक अधिकार छेलह।

सुशीला- माए, जहिना समैयक परिवर्त्तन होइ छै तहिना सभ कथूक होइ छइ। सभ कथूक भेने मनुख ओइसँ अलग नहि भऽ सकैए। धर्मक–माने पवित्र जिनगी जीबैक मंत्रक–जे रूप रहल ओ अकाट्य अछि, मुदा किछु पुरान पड़ैत गेल, किछु नव अबैत गेल, ओकरा तँ देख-सुनि परखए पड़त किने।

रूक्मिणी- हँ, से तँ परखए पड़त, मुदा समस्योकेँ पोखैरक जाल जकाँ एक्केबेर तँ नहि फेकल जाएत। महजाल जकाँ एक भागसँ लगबैत-लगबैत सौंसे पोखैर पसारल जाइत।

सुशीला- हँ पसारल जाइत, तइमे सभ माछ फँसिये जाएत से कोनो जरूरी तँ नहि, जे ढेंग जकाँ ओंघराइत जाएत ओ फँसत आ जे जालक भीर अपनाकेँ अबहि ने दैत ओ तँ छुट्टा रहबे करत?

रूक्मिणी- से तँ रहत, मुदा लोको-लाज तँ किछु छिऐ किने?

सुशीला- हँ छिऐ, मुदा लोक-लाज की, से तँ विचारए पड़त। समाजमे देखै छी जे बारह बर्खक कन्याँ, जे बिआहक पाँच दिनक पछाइत वैधव्य प्राप्त केलैन आ साए

बर्खक जिनगी बहिन, दीदी, दादीक रूपमे व्यतीत करै छैथ। हुनका की कहबै? जे दोहरा कऽ दोसर पुरुषक संगी नहि भऽ सकैत, ओहन नारी-ले समाज किए चुप अछि?

रूक्मिणी- चुपे कहाँ अछि। मनुख तँ अपना मनक मालिक होइ छै, ओ बान्ह-छान्ह थोड़े मानै छइ। घोड़ा जकाँ छानलो रहै छै तैयो चरि-चरि हाथ कुदैत रहैए। मुदा तूँ तँ पढ़ल-लिखल बेटी भेलह। तोरा तँ ई सभ बात बुझए पड़तह किने?

सुशीला- हँ माए, बुझए पड़त। मुदा...।

रूक्मिणी- 'मुदा' की?

सुशीला- माए, जाधैर बेटी माए-बाप ऐठाम रहैए ताधैर जे जिनगी छै ओ बिआहक पछाइत एकाएक बदैल जाइ छै आ ओत्तैसँ पुरुखक मनमानी शुरू होइ छइ।

रूक्मिणी- हँ से तँ होइ छइ। मुदा माइयो-बापक किछु एहेन कर्तव्य अछि जेकर सीमा बनौल अछि। तही सीमाक भीतर ने बेटीक बिआह सेहो अछि।

सुशीला- हँ अछि। मुदा जिनगी बदलैक जे सीमा बनल अछि ओकरो सुधारैक अछि किने। अखन तोरा हमर बिआहक जहीन लगि गेल छौ?

रूक्मिणी- बुच्ची, नवकवेरिया छह तँए औगताइ छह। तोहीं किछुए दिनक पछाइत डाक्टर बनि नोकरी करए जेबह, असगरे बाहर केना जेबह? केकरा संगे जेबह?

सुशीला- हम अखन ने बिआह करब आ ने नोकरी करब। जइ समाजक बेटी छिऐ तइ समाजकेँ बाप बुझि सेवा करबै, हमरा सेवाक बहुत बेसी जरूरत समाजकेँ छइ।

रूक्मिणी- बुच्ची, हम तँ जन्मे देलियह, कर्म तँ अपने करए पड़तह।

सुशीला- (हँसैत) अहाँ दुनू गोरे असीरवाद दिअ जे कोनो समाज दहेजक जाल लगौलक तँ ओइ जालकेँ केना निष्काम बनौल जाए, ई तँ करए पड़त।

पटाक्षेप

समाप्त

शब्द संख्या : 1185

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742
मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 100

ISBN : 978-93-87675-42-1

रत्नाकर डकैत

जगदीश प्रसाद मण्डल



रत्नाकर डकैत

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-41-4

दाम : ₹ 251/-
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

RATNAKAR DAKAIT
A Play in Maithili Language by Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

पात्र परिचय

पुरुष पात्र-

1. रत्नाकर- 60 बर्ख।
2. महेश- 55 बर्ख।
3. सुरेश- 55 बर्ख।
4. गणेश- 25 बर्ख।
5. भजन लाल- 48 बर्ख।
6. मिसर लाल- 48 बर्ख।
7. रमण लाल- 48 बर्ख।
8. मोजे लाल- 60 बर्ख।
9. बर्बरी- 25 बर्ख।
10. सुग्रीव- 35 बर्ख।
11. हनुमान- 25 बर्ख।
12. अध्यक्ष- 58 बर्ख।

नारी पात्र-

1. शबरी- 60 बर्ख।
2. हरेलही- 40 बर्ख।
3. बिसरलीही- 45 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(गरदैनमे ढोल, हाथमे लकड़ीक बजौना मोजे लाल नेने आगू-आगू आ भजन लाल पाछू-पाछू।)

मोजे लाल- (डंका जकाँ बजबैत, कनीकाल ढोल बजा, बन्न करैत) नगर-नगर, डगर-डगरसँ गाम-गामक आ समाज-समाजक भाए-बहिन, काका-काकी, दादा-दादी सभसँ कहै छी, सुनै- जाउ! भजन भाय अहाँ सबहक सोझहामे छैथ ओ कहता।

भजन लाल- गाम-समाजक जे भाए-बहिन छी कान खोलि सुनू। जँ नै सुनब आ पछाइत कहब जे तेना कान गुजिया गेल जे सुनबे ने केलौं। से नै हुअए।

मोजे लाल- (पुन: जागब ध्वनिमे ढोल बजा) भजन भाय, अपन विचार कहियौ।

भजन लाल- काल्हि भोरेसँ रत्नाकर भैया ऐठाम पुण्योत्सव छिऐन सएह कहए एलौं अछि। छपुआ कार्डक आशा नइ करब।

मोजे लाल- भाय साहैब, छपुआ कार्ड की कहलिऐ?

भजन लाल- आब देखै छी जे गामसँ, परिवारसँ एते तक की बाप-माएसँ करोड़ो योजन दूर छी मुदा बेटा-बेटीक जन्मोत्सवमे हजारो-लाखो कार्ड जेतए-तेतए बिलैह दइ छिऐ। से...।

मोजे लाल- 'से' की?

भजन लाल- यएह जे पहिने छँटियाबए पड़त जे कोन कार्ड हकार सदृश अछि आ कोन भारक संग भोजनक अछि। ई तँ नहि जे 'जान ने पहचान हम तोहर मेहमान'।

मोजे लाल- (एक धुन ढोल बजबैत नचबो करैत आ गेबो करैत)
नोत एलै हौ भैया हकार एलै हौ
बेन डोलबैत बेना एलै पीपहीक मुस्कान एलै हौ।
फड़-ऐहब फड़ बिलैह बाँटि-बाँटि
ज्ञानी-जोगी डकैत भैया रत्नाकर हौ..!
(दोहरा-तेहरा, ढोलो बजबैत आ गेबो करैत।) असथिर होइत-
भजन भाय, नोत-हकारक ढोलहो छी, तँए दोहरा-तेहरा कऽ कहियौ?

भजन लाल- से की?

मोजे लाल- जहिना सोना भेटनौं आ हरेनौं प्राश्चित करबए पड़ै छै तहिना ने नतो-हकार छी। जहिना सरही आमक पीपही नीक-नीक कलमी डारिक जोड़ पाबि नाता जोड़ि सरही-सँ-कलमी बनि जाइत अछि तहिना ने नतो जोड़ल जाइत अछि। ई तँ नहि ने जे फुर्सत दुआरे ए.टी.एम.क माध्यमसँ नोत पूरि लेब।

भजन लाल- से की?

मोजे लाल- यएह जे कोनो बिआह छै आकि मूड़न आकि कोनो आन छोट-पैघ यज्ञ, जखने काज परिवारसँ ऊपर उठैए तखने ने परिवारसँ उठल सोच-विचारक जरूरत पड़ै छै, जँ अहाँकेँ अपनेसँ छुट्टी नइ हएत तँ केना पछुआएल लोक अहाँक संग सम्बन्ध बना सकत।

भजन लाल- मोजे लाल, जहिना तूँ बिनु खतियानक मालिक तहिना हम भजना। हरक लागैनसँ लऽ कऽ खौजरा-खौजरी चटकबैत वीणाक ओहन स्वरक समुद्रमे पहुँच जाइ छी जे घन्टो भरि लाड़ैन चलौलो पछाइत अन्नक लाबा चमैक-चमैक खापैड़सँ कूदि माटिपर अबैत रहैए।

मोजे लाल- भाय साहैब, अहाँक बात सभ नै बुझत?

भजन लाल- जहिना भाँटा गाछमे लटैक जीवन यात्रा करैत तहिना मुड़ै माटिक तरेमे जीवन यात्रा करैए, तँए की ओकर जिनगीक कोनो महत नहि? की ओ जीवनदाता नहि छी?

मोजे लाल- भाय साहैब, बुढ़ भेने अहाँ भँसिया जाइ छी?

भजन लाल- से केना?

मोजे लाल- हम तँ गाम-घरसँ शहर-बजार धरि ने घुमै छी। जाबे बजार नहि बनत ताबे चौकीदार केना फड़त। देखै छिऐ बड़का-बड़का बरियातीमे इंजन-गाड़ीकेँ पतियानी लागल, तइमे छौड़ा-छौड़ी सभ अपन गाड़ी जोड़ि देत आ भरि राति खा-पी कऽ उमैक लइए।
(ढोलक अवाज सुनि गामक मिसर लाल आ रमण लाल अबैत, दुनूकेँ देखते पाशा बदलैत)
नोत एलै हो भैया, हकार एलै हो...।

(मोजे लालकेँ चुप होइते भजन लाल मिसर लाल दिस तकलक। भावात्मक दृश्य। जेना मिसर लालक थरथर कँपैत मन किछु बाजए चाहैत तहिना भजन लालक पियासल पथिकक दृश्य इत्यादि...।)

भजन लाल- (मिसर लाल दिस ओंगरी तानि बाँहि उठा) अहाँ किछु बाजए चाहै छी?

मिसर लाल- हँ।

भजन लाल- तखन मुँह किए चोरौने छी। अपन विचारकेँ काज रूपमे दुनियाँक बीच नइ राखब तँ के केकर की नीक केलकै जे तइ आशामे अपनाकेँ राखब। मन असथिर कऽ बाजू। ओना अखन उत्सवक समए लगिचाएल अछि तँए नीक हएत जे अहूँ सभ कपड़ा-लत्ता साफ कऽ ली, ओना केश-दाढ़ी, जुत्ता-चप्पल ठीक-ठाक करैमे जेते समए लागत तइसँ बेसी समए आब थोड़े अछि।

मिसर लाल- (कँपैत) भाय-साहैब, उत्सवमे एहेन तँ ने मंच बनत जे श्रीमान-श्रीमती होइत-होइत बजैक समैए ओरा जाएत तखन तँ जहिना भोजमे सभ दिन धकियाइत-धकियाइत ऐँठार लग पहुँच जाइ छी तहिना...।

(बिच्चेमे मोजे लाल डिगरी चालिमे ढोल बजबए लगैए)

भजन लाल- भाय साहैब, ने अहाँक बात हमरा धऽ लेत आ ने धड़ैक डर होइए मुदा पैघ काजक आगू छोट काजकेँ किछु विलमा देब नीक होइ छइ। नहि, जँ अहाँ बड़ औगताएल छी तँ चलू रस्ता पकैड़ संगे-संग जे काजो चलतै आ भजनो-कीर्तन चलतै।

(तैबीच रमण लाल मिसर लालकेँ डपटैत बाजल)

रमण लाल- बजैले जे सतमसुआ बच्चा जकाँ पेटमे उधकै छौ से दाबि कऽ राख नहि तँ कहि दइ छियौ।

मिसर लाल- की कहमे, जे कहैक छौ से भने तेहल्लाक बीच छँहेँ बाज!

रमण लाल- अपन बाप-पुरखाक नाओं बुझल छौ! अपन किछु बुझले ने छौ तँ दस गोरेमे की बजबीही?

मिसर लाल- जखन दुनू गोरे संगे रहै छी तखन तूँ पहिने ने किए चेता देने छेलेँ?

रमण लाल- तूँ पुछलेँ कहिया?

मिसर लाल- अँइ रौ, बिनु पुछनहि भरि दिन संगे रहै छी। तहूमे जे

नजैरपर चढ़बे ने कएल से केना पुछबो?

रमण लाल- अँइ रौ! की तोरा बुझि पड़ै छौ जे जहिना आरती घुमा लोक भगवानकेँ ठकि भरि राति इजोत मिझा अन्हारेमे रखै छैन, हम तेना तोरा केलियौ।

भजन लाल- देखू, अहाँ सभ अनेरे अनघोल करै छी। कौल्हुका काज की सभ अछि से मन पाड़ए दिअ।
(सभ जाइत अछि)

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 807

दोसर दृश्य-

(भजन लाल, मिसर लाल, रमण लाल आ सुरेश अबैए।)

भजन लाल- भाय, दुनियाँक खेल अजीब अछि। जेना समुद्रमे जाइठ सीमा नै होइ छै तहिना ने अछि। ऐ अथाह माटि-पानिक बीच टपैक तीनू बाट तेहेन भऽ गेल जे..?

मिसर लाल- चुप किए भेलौं, भाय?

रमण लाल- भजन भाय, दिलेरक संग दिलक जखन भेँट होइ छै तखन एकटा नव ऐनाक रंग चढ़ै छै तँए मुँहक बात घोँटी नहि, नइ पचए तँ उगलि दिऐ।

भजन लाल- (विस्मित होइत) भाय! एकटा बाट तेना बनरा गेल जेना गाछ-बिरीछमे होइ छै जे कोढ़ियो-बाती देब छोड़ि दैत अछि। दोसर दोगलाइए गेल। तेसर बेटाक रगड़ामे बुढ़ाड़ी धरि वस्त्रधारीए रहला सुखदेव जकाँ आरबन-कोपीन नै लेलैन! खाएर जे हौउ...। पहिने

बैसैक ओरियान करू।

(मिसर लाल मोटरी खोलि सतरंजी पसारए लगैत अछि, तीनू गोरे कोण पकैड़ जाजीम बिछबैए। बिछान तैयार होइते रत्नाकर मंचपर अबैए।
(रत्नाकरक प्रवेश।)
माथमे तीन भीरी केश बान्हल, चानिपर तीनटा लकीर, दुनू दिस उजरा आ बीचमे लाल। दाढ़ी-मोछ भयंकर। बाँहिमे आ गरदैनमे रूद्राक्षक माला, दहिना हाथमे कमण्डल, पीठीपर लंगोटामे बान्हल पुरान कम्मलक मोटरी।

(मंचपर रत्नाकरकेँ अबिते तीन गोरे नारा लगबैत)
'रत्नाकर भैया!'
'जिन्दावाद।'
'रत्नाकर भैया!'
'जिन्दावाद।'

रत्नाकर- (पाछू घुमि) सोझे हल्ला केने आ नारा लगौने नहि हएत। सभ चुप-चाप भऽ जाउ। बेरा-बेरी अपन-अपन जिनगीक बात-विचार समाजकेँ सुना दियौन। धर्मराजक न्याय भेटत नहि कि यमराजक।

महेश- भाय साहैब, अपनेक जीवन यात्रा बहुत नमहर अछि ओते सुनैले ओतेक निचेनियोँ चाही ने, से भूखल पेट केतेकाल सुनि अमल करत। जइ इलाकामे साले-साल रौदी, दाहीक संग उपजाउ माटि नष्ट भऽ गेल अछि तइ इलाकाक यात्री केते दूर जीवन यात्रा कऽ सकैए?

रत्नाकर- की मतलब?

महेश- भूखे भजन ने होई गोपाला।
लिअ रखि गुरु कण्ठीक माला।

रत्नाकर- महेश, अहाँक प्रश्न जेहने सुन्दर अछि तेहने कठिन। मुदा समुद्रसँ रत्न निकालब आ जंगलसँ सिर-शिरोमणि आनब, दुनूक दू दिशा अछि।

गणेश- एना नहि हएत, कनी ओंगरीपर
हिसाब बैसा कऽ बुझा दिअ।
(ओंगरीपर हिसाब जोड़ैत)

रत्नाकर- गणेश बाउ, कान खोलि सुनि लिअ। ई धरती विशाल रंगमंच छी। माटि-पानिक बीच रंगमंच सजल अछि। जे जेहेन यात्री छैथ ओ ओहेन अपन बाट पकैड़ पार करै छैथ।

गणेश- की मतलब?

रत्नाकर- मतलब यएह जे कियो अपन जिनगी हवन करै छैथ तँ कियो दोसराक हवन लैत अछि। खाएर जे हौउ...।

(बिच्चेमे, मिसर लाल अपन बात उठबए चाहलक आकि सुरेश ललैक कऽ बाजल)

सुरेश- अनेरे..!

रत्नाकर- तखन पहिने फरिछा लिअ पड़त जे खाइले जीबै छी आकि जीबैले खाइ छी। दान देब नीक आकि लेब नीक, आकि लेब-देब दुनू नीक, आकि देब-देब नीक।

गणेश- लेब-देब नीक छी। दुनू नीक छी। कोनो ने नीक ने कोनो अधला छी।

भजन लाल- तखन?

गणेश- बेवहारिक धरातलपर जे अधिक नीक हुअए?

भजन लाल- अधिकोक दू दिशा छइ?

गणेश- से की?

भजन लाल- अधिक लोकक शाब्दिक विचार आकि अधिक लोकक जिनगीक विचार?

रत्नाकर- भजन जेहने तूँ साँझ-भोर राति-दिन लय-धुन बदैल-बदैल एके बातकेँ औटैत-पौड़ैत रहै छह तेहने गणेश छैथ। भारी देख हाथी चढ़ब नीक बुझलैन मुदा हाथी केना पोसाइत अछि से लूरिए ने भेलैन।

गणेश- (खिसिया कऽ दहिना हाथ ऊपर घुमबैत) तीन लकीर हम दइ छी, ताधैर हम नै मानब जाधैर ओहन भोगी नै आनि देखा देब।

रत्नाकर- हकार दिअ तोहीं ने भजन गेल छेलह, तँए तोरे ने ओहेन हकरियासँ भेँट भेल हेतह?

भजन लाल- भैया, बुढ़ोमे अहाँ ओहने अगुताह रहि गेलौं जेहेन समरथाइमे छेलौं!

रत्नाकर- (मुस्की दैत) हे बुड़िबक, केतबो औगता कऽ काज करबह तइसँ की काज पहिने थोड़े भऽ जेतह। काजक

जे अपन समए छै ओइ अनुकूल जे करैए ओ कुशल भेल। मुदा...।

सुरेश- 'मुदा' की?

रत्नाकर- यएह जे जँ औगता कऽ करब तैयो आ अलूरिये करब तैयो या तँ आरो गजपटा जाएत वा उबाइन भऽ जाएत।

सुरेश- सु-बाइनियोँ तँ भऽ सकै छै किने?

रत्नाकर- संयोगवश, निसचित नहि।

भजन लाल- (औगताइत) भैया, अहाँ अनेरे कोन घंघौजमे लगि गेलौं, मोतीबला सितुआ दोसर होइ छै, भलेँ नाओं कियो रखि लिअए।
(भाव दृश्य) ने किछु रत्नाकर बजैत, मुदा चेहरा कहैत समुद्रक सितुआ आ बरसाती डबराक सितुआ एक वियान केना करत। एक अजर-अमरक बीच जीवन-यापन केनिहार, दोसर तीन मास ढेनुआर, तीन मास रखलाहा मिला छह मास।
(भजनलाल हराएल मुद्रामे बड़बड़ाइत)
'मनमे रहितो साँझ-भोर वएह गबै छी।'

(सबहक मुद्रा अपन-अपन विचारानुकूल। सभसँ भिन्न मिसरलालक। जेना किछु बजैले मुँह लुस-फुस करइ, तहिना।)
(मिसर लालकेँ लुसफुसाइत देख सुरेश बजला)

सुरेश- मिसर लाल, अहाँ किछु बाजए चाहै छी?

मिसर लाल- (दुनू हाथ जोड़ि) हँ, भाय साहैब। हमरा सन लोककेँ बजैक एहेन समए कहिया भेटत?

गणेश- (बिगैड़ कऽ) मिसर लाल, जँ तोरा बजैक छह तँ जल्दी बाजह, अखन धरि चाहो ने भेल अछि। तेलिया-फुलिया लगा-लगा नै बजीहह, घोंच-घाँचमे दू-चारि कड़ी दबि जाइ छै, जइमे अमीन चोर फड़ैए।

भजन लाल- माने?

गणेश- माने यएह जे जखन बाँसक सोझका लग्गा छेलै, मोट-पातर रहितौ लग्गी लग्गीए छेलै तखनो धूर कट्ठा नम्हरे रहइ। चास-बास घटने इंच-फीटमे पहुँचल। मुदा नपैक यंत्र तेहेन स्प्रींगदार भऽ गेल जे केमहर की भऽ जाइ छै जे थाहे ने पबै छी।

रत्नाकर- समैपर धियान रखू। भजन देरी किए होइ छह?

मिसर लाल- भाय साहैब, दुनियाँक रीतिक अनुसार दुरागमनक अपनो कर्तव्य बुझलिऐ। तीनियेँ सालमे दूटा बेटी भऽ गेल।

गणेश- अपरेशन किए ने करा लेलौं, जखन दुइए बच्चाक कोटा छइ?

मिसर लाल- भाय साहैब, सुनै छिऐ समलौंगिक सम्बन्ध। ओइ कटौतीसँ कोटा नै पुरतै?

रत्नाकर- आगू बाजू?

मिसर लाल- भाय साहैब, मन अपनो दुनू परानीक सएह भेल। देखै छी जे एकटा बेटीक बिआह जिनगी भरिक कमाइसँ पारो नै लगै छै, तैठाम दूटाक भार तँ बेसी भेबे कएल।

रत्नाकर- (मुड़ी डोलबैत) हँ से तँ भेल। तखन...।

मिसर लाल- (अठन्नी हँसी हँसैत) दूटा ओही बीच भऽ गेल, जइ बीच फरिछेबे ने कएल जे दुनू परानीमे के अपरेशन कराबी।

भजन लाल- तखन..?

मिसर लाल- ओही झंझटक बीच दूटा आरो भऽ गेल।

भजन लाल- एक गण्डा भेल?

मिसर लाल- गाहीमे एक कमे अछि।

रत्नाकर- पछाइत?

मिसर लाल- माइक कानमे अपरेशनक समाचार पहुँचते मधुमाछी जकाँ दिन-राति एके सोखर गबैत जे हमरा मौसीकेँ तेरहटा बेटी रहै से पार-घाट लगबे केलै आ एकरा सभकेँ चारिए टामे ढट्ठा ढील होइ छइ।

सुरेश- (मुस्की दैत) से तँ ठीके। पछाइत की भेल?

मिसर लाल- तत्काल बात मानि गेलौं। अपनो दुनू परानी विचारलौं जे जँ कहीं माइयो-बापक असीरवादसँ आगू बेटे बेटा हुअए।

गणेश- (खिसिया कऽ) ईह बुड़ि कहीं केँ, हम एते दिन-राति

तबाह रहै छी से धिया-पुता डरे बिआहो ने केलौं आ हिनका मुनहरक मुँह खुजि गेलैन।

(गणेशकेँ क्रोधित देख मिसर लाल ठहाका दैत)

मिसर लाल- (घुनघुना कऽ) बपजेठ जकाँ केहेन गरमी छैन! मुदा जोरसँ किछु नै बजला।

भजन लाल- मिसर भाय, एना जे तिलकेँ तार बनेबह तेते समए नइ छह। जल्दी अपन बात अन्त करह?

मिसर लाल- हकार दइले जे गेल छेलह से कहने छेलह जे अपन बात औगता कऽ बाजि दिहक।

रत्नाकर- देखू विचार दू ढंगे लोक करैए, औपचारिक आ अनौपचारिक। ओना, अनौपचारियो औपचारी बनैए मुदा बीचमे शासकीय सूत्र आबि जाइत अछि। अच्छा आगू...।

मिसर लाल- हिसाब जोड़ि लेलिऐ किने। दूटा दुनियाँ रीतिक अनुसार, दूटा दुनू परानीक झगड़ा-मिलान, मिलान-झगड़ामे।

गणेश- जेते कुल-खनदानक खतियान-बोही छह से अखने

उन्टा दहक। रसगुल्लाक आशामे कचौरियो सुखि कऽ टाँट भऽ गेल हएत।

मिसर लाल- गणेश बाबू, अपने लग नहि बाजब तँ बाजि केतए पाएब। कनी धियानसँ सुनि दृष्टि-कूट खोलियौ। तखन ने भाँज पेबइ।

भजन लाल- मिसर भाय, तों तेते ने मेठैन करै छह जे कुशियारो रसकेँ मिसरी बनाइए कऽ छोड़बहक।

मिसर लाल- अच्छा हुण्डे भेल। अखन धरि सात बेटीबला सत बेटिया नाओं ग्रहण कऽ नेने छेलौं।

रत्नाकर- पछाइत?

मिसर लाल- (जेना बिढ़नी कटलापर छटपटाहट होइत) एह भाय साहैब, की कहब।
(दुनू हाथ माथपर लैत) भोरे-भोर एकटा एकरंगा आएल।

भजन लाल- के रहए?

मिसर लाल- कहलक जे घर तँ अही इलाका अछि मुदा कामाख्या

सीख छी। हमहूँ एक बेर कामाख्या गेल छी। रूपैआ हाथे महरानीक दर्शन होइ छै ओतए।

रत्नाकर- आगू बढ़ू।

मिसर लाल- भाय साहैब! सबा साए रूपैआक रसीद काटि हाथमे थमहा देलैन। हाथमे एकोटा पाइ नहि। बिनु खेवाक यात्री जकाँ घटवार लग विनती केलौं।

गणेश- (झोंकमे) की विनती केलौं?

मिसर लाल- कहलयैन, बाबा महराज! बेटीक मारिसँ मरि गेल छी] केना अहाँकेँ खुश कऽ कऽ दरबज्जापरसँ विदा करब।

गणेश- तखन की भेलह?

मिसर लाल- ओ जेना बुझि गेला। लगले आँखि-ताँखि उनटबैत-पुनटबैत कहलैन। जेते तोरा बेटी छह तेते तोरा एक्केबेर बेटा देबह, बाजह मंजूर छह?

गणेश- पछाइत की केलह?

मिसर लाल- मन पघिल कऽ राँग-राँग भऽ गेल। मुदा घरवाली धरि

कहि देलक जे ई ठकहरबा छी।

गणेश- पछाइत की भेलह?

मिसर लाल- जे तकदीरमे लिखि देने छेलिऐ, से भेल।

गणेश- हमहीं लिखि देने छेलिय ।

मिसर लाल- सभ दिन भागवत बचै छी अहाँ आ नाओं लगेबे दोसरकेँ!

भजन लाल- उत्सव शुरू होइक समए करीब आबि गेल। जाबे तैयार हएब ताबे समैयो सटि जाएत।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1361

तेसर दृश्य-

(मंच। सतरंजी-जाजीमक ऊपर मसलन। रत्नाकर, भजन लाल, मोजे लाल, मिसर लाल, रमण लाल, गणेश आ सुरेश सभ बैस उत्सवक चर्च करैक विचार करिते रहैथ कि बर्बरीक प्रवेश।)

बर्बरी- (मंचपर ठाढ़ भऽ) भाय-लोकैन, ई बात बिल्कुल झूठ छी जे जैपर बिसवास करब से फल भेटबे करत?

(बीचमे गणेश ठाढ़ भऽ)

गणेश- (खिसिया कऽ) ईह, बुड़ि कहीं-के! हिनका केतौ खच्चरपन्नीक गर नै लगलैन तँ हहाएल-फुहाएल एतै चल एला।

बर्बरी- हाथीक बगए बना लेलह तँ की बुझि पड़ै छह जे हम बड़ बुतगर छी। तोहँए ने ओइ दिनसँ मंचपर कहैत एलह जे जेकरा मनमे जेहेन बिसवास रहत ओ ओहन फल खाएत। बड़ मने-मन फल खेनिहार भेला अछि! बुड़ि कहीं कऽ!

गणेश- मुँह समैट कऽ बाजह! जे कहलिऐ से कहिते रहबै।

तहियो कहलिऐ आ अखनो कहै छिऐ।

बर्बरी- पहिने एकटा बात कहि दएह जे केकरो हाइ-ब्लड-पेसर होइ छै आ केकरो लो-ब्लड-पेसर होइ छै, दुनूक एक्के कारण हेतइ। तोरे सनक पट्टा पेटबला ने एक्के कहतै।

गणेश- (शर्टक बहुँआँ समटैत) तखन फरिछाइये लएह।

(भजन लाल गणेशकेँ पकैड़ बैसौलक। मुदा बर्बरी बड़बड़ाइते रहल..)

बर्बरी- जेकरा बीत भरिक हाथ-पएर छै मुदा पट्टा सन पेट आ हाथी सन मुँह रखने अछि से केना भऽ गेलै आ अपन पेट काटि...।

भजन लाल- (बर्बरीक दुनू हाथ पकड़ैत) विधिवत उत्सवक श्रीगणेश हुअ दहक।

रत्नाकर- आश्वासन दहुन?

भजन लाल- विधिवत उद्घाटनक पछाइत पहिल वक्ता अहाँ हएब।

बर्बरी- (विस्मित होइत) जइ बातक बिसवास पुस-पुसतानिसँ करैत एलौं ओ अखन धरि साफल कहाँ भेल!

(ललैक कऽ) आइ हम ओइ भविसवक्ता लोकैनसँ पुछै छिऐन, किए ने भेल?

रत्नाकर- (हाथक इशारा दैत) हमरा लग आउ। कियो ने सुनता तँ हम सुनब। जोरसँ बाजऽ अबैए किने?

(रत्नाकरक बात सुनि बर्बरी सहमल।)

बर्बरी- जोरसँ बाजब धिया-पुताक खेल छी।

(तैबीच, एक गोरे गिलासमे पानि नेने एक गोरे लड्डू नेने गणेशक आगू पहुँच गेल।)

गणेश- (खिसिया कऽ) ऐ पानि आ लड्डूसँ थोड़े मन थीर हएत। तेहेन छुछुनैर ने बाट कटलक जे...।

बर्बरी- ईह, बुड़ि कहीं कऽ, गोलका लड्डू देख-देख सनकी केहेन चढ़ल जाइ छैन!

(कार्यक्रमक प्रारंम्भ। अध्यक्षक प्रस्ताव। बहुसंख्यक समर्थक।)

अध्यक्ष- स-बन्धु–बान्धब, छिड़ियाएल दुनियाँ एक मंच छी। जे कियो ऐ धरतीपर जन्म लेलौं, सबहक अधिकार बनैए जे ऐ मंचपर सबमानित कलाकार बनि अपन अधिकारक रक्षाक संग शान्त भऽ शान्तिसँ शक्ति भरि दोसरोक जिनगीकेँ तकतियान करब, तइले वक्ताक बजला पछाइत प्रश्नो ने पुछब उचित हएत।

बर्बरी- नहि अध्यक्ष महोदय, अखन धरिक मंचक मंचन जे ऐ तरहेँ होइत आएल अछि जे श्रीमान्, श्रीमती करैत-करैत कार्यक्रमक समैए समाप्त भऽ जाइए, से...।

गणेश- (बैसले-बैसल ओंगरी देखबैत) बीचमे केतए-सँ एहेन अकलहूथ चल आएल हौ?

बर्बरी- (दोसर दिस घुमि कऽ) हाथीक कपार हिनकर आ अकलहूथ हम। बड़का डारि खाइबला मुँह हिनकर आ अकलहूथ हम! बुड़ि कहीं कऽ, पहिने अपन बात बाजह जे कोन गामक छह।

(दुनू हाथसँ दुनू गोरेकेँ शान्त करैत अध्यक्ष)

अध्यक्ष- रत्नाकर भैयाक विचार छैन जे गामक तेहेन दशा भऽ गेल अछि जे एको दिन चैनसँ रहब कठिन, तँए एहेन

गाममे नहियेँ रहब नीक।

महेश- महजालक गीरह बनौने काज नै चलत। कनी सोझरा कऽ कहियौ।

भजन लाल- भाय, सोझराएले तँ अछि जे जेकरा महजालक कोण खोलैक लूरि भऽ जेतै ओ सौंसे महजाल खोलि लेत।

बर्बरी- कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिने आश्वासन भेटल छल जे पहिल वक्ता अहाँ हएब। तैबीच अहाँ सभ ओझरी लगा समए ससारए चाहै छी से नइ चलत।

गणेश- बजौल आएल छह आकि बिनु बजौल हौ?

बर्बरी- से तोरा पुछैक कोन दरकार छह। हकरियाकेँ पुछहक जे केना आएल छी।

गणेश- (माथपर हाथ मारैत) जेकरा जे मन फुरै छै से करैए! आब बुझथुन जे सहरगंजा केहेन होइ छइ। रहरिया जकाँ दालिक बीच राहैर बग-बग करैए किने।

अध्यक्ष- अहूँ बड़ रगड़ी छी गणेश। जानियेँ कऽ तँ बुझै छी जे बर्बरी बोनैया जकाँ गमैया लोक छिया तँए एते तँ

विचार करए पड़त किने।

मिसर लाल- अनौपचारिक ढंगे हमर सवाल पेश भऽ गेल तँए पहिने ओकर निर्णए भऽ जाए तखन दोसरपर विचार कएल जाए।

अध्यक्ष- पहिल आश्वासन मिसरलालक छैन। एकर लगले पछाइत बर्बरी अहाँकेँ समए भेटत।

महेश- मिसर भाय, एकटा बात नै बुझि पेलौं जे बेटी एते भारी बनि केना गेल जे परिवारे सभ उजड़ैए?

सुरेश- एकटा बात कहू जे गाममे सभसँ पहिने बिआह पद्धतिपर कुड़हैर के मारलैन?

मिसर लाल- (ओंगरीपर हिसाब जोड़ैत) ओइ टोलमे फल्लाँ एक लाख बेटा बिआहमे लेलक आ फल्लाँ दू लाख आ फल्लाँ पनरह लाख आ फल्लाँ पचास लाख, दू करोड़क गप तँ महिना दिन पहिने फल्लाँ केलक।

बर्बरी- मिसर भाइक प्रश्न समसामयिक छैन, जरूर पहिने विचार हेबाक चाही।

महेश- बाउ बर्बरी, बालु परहक अल्हुआ खेती नै बुझू। हँ, तखन विचारणीय प्रश्न जरूर अछि।

बर्बरी- आइ दिन जे विचार नहि हएत तँ कहिया भेलै जे फेर हेतइ।

महेश- (रत्नाकर दिस इशारा करैत) भाय साहैब, जखन अपने मौजूद छैथे, अध्यक्षजी आगूमे छैथे तैठाम पहिल निर्णायक हम केना हएब। सामूहिक निर्णए हेतइ। बेसी-सँ-बेसी खण्डन-मण्डनमे हम अपन विचार रखि सकै छी।

अध्यक्ष- मिसर भाय, अहाँक प्रश्नपर किछु आरो विचारक खगता रहि गेल अछि से भेला पछाइत जवाब भेटत।

बर्बरी- अध्यक्षजी, पैछला बैसारमे हम नइ रही, हमरा किछु ने बुझल अछि तँए हम केना अपन विचार राखब।

अध्यक्ष- बर्बरी, संक्षेपमे पैछला सुना देल जाएत।

बर्बरी- जे बिन्दु विचार करैले रहि गेल, बिनु बुझने तइ सम्बन्धमे कथी सोचब। हड़बड़ी बिआह कनपटी सिनूर हएत, जहियासँ शुरू भेल तहिये-सँ लोक रस्ते-

पेरे घटकैती करए लगल।

अध्यक्ष- विचारणीय प्रश्न अछि, जइ समाजमे कर्म धर्म रूपमे छल, ओइ समाजमे कर्मक स्थान धन केना लऽ लेलक! जैठाम प्रतिष्ठा प्राप्त करबाक जे कसौटी छल तैठाम बिआहमे दहेजक आगमन केना प्रतिष्ठा बनि स्थापित भेल?

बर्बरी- एकटा प्रश्न हमरो अछि।

गणेश- जेकरा जे मन फुरतै से बाजि देत, दरबारक बैसककेँ रण्डीखाना बना देत।

बर्बरी- (बौहुँआँ समटैत) हौ गणेश, जइ धरतीपर प्रकृति पुरुष-नारीक संयोग सथापित कऽ सृष्टिक दिशा पौलैन तेकरा संग छेड़-छाड़ केतए-सँ शुरू भेल?

भजन लाल- देखू अनेरे अहाँ दुनू गोरे बखेड़ा ठाढ़ करै छी, एके भगवान भूखल पेट आ भरल पेटमे बँटाएल छैथ। गणेशजीकेँ ईहो नै पता छैन जे थारी-थारी मोती-चूरक गोलका लड्डू, तहूमे आब मनही सेहो बनए लगल अछि से तँ राता-राती सठि जाइ छैन जे प्रात भने टटके चाही।

अध्यक्ष- एना जे इनारेमे भाँग घोरि देबै भजन भाय, तखन तँ भेल।

भजन लाल- भाय, अपने अध्यक्ष छिऐ, हम तँए छगुन्तामे पड़ल छी जे अखन तक ईहो नै बुझि पेलौं जे के सुतले-सुतल सुर-ताल मिला भजैए आ के बोनैया नढ़िया जकाँ बोनेमे भजैए।

अध्यक्ष- सभ प्रश्न विचारणीय अछि। बैसारकेँ ताधैर बढ़ौल जाएत जाधैर सबहक विचार नै हेतइ। चाह-पानक समए भऽ गेल। रत्नाकर भाय ऐगला सत्रक आवाहन करता।

रत्नाकर- जहिना माटि-पानि मिलि ई दुनियाँ ठाढ़ केने अछि, देखते छिऐ केतौ माटि बेसी तँ केतौ पानि बेसी। मुदा तैसंग ईहो अछि जे माटिक सतहे-सतह सेहो पानि मिलल अछि आ केतौ पानिक समुद्रकेँ अपना छातीपर रखने सेहो अछि...।

बर्बरी- भाय साहैब, केना-केना परत बनल छै से कनी फरिछा दियौ नइ तँ देव बनत कि पाथर आकि पाथरेक देव, ई कठिन भऽ जाएत।

रत्नाकर- अहाँ अपन प्रस्ताव दियौ।

बर्बरी- जहिया बेटा भेल रहए तहिया तेते खुशी भेल जे दशरथे जकाँ हुअ लगल जे सभ किछु बाँटि दिऐ। मुदा...।

गणेश- एना घोंच-घोंचा लगा बाजब तँ हम उठि कऽ चलि जाएब।

बर्बरी- केतए जाएब, ओतइ ने महाभारतक सौमा श्लोकपर? ओतए तक रेबाइर कऽ जाएब। हँ, भाय-साहैब, कहै छेलौं, ओही घुमसाहीमे एकटा पण्डा एला। बच्चोक हाथ देखलैन आ अपनो दुनू परानीक।

सुरेश- कनी असथिरसँ बाजू जे की कहलैन ओ पण्डा।

बर्बरी- (विह्वल होइत) ओ तँ मनेमे सड़ैए। जइ बेटाक खातिर एते केलौं, केतए गेल ओ सेवा! भाय साहैब] केते कहब। जइ बेटा पाछू पमरिया, हिजरा, बकुनियाँ.., की-की ने नचेलौं, केते कबुला-पाती आ की-की ने केलौं...।

(बजैत-बजैत बर्बरी कानए लगैत) आइ ओ अवण्ड,

महा अवण्ड, दिन-राति शिखर-पान, ताड़ी-दारू की-की ने खाइए आ करैए। हमर बुढ़ाड़ी केना कटत?

रत्नाकर- अखन खाइ-पीबैक समए भऽ गेल। काल्हि रहलै काल्हि आरो बेसी गप-सप हेतइ।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1240

चारिम दृश्य-

(बैरक डारिसँ सजल। वन सदृश मंच। शबरीक घर। मुसहरनीक बगएमे शबरी।
बाढ़ैनसँ आँगन बहारि, बाढ़ैन रखि एकटा बरतनसँ चाउर निकालि सूपमे लऽ शबरी आँकर बीछैत।)

शबरी- केहेन जुग-जमाना आबि गेल! एक तँ महगक चाउर कीनि कऽ लाउ आ तइमे तेतेक उजरा पत्थरबला आँकर रहै छै जे एको कौर घोंटब पहाड़ भऽ जाइ छइ।

(गणेश आ भजन लालक प्रवेश। एक भाग शबरी अपना आँगनमे सूपक चाउरमे आँकर बीछैत। दोसर दिस गणेश-भजनलाल)

गणेश- भजन भाय, अहीं कहू जे बड़बड़िया जे लप-लप बजै छेलए से उचित भेल?

भजन लाल- गणेश भाय, की उचित आ की अनुचित! से ऐ दुनियाँमे ताकब कठिन अछि। तँए अनेरे अहूँ किए

मत्थापचीमे लगल छी, जखन जहिया जे भेल ओ तँ भूतक गर्भमे चलि गेल, तइले अनेरे...।

गणेश- नहि भजन भाय, आदमीकेँ अपनो सीमा-सरहद, आड़ि-धूरक होश रहबाक चाही, जँ से नहि भेल तखन ओ मनुख केना भेल?

भजन लाल- गणेश भाय! की करबै, जँ कियो अपना महींसकेँ कुरहैरे-सँ नाथत तेकर सुख-दुख तेकरे हेतै ने। तइले अनका की।

गणेश- कहलौं तँ बड़ सनगर बात मुदा जँ मनुख सएह बुझि दोसरसँ सम्बन्ध हटबए लगत तखन दुनियाँमे रहिये कथी जाएत?

भजन लाल- गणेश भाय, जहिना पोखैर-धार-समुद्र पानिक भण्डार छी मुदा ओहूमे की सगतैर एके रंग पानि नै रहै छइ। तहिना ने मनुखोक बीच अछि।

(तैबीच बर्बरीक प्रवेश। बर्बरीकेँ देखते गणेश)

गणेश- भजन भाय, जाधैर ई दुनियाँ रहत ताधैर अपना सबहक सम्बन्ध अहिना बनले रहत। देखते तँ छिऐ जे

एक्के भगवानक हजार नाओं अछि। जेकरा जे मन फुरै छै से कहै छइ। तइले भगवानकेँ की बिगड़लैन।

बर्बरी- गणेश बाबू, अपन बात बुझल अछि जे अनका कहै छिऐ?

भजन लाल- बर्बरी, जँ तात्विक दृष्टिसँ गप-सप्प करी तँ यएह धरती स्वर्गोसँ ऊपर उठि सतलोक, वैकुण्ठ, सूर-लोक बनि सकैए आ ओहनो बनि सकैए जे नर्क, धोर नर्क, वेश्यालय इत्यादि सेहो बनि जाइत अछि। तँए...।

गणेश- बर्बरी, सुनू अहाँसँ कोनो देहा-देही दुश्मनी नै अछि। मुदा भविस लेल नीक हएत जे पैछला सभ किछु जानि, आड़ि बान्हि भविस दिस संगे-संग चली।

भजन लाल- तखन, पैछला फरिछौठ कइए लिअ। मुदा फरिछौठ हएत केना गणेश भाय? अहीं कहू जे सोरहा बिआन करैबला मूस केना हाथी सनक देहक सवारी भेल! तालमेल केना बैसाएब?

बर्बरी- अहाँ तँ भजन भाय अनेरे वौआइ छी। हिनका पुछियौन जे केतौ अहाँकेँ महादेवक बेटा लोक बुझैए आ केतौ अहाँक पूजा महादेव पार्वतीक बिआहमे

होइए!

भजन लाल- बर्बरी भाय, गणेश भाइक कान हाथीक कान छिऐन, बड़का कोठामे जहिना कनियों जोरसँ बजलापर गनगना उठै छै तहिना कानमे झड़ पड़ए लगै छैन तँए जे किछु बजैक हुअए कम जोरसँ बाजू।

गणेश- अच्छा छोड़ि दइ छिऐ। एक तँ गमैया लोक भेल दोसर कहुना भेल तँ बाले-बोध भेल किने।

बर्बरी- गणेश भाय, जे किछु जोरसँ बजलौं ओ आवेशमे बजा गेल। अहाँ सन आवेशीकेँ जँ आवेश नै करी तँ केकर करी।

भजन लाल- (ओंगरीसँ देखबैत) गणेश भाय, ई बोन कथीक छिऐ?

गणेश- बोन तँ बोन छिऐ। तइमे तोहर की कहब छह?

भजन लाल- बैरक बोन छिऐ। लगसँ देखलापर बुझि पड़त जे एकरा तोड़ैमे केते भीर होइ छइ। तहूमे नमहर गाछमे।

गणेश- बर्बरी बाउ, सुनू। पहिने ई कहू जे बेलक केते गाछ लगौने छी।

बर्बरी- (मजबुरीक अवस्थामे) भाय-साहैब, अपना गाछी-बिरछी लगाएब से जगहो रहए तब ने।

भजन लाल- गणेश भाय, सवाल बहैक गेल फलपर सँ माटिपर चलि एलौं। पहिने फलक बात फरिछा लिअ तखन आगू बढ़ब।

गणेश- भजन भाय, मिथिलांचलक हस्त–रेखा बेलक संग मेटाएल जा रहल अछि।

बर्बरी- अहाँकेँ एते दया किए लगैए, बेलपाते ने जाएत मुदा फूल-अच्छत तँ रहबे करत।

गणेश- नीक सुझाउ देलौं बर्बरी। बेल सन फलक महात्म्य गबै-बजबैले ने अखबारबलाकेँ समए छै आ ने रेडियो स्टेशनकेँ। वैज्ञानिक लोकैन सहजे वैज्ञानिके छैथ, रौकेटसँ निच्चाँ देखबे ने करै छथिन। जे बेल, दुनियाँक उच्च कोटिक फलमे अग्रिम स्थान रखनिहार छी, ओकर की स्थिति अछि...।

(बजैत-बजैत गणेश आँखि मुइन लेलैन।)

बर्बरी- गणेशजी, अलिसा रहला अछि। केतौ ठौर घड़ू।

(चारू दिस, दुनू गोरे–बर्बरी आ भजन लाल–तकैत)

भजन लाल- गणेश भाय, एकटा खोपड़ी आगूमे जे देखै छी, चलू ओहीठाम आरामो करब आ गपो-सप्प हेतइ।

(तीनू आगू बढ़ैत...)

भजन लाल- मायराम, हम सभ किछु समए विश्राम करब। तइले जगह भेटत?

शबरी- (विस्मित होइत) अहाँ सभ के छी, केतए-सँ एलौं?

गणेश- अभ्यागत छी, गाम-ठेकानक कोन जरूरत अछि?

शबरी- अभियागती नै धाड़ैए।

गणेश- किए?

शबरी- सएह नहि बुझि पाबि रहल छी।

गणेश- हाथ बढ़ाउ, हस्तरेखा देखए दिअ।

शबरी- जारैन काटैमे टेंगारीक बेंट सभटा हस्त–रेखा चाटि गेल, तखन की देखबै।

गणेश- मुहेँसँ कहू?

शबरी- हमर पानि छुबाएल अछि, हमर सिद्ध अन्न छुबाएल अछि, हमर घर-आँगन छुबाएल अछि। छुबाएल अछि इनार-पोखैर आ चापाकल।

गणेश- ठहरू! अहाँक इनार-पोखैर छुबाएल अछि आकि छुबाएल अछि समाजक इनार-पोखैर।

शबरी- सभटा छुबाएल अछि। अपन छुबाएल अछि एना–जे आन–आन पानि नै पीबै छैथ, समाजक छुबाएल अछि एना जे या तँ घाट फुटा देल गेल अछि वा आगू-पाछूक प्रक्रिया अछि।

गणेश- भजन भाय, अहाँ गुबदी मारि घी पीबए चाहै छी। हमर छाती छिड़ियाएल जाइए आ अहाँ अनठौने छी!

भजन भाय- सभ तँ सुनिते छी, तखन अपनेकेँ शंका किए भेल?

गणेश- एकटा बातक विचार दिअ तँ...।

भजन लाल- कथी?

गणेश- जैठाम अने-पानि छुबा जेतै, तैठाम अतिथि सेवा लोक केना करत? जँ अतिथे सेवा नइ करत तँ मिथिलाक धरोहर की छी?

भजन लाल- गणेश भाय, अहूँ बड़ औगताह छी, लगले खिसिया जाइ छी। अहिना अहाँ व्यासजीकेँ कहने रहिऐन जे जखने अहाँक मुँह बन्न हएत तखने कलम रखि चलि जाएब।

गणेश- ऐमे हमर गलती की भेल?

भजन लाल- जहिना सभ अपन गलतीकेँ चलाकी कहै छै तहिना अहूँ कहै छिऐ।

गणेश- से की यौ?

भजन लाल- जँ अहाँ अधडरेड़ेपर लिखब छोड़ि चलि जैतिऐ तखन महाभारत केना लिखाइत?

गणेश- उपाय?

भजन लाल- अइले हमरा दुखे ने होइए आ अहाँ किए चिन्ता करै छी।

गणेश- केना चिन्ता मेटाएत?

भजन लाल- दूटा प्रश्नक जवाब हम देब। बर्बरी अहूँ सभ बात सुनलिऐ। पहिने अहाँ अपन विचार दियौ।

बर्बरी- पूर्वाग्रहसँ हम ग्रसित छी। गणेश देवता छैथ हिनका लग केना कोनो बातकेँ घटी-बढी हएत।

भजन लाल- गणेश भाय, अहाँ नाशी पुरुष नै छी जे नाश हएब मुदा आध्यात्मिक चिन्तनक जे बानर-बाट अछि तइसँ चिन्तित भऽ जाइ छी।

गणेश- कहलौं तँ बेस बात, मुदा...।

भजन लाल- ‘मुदा-तुदा’ किछु नहि। हमरा एहेन दशा लोक करैए जे गुड़क मारि धोकरे जनै छी। बरहमासा कहि छमासा बना दइए, परातीकेँ साँझ आ साँझकेँ पराती बना दइए तइले दुखे ने होइए आ अहाँ एतबेमे हदियाइ छी।

ऊपर मुड़ीए अछि आ निच्चाँ पेटे, तखन छाती रहत केतए-सँ।

(रत्नाकरक प्रवेश)

(रत्नाकर अबिते शबरीपर नजैर देलैन। जहिना शिकारी अपन शिकार देख नजैर दैत अछि। अजगर साँपक आँखिपर पड़िते जहिना आकर्षित भऽ जाइत तहिना सबरीक नजैर।)

रत्नाकर- (बड़बड़ाइत-हाथक इशारा, जहिना तीर चलैत) ई शबरी, कुरुपक रानी, बन्धन मुक्त शबरी...।

शबरी- (हाथ थरथराइत, ओंगरी उठा रत्नाकर दिस देखबैत) रामक रत्नाकर.., रामक रत्नाकर.., अयोघिया.., दशरथ.., दशरथ.., सरजुग नदी..!

(धीरे-धीरे दुनूक डेग आगू बढ़ैत एकठाम होइते पटाक्षेप भऽ जाइत अछि।)

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1084

पाँचम दृश्य-

(मंच। बड़का मैक आगूमे आ छोटका तीनटा मैक पाछूमे। एक रत्नाकरक आगू, दोसर गणेश आ तेसर भजन लालक आगूमे। रत्नाकर बीचमे, बामा भागमे-भजन लाल, बर्बरी, मिसर लाल आ मोजे लाल। दहिना भागमे गणेश, महेश आ सुरेश।)

अध्यक्ष- उत्सवक अन्तिम पहरमे पहुँच गेल छी। रातिक अन्त आ दिनक शुरूआतक समए उदीयमान अछि। आइ अन्तिम दिनक अन्तिम बैसार छी। ऐमे तीन बिन्दुपर विचार-विमर्शक संग समापन हएत। सभसँ पहिने मान्यवर रत्नाकर भायसँ आग्रह जे बैसारक सम्बन्धमे अपन विचार रखैथ। आगूक सुझाउ सेहो रखता।

(सभ थोपड़ी बजबैए)

बर्बरी- गणेश भाय, आब कहू मन केहेन लगैए?

अध्यक्ष- बड्ड बुड़ि लोक अहूँ छी बर्बरी।

बर्बरी- से केना?

अध्यक्ष- एक तँ अपने बुड़ि छी, तैपर अपना लागल हमरो बनबए चाहै छी। आबो चुप रहू।

बर्बरी- अँइ यौ अध्यक्ष भाय, बच्चेसँ सभ थोपड़ी बजा भजन करैत आएल छी, तेतबे नहि गुरुओजी विद्यालयमे हाथमे माटिक ढेप लऽ लिखनाइयो सिखौलैन आ जोर-जोरसँ पढ़नाइयो जे ओ अभ्यास अखनो धरि अछिए, तइमे बुड़िपन की भेल?

भजन लाल- एक तँ हम अपने बुड़ि छी जे सुखेलहाक माने नै बुझि सभकेँ बड़-बढ़ियाँ कहि दइ छिऐ, तैपर तहूँ कम नहियेँ छह। किए गणेश भायकेँ टोकै छुहुन। अखन मंचपर सभ छथिए।

गणेश- बड़बरिया आम जकाँ हवा सिहैकते भड़भड़ा जाइए,
(बहुँआ समटैत)
तँए आइ ओकरा मरदसँ भेँट हेतइ।

अध्यक्ष- गणेशजी, अपने सभ गणक ईष छिऐ। बर्बरीक मुँह बन्न कऽ दियौ। अपन गुर-चाउर खाइत रहत, अपना सभ बैसारक कार्यक्रम दिस बढ़ब।

गणेश- बौआ बर्बरी, तोँ किए एना बजै छह से हमहूँ बुझै छी। एक दिस पाबैनक उपासक फलहार अल्हुआ-सुथनीसँ होइत अछि तँ दोसर दिस सेव-अँगुरसँ। तोँ जे कहै छह से तँ लोक हमरा अपने नाचक लेबड़ा बना नचबैए।

बर्बरी- (दुनू हाथ जोड़ि कऽ) भाय, कहल-सुनल सभ माफ कऽ दिअ।

गणेश- अबैत-जाइत रहिहह। हमर घर कि केतौ हराएल अछि। मूसोकेँ कहबहक तँ पहुँचा देतह।

बर्बरी- केना बुझबै जे राजक मूस छी आकि मुसरी-टुसरी वंशक झरहा?

रत्नाकर- बर्बरी, ई अखण्ड विचारक मंच छी। मर्यादित करू।

अध्यक्ष- भाय साहैबक हाथमे मैक तँ छैन्हे...।

रत्नाकर- अखन धरिक विचार-विमर्शसँ सूर्य वंशीय हरिश्चन्द्रक वंशक बदलाव दशरथ लग आबि गेलैन...।

(तैबीच एक दिससँ सुग्रीव आ हनुमान, दोसर दिससँ हरेलही आ बिसरलीही महिलाक प्रवेश। नव लोकक प्रवेशसँ रत्नाकर चुप भऽ गेला।)

सुग्रीव- हमर किछु अर्ज अछि।

रत्नाकर- ताबे हम बैसै छी, हिनकर अर्जीपर विचार करियौन। आइ समापन छी तँए समापनक अन्तिमो समए धरि जँ कोनो अर्ज पहुँचैए तँ ओकर अपन अधिकार बनै छइ।

अध्यक्ष- गणेशजी आ भजन लाल, दुनू गोरे अपनामे विचारि लिअ जे काजक संचालन केना करब?

बर्बरी- भाय, हमरा मनक खुट-खुट्टी ताबे तक नै मेटाएत जाबे तक अपना-ले हम उत्सवक महत नै बुझब।

भजन लाल- तहूँ बड़ फुलौड़ी-तिलौड़ी जकाँ चिरौड़ी करै छेँ- बड़बड़िया। बाज जल्दी।

बर्बरी- भाय, अहाँ बिगैड़ जाइ छी। खुटखुट्टी अछि जे हरिश्चन्द्र सभ किछु दान कऽ देलखिन मुदा केकरा-ले?

भजन लाल- अध्यक्षजी, बर्बरीक प्रश्नपर आगू विचार हएत।

अध्यक्ष- आगत लोकैन, चाह-पान भेलइ। आब अपने लोकनिक आगमनपर विचार कएल जाएत। क्रमश: अपन-अपन दुखरा राखू।

सुग्रीव- बजलोरी हमर पत्नी कब्जा कऽ लेल गेल छैथ...।

गणेश- विचारणीय प्रश्न अछि।

बर्बरी- बिना सुनने केना बुझबै जे विचारबै। अहाँकेँ हाथी सन कान अछि किम्हरो-ने-किम्हरोसँ सुनियेँ जेबै मुदा हमरा सन-सन गुजियेलहा कानमे फड़ केना लगतै?

भजन लाल- गणेश भाय, अहूँ जेहने झगड़ी छी तेहने रगड़ी। रिधि-सिधि लिखैक अधिकार अछि अहाँकेँ आ छुच्छे मुहेँ बाजि दिऐ हम सभ।

गणेश- सुग्रीवक प्रश्न छैन पत्नीक हरण। मुदा हरण कि हराएल ई तँ बीचमे अछिए। से केना बुझबै? पछाइत बुझैत रहबै। जेहेन खगता बुझौनिहारकेँ हेतैन तेहेन काज हेतैन।

भजन लाल- ठीके गणेश भाय, अहूँ मोका-मोकी नै बुझै छिऐ, अनेरे सोरैहिया सवारी बना नेने छी।

गणेश- भजन भाय, केतौ किछु हौउ, अपना सबहक संग-साथ थोड़े छुटत।

भजन लाल- जाबे अहाँ रहब, हमरा भजैये पड़त। संगी तँ रहबे करब।

गणेश- देखियौ भजन भाय, गणना कहै छै धन, जन, मन नहि जानि केते रंगक बनल अछि। आब कोन बलजोरी भेल से बिना गणना केने हेतइ?

अध्यक्ष- बड़बढ़ियाँ, ऐगला बैसार धरि ऐ प्रश्नकेँ विचारणीय राखल जाइत अछि।

गणेश- अँए हौ हनुमान, तहूँ सुग्रीवे संग छेलहुन?

बर्बरी- गणेश भाय साहैब, अपने कने चुप रहियौ। पहिने एकटा प्रश्न पुछए दिअ।

भजन लाल- जल्दी बाजब बर्बरी भाय, आकि अहूँ पहिने मुँहमे औंट-पौड़ करै छी। तैयार भाइए कऽ तप्पत भोजन

कराएब।

बर्बरी- बच्चेमे सूर्यकेँ गीर गेलखिन से सुझलैन नहि। अनके भरोसे डारिकेँ बनरा-बनरा बाँझ-बाँझिन बनौलखिन।

अध्यक्ष- दोसर प्रस्तावपर विचार कएल जाए।

हरेलही- हम दुनू सहोदरे बहिन छी। बच्चेमे हरा गेलौं। संजोगसँ भेँट भेल।

गणेश- एते लटपटा कऽ गीरह बान्हब से पार लागत, जल्दी किए ने केबाड़ खोलै छी?

बिसरलिही- अहींकेँ गणेशजी हम पंच मानै छी, अहीं कहू जे ई कहै छै सहोदरे बहिन छियौ, से मुँह-कान मिलै छइ?

भजन लाल- गणेश भाय, कनी चश्मा लगा लेब।

रत्नाकर- रोग-बियाधिसँ धरती आक्रान्त अछि। सभ आक्रान्त अछि। यएह आक्रान्त अन्धकार छी। अही-ले प्रकाश चाही। मुदा...।

बर्बरी- 'मुदा' की?

रत्नाकर- देखियौ, अपना ऐठाम जे पाबैन-तिहार होइत आबि रहल अछि, ओकर मूल तत्वकेँ तेना ने ओझरा देने अछि जे पार पएब कठिन भऽ गेल अछि। एकटा उदाहरण...।

बर्बरी- (बिच्चेमे) भाय, कनी सोझरा कऽ कहबै।

रत्नाकर- साले-साल निसचित मास, निसचित तिथिकेँ पाबैन अबैए। गुण अवगुण-गुणवेत्ता गुणता मुदा कि एकरा नकारल जा सकैए जे पैछला सालक जिनगीक नापक नवीकरणक रूपमे सेहो भऽ रहल अछि। अपन समर्पण अहाँक नजैर, अध्यक्षजी..?

अध्यक्ष- हँ, हँ, भाय साहैब...।

रत्नाकर- समापनक जेहेन वातावरण रहक चाही से नइ रहल। रंग-बिरंगक नव-नव समस्या आबि गेल अछि।

अध्यक्ष- एक घन्टा-ले बैसार उसारि दइ छी।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 860

छठम दृश्य-

(बैसार शुरू होइत)

रत्नाकर- बैसारक महमही कहैए जे जेना वसन्त हुअए। किए लोक जुआनी जिनगी चाहैए, बुढ़ाड़ी कियो पसिन किए नै करैए। अजीव तँ ई अछि जे बुढ़ सम्मानित शब्द छी, मुदा ओल जकाँ लगै किए छइ?

बर्बरी- (ओंगरीक इशारा करैत) भाय साहैब, भाय साहैब...।

अध्यक्ष- बर्बरी, जहिना जीवन धार छी जे बहैत रहैए तहिना सभ कथूक धार सेहो बहैत रहै छइ। एके धार पहाड़सँ निकैल गामे-गाम नाओं बदलैत समुद्रमे पहुँचैए।

रत्नाकर- समाजक प्रवुद्ध लोकनिक बैसार छी तँए अपन पैछलाक नीक-बेजाए देखैत आगू-ले संकल्पित होइ।

अध्यक्ष- गणेश भाय, पहिने अपनहि अपन विचार दियौ।

गणेश- देखू, दसअना-छहअना जिनगीमे बहुत केलौं। जेकर

फल भेल किसानक घर छोड़ि बनियाँक घर गेलौं। मुदा आबो नै चेतब तँ वंश कलंकित हएत।

बर्बरी- कनी सोझरा-सोझरा कहियौ गणेश बाबू।

मिसर लाल- बड़ बुड़ि छैं बड़बड़िया तूँ। कनी चुप भऽ कऽ सुनही ने।

गणेश- (विह्वल होइत) मजाकोसँ नमहर मजाक लोक बना देलक अछि। केतौ दूध पीया बोकरबैए तँ केतौ मोतीचूर लड्डू खुआ।

बर्बरी- खोंइचा कनी मोटगर अछि, छील दियौ?

गणेश- बाउ बर्बरी, की कहब, तेहेन-तेहेन उकट्ठी सभ भऽ गेल अछि जे घरसँ निकलैकाल बिसैर जाइ छिऐ। केतौ वाम-दहिन भेने जे दुर्घटना होइ छै तँ ओतैसँ गरियबैत रहैए जे सार गणेशबाक मुँह देख चलल छेलौं।

भजन लाल- (मुड़ी डोलबैत) भाय, दुखरा गौने हेतह? चालैन दुसलक सूपकें जेकरा अपने हजारो छेद छइ! अनके खचरपनीसँ हमर एहेन गति अछि।

अध्यक्ष- गणेशजी, सोझ डारिये किए ने बजै छी जे एना घुमा-फिरा दइ छिऐ?

गणेश- सएह ने तारीफ अछि अध्यक्षजी हमरामे।

(रत्नाकरकें मुस्की दैते सभ जोरसँ ठहाका लगौलक)

गणेश- देखियौ नै तँ सुनियौ, दुनियाँ गोल छइ। सोझो डाँरि तिरछिया कऽ हटिते टेढ़ भऽ जाइत अछि। जइसँ सामने-सामनी नै देख पड़ैए।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 267

समाप्त

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-41-4